मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 58 | अंक : 3 | सितम्बर, 2017 | पृष्ठ : 132 | मूल्य : ₹15

सत्यमेव जयते

प्रो. वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा
एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

करें हमें राष्ट्र का निर्माण

सितम्बर माह शिक्षकों के लिए नया उत्साह, नई प्रेरणा एवं नूतन संदेश लेकर आता है क्योंकि इसी माह में 5 सितम्बर के दिन देश भर में 'शिक्षक दिवस' मनाकर गुरुओं का सम्मान किया जाता है। महान् शिक्षाविद्, प्रखर वक्ता, उद्भट विद्वान एवं यशस्वी चिंतक डॉ. एस. राधाकृष्णन् द्वारा अपने जन्मदिन, 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाए जाने का निर्णय वास्तव में एक विलक्षण निर्णय था। शिक्षक से राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद पर पहुँचे डॉ. राधाकृष्णन् को प्रणाम करते हुए मैं आज की पीढ़ी के शिक्षकों को उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा लेकर शिक्षित व संस्कारित समाज के निर्माण की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने की अपील करता हूँ। इस अवसर पर मैं राज्य के कोने-कोने में शिक्षा की अलख जगा रहे शिक्षक भाई-बहनों को शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वास्तव में शिक्षा का कार्य व्यक्ति निर्माण का कार्य है। माता-पिता जन्म देते हैं तो गुरु जीवन पथ को प्रशस्त करते हैं। गुरुजनों से मिलने वाली सीख ही हमारे सफल एवं सुखमय जीवन का आधार बनती है। यही कारण है कि माता-पिता के साथ गुरुजन को भी देवतुल्य मानकर उनका आदर किया जाता है। किताबी ज्ञान से कभी-कभी अभिमान होने लगता है मगर सद्गुरु के आशीर्वाद एवं कृपा से वही किताबी ज्ञान विनय, विवेक, सदाचार एवं सद्व्यवहार का मार्ग प्रशस्त करता है। 'विद्या ददाति विनयम्' का उदात्त गुण गुरु ही सार्थक कर सकते हैं। वे आत्मिक ज्ञान का उपदेश अपने ज्ञान कोश के बल पर विद्यार्थियों को देते हैं तथा उसका बोध कराते हैं। वे ज्ञान के दूत ज्ञान सागर होते हैं। तुलसीदास जी ने कितना सार्थक कहा है -

पारस के परसन से कँचन भई तलवार।
तुलसी तीनों ना गए, धार-मार-आकार।।
ज्ञान हथौड़ा हाथ लै, सद्गुरु मिला सुनार।
तुलसी तीनों मिट गए धार-मार-आकार।।

वर्तमान शिक्षण सत्र 2017-18 को दो माह बीत चुके हैं। प्रथम परख भी सम्पन्न हो गया है। समय चक्र पूर्ण अनुशासन एवं निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार चलता रहता है। हमें समय का सदुपयोग करना है। इस वर्ष राजकीय विद्यालयों में बोर्ड परीक्षा परिणाम बहुत शानदार रहे और मुझे विश्वास है कि आगामी परीक्षाओं में उत्तम उपलब्धि के लिए आप अभी से कड़ी मेहनत कर रहे होंगे।

हमारी लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे की पहल पर पिछले महीने (5-6 अगस्त) जयपुर में एज्यूकेशन फेस्टिवल मनाया गया, इसमें देश-विदेश से विभिन्न क्षेत्रों के अनेक उच्च प्रतिष्ठित महानुभाव जयपुर पधारे। सच कहूँ तो इन दो दिनों में जयपुर शिक्षामय हो गया था। मीडिया और सामान्य लोगों की चर्चा में शिक्षा की ही चर्चा रही। यह देश का पहला एज्यूकेशन फेस्टिवल था। इस अवसर पर ज्ञान संकल्प पोर्टल का श्रीगणेश कर उसके माध्यम से भामाशाहों का सहयोग माँगा गया है। मुझे प्रसन्नता है कि इस पोर्टल की न केवल सराहना हुई है अपितु उत्साहजनक परिणाम भी नजर आ रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े प्रशासनिक अधिकारी भी अपनी क्षमता और सामर्थ्य अनुसार योगदान दे रहे हैं हाल ही में सेवानिवृत्त होने वाले राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्, जयपुर के अतिरिक्त परियोजना निदेशक ने 7.50 लाख रु. बालिका शिक्षा को दान देने की घोषणा कर अनुकरणीय कार्य किया है।

इसी माह, 8 सितम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस भी है। हमें सम्पूर्ण साक्षरता एवं शिक्षा के सार्वजनीनकरण के जनहितैषी संकल्पों को पूरा करना है। हम ईद-उल-जुहा, नवरात्रि, दशहरा के पर्व भी इसी माह में मनाएँगे। वस्तुतः सितम्बर माह उत्सव-पर्वों का माह है। साथियो, एक उज्ज्वल भविष्य आपका इंतजार कर रहा है, जिसका रास्ता शिक्षा में से होकर निकलता है। आइये! शिक्षा पथ के पाथेय बनकर उन्नत राष्ट्र एवं स्वस्थ, स्वच्छ व समृद्ध समाज का निर्माण करें।

शुभकामनाओं के साथ-

(प्रो. वासुदेव देवनानी)

> "समय चक्र पूर्ण अनुशासन एवं निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार चलता रहता है। हमें समय का सदुपयोग करना है। इस वर्ष राजकीय विद्यालयों में बोर्ड परीक्षा परिणाम बहुत शानदार रहे और मुझे विश्वास है कि आगामी परीक्षाओं में उत्तम उपलब्धि के लिए आप अभी से कड़ी मेहनत कर रहे होंगे।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 58 | अंक : 3 | भाद्रपद–आश्विन २०७४ | सितम्बर, 2017

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

❊

वरिष्ठ सम्पादक
मूलचन्द मीणा

❊

सम्पादक
गोमाराम जीनगर
मुकेश व्यास

❊

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ **15**

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
फैक्स : 0151–2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- शिक्षक सम्मान : उज्ज्वल परम्परा 5
  आलेख
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता 7
  सुनीता चावला
- पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी : कर्त्तव्य एवं दायित्व 9
  किशनदान चारण
- समन्वित विद्यालय में संस्कारों की स्थापना–पूर्व प्राथमिक शिक्षा : **अरुण शर्मा** 13
- फेस्टिवल ऑफ एज्यूकेशन 15
  योगेन्द्र प्रसाद शर्मा

शैक्षिक चिन्तन

- राष्ट्र के विकास का आधार शिक्षा 17
  बजरंग प्रसाद मजेजी
- स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा–चिन्तन 19
  सुरेन्द्र माहेश्वरी
- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् 20
  मोहन मेघवाल
- कीर्ति पुरुष–स्वामी विवेकानन्द 21
  रामगोपाल राही
- शिक्षक दिवस अपने अपने : **सुरेन्द्र 'अंचल'** 23
- आदिवासी अंचल के राजकीय स्कूल का आनन्द : **डॉ. रवीन्द्र कुमार उपाध्याय** 24
- कुम्हार की माटी–सा छात्र 27
  ज्योत्सना सक्सेना
- जनजीवन में प्रतिबिम्बित शिक्षा 28
  देवेन्द्र पाण्ड्या
- जीवन के शाश्वत सत्य 30
  अचलचन्द जैन
- शिक्षा क्या और कैसी हो?: **पी.डी. सिंह** 31
- इंडिया दैट इज भारत 32
  आनन्द कुमार नायर
- विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा : शिक्षक की भूमिका 33
  कन्हैयालाल जैन
- राष्ट्रीय कार्यक्रमों में शिक्षकों की भूमिका 36
  राकेश मोंगिया
- क्रिया आधारित शिक्षण 37
  डॉ. रामनिवास
- समावेशी शिक्षा पद्धति 41
  डॉ. योगेन्द्र सिंह नरुका 'फूलैता'
- शैक्षिक नवाचार : **गायत्री शर्मा** 42
- कोई कार्य छोटा नहीं होता 44
  संकलन–**डॉ. विजय शंकर आचार्य**
- शुद्ध अन्तः करण–सद्गुरुओं से सम्भव है 45
  सतीश चन्द्र श्रीमाली
- श्रीगीता में योग–दर्शन 46
  जगदीश चन्द्र मेहता
- विज्ञान एवं अध्यात्म में सामंजस्य आवश्यक 48
  रूपनारायण काबरा
- बिना संस्कार चरित्र निर्माण नहीं 49
  वृद्धि चन्द गोठवाल
- अनुशासन और चरित्र निर्माण 50
  शशिकांत द्विवेदी 'आमेटा'
- बच्चों को बनाइए अच्छाइयों के वारिस 51
  सांवलाराम नामा
- दृढ़ संकल्प से सफलता 52
  सुभाष चन्द्र कस्वां
- आत्म–सम्मान 53
  संकलन–**आशीष राजोरिया**
- स्वास्थ्य और शिक्षा : **आसू राम स्वामी** 54
- विद्यालय प्रवेश : सही उम्र 55
  डॉ. राजेन्द्र श्रीमाली
- अक्षय पेटिका : समुदाय का विद्यालय के प्रति समर्पण : **विष्णु स्वामी** 56

हिन्दी विविधा

- वन्देमातरम् के रचयिता बंकिमचन्द्र चटर्जी 57
  विजयसिंह माली
- उद्यमेन हि सिद्धयन्ति 59
  डॉ. गिरीश दत्त शर्मा
- पहला मनीऑर्डर 60
  डॉ. श्याम मनोहर व्यास
- सेवा कार्य का महत्त्व : **श्रीकिशन वैष्णव** 61
- 'मूड' के रूप और प्रभाव 62
  छाजूलाल जाँगिड़
- भारत के तीर्थ धाम : **जगदीश कुमार** 63
- शिक्षा के सारथी 67
  ओम प्रकाश सारस्वत
- जीवन राग : **सूर्य प्रकाश जीनगर** 67
- अनुसंधान प्रेमी डॉ. विद्यासागर शर्मा 68
  डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर
- सुख–चैन से जीना हो तो.... 69
  दिनेश विजयवर्गीय

- गुरु एवं शिष्य, भुशुंडि और गरुड़ 70
  रमेश कुमार शर्मा
- उड़ान : **विद्या टेलर** 71
- शौचालय की अलख : **सत्तार अली** 71
- बचा न सके बेटी को : **रतन लाल जाट** 71
- जै गोमाता : **डॉ. कृष्णा आचार्य** 72
- इंटरनेट बनाम अन्तःजाल : **सुमित्रा झंवर** 72
- पगडण्डी : **डॉ. दयाराम** 73
- जितने ज्यादा खेल के मैदान... 74
  डॉ. पी.डी. शर्मा
- हमारे वीरवर भामाशाह : **गोमाराम जीनगर** 75
- लेह दर्शन : **डॉ. कृष्णा माहेश्वरी** 77
- सब पढ़ें, सब बढ़ें : **बिन्दू** 78
- बाल विवाह : बालकों के साथ गुनाह 79
  हजारी लाल सैनी
- सुख की नींद : **हिम्मतराज शर्मा** 81
- जीवन का कड़वा अनुभव 83
  खेतु खान शेख
- ग़ज़ल : **पुरुषोत्तम प्रसाद ढोडरिया** 83
- हीरा मिल गया : **अरनी राबर्ट्स** 84
- शिक्षक जागो : **सत्यनारायण नागौरी** 85
- विरासत : **गोपेश शरण शर्मा 'आतुर'** 86
- गाँवों में भारत : **विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'** 87
- अस्तित्व का संघर्ष 87
  मुरारी लाल कटारिया
- एक सुखद अहसास : **शकुंतला सोनी** 88
- दुःख-सुख 89
  राजकुमार बुनकर 'इन्द्रेश'
- ग़ज़ल : **रहीम खां हसनिया 'सांचोटी'** 89
- आप तो पढ़े-लिखे हैं...: **कृष्णा कुमारी** 90
- सुई बेचने वाला : **सुखदेव शर्मा** 91
- रोज़गार : **बनवारी लाल पारीक 'नवल'** 91
- यश की चाह : **छगनलाल व्यास** 91
- सभ्य आदमी : **भारत दोसी** 91
- उच्चारण और वर्तनी : भाषा का प्राण तत्त्व 92
  प्रकाश वया
- निर्माण करें : **रामेश्वर लाल** 94
- अक्षर : **डॉ. विमलेश कुमार पारीक** 94
- ग़ज़ल : **सैयद अहमद शाह अली** 94
- यह न पूछो : **भीम सिंह मीणा** 95
- कर्म-धर्म : **चैनराम शर्मा** 95
- नारी : **पूनम शर्मा** 95
- विदाई : **रामलता विजय** 95
- गुरु-शिष्य का नाता : **सुषमा भाकर** 96
- शिक्षक : **उत्सव जैन** 96
- एक प्रश्न मेरा भी : **विनीता बाड़मेरा** 96
- प्रतिरोध : **बी.एल. 'पारस'** 96
- महाराणा प्रताप : **सरोज जैन** 97
- शिक्षा का मूल : **अनुराधा जीनगर** 97
- बूँद-बूँद की कीमत! : **विष्णु शर्मा** 97
- शिक्षक : **कृष्णानन्द सोनी** 97
- स्वास्थ्य बत्तीसी : **सतीश चन्द गोयल** 98
- अनुभूतिपरक दोहे : **ज्ञान प्रकाश पीयूष** 99
- कहाँ गए वो पैमाने : **डॉ. बंशीधर तातेड़** 99
- सुलझती उलझनें : **गौरव कुमार शर्मा** 99
- आह्वान गीत : **पवन प्रकाश शर्मा** 100
- बढ़ता ही चल : **सीताराम सोनी** 100
- ग़ज़ल : **राजेन्द्र कुमार टेलर** 100
- बन्द करो आतिशबाजी 101
  भवानी शंकर 'तोसिक'
- नदियाँ सागर के द्वार चलीं 101
  महेन्द्र सिंह महलान
- विद्यालय : **महेश चन्द्र श्रीमाली** 101
- आद्या शक्ति : कन्या 102
  डॉ. विद्या रजनीकांत पालीवाल
- माँ प्रकृति की महिमा 102
  भंवरलाल इन्दौरिया
- स्कूल चलें हम : **मगन लाल दायमा** 102

राजस्थानी विविधा

- संस्करति संरक्षण-परकरति परवरधन 103
  नरसिंह सोढ़ा
- उजड़ मारग भेणौ नीं 104
  उम्मेद सिंह भाटी 'सूरज'
- होजू अैंय हाजू : **भोगीलाल पाटीदार** 105
- संकळप : **मईनुदीन कोहरी** 106
- राजस्थानी कहावताँ अर वांरो बरताव 107
  उर्मिला नागर
- ऊभौ हूँ : **संदीप पारीक 'निर्भय'** 108
- आपणो राज्य पक्षी 'गोडावण' : **भावना** 108
- जोमतो बा : **दीपिका दवे** 109
- सँकळप : **जगदीश चन्द्र नागर** 110
- म्हारो पियारो राजस्थान 110
  ओमदत्त जोशी
- 'हर्षित' के 'हैप्पी' : **कल्पना गिरि** 111
- जूना मारसाब : **परमानन्द शर्मा 'प्रमोद'** 112
- बहना पढ़ल्यो भाई पढ़ल्यो 113
  टीकम बोहरा 'अनजाना'
- चूड़ी री खातर : **सुशीला शर्मा** 113
- रळकियौ : **आर.आर. नामा** 114
- धणी कुण? : **हेमा** 115
- बदळाव : **मुहम्मद कुरैशी 'निर्मल'** 116
- सिंघ शावक : **डॉ. कमला तंवर** 116
- जैसाण री काण : **आशुतोष** 117
- घर ने सुधारे कामणी : **जय प्रकाश राणा** 118
- झाड़ू की महिमा : **ओमप्रकाश सैनी** 119
- रंग-रंगीलौ राजस्थान : **ईसरा राम पंवार** 119
- स्वच्छता : **सुखविन्द्र सिंह रामगढ़िया** 119
- चालो सरकारी स्कूल 120
  शम्भूदान बारहठ 'कजोई'
- जमारौ खोयै रै : **रामजीवण सारस्वत** 120
- बाळपणो 120
  डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत
- बचपणों : **बालकृष्ण शर्मा** 121
- इतियास रो बास 121
  डॉ. मदन गोपाल लढ़ा
- जीवण री धारा बदळगी : **दीपचन्द सुथार** 121
- बचपण थारी बातां 122
  नाथूसिंह राजपुरोहित
- हाइकू : **सुरेश कुमार** 122

बाल साहित्य

- पछतावा : **महेश कुमार चतुर्वेदी** 123
- गुरु की पुस्तक 124
  कैलाश गिरि गोस्वामी
- अपना वतन : **गणपतसिंह 'मुग्धेश'** 124
- भारत प्यारा देश हमारा 125
  कमला गोस्वामी
- ज्ञान का सूरज : **मनमोहन गुप्ता** 126
- हम नन्हें से बाल 126
  विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'
- देना सीखें : **उषा रानी स्वामी** 126
- स्कूल चलो रे... : **राजेन्द्र शर्मा** 126
- कोमल-पंख : **पुष्पा शर्मा** 127
- शिखर : **प्रेमांशुराम मेहता** 127
- स्कूल की घंटी 127
  डॉ. देवकीनन्दन नन्दवाना
- बेटी बनाम बेटा : **महेन्द्र कुमार शर्मा** 127
- होली के रंग : **अलका शर्मा** 128
- स्वच्छता अभियान : **रमा माथुर** 128
- माँ : **डॉ. प्रदीप कुमार 'दीप'** 128
- प्यारे तिरंगे तेरी खातिर 129
  मनोज कुमार दाधीच
- नन्हें-फूल : **मिनाक्षी सोनी** 129
- बेटी : **रामजीलाल घोड़ेला** 129
- अच्छे बालक : **शिवनारायण शर्मा** 130
- पानी की बूँद बचाएँ 130
  विनोद कुमार शर्मा
- फूलों से प्यार 130
  कैप्टन सत्यनारायण पंवार
- जल ही जीवन है 130
  श्याम सुन्दर तिवाड़ी 'मधुप'
- झण्डा गायन : **सुशील कुमार शर्मा** 130

मासिक गीत

- ध्येय साधना अमर रहे... 14
  संकलनकर्त्ता-**मुकेश कुमार लखारा**

स्तम्भ

- पाठको की बात 6
- शिविरा पञ्चाङ्ग : सितम्बर 2017 64
- आदेश-परिपत्र 65-66
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 66
- कार्टून : **रामबाबू माथुर** 48, 62, 91

मुख्य आवरण : नारायणदास जीनगर, बीकानेर, मो. 9414142641

सत्यमेव जयते

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

शिक्षक सम्मान : उज्ज्वल परम्परा

कृतज्ञ राष्ट्र, पूर्व राष्ट्रपति और महान शिक्षक डॉ. एस. राधाकृष्णन् का जन्मदिन 05 सितम्बर 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाता है। शिक्षा विभाग राजस्थान का, शिक्षक सम्मान का गौरवशाली इतिहास है। 'शिक्षक दिवस' पर 'राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह' में चयनित श्रेष्ठ शिक्षकों का सम्मान होना संवेदनशील प्रशासन की उज्ज्वल परम्परा का परिचायक है। शिक्षक के प्रति सम्मान, शिष्य में विकसित हुई श्रेष्ठताओं से उपजा कृतज्ञ विनम्र भाव है। श्रेष्ठ शिक्षक का सम्मान, योग्य शिष्य के दिल में होता है और रहेगा।

भारत की गुरु शिष्य परम्परा अनूठी है, यहाँ शिक्षकों ने अपने विद्यार्थियों के जीवन की दशा एवं दिशा को उत्कृष्टता प्रदान की है। इन्हीं से प्रेरणा प्राप्त कर रहे हमारे श्रेष्ठ शिक्षक, विभाग की योजनाओं और गतिविधियों में सक्रिय योगदान देकर विद्यार्थियों का भविष्य उज्ज्वल बनाते रहेंगे, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

आँगनबाड़ी और विद्यालय के मध्य अच्छा समन्वय हो। पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) प्रभावी पर्यवेक्षण कर अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका से विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में उत्कृष्टता लाएँ। SIQE प्रायोजना से प्रारंभिक शिक्षा में विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के संकल्प को सिद्धि में परिवर्तित होने तक अहर्निश प्रयास करते रहना है।

10 वीं और 12 वीं की कक्षाओं के विद्यार्थियों को सर्वश्रेष्ठ परिणाम लाने के लिए अपनी कार्ययोजना को पूरी दृढ़ता से क्रियान्वित करना है। गत शिक्षा-सत्र के बोर्ड परीक्षा परिणामों से और आगे बढ़ने की प्रेरणा सभी विद्यार्थियों में सतत अभ्यास से लानी है।

आप सभी को ईद-उल-जुहा, नवरात्रि एवं विजयादशमी पर्व की मंगलकामनाएँ।

(नथमल डिडेल)

"भारत की गुरु शिष्य परम्परा अनूठी है, यहाँ शिक्षकों ने अपने विद्यार्थियों के जीवन की दशा एवं दिशा को उत्कृष्टता प्रदान की है। इन्हीं से प्रेरणा प्राप्त कर रहे हमारे श्रेष्ठ शिक्षक, विभाग की योजनाओं और गतिविधियों में सक्रिय योगदान देकर विद्यार्थियों का भविष्य उज्ज्वल बनाते रहेंगे, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।"

▼ *चिन्तन*

जो पहले कीजै जतन,
सो पीछे फल दाय।
आग लगे खोदे कुआँ,
कैसे आग बुझाय।।

भावार्थः पहले से सोच विचार कर किए कार्य का बाद में अच्छा फल मिलता है जैसे आग लगने के बाद पानी के लिए कुआँ खोदने पर आग को कैसे बुझाया जा सकता है?

- 'शिविरा' अगस्त 2017 के अंक में दिशाकल्प 'आत्मावलोकन का प्रेरक अवसर' में युवा आई.ए.एस. निदेशक महोदय का शाला के शैक्षिक, भौतिक विकास का प्रयास उनके गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के दृढ़ निश्चय को दर्शाता है। भौतिक क्षेत्र में भामाशाहों का राज्य स्तर पर सम्मान दानदाताओं को प्रेरणा देने वाला प्रयास है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्र को योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। यह आलेख भारतीय संस्कृति, संस्कृत, संविधान, समरसता को दर्शाता है। इस माह के अंक में 'विद्यार्थी और सड़क सुरक्षा' नियमावली सहजता से छात्रों में ज्ञान का बोध कराती है। 'दिव्यांगता सफलता में बाधा नहीं है' आलेख दिव्यागों में उत्साह भरता है। हिन्दी एवं आंग्ल भाषा में 'सुन्दर लेखन शिक्षक का योगदान' आलेख शिक्षा के क्षेत्र में सरलता व सहजता का बोध कराता है। 'कला ही जीवन का अभिन्न अंग है' लेख बालकों की प्रतिभाओं को निखारने का उचित अवसर प्रदान करता है। मुखपृष्ठ अखण्ड भारत के स्वरूप को दर्शाता है एवं पृष्ठ भाग देश के आजादी के दीवानों की अमर ज्योति को प्रकट कर उन्हें नमन करता है जो सराहनीय है। 'सरहद तुझे प्रणाम' सभी में राष्ट्र के प्रति प्रेम प्रकट करने वाला मासिक गीत आज के परिप्रेक्ष्य में सार्थक है। स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, स्वच्छता एवं मलेरिया की रोकथाम का आलेख सारगर्भित है, जो हमें सदैव स्वस्थ रहने की प्रेरणा देता है। अगस्त की शिविरा पत्रिका सम्पूर्ण दृष्टि से अमिट छाप छोड़ने वाला अंक है।

अशोक कुमार श्रोत्रिय, कांदा, भीलवाड़ा

- हर्ष का विषय है कि शिविरा अगस्त 2017 का अंक, एक छात्र मनफूल कक्षा 9 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आऊ (जोधपुर) ने आद्योपांत पढ़ा और अपनी प्रतिक्रिया सुन्दर शैली में अभिव्यक्त की। स्पष्ट है कि शिविरा शिक्षकों के लिए ही नहीं, विद्यार्थियों के लिये भी उपादेय व पठनीय है। यह शिविरा की प्रभावशीलता का प्रमाण है। प्रेरक प्रसंग के दोनों ही प्रकरण प्रेरक हैं। देव वाणी संस्कृत दिवस पर संस्कृत कविता 'मां तु नमनम्' स्तुत्य है। जन्माष्टमी पर्व पर 'कृष्णम् वंदे जगद्गुरु' आलेख श्रीकृष्ण के विभिन्न आयामों का दिग्दर्शन कराता है कि 'यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरो' फिर क्या रह जाता है कहने को। श्री मनमोहन गुप्ता द्वारा लिखित महर्षि अरविन्द का आलेख बताता है कि वे अति मानसिक अवस्था के अतिरिक्त एक महायोगी भी थे। अंक संयोजन सराहनीय है। संपादक मण्डल को हार्दिक साधुवाद।

टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूँ

- माह अगस्त 17 की शिविरा में 'कृष्णम् वंदे जगद्गुरु' आलेख से प्रेरणा मिलती है। कृष्ण संसार के गुरु हैं, वन्दनीय हैं। उनके चरित्र में न्याय, धैर्य, दृढ़ संकल्प, चातुर्य, वाक्पटुता, क्षमा, उदारता, प्रेम एवं त्याग की पराकाष्ठा है, यह संसार के सभी प्राणियों के लिए सुगम रूप से ग्राह्य एवं अनुकरणीय है। मुख्य आवरण नारायणदास जीनगर द्वारा अनेकता में एकता, तिरंगे में शिविरा का होना, बादलों के साथ मौसम व कृषि का आभास कराने वाला है। डॉ. विक्रमजीत द्वारा संस्कृत दिवस पर लेख में डॉ. अम्बेडकर का संस्कृत भाषा के प्रति प्रेम, निष्ठा एवं लगाव को गहराई तक दर्शाया है, जो बहुत कम लोग जानते होंगे। निश्चय ही जो डॉ. अम्बेडकर को जानते हैं उन्हें संस्कृत भाषा से भी विशेष प्रेम एवं जुड़ाव रखना चाहिए।

लोकेश शर्मा, टूमली का बास, जयपुर

- अगस्त माह का अंक मिला, पढ़कर हर्ष हुआ कि निदेशक महोदय एक युवा और राजस्थान के नागौर जिले से हैं। राज्य-स्तरीय भामाशाह सम्मान में प्रेरकों का सम्मान भी सराहनीय है। देशभक्ति गीत 'सरहद तुझे प्रणाम' दिल को छूने वाला है। 'स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत' मलेरिया रोकथाम के लिए काफी सहयोगी साबित होगा। दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए रेखा बॉयले का आलेख प्रेरणास्पद है। श्रीकृष्ण पर दिया आलेख संस्कृति और धर्म को बनाए रखने में प्रभावी होगा। विभिन्न उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण इस अंक के लिए सम्पादक मण्डल को साधुवाद!

कैलाश राम चौधरी, कुचेरा,नागौर

SIQE

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता

❒ सुनीता चावला

यह देखा एवं महसूस किया गया है कि जब बच्चों की परीक्षा ली जाती है कुछ बच्चे बेहतर प्रदर्शन कर अच्छे अंक प्राप्त करते हैं। कुछ बच्चे औसत अंक प्राप्त करते हैं। कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जिनके अंक औसत से भी कम होते हैं। कम अंक प्राप्त करने वाले बच्चों का उनके सहपाठी मजाक उड़ाते हैं। बहुप्राय: ये बच्चे अपने शिक्षकों एवं अभिभावकों की उपेक्षा का भी शिकार होते हैं। ये बच्चे एक तरफ अपने शिक्षकों एवं अभिभावकों से नाराज रहते हैं वहीं दूसरी तरफ हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। विद्यालय और परीक्षा बच्चों के लिए तनाव का कारण बन जाते हैं। ऐसे में बच्चों की विद्यालय में उपस्थिति या तो अनियमित होती है या फिर वे ड्रॉप आउट हो जाते हैं। ये स्थितियाँ हमारे बच्चों और समाज के लिए कतई उचित नहीं है।

कम अंक यह नहीं बताते बच्चे ने क्या सीखा, कितना सीखा और वे क्या हासिल कर सकते थे, उनमें क्या सम्भावनाएँ निहित थी। ये अंक अभिभावकों एवं बच्चों को सीखने-सिखाने के बारे में उपयोगी फीडबैक नहीं देते हैं। हमें समझना होगा कि अंकों की अनावश्यक प्रतिस्पर्द्धा बच्चों के भविष्य के लिए सुखद नहीं है। इनके प्रभाव में आकर बच्चे बिना सोचे समझे रटकर या येनकेन प्रकारेण पास हो जाते हैं अथवा अच्छे अंक प्राप्त कर लेते हैं। इससे विषयवस्तु पर उनकी समझ विकसित नहीं होती है। परीक्षा बच्चों में सीखने की चाह को मंद कर देती हैं। बच्चे सही गलत, अच्छा बुरा में भेद करने में सक्षम नहीं होते, न ही उनमें मानवीय गुणों का विकास होता है। एक बच्चा अच्छे अंक प्राप्त कर एक चिकित्सक या एक इंजीनियर बन सकता है वह अच्छा पद भी प्राप्त कर सकता है लेकिन जरूरी नहीं वह अच्छा इनसान भी बने।

इन्हीं परिस्थितियों के मद्देनजर एनसीईआरटी. द्वारा एनसीएफ.-2005 का निर्माण किया गया। इसमें थोड़े वक्त के लिए काम में आने वाली जानकारी के अम्बार के बदले समझ को महत्त्व दिया गया है। एनसीएफ.-2005 के अनुसार हमें बच्चों के स्मृति कोश पर जानकारियाँ लादने के स्थान पर बच्चों के सीखने की क्षमता को समझना होगा। इसी क्रम में केन्द्र सरकार द्वारा आयुवर्ग 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार (आरटीई.-2009) लाया गया। माननीय राष्ट्रपति महोदय से स्वीकृति जारी होने के पश्चात् 1 अप्रैल 2010 को इसे लागू किया गया। इसके उपरांत राजस्थान सरकार द्वारा तद्विषयक प्रादेशिक अधिनियम-2011 अधिसूचित किया गया। आरटीई.-2009 की धारा 29 में यह वर्णित है कि पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन पद्धति ऐसी हो जिसके अन्तर्गत बच्चे को बालमित्र वातावरण में बालकेन्द्रित शिक्षण द्वारा सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएँ नियोजित की जाएँ। कक्षा कक्षीय प्रक्रियाएँ गतिविधि आधारित हों। इस प्रकार का वातावरण बच्चों में सृजनात्मक एवं संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास के लिए आवश्यक है।

एनसीएफ.-2005 एवं आरटीई.-2009 के लक्ष्यों को सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विधा के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। राज्य सरकार ने प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाने की पहल करते हुए, शैक्षिक सत्र 2015-16 से राजकीय विद्यालयों में एसआईक्यूई. (स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वालिटि एज्युकेशन कार्यक्रम) चलाया है। इस कार्यक्रम के तहत बच्चों की व्यक्तिगत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में गुणवत्तापूर्ण बदलाव किया गया है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा-

जीवन में कठोर परिश्रम एवं समर्पित प्रयासों से सफलता अर्जित की जाती है। सफलता का अंकों से विशेष संबंध नहीं है। अच्छे अंक लाना सफलता का अभिप्राय नहीं है। बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को आकलन से जोड़ना आवश्यक है। बच्चे गतिविधियों के माध्यम से स्वयं करके सीखते हैं। बच्चों की सक्रिय सहभागिता से उनमें विषयवस्तु की समझ विकसित होती है।

सतत एवं व्यापक आकलन-

कक्षा-कक्ष एवं कक्षा से बाहर सीखने की प्रक्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा बच्चों की गतिविधियों का सतत एवं नियमित अवलोकन किया जाता है। तदनुसार बच्चों को मार्गदर्शन दिया जाता है। यहाँ पर बच्चों की दैनिक गतिविधियों का आकलन एवं सावधिक मूल्यांकन शामिल है। व्यापकता का तात्पर्य विषयों में पारंगतता हासिल करने के लिए खेल, कला एवं संगीत को शिक्षण विधि के रूप में शामिल किया जाए। इससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया रुचिपूर्ण होगी। इससे बच्चों में सामाजिकता, आत्मविश्वास एवं अनुशासन जैसे मानवीय गुणों का भी विकास होता है। यहाँ आकलन के अवसरों में भी व्यापकता है। बच्चों का आकलन तभी किया जाता है, जब वे उपलब्ध अथवा उपस्थित हो। आकलन के तरीकों में भी व्यापकता है, क्योंकि मूल्यांकन शिक्षक आधारित तो होता ही है

साथ ही बच्चे की स्वयं के कार्य के बारे में राय, समूह की राय, अन्य शिक्षकों एवं अभिभावकों की राय भी शामिल की जाती है।

आकलन एवं मूल्यांकन में अंतर–

आकलन कक्षा प्रक्रिया में सीखने–सिखाने के दौरान निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, यह मूल्यांकन प्रक्रिया का ही भाग है। आकलन बच्चे को नित्यप्रति के सीखने का, जानने का प्रयास करता एक संवादात्मक तथा रचनात्मक प्रक्रिया का नाम है, जिसके द्वारा शिक्षक को यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी का उचित अधिगम हो रहा है अथवा इसका उद्देश्य निदानात्मक होता है इस कारण यह बच्चों को निरन्तर सुधार के अवसर प्रदान करता हुआ उसके ज्ञान के निर्माण को स्थायी करता है। मूल्यांकन एक योगात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी पूर्व निर्मित शैक्षिक कार्यक्रम अथवा पाठ्यक्रम की समाप्ति पर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का ज्ञान किया जाता है। इसका उद्देश्य इसका मूल्य निर्णयन करना होता है। शैक्षिक संदर्भ में मूल्यांकन का उद्देश्य निर्धारित पाठ्यक्रम की समाप्ति पर विद्यार्थियों द्वारा अर्जित की गई उपलब्धि के आधार पर मूल्य निर्णयन करना है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कैसे–

प्रत्येक बच्चे में कुछ विशेषताएँ होती हैं। उन विशेषताओं को पहचान कर तद्नुरूप शिक्षण योजना बनाकर कक्षा में काम किया जाता है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के पीछे मूल भाव यह है कि सभी बच्चे अपनी गति से सीखते हैं। उन्हें उनकी गति से सीखने के अवसर व उसके आधार पर आकलन किया जाए। सीखने–सिखाने के दौरान बच्चों द्वारा पृथक–पृथक तरीके से प्रतिक्रिया की जाती है। शिक्षक द्वारा बच्चों की इन प्रतिक्रियाओं को समझकर तदनुरूप आकलन किया जाता है। आकलन की मुख्य विधाएँ अग्रांकित हैं–

1. **स्व–आकलन–**बच्चा कार्य करने के बाद स्वयं के द्वारा किए गए कार्य का आकलन करे तथा स्वयं यह समझे कि मुझे सहयोग की आवश्यकता है। प्रदत्त कार्य उसने किस तरह से किया है, किसकी मदद ली और लेनी चाहिए थी? कार्य के दौरान उसे क्या समस्याएँ आई तथा उनका समाधान किस प्रकार किया जाए? बच्चा इन बातों के बारे में जितना जानेगा, उतना ही ज्यादा सीख पाएगा। स्व आकलन कार्यपत्रक के नीचे एक टिप्पणी के रूप में लिखवाया जा सकता है।
2. **समूह में आकलन–**बच्चे समूह में कार्य करते है। इस दौरान उनकी भागीदारी, स्थिति, समूह के सदस्यों का सुझाव, अपनी बातों को व्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त कर पाने के गुणों का विकास होता है। बच्चे अपने समूह एवं अन्य समूह में बच्चों के कार्य व्यवहार को देखते हैं, और उनका आकलन करते हैं। यह प्रक्रिया सामाजिक गुणों के विकास में मदद करती है।
3. **मौखिक आकलन–** बच्चे का आकलन केवल लिखित कार्य के द्वारा करना ही पर्याप्त नही हैं। कई क्षेत्र ऐसे हैं जिनको लिखित कार्य के द्वारा जाँचा नहीं जा सकता है। ऐसे विषयों के लिए मौखिक बातचीत, मौखिक प्रश्नोत्तरी, खेल एवं गतिविधियों के द्वारा आकलन किया जा सकता है।

अभ्यास एवं आकलन पत्रक–

कक्षा शिक्षण के दौरान अभ्यास और आकलन पत्रक का महत्त्वपूर्ण स्थान है। किसी प्रत्यय को सिखाने के पश्चात बच्चे ने उसके प्रति अपनी कितनी समझ बनाई है इसलिए शिक्षक को अभ्यास पत्रक तैयार करने चाहिए। इन अभ्यास पत्रकों में उस प्रत्यय के प्रति समझ बनाने में जिस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता अनुभव की जाती है, उसे अभ्यास पत्रक में सम्मिलित किया जाए। इसी प्रकार किसी प्रत्यय अथवा युनिट के पूर्ण होने के पश्चात शिक्षक को एक समग्र आकलन कार्यपत्रक का निर्माण करना चाहिए। इस कार्यपत्रक के निर्माण में ध्यान रहे कि प्रश्नों के प्रकार में व्यापकता हो, विविधता हो तथा प्रश्न अधिगम उद्देश्यों से अन्तर्ग्रन्थित हों। इसके अतिरिक्त गृहकार्य, श्रुतलेख, सुलेख, प्रोजेक्ट कार्य का प्रस्तुतीकरण द्वारा भी बच्चों को सीखने के अधिक अवसर मिलते हैं। लेकिन इनका लाभ तभी मिलेगा जब शिक्षक स्वयं सतर्क एवं सक्रिय रहकर योजनाबद्ध प्रयास करेंगे।

सूचक संग्रह एवं रिपोर्ट–

कक्षा शिक्षण के दौरान यह भी जरूरी है कि शिक्षक अपनी डायरी में बच्चे के कार्य एवं प्रतिक्रियाओं से संतुलित निष्कर्ष, सकारात्मक पक्ष, खूबियों एवं कमजोर पक्षों को नोट करले। यह जानकारी दैनिक अवलोकन एवं चैकलिस्ट में सूचना दर्ज करने से उपयोगी साबित होगी। बच्चों द्वारा किए गए कार्य के नमूने साक्ष्य के रूप मे पोर्टफोलियो में संग्रहित किए जाएँ।

इस प्रकार बच्चों में विभिन्न स्तरों से एकत्र जानकारी को अच्छी तरह से समझकर विश्लेषण कर समीक्षा कर उसकी उपलब्धियों एवं प्रगति के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकाला जा सकता है। इस निष्कर्ष से शिक्षक को स्वयं भी फीडबैक मिलता है जिससे शिक्षक को आगामी योजना के निर्माण में सहायता मिलती है। इसे अभिभावकों के साथ साझा किया जाना आवश्यक है। राज्य सरकार ने बच्चों के उन्नयन के लिए एक अच्छी पहल की है इसके सार्थक परिणाम तभी प्राप्त हो सकते हैं जब प्रत्येक स्तर पर गम्भीरता से कार्य किया जाएगा।

नोडल अधिकारी
एस. आई. क्यू.ई प्रकोष्ठ
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414426063

PEEO

पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी : कर्त्तव्य एवं दायित्व

❒ किशनदान चारण

राज्य सरकार द्वारा प्रारम्भिक शिक्षा के उन्नयन, गुणवत्तापूर्ण व उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के उद्देश्य से ग्राम पंचायत क्षेत्र में स्थित राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों का प्रभावी पर्यवेक्षण, प्रबंधन कर प्रशासनिक व अकादमिक संबलन व नेतृत्व प्रदान करने तथा इन विद्यालयों में आधारभूत संरचनाओं/सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण हेतु राजस्थान पंचायतीराज नियम, 1996 के नियम-259 के उपनियम- (09) के तहत राज्य की समस्त 9894 ग्राम पंचायतों हेतु चिह्नित 'राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों को (सामान्यत: ग्राम पंचायत का आदर्श विद्यालय) पंचायत रिसोर्स सेन्टर (PRC) एवं संबंधित संस्था-प्रधान को ग्राम पंचायत का पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO)' नामित किया गया है।

पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) के कर्त्तव्य एवं दायित्व:- पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) का मुख्य दायित्व ग्राम पंचायत क्षेत्र के प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों को प्रशासनिक-अकादमिक संबलन एवं नेतृत्व प्रदान करने के साथ इन विद्यालयों में आधारभूत संरचनाओं का विकास करना है तथा उनसे सम्बद्ध विद्यालय को ग्राम पंचायत क्षेत्र में स्थित राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों हेतु संदर्भ केन्द्र एवं मार्गदर्शक विद्यालय के रूप में कार्य करना है, इनके क्रियान्वयन हेतु पीईईओ. को निम्नानुसार कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का निर्धारण किया गया है:-

1. **ग्राम पंचायत क्षेत्र में स्थित प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों का पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण :** पीईईओ. अकादमिक व प्रशासनिक नेतृत्व, संबलन हेतु ग्राम पंचायत के समस्त प्राथमिक-उच्च प्राथमिक विद्यालयों का सघनता से पर्यवेक्षण एवं अवलोकन हेतु उत्तरदायी है। विद्यालय अवलोकन हेतु निम्नानुसार मानदण्ड/दिशा-निर्देश निर्धारित हैं:-

1.1 मानदण्ड :

- विद्यालय अवलोकन सत्रपर्यन्त एवं नियमित कार्यदिवस को करना।
- ग्राम पंचायत क्षेत्र के उत्कृष्ट विद्यालय का माह में कम से कम एक बार एवं प्रारम्भिक शिक्षा के अन्य विद्यालयों का दो माह में कम से कम एक बार मासिक कार्ययोजना बनाकर प्रतिमाह विद्यालय अवलोकन करना।
- शैक्षणिक गुणवत्ता उन्नयन हेतु कक्षाओं में विद्यार्थियों के गुणवत्ता स्तर का आकलन करना।
- विद्यालय विकास योजना का अवलोकन कर आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान करना।
- अवलोकन के दौरान प्रशासनिक एवं शैक्षणिक सम्बलन प्रदान करना।

1.2 अवलोकन के दौरान करणीय कार्य:

1.2.1 अकादमिक सम्बलन

- एसआईक्यूई. अन्तर्गत कक्षा-कक्ष शिक्षण प्रक्रिया एवं बच्चों के शैक्षिक स्तर का आकलन।
- विद्यालयों में प्राथमिक/उच्च प्राथमिक कक्षाओं के परीक्षा परिणाम के आधार पर शैक्षणिक गुणवत्ता जाँच।
- आधारेखा मूल्यांकन के आधार पर स्तर निर्धारण की जाँच।
- कमजोर विद्यार्थियों के लिये उपचारात्मक कार्यवाही।
- गृहकार्य जाँच एवं प्रभावी शिक्षण विधियों (टीएलएम. गतिविधि आधारित शिक्षण/ अन्य) का प्रयोग।
- प्रत्येक कक्षा में अधिकतम छात्रों से संवाद करना (प्रश्न पूछना।)

1.2.2 मॉनेटरिंग

- विद्यालय परिक्षेत्र में नामांकन की समीक्षा एवं ड्रापआउट बच्चों का विद्यालय से जुड़ाव।
- विद्यालय कोष उपयोग राशि।
- आँगनबाड़ी समन्वयन एवं प्रशासनिक नियंत्रण।
- आधारभूत सुविधाओं हेतु एसएफसी./ पीएफसी./मनरेगा आदि केन्द्र एवं राज्य सरकार की योजनान्तर्गत प्रस्ताव ब्लॉक/जिला स्तर को प्रेषित कर समन्वय स्थापित करना।
- नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक/शिक्षण सामग्री एवं छात्रवृत्ति का समय पर वितरण।
- शिकायत पंजिका (अभिभावक शिकायत) का निरीक्षण एवं निस्तारण।

1.2.3 पर्यवेक्षण

- मिड-डे मील गुणवत्ता जाँच एवं रिकार्ड संधारण।
- विद्यालय में एसएमसी. बैठक का आयोजन।
- पीटीएम. (अध्यापक-अभिभावक मीटिंग) का समय पर आयोजन।

1.2.4 सामाजिक भागीदारी

- विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का विकास (कक्षा-कक्ष, पेयजल, विद्युत व्यवस्था, रंग-रोगन, खेल मैदान हेतु भूमि आंवटन एवं विकास, चारदीवारी, पृथक-पृथक शौचालय आदि।)
- एसएमसी. एवं पीटीए. मीटिंग में भाग लेकर चर्चा करना।
- भामाशाह/दानदाताओं को विद्यालय में सहयोग हेतु प्रेरित करना।
- विद्यालय विकास हेतु जनप्रतिनिधियों से समन्वय कर सहयोग प्राप्त करना।
- स्वैच्छिक विकास कोष हेतु समुदाय को प्रेरित करना।

1.2.5 पोर्टल एवं विभागीय सूचनाएँ

- शाला दर्शन/शाला सिद्धि/टीएएफ./ एसएमएफ. आदि में प्रविष्टियों के अपडेशन की समीक्षा।
- अन्य विभागीय सूचनाओं का सम्प्रेषण।

1.2.6 अन्य बिन्दु :

- समय-समय पर विद्यालय में मेले, जयन्तियाँ एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करवाना।
- कल्प लैब/कम्प्यूटर लैब/पुस्तकालय एवं खेल सामग्री का उपयोग सुनिश्चित करना।
- विद्यालय संचालन में आ रही कठिनाइयों का निस्तारण।
- विद्यालय में संचालित सभी गतिविधियों का अवलोकन एवं आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान करना।

1.3 अवलोकन पश्चात करणीय कार्यवाही :

- अवलोकनकर्त्ता द्वारा अवलोकन प्रपत्र के सभी बिन्दुओं को सही तरह से भरा जाए। रिक्त रहने या गलत भरा जाने की स्थिति में अवलोकनकर्त्ता स्वयं जिम्मेदार होंगे।
- अवलोकनकर्त्ता द्वारा विद्यालय में पूर्व अवलोकनकर्त्ता द्वारा किए गए अवलोकन के समय अवलोकन प्रपत्र में दिए गए सुझावों की अनुपालना की मोनेटरिंग की जाए।
- विद्यालय अवलोकन के पश्चात पीईईओ. द्वारा अवलोकन प्रपत्र भरकर शाला दर्शन पोर्टल पर अपलोड किया जाए।
- जिन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) के मासिक निर्धारित मानदण्ड पूरे नहीं होंगे उनके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही जिला स्तर से की जाएगी एवं प्रति निदेशक, प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा बीकानेर एवं आयुक्त, राप्राशिप. जयपुर को प्रस्तुत की जाएगी।
- राप्राशिप. जयपुर द्वारा विद्यालय अवलोकन हेतु पूर्व में जारी दिशा-निर्देश यथावत रहेंगे। जिला एवं ब्लॉक स्तर के अधिकारी पूर्व की भाँति विद्यालय अवलोकन करते रहेंगे।
- पीईईओ. द्वारा पंचायत क्षेत्र के अधीनस्थ विद्यालयों हेतु अवलोकन पंजिका का संधारण स्वयं के विद्यालय में कर, इसमें विद्यालय निरीक्षण के सम्बन्ध में अभिलेख का इन्द्राज किया जाए।

2. संस्थाप्रधानों की समीक्षा बैठक व प्रभावी समन्वयन :

ग्राम पंचायत क्षेत्र के समस्त राप्रावि./ राउप्रावि. विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की प्रत्येक माह के अन्तिम कार्य दिवस पर बैठक का आयोजन पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में उनसे सम्बद्ध विद्यालय में अनिवार्यत: किया जाएगा। मासिक समीक्षा बैठक में विद्यालयवार विकास योजना, एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम तथा राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं/कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की समीक्षा की जाएगी तथा संस्थाप्रधानों द्वारा विद्यालय के संचालन में आ रही कठिनाइयों का निराकरण भी किया जाएगा। पीईईओ. द्वारा संस्थाप्रधानों की मासिक समीक्षा बैठक में निम्न बिन्दुओं की अनुपालना सुनिश्चित की जाएगी :

2.1 शैक्षिक गुणवत्ता

- एसआईक्यूई. कार्यक्रम की विद्यालयवार समीक्षा एवं प्रगति पर चर्चा व आगामी कार्ययोजना निर्माण।
- कक्षा अवलोकन के समय विद्यार्थी आकलन रिपोर्ट अनुसार दिशा-निर्देशों की पालना।
- कक्षावार विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर सुधार हेतु कार्ययोजना निर्माण पर चर्चा।
- विद्यालय के निर्धारित लक्ष्य अनुसार नामांकन एवं ठहराव समीक्षा।

2.2 विद्यालय निरीक्षण अनुपालना

- विद्यालय अवलोकन दौरान दिए गए निर्देशों की पालना।
- मिड-डे-मील कार्यक्रम की मासिक समीक्षा एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करना।
- विद्यालय क्षेत्राधिकार में शिक्षा से वंचित एवं ड्रापआउट बच्चों की शिक्षा से जुड़ाव बाबत समीक्षा।
- विद्यालय में भौतिक सुविधाओं की प्रगति (अवलोकन अनुसार)।
- निरीक्षण के दौरान दिए गए निर्देशों के बिन्दुओं की पालना।

2.3 शैक्षिक प्रबन्धन/शैक्षिक पर्यवेक्षण

- विद्यालयों में स्टाफ की उपलब्धता।
- स्टाफ द्वारा शैक्षिक प्रगति हेतु किए गए प्रयासों की समीक्षा।

2.4 विद्यालय विकास योजना

- उत्कृष्ट विद्यालय योजना मार्गदर्शिका में दिए गए निर्देशों की पालना।
- शाला सिद्धि पोर्टल पर दर्ज विद्यालय विकास योजना बिन्दुओं की समीक्षा करते हुए पालना करवाना।
- विद्यालय विकास एवं आधारभूत सुविधाओं (कक्षा स्तर, पेयजल/शौचालय, चारदीवारी/विद्युत कनेक्शन/ खेल मैदान/भवन हेतु भूमि आवंटन एवं खेल मैदान का विकास की समीक्षा एवं उपलब्धता हेतु प्रयास।

2.5 वित्तीय प्रबन्धन

- एसएसए. द्वारा आवंटित विभागीय बजट उपयोग।
- जनप्रतिनिधि/भामाशाह/दानदाताओं/ सीएसआर. से सहयोग प्राप्ति पर चर्चा।
- एसएफसी./एफएफसी./मनरेगा इत्यादि राशि स्वीकृति की समीक्षा।
- स्वैच्छिक विकास अनुदान।
- क्राउड फण्डिंग

2.6 विभागीय कार्यक्रम/गतिविधियों की समीक्षा

- विभागीय गतिविधिवार प्रगति की समीक्षा।
- एसएमसी. सदस्यगण एवं अभिभावकों से प्राप्त शिकायतों का निस्तारण।

2.7 पोर्टल एवं अन्य विभागीय सूचनाएँ/ एमपीआर.

- एसएसए. शाला दर्शन वैब पोर्टल पर सूचनाएँ दर्ज करना।
- एसएसए. की विभागीय सूचनाओं का सम्प्रेषण।
- उपयोगिता प्रमाण-पत्र एवं एमपीआर. प्रेषित करना।

2.8 अभिप्रेरणा/नवाचार

- विद्यालयों में किए गए नवाचारों पर चर्चा।
- संस्था प्रधानों के साथ नवाचारों को साझा करना।

2.9 अन्य बिन्दु

- प्रत्येक मासिक बैठक की सूचनाएँ संलग्न प्रपत्र में शाला दर्शन पोर्टल पर पीईईओ. लॉगिन से प्रत्येक माह की 10 तारीख तक निर्धारित प्रपत्र में ऑनलाइन अपडेट किया जाना सुनिश्चित किया जाए।

3. एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम का प्रभावी क्रियान्वयन :

कक्षा 1 से 05 में शिक्षा की गुणवत्ता के उन्नयन हेतु संचालित एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु पीईईओ. से सम्बद्ध विद्यालय, ग्राम पंचायत के समस्त राप्रावि./राउप्रावि. के लिए संदर्भ केन्द्र के रूप में कार्य करेगा तथा पीईईओ. द्वारा स्वयं के विद्यालय में एसआईक्यूई. कार्यक्रम का प्रभावी क्रियान्वयन कर ग्राम पंचायत के अन्य राप्रावि./राउप्रावि. एवं उत्कृष्ट विद्यालयों के लिए मॉडल विद्यालय के रूप में प्रस्तुत किया जाए।

पीईईओ. द्वारा सीसीई./एसआईक्यूई. कार्यक्रम की समीक्षात्मक बैठकों एवं कार्यशालाओं में सम्बन्धित योजना के दिशा-निर्देशों के अनुसार आदर्श विद्यालय की मेंटरशिप प्रदान की जाएगी व आवश्यकतानुसार शिक्षकों एवं हेड टीचर्स से ब्लॉक रिसोर्स विद्यालय का भ्रमण करवाया जाकर एसआईक्यूई. कार्यक्रम का सफल संचालन किया जाए। एसआईक्यूई. कार्यक्रम की प्रभावी क्रियान्विति हेतु निम्नानुसार बिन्दुओं की मोनेटरिंग की जाए -

3.1 एसआईक्यूई. कार्यक्रम की विद्यालयवार समीक्षा एवं प्रगति पर चर्चा व आगामी कार्य योजना निर्माण।

3.2 कक्षा अवलोकन के समय विद्यार्थी आकलन रिपोर्ट अनुसार दिशा-निर्देशों की पालना।

3.3 कक्षावार विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर सुधार हेतु कार्ययोजना निर्माण पर चर्चा।

3.4 एसआईक्यूई. कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्यवाही सुनिश्चित किया जाना।

3.5 एसआईक्यूई. कार्यक्रम की अनुपालना हेतु निर्धारित मानदण्डों के अनुसार आवंटित विद्यालयों का निरीक्षण कर आकलन प्रपत्र भरकर आकलन करना।

4. ग्राम पंचायत की प्रारम्भिक शिक्षा की योजना का निर्माण एवं क्रियान्वयन :

4.1 पीईईओ. द्वारा प्रत्येक वर्ष ग्राम पंचायत क्षेत्र के विद्यालयों में प्रवेश योग्य 6 से 14 आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं का चिह्नकरण का कार्य पंचायत क्षेत्र के राप्रावि./राउप्रावि. के माध्यम से करवाया जाकर विद्यालयों को आवंटित नामांकन वृद्धि के लक्ष्यों के अनुसार उपलब्धि सुनिश्चित करने हेतु विद्यालयवार कार्ययोजना तैयार कर नामांकन लक्ष्य की पूर्ति सुनिश्चित करना।

4.2 ग्राम पंचायत में स्थित समस्त राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विकास हेतु कार्य योजना तैयार करने एवं लागू करने में संबंधित संस्था प्रधान को सहायता प्रदान करना।

4.3 ग्राम पंचायत क्षेत्र में स्थित राजकीय प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आधारभूत संरचनाओं/सुविधाओं की कमी का आकलन कर सम्बन्धित ग्राम पंचायत को पूर्ति हेतु प्रस्ताव भिजवाना।

4.4 ग्राम पंचायतों के माध्यम से सभी राप्रावि./राउप्रावि. के विकास हेतु आवश्यक धनराशि की व्यवस्था मनरेगा, एसएफसी. एवं अन्य विकास योजनाओं से सुनिश्चित कराने हेतु ग्राम पंचायत के सरपंच/सचिव से सतत् सम्पर्क एवं ग्राम पंचायत/ग्राम सभा की बैठक में सक्रिय रूप से भाग लेना।

4.5 राजकीय विद्यालयों के विकास हेतु भामाशाहों/दानदाताओं/ जनप्रतिनिधियों, एसडीएमसी., एससमसी., अभिभावकगण एवं जनसमुदाय से जनसहयोग और क्राउडफण्ड के माध्यम से आवश्यक धनराशि जुटाने हेतु सतत प्रयास किए जाना।

5. ग्राम पंचायत से समन्वय स्थापित करना :

5.1 ग्राम पंचायत की मासिक बैठकों में उपस्थित होकर ग्राम पंचायत परिक्षेत्र के समस्त राप्रावि./राउप्रावि. की शिक्षण व्यवस्था एवं अन्य गतिविधियों की प्रगति प्रस्तुत करना।

5.2 ग्राम पंचायत क्षेत्र के 6-14 वर्ष आयुवर्ग के बालक-बालिकाओं को विद्यालयों में नामांकित कराने व ठहराव सुनिश्चित कराने में ग्राम पंचायत का सहयोग प्राप्त करना।

5.3 ग्राम पंचायत क्षेत्र के राप्रावि./राउप्रावि. के विकास हेतु ग्राम पंचायत द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं यथा-राज्य वित्त आयोग, चौदहवाँ वित्त आयोग तथा मनरेगा इत्यादि से राशि स्वीकृत कराने हेतु प्रयास करना।

5.4 पंचायत समिति स्तरीय समीक्षा बैठक में आदर्श विद्यालय के साथ-साथ उत्कृष्ट विद्यालय की प्रगति प्रस्तुत करना।

6. विद्यालय प्रबंधन समिति से समन्वयन एवं शिकायतों का निराकरण :

6.1 ग्राम पंचायत क्षेत्र में स्थित राप्रावि./ राउप्रावि. की विद्यालय प्रबंधन समिति एवं अभिभावक-अध्यापक परिषद की नियमित बैठकें आयोजित कराया जाना एवं विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष तथा सदस्यों से निरन्तर सम्पर्क बनाए रखना।

6.2 विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष/ सदस्यगण तथा अभिभावकों से प्राप्त शिकायतों को पंजिका में दर्ज कर निस्तारण की कार्यवाही करना।

6.3 विद्यालय प्रबन्धन समिति के विधान एवं नियमावली के अनुसार इसकी कार्यकारिणी के दो वर्ष का कार्यकाल समाप्त होने पर साधारण सभा की बैठक बुलाकर नियमानुसार कार्यकारिणी का पुनर्गठन करवाना।

7. ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी एवं जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक शिक्षा से समन्वय व ब्लॉक स्तरीय बैठकों में भाग लेना :

7.1 ग्राम पंचायत क्षेत्र में संचालित राप्रावि./ राउप्रावि. में शैक्षिक गतिविधियों के प्रभावी पर्यवेक्षण हेतु संबंधित बीईईओ./ जिला शिक्षा अधिकारी, प्राशि. से समन्वय करना।

7.2 उपखण्ड अधिकारी की अध्यक्षता में आदर्श/उत्कृष्ट विद्यालयों के

विकास हेतु प्रत्येक माह आयोजित होने वाली ब्लॉक स्तरीय समीक्षा बैठकों में उपस्थित होकर अपने पंचायत क्षेत्र के समस्त राप्रावि./ राउप्रावि. की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करना।

7.3 ग्राम पंचायत की राप्रावि./राउप्रावि. के विकास कार्यों की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्ताव तैयार कर संबंधित बीईईओ. के माध्यम से विकास अधिकारी / जिला शिक्षा अधिकारी (प्राशि.) को स्वीकृति हेतु भिजवाने की कार्यवाही करना।

7.4 शाला दर्शन पोर्टल व अन्य विभागीय पोर्टल की प्रविष्टियों को अद्यतन करने में संबंधित बीईईओ. कार्यालय को सहयोग प्रदान करना।

8. सर्व शिक्षा अभियान के तहत पंचायत रिसोर्स सेन्टर फेसीलेटर तथा संकुल सन्दर्भ केन्द्र प्रभारी को कार्य आवंटित करना :

पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी से सम्बद्ध विद्यालय को पंचायत रिसोर्स सेन्टर के रूप में नामित किया गया है तथा सर्व शिक्षा अभियान योजना हेतु जारी कार्यान्वयन के कार्यतंत्र (frame work) के अनुसार पीईईओ. व उनसे सम्बद्ध पंचायत रिसोर्स सेन्टर को संकुल केन्द्र प्रभारी व संकुल सन्दर्भ केन्द्र घोषित किया गया है। अत: संकुल सन्दर्भ केन्द्र प्रभारी के रूप में पीईईओ. द्वारा निर्धारित दायित्त्वों का निर्वहन किया जाएगा।

पीईईओ. द्वारा संकुल संदर्भ केन्द्र प्रभारी के रूप में ग्राम पंचायत परिक्षेत्र के राप्रावि./राउप्रावि. में शैक्षिक गुणवत्ता, विद्यालयों का निरीक्षण व पर्यवेक्षण, शैक्षिक प्रबन्धन, विद्यालय के भौतिक विकास हेतु योजना तैयार करवाना, सर्व शिक्षा अभियान मद से उपलब्ध करवाई गई राशि का वित्तीय प्रबंधन, विभागीय कार्यक्रमों व गतिविधियों की समीक्षा, न्यू-डाइस, शालादर्शन, शालासिद्धि, स्कूल मोनेटरिंग टूल्स इत्यादि की सूचनाएँ पोर्टल पर अपडेट करवाना तथा ब्लॉक संदर्भ केन्द्र प्रभारी से समन्वय स्थापित कर उपखण्ड अधिकारी की अध्यक्षता में आयोजित मासिक 'ब्लॉक शिक्षा निष्पादन समिति' की बैठक में भाग लेना।

9. प्रशासनिक एवं संस्थापन संबंधी कार्य:-

9.1 ग्राम पंचायत क्षेत्र के समस्त राप्रावि./राउप्रावि. में कार्यरत शिक्षकों/संस्थाप्रधानों के आहरण-वितरण अधिकार व सेवा अभिलेख पंजिका के संधारण एवं अन्य संस्थापन संबंधी कार्य का संपादन पीईईओ. द्वारा किया जाना है इस सम्बन्ध में वित्त विभाग से सहमति प्राप्त कर पृथक से आदेश जारी किए जाएँगे, तब तक पीईईओ. द्वारा उपस्थिति प्रमाणीकरण के आधार पर पंचायत क्षेत्र के समस्त राप्रावि./राउप्रावि. के शिक्षकों/ संस्थाप्रधानों का वेतन बीईईओ. द्वारा आहरित किया जाएगा।

9.2 पीईईओ. द्वारा स्वयं के विद्यालय में ग्राम पंचायत क्षेत्र के राप्रावि./राउप्रावि. के उपस्थिति रजिस्टर (Shadow Attendence Register) का संधारण किया जाए व प्रतिदिन विद्यालय की एसएमसी. के अध्यक्ष/सदस्य या किसी अन्य उपयुक्त व्यक्ति से जानकारी प्राप्त कर उपस्थिति का अंकन किया जाए।

9.3 ग्राम पंचायत क्षेत्र के राप्रावि./राउप्रावि. के संस्थाप्रधानों एवं शिक्षकों के आकस्मिक अवकाश के सम्बन्ध में निम्नानुसार व्यवस्था की गई है :-

विवरण	आकस्मिक अवकाश स्वीकृर्त्ता अधिकारी
राप्रावि. के समस्त शिक्षक एवं अन्य मय समेकित मानदेय पर कार्यरत शैक्षणिक कार्मिक	पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी
राउप्रावि. विद्यालय के संस्थाप्रधान (द्वितीय श्रेणी अध्यापक)	पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी
राउप्रावि. के समस्त शिक्षक एवं अन्य कार्मिक मय समेकित मानदेय पर कार्यरत शैक्षणिक कार्मिक	संबंधित राउप्रावि. का संस्थाप्रधान

9.4 ग्राम पंचायत क्षेत्र में स्थित राप्रावि. एवं राउप्रावि. के संस्थाप्रधानों एवं शिक्षकों के वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन की व्यवस्था निम्नानुसार की गई है :-

कार्मिक का पदनाम	प्रतिवेदक अधिकारी	समीक्षा अधिकारी	स्वीकृति अधिकारी
राप्रावि./राउप्रावि. के समस्त शिक्षक	पीईईओ.	जिला शिक्षा अधिकारी(प्राशि.)	जिला शिक्षा अधिकारी (प्राशि.)
राउप्रावि. के संस्थाप्रधान (वरिष्ठ अध्यापक)	पीईईओ.	जिला शिक्षा अधिकारी (प्राशि.)	उपनिदेशक (प्राशि.)

9.5 ग्राम पंचायत क्षेत्र के राप्रावि./राउप्रावि. के शिक्षकों/संस्थाप्रधानों की शिकायतों की प्राथमिक जाँच का कार्य।

9.6 पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी के निर्देशों/सुझावों की संबंधित संस्थाप्रधान द्वारा पालना नहीं किए जाने पर संबंधित शिक्षक/संस्थाप्रधान के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही हेतु प्रस्ताव तैयार कर संबंधित नियंत्रण अधिकारी को भिजवाने हेतु अधिकृत है।

10. अन्य दायित्व :

10.1 राज्य सरकार, आयुक्त राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद जयपुर, निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा, उपनिदेशक प्राशि., जिला शिक्षा अधिकारी (प्राशि.) एवं जिला परियोजना समन्वयक सर्व शिक्षा अभियान द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों की पालना सुनिश्चित करना।

10.2 पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी का मासिक प्रतिवेदन प्रत्येक माह की 10 तारीख तक शालादर्शन पोर्टल पर अपलोड/अपडेट करना।

10.3 उत्कृष्ट विद्यालय योजना की मार्गदर्शिका के अनुसार ग्राम पंचायत स्तर के विद्यालयों के विकास हेतु प्रभारी अधिकारी के दायित्त्व की पालना करना।

10.4 शाला दर्शन पोर्टल पर नियमित रूप से लॉगिन कर समस्त गतिविधियों का प्रतिवेदन अपलोड करना।

सहायक निदेशक
प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9414030095

आँगनबाड़ी : विद्यालय समन्वय

समन्वित विद्यालय में संस्कारों की स्थापना-पूर्व प्राथमिक शिक्षा

❒ अरुण शर्मा

सीखने का प्रारम्भ जन्म के साथ ही हो जाता है। परिस्थिति से अधिगम के साथ-साथ अनुकरण से सीखने का प्रारम्भ भी बालक माता के पहलु में ही करने लगता है। प्रारंभिक भाषा एवं पहचान बालक अपने परिवेश से ही प्राप्त करता है। शिशु के स्वास्थ्य एवं इसी प्रारंभिक शिक्षा को संस्कारयुक्त बनाने के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा की अवधारणा स्थापित हुई। राज्य में महिला एवं बाल विकास विभाग के माध्यम से संचालित आँगनबाड़ी केन्द्रों पर प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं देखरेख (Early Care and Child Education) कार्यक्रम के तहत कक्षा 3 से 6 वर्ष के शिशुओं को पूर्व प्राथमिक शिक्षा दी जाती है।

शिशु शिक्षा की सबसे महत्त्वपूर्ण शिक्षण विधि है अनुकरण। अर्थात् शिशु जैसा देखेगा-सुनेगा, उसे दोहराने का प्रयास करेगा और अगर वो ऐसा करने में सफल रहता है तो आनन्द अनुभव करेगा। इस प्रकार बाल्यावस्था की आनन्ददायक शैक्षिक लक्ष्य की पूर्ति अनुकरण में स्वत: ही हो जाएगी। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के अनुसार एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पूर्व प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में आयु वर्ग का मानक 3 से 6 वर्ष है और तदुपरांत प्राथमिक शिक्षा प्रारंभ होती है। इसी विचार को लेकर राज्य सरकार द्वारा आँगनबाड़ी को विद्यालयों, जहाँ कक्षा 1 से 5 संचालित है, में समन्वित करने का निर्णय लिया। राज्य सरकार के स्कूली शिक्षा विभाग में विद्यालय के समन्वय से प्रत्येक पंचायत पर कम से कम एक विद्यालय में कक्षा 1 से 12 तक की पूर्ण शिक्षा देने के लिए समन्वय किया गया था। उसी क्रम में आँगनबाड़ी के समन्वय से उस विद्यालय में पूर्व प्राथमिक से प्रारंभ होकर सम्पूर्ण स्कूली शिक्षा एक ही विद्यालय में प्राप्त होगी। इस समन्वय से सीधे सीधे निम्न लाभ समाज को मिलेंगे :-

1. समन्वित विद्यालयों के संस्थाप्रधानों /शिक्षकों द्वारा पर्यवेक्षण से लगभग 13000 आँगनबाड़ी केन्द्रों के प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं देखरेख (Early Care and Child Education) कार्यक्रम के तहत पूर्व प्राथमिक शिक्षा सुनिश्चित हो सकेगी।
2. आँगनबाड़ी केन्द्रों पर 3 से 6 वर्ष की आयु के बालक-बालिकाओं का 6 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर कक्षा 1 में आसानी से प्रवेश सुनिश्चित किया जा सकेगा।
3. गुणवत्तापूर्ण पूर्व प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित होने से प्राथमिक कक्षाओं के सदृढ़ीकरण के स्तर में सुधार होगा।
4. प्रभावी पर्यवेक्षण से आँगनबाड़ी केन्द्रों पर दी जा रही अन्य सेवाओं की गुणवत्ता में भी सुधार होगा।

आँगनबाड़ी के विद्यालय में समन्वय उपरांत दायित्त्व एवं संचालन

- ऐसे विद्यालय जहाँ पूर्व से ही आँगनबाड़ी विद्यालय भवन में ही संचालित हैं उन्हें यथावत संचालित रखते हुए, पूर्ण रूप से विद्यालय संचालन प्रक्रिया से जोड़ना है परन्तु आँगनबाड़ी केन्द्र का समय

महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा निर्धारित समय-सारिणी के अनुसार ही होगा।

- प्रथम चरण में जिस विद्यालय से आँगनबाड़ी केन्द्र 500 मीटर अथवा कम दूरी पर स्थित है और भवन विहीन है विद्यालय में अतिरिक्त कक्ष उपलब्ध है तो आँगनबाड़ी को विद्यालय में स्थानान्तरित कर संचालन किया जाना है। अतिरिक्त कक्ष नहीं होने एवं कक्ष हेतु भूमि उपलब्ध होने की स्थिति में सांसद क्षेत्रीय विकास कोष, विद्यालय विकास कोष, भामाशाह अथवा दानदाताओं के सहयोग से आँगनबाड़ी-कक्ष का निर्माण कराया जाकर उसे विद्यालय में स्थानान्तरित किया जाना है।
- विद्यालय में अतिरिक्त कक्षा-कक्ष एवं कक्ष हेतु अतिरिक्त भूमि न होने की स्थिति में निकटतम आँगनबाड़ी पूर्व स्थान पर रहते हुए विद्यालय से समन्वित होकर संचालित होगी। समय महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा निर्धारित समय-सारिणी के अनुसार ही होगा।
- विद्यालय में समन्वित आँगनबाड़ी-कक्ष के आस-पास पूर्व प्राथमिक के इन शिशुओं के खेलने के लिए अन्य कक्षा के विद्यार्थियों से पृथक स्थान उपलब्ध कराना संस्थाप्रधान को सुनिश्चित करना है। कक्षा 1 एवं 2 के बच्चे भी इस स्थान पर अपने संबंधित शिक्षक की देखरेख में यहाँ खेल सकते हैं।
- कतिपय आँगनबाड़ी केन्द्रों पर एनटीटी. प्रशिक्षित शिक्षक कार्यरत हैं, वे आँगनबाड़ी-कार्यकर्त्ता की अनुपस्थिति में केन्द्र का संचालन करेंगे तथा इनकी उपस्थिति समन्वित विद्यालय का संस्थाप्रधान प्रमाणित कर के सीडीपीओ. को भेजेंगे।
- आँगनबाड़ी की कार्यकर्त्ता एवं सहायिका की समय पर उपस्थिति का प्रमाणीकरण संस्थाप्रधान द्वारा किया जाना है।
- विद्यालय में प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने वाले शिक्षकों में से प्राथमिकता से एक महिला शिक्षक अकादमिक मेंटर की भूमिका

निभाएँगी। संस्थाप्रधान किसी एक उपयुक्त शिक्षक को पूर्व प्राथमिक शिक्षा का उत्तरदायित्व देकर जिला शिक्षा अधिकारी एवं उप निदेशक (महिला एवं बाल विकास विभाग) को सूचित करेंगे। उक्त प्रभारी आँगनबाड़ी-कार्यकर्त्ता के अवकाश पर अथवा अनुपस्थित रहने की सूचना महिला पर्यवेक्षक एवं संस्थाप्रधान को देंगे और वैकल्पिक व्यवस्था होने तक कक्षा 7 की बालिकाओं के सहयोग से बच्चों के साथ शिशु खेलों का आयोजन करेंगे।

- संस्थाप्रधान द्वारा विद्यालय में आयोज्य सभी अकादमिक एवं प्रशासनिक बैठकों में आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ता एवं सहायिका भी भाग लेंगे। इसी प्रकार समेकित बाल विकास सेवाओं के तहत प्रतिमाह आयोजित होने वाले ईसीसीई.-डे संस्थाप्रधान की अध्यक्षता में मनाया जाए, जिसमें पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रभारी, आँगनबाड़ी-कार्यकर्त्ता, सहायिका एवं कक्षा 7 की बालिकाओं को सम्मिलित किया जाए। उक्त दिवस को विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति की बैठक से जोड़ने का प्रयास किया जाए। उक्त दिवस को जनप्रतिनिधियों एवं अभिभावकों की उपस्थिति के लिए संस्थाप्रधान द्वारा प्रेरित किया जाए।
- आँगनबाड़ी केन्द्र में दिए जाने वाले पोषाहार की गुणवत्ता, मानदंड एवं समयबद्धता को संस्थाप्रधान सुनिश्चित करें।
- समेकित बाल विकास सेवाओं के अन्तर्गत महिला पर्यवेक्षक द्वारा निर्धारित प्रारूप के अनुरूप आँगनबाड़ी का पर्यवेक्षण किया जाता है। उक्त पर्यवेक्षण के उपरांत महिला पर्यवेक्षक इसकी प्रति उपनिदेशक के साथ-साथ विद्यालय के संस्थाप्रधान को भी देंगी, जिससे वे अपने पर्यवेक्षण एवं संचालन में उक्त को भी ध्यान रख सके। संस्थाप्रधान अपने पर्यवेक्षण की रिपोर्ट जिला शिक्षा अधिकारी को प्रस्तुत करेंगे, जो उप निदेशक (महिला एव बाल विकास विभाग) के साथ तीन माह में एक बार बैठक कर समीक्षा करेंगे। जिला स्तर पर निष्पादक समिति की बैठक में उक्त की रिपोर्ट जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रस्तुत की जानी है।
- आँगनबाड़ी की सेवाओं में शिशु स्वास्थ्य के अतिरिक्त महिला स्वास्थ्य की गतिविधियाँ भी संचालित है। संस्थाप्रधान यह अवश्य ध्यान रखें कि उन गतिविधियों पर विपरीत प्रभाव न पड़े।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा समन्वित विद्यालय की गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा के साथ ही विद्यालय चाइल्ड़ मेपिंग एवं नामांकन हेतु सहायक सिद्ध होगा। विद्यालय के प्रवेशित होने वाले बालकों का स्वास्थ्य एवं गुणवत्तापूर्ण पोषाहार का प्रबोधन संस्थाप्रधान द्वारा प्रारंभ से ही किए जाने से, शिशु को अच्छे विद्यार्थी के रूप में तैयार करने में उनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण होगी। विद्यार्थी के संस्कार उसके शैशवकाल में ही पड़ते हैं और इन आदर्श समन्वित विद्यालयों में संस्कार एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का समन्वित दायित्त्व विद्यालय का है अत: इसके लिए समन्वित विद्यालय के संस्थाप्रधान को सजग एवं संवेदनशील बने रहना होगा।

सहायक निदेशक (माध्य.)
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9828460156

मासिक गीत

ध्येय साधना अमर रहे...

ध्येय साधना अमर रहे, ध्येय साधना अमर रहे।।ध्रु.।।

अखिल जगत को पावन करती,
रक्त उरों में आशा भरती,
भारतीय सभ्यता सिखाती,
गंगा की चिर धार बहे।।1।।

इससे प्रेरित होकर जन-जन,
करे न्यौछावर निज तन-मन-धन,
पालें देश-भक्ति का प्रिय प्रण,
अडिग लाख आघात सहे।।2।।

भीति न हमको छूने पाएँ,
स्वार्थ लालसा नहीं सताएँ,
शुद्ध हृदय ले बढ़ते जाएँ,
धन्य धन्य जग आप कहे।।3।।

जीवन पुष्प चढ़ा चरणों में,
माँगे मातृ-भूमि से यह वर,
तेरा वैभव अमर रहे माँ,
हम दिन चार रहे न रहे।।4।।

संकलनकर्ता-**मुकेश कुमार लखारा,** व्याख्याता
राउमावि. मारुड़ी, बाड़मेर
मो. 8003890145

ऐतिहासिक पहल

फेस्टिवल ऑफ एज्यूकेशन

❒ योगेन्द्र प्रसाद शर्मा

राज्य सरकार द्वारा जेम्स एज्यूकेशन इण्डिया के सहयोग से दिनांक 5 एवं 6 अगस्त 2017 को जेईसीसी, सीतापुरा जयपुर में फेस्टिवल ऑफ एज्यूकेशन का आयोजन One Young Rajasthan की थीम पर किया गया। फेस्टिवल का उद्देश्य राजस्थान के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए नवाचारों को विश्व स्तरीय मंच प्रदान करना एवं विश्व में शैक्षिक क्षेत्र में हो रहे नवाचारों को राज्य में क्रियान्वित किया जाना था जिससे राज्य के युवाओं को एक मंच प्राप्त हो सके।

कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने एवं क्रियान्विति की सतत समीक्षा हेतु मुख्य सचिव राजस्थान सरकार की अध्यक्षता में Sterring Committee तथा शासन सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग की अध्यक्षता में Executive Committee गठित की गई। कार्यक्रम की समस्त तैयारियों हेतु आयुक्त, राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्, जयपुर को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया। माननीया मुख्यमंत्री महोदया, शिक्षा मंत्री महोदय, मुख्य सचिव महोदय, शासन सचिव महोदय एवं कार्यक्रम के नोडल अधिकारी आयुक्त महोदय की अध्यक्षता में विभिन्न बैठकें आयोजित कर तैयारियों की सतत समीक्षा की गई। बैठकों में जेम्स प्रतिनिधि उपस्थित रहे। कार्यक्रम की गहन तैयारियों हेतु राज्य प्रशासनिक सेवा के 11 अधिकारियों की अध्यक्षता में कमेटियों का गठन किया गया। उक्त कमेटियों के कुशल प्रबन्धन एवं नेतृत्व में ही यह ग्लोबल स्तर का कार्यक्रम सफल हो पाया।

कार्यक्रम जेईसीसी के तीन हॉलों में सम्पन्न हुआ। जिनका नाम क्रमश: Fundamental Hall, Elemental Hall और Experimental Hall रखा गया। Fundamental Hall में उद्घाटन कार्यक्रम Key note Addressess, Antaragni, Panel Discussion, Proview, Round Robin, Dialog के सत्र हुए। तीनों हॉलों में कुशल प्रबन्धन हेतु भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को हॉलों के प्रभारी अधिकारी नियुक्त किया गया। प्रथम हॉल प्रभारी श्रीमती आनन्दी, राज्य परियोजना निदेशक, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्, द्वितीय हॉल के प्रभारी श्री नथमल डिडेल निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान एवं तृतीय हॉल के प्रभारी श्री पी.सी. किशन, निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान को नियुक्त किया गया।

उद्घाटन सत्र में Sairi Rahangdale द्वारा माँ सरस्वती की वन्दना, श्री अशोक जैन, मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार व श्री अमरीश चन्द्रा, ग्रुप प्रेसीडेण्ट जेम्स ग्रुप द्वारा स्वागत भाषण तथा यूएई के संस्कृति एवं नॉलेज मंत्री H.H. शेख नहायन मुबारक अल नहायन, माननीया मुख्यमंत्री महोदया श्रीमती वसुन्धरा राजे, माननीय केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमान प्रकाश जावड़ेकर, हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सम्मानित सदस्य और ब्रिटिश काउंसिल की उप सभापति माननीया ब्राउनेस ऊषा पाराशर के द्वारा उद्बोधन हुए। उद्घाटन सत्र में उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी, स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग के माननीय मंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी जी, राज्य से लोकसभा एवं विधानसभा के सम्मानित सदस्य, विभागों के सचिव महोदय, राज्य के प्रशासनिक अधिकारी, निदेशालय बीकानेर, एसआईईआरटी. उदयपुर, उपनिदेशक, प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा, जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा, शिक्षक एवं बच्चे उपस्थित रहे।

उद्घाटन सत्र में शिक्षा के क्षेत्र विद्यालयों में मुक्त हस्त से ऑनलाइन सहयोग प्रदान करने के लिए सीएसआर. पोर्टल को लॉंच किया गया। लॉंचिंग के समय उपस्थित गणमान्यजनों के द्वारा ई-पैड पर अपने संदेश अंकित किए गए।

मध्यान्तर के पश्चात प्रिव्यू में Tradition in a time of Exponential Change विषय पर **Tony Little** Group Chief Education Officer GEMS Education द्वारा सत्र हुआ जिसे **Maria Mathai** Director MM Advisory Services and Former Director of Canadian Education Center India के द्वारा Moderate किया गया। अगले Proview में Education Challenges in our Contemporary world विषय पर **Sanjay Vijay Kumar,** Founder and Chairman Start up village के द्वारा जिसे **Shalini Nambiar** VP Education and Principal GEMS International School Gurgaon ने मॉडरेट किया।

चाय समय के पश्चात **How To Improve Govt. Schools** से विषय पर राउण्ड रोबिन के प्रथम पैनल चर्चा में श्रीमान अनिल स्वरूप, सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, **Prof. Lord Patel of Bradford OBE,** Member House of Lords, UK and Senior Advisor Vice Chancellor, and University Director of Strategic Partnership, University of East London, **Sir Michael Wilshaw,** Professor of Education, **St. Mary's University, London, Urvashi Sahani,** Founder, President and CEO, Study Hall Educational Foundation, Moderated By **Dr. Arun Kapur,** Director, Vasant Valley School, Delhi ने भाग लिया। इस पैनल चर्चा में राजस्थान में शैक्षिक परिदृश्य में हो रहे नवाचारों को सभी के द्वारा स्वीकार किया गया और श्रीमान अनिल स्वरूप, सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने माना कि देश के अन्य राज्यों को भी राज्य के विद्यालय समन्वय, आँगनबाड़ी समन्वयन, पीईईओ कॉनसेप्ट को अन्य राज्यों में अपनाया जाएगा। राजस्थान को आधार मानकर विद्यालय समन्वयन के विस्तृत दिशा-निर्देश मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा बना लिए

गए हैं। जिनकी अनुपालना अन्य राज्यों से करवाई जाएगी।

Dialog प्रथम में **Dayna Mertin** Author, Speaker & Voice for Change ने **radical unschooling future of educaiton** पर चर्चा की। जिसे **Mariya Mathai** के द्वारा मॉडरेट किया गया।

Fundamental Hall में द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र **Proview-3** में **Rajiv Pratap Rudy,** Hon'ble Union Minster of State (I/C) of Skill Development and Enterprenesurship, Govt. of India के द्वारा The Critically of Skill Development and Vocational Training In India पर चर्चा की जिसे Bhavik Anjaria, Chief Advisor, GEMS India के द्वारा मॉडरेट किया गया।

Proview-4 में **Dr. Bharat Thakur,** Himalayan Yoga Guru, Chairman & Founder, Bharat Thakur Artistic Yoga द्वारा **Illness of Wellness** विषय पर योग के महत्त्व पर विस्तार से चर्चा की गई।

Proview-5 में **Dame Asha Khemka** DBE, Principal and Chief Executive, West Nottinghamshire College, Group द्वारा **Leading a Skills Revolution- Changing Mindsets, Transforming Lives** विषय पर चर्चा की गई जिसे **Dr. Anita Rampal,** Professor of Elementary & School Education, Delhi University के द्वारा Moderated किया गया।

चतुर्थ सत्र में Round Robin (Panel Discussion)-2 में **Importance of Technical Education in the New Age** विषय पर James Oliverio, Executive Director, Digital Worlds Institute, University of Florida, **Alan Lowe,** CEO, IOCOM, London Professor **C.V.R. Murty,** Director, IIT, Jodhpur द्वारा विस्तृत चर्चा की गई इस सत्र को **Dr. Amrita Vohra,** General Manager Education, GEMS, India द्वारा Moderated किया गया।

Proview-6 में Charles Parker, CEO Bkar Dearing Educational Trust, London, **Challenges and opportunities for Educational Innovation a change Resisting System** विषय पर **Charles Parker,** CEO Baker Dearing Educational Trust London द्वारा चर्चा की गई। इस सत्र को **Yogini Jogelekar,** APAC Director, Corporate and Academic Relations, Mounbatten Institute. द्वारा Moderated किया गया।

Round Robin (Panel Discussion)-3 में **Re Imagining Schools** विषय पर **Lata Vaidyanathan,** Principal Modern School, Delhi, **Jennifer Star,** Founding Director, Tara, Ed. and Manager, Professional Learning, ACER India, **Fracis C Joseph,** Co-Founder, The school Leader Network **Gowri Inshwaran,** Educationist and CEO, the globel Education Leadership Foundation के द्वारा राजस्थान एवं भारत के स्कूलों के परिदृश्य पर चर्चा की गई इस सत्र को **Dino Varkey,** GEMS Education-MENASA के द्वारा मॉडरेट किया गया।

चाय पश्चात् Round Robin (Panel Discussion)-4 में **The Future of Educaiton** विषय पर **Lina Ashar,** Founder, Kangaroo Kids Education Ltd. **Hazel Siromoni,** Managing Director, Maple Bear India **Timothy Difato,** Associate Director of Business Development, Digital worlds Institute, University of Florida **Dr. Mary Elizabeth Wilson,** Chief Learning officer, GEMS Education Americans and Education Partners के द्वारा चर्चा की गई। इस सत्र को **Kaadambari Muttoo,** VP Education, GEMS India के द्वारा मॉडरेट किया गया।

Proview-7 में **Geoffrey Fowler,** Principal and CEO, London Design & Engaineering UTC, London, द्वारा **The School of the future: Technical Skills and innovative Delivery Models** विषय पर अपने विचार व्यक्त किए गए इस सत्र को **Malini Sen,** Senior Editor, Times of India, के द्वारा मॉडरेट किया गया।

Proview-8 में **Denise Gallucci,** CEO, GEMS Educaiton- Americas and the Education Partners, के द्वारा Transforming Education : Policy through Implemenation विषय पर चर्चा की गई। **Malini Sen** के द्वारा ही इस सत्र को मॉडरेट किया गया।

हॉल–2, Elemental Hall एलीमेन्टल हॉल को 5 मुख्य भागों में विभाजित किया गया। मध्य भाग को Earth और चार भागों को Aether, Water, Wind & Fire नाम दिया। हॉल के पाँचों भागों में अलग अलग कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस हॉल के कार्यक्रमों में **गायक कलाकार एवं कम्पोजर, शंकर महादेवन, सोनम महापात्रा, प्रसिद्ध फोटोग्राफर और फोटो जर्नलिस्ट रघुराय एवं अवनी राय, प्रसिद्ध सिने अभिनेत्रियाँ शबाना आज़मी, दिव्या दत्ता, सुष्मिता सैन एवं प्रसिद्ध अभिनेता अक्षय कुमार, फैशन डिजाइनर जे.जे. बलाया, प्रसिद्ध न्यूट्रिशियन एवं लेखिका पूजा मखिजा, प्रसिद्ध योग गुरु भरत ठाकुर, Gems Oliverio & Timothy T. Difato Executive Director Digital Wods Institute Univt. of Florida** जैम्स ओलिवर ने भाग लेकर अपनी प्रतिभा के विषय में रूबरू कराया।

हॉल–3– Experemental Hall के प्रारम्भिक भाग में आधुनिक तकनीकी, बच्चों के गेम्स, दौड़, विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्टॉल्स, फूड कोर्ट, विभिन्न बैण्डों की प्रस्तुति के साथ एक भाग में **शिक्षांगन** नाम से प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा की विभिन्न गतिविधियों एवं नवाचारों को प्रदर्शनी के रूप में प्रदर्शित किया गया।

कार्यक्रम का समापन सत्र Elemental Hall के Earth में सम्पन्न हुआ जिसमें महामहिम राज्यपाल महोदय, मुख्यमंत्री महोदया के साथ देश–विदेश के गणमान्य लोग उपस्थित थे। समापन सत्र में राज्य के 10 सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों को एवं एज्यूकेशन फेस्टिवल के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान शंकर महादेवन के द्वारा शंकर महादेवन एकेडमी खोलने की घोषणा, अक्षय कुमार द्वारा हाइजिन, नेपकिन पैड एवं ODF पर राज्य के साथ कार्य करने की घोषणा, ब्रिटिश काउसिंल द्वारा राजस्थान को एज्यूकेशन हब के रूप में विकसित करने में योगदान दिए जाने एवं भरत ठाकुर द्वारा राज्य में पहली योगा यूनिवर्सिटी स्थापित करने की घोषणा की गई।

उपनिदेशक (गुणवत्ता शिक्षा)
राप्राशिप., जयपुर
मो. 9521431313

शैक्षिक चिन्तन

राष्ट्र के विकास का आधार शिक्षा

❒ बजरंग प्रसाद मजेजी

शिक्षा व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व सम्पूर्ण मानवता के विकास का आधार है। शिक्षा के द्वारा सबल, सक्षम तथा विकसित राष्ट्र के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होता है। किसी भी देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विकास में शिक्षा का विशेष महत्व होता है। शिक्षा मानवीय गुणों को बढ़ाने के साथ मानव समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, बुराइयों को दूर करके प्रगतिशील समाज की रचना में योगदान करती है। शिक्षा के द्वारा उद्योगों को सम्बल मिलता है, जिसके फलस्वरूप देश आर्थिक समृद्धि करता है। देश की आर्थिक प्रगति, विकास, उसकी शिक्षा नीति पर निर्भर करते हैं। जो राष्ट्र जितना शिक्षित है, वह सभी क्षेत्रों में उतनी ही शक्ति संचय करके राष्ट्रों के संघ में अपना गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करने में समर्थ हुआ है। प्रत्येक राष्ट्र के गठन, विकास, प्रगति, उत्पादन, स्वास्थ्य, रक्षा का मुख्य आधार शिक्षा ही होती है। राष्ट्र की उन्नति उसकी युवा शक्ति और सशक्त मानव संसाधन पर निर्भर करती है, जिसका सबसे बड़ा आधार शिक्षा है।

शिक्षा व्यवस्था तभी सफल होती है जब बालकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास को लक्ष्य बनाती है; ऐसी शिक्षा ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कहलाती है। बेहतर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से आशय शिक्षा में वर्तमान प्रौद्योगिकी, विज्ञान, भाषा, साहित्य और समाज विज्ञान के समावेश, उपलब्धता से है, जिससे सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ-साथ आधुनिक प्रगतिशील सोच भी विद्यार्थियों में परिलक्षित हो। प्रसिद्ध विचारक माधव गोविन्द वैद्य ने कहा कि शिक्षा का प्रयोजन मनुष्य निर्माण है। मनुष्य पूर्णतः संस्कारित हो, उसमें अच्छा-बुरा, इष्ट-अनिष्ट का विवेक करने की क्षमता विकसित हो सके। लोगों को केवल साक्षर बनाना शिक्षा का हेतु नहीं हो सकता। साक्षराः शब्द को विपरीत ढंग से बाएँ से दाहिने ओर पढ़ें तो शब्द 'राक्षसाः' बनता है। उनका मानना था कि साक्षर संस्कारमय हों, व्यापक मन और तदनुसार आचरण करने वाले हों, ताकि अपना समाज

दुनिया के लिए एक आदर्श समाज बने। इतिहास साक्षी है कि रामचन्द्र ने पितृ-मातृ का वचन पालन कर मूल्य स्थापित किया। भरत को अनायास राजगद्दी मिल गई, परन्तु वे सिंहासन पर नहीं बैठे, अपितु संन्यासी जैसा जीवन व्यतीत किया। पन्नाधाय ने राज्य सेवक का धर्म निर्वाह कर अपने पुत्र का बलिदान कर दिया। छत्रपति शिवाजी महाराज के सामने पराजित शत्रु की लावण्यमयी महिला को एक सरदार हाजिर करता है ताकि वे खुश हो जाए, परन्तु शिवाजी महाराज उस महिला को माँ का संबोधन देकर ससम्मान उसके घर पहुँचाने का आदेश देते हुए 'मातृवत् परदारेषु' जैसे जीवन मूल्य का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। कृष्ण ने गरीब सहपाठी सुदामा को सम्मान देकर सखा धर्म का निर्वाह किया। जीवन में ऐसे प्रेरणा और संस्कार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से ही संभव है। भारत ने संसार को शिक्षा और संस्कृति का पाठ पढ़ाया तथा जीवनशैली और सशक्त समाज की स्थापना का संदेश दिया है।

शिक्षा विकास का आधार :- प्राचीन काल से ही भारत विश्वगुरु इसलिए था कि तत्कालीन ऋषियों, तपस्वियों, महापुरुषों की शिक्षा के प्रति ठोस कार्य प्रणाली थी। भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था बहुत सम्पन्न थी। शिक्षण संस्थाओं में किसी प्रकार का राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं था। शिक्षण संस्थाएँ स्वायत्त तथा

स्वतंत्र थीं, उनके आचार्य निर्भय थे। राजा-महाराजाओं को भी गुरुकुलों में आचार्यों द्वारा प्रणीत जीवन मूल्यों तथा आदर्शों का पालन करना पड़ता था। श्रवण, मनन, स्वाध्याय, प्रश्नोत्तर, शंका निवारण, वाद-विवाद, प्रयोग, अभ्यास, ज्ञानार्जन के प्रमुख अंग माने जाते थे। प्राचीन भारत में शिक्षा के केन्द्र तक्षशिला, नालन्दा, वल्लभी, विक्रमशिला, कांची, काशी थे। इनमें शस्त्र-शास्त्र, नीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, राज्य-प्रबंधन, नैतिक संस्कारों की शिक्षा दी जाती थी। इन शिक्षा केन्द्रों का अनुशासन राजा-रंक को एक समान रूप से मानना होता था। शिक्षक के रूप में वेदव्यास, वशिष्ठ, विश्वामित्र, महर्षि अत्रि, भारद्वाज, अगस्त्य, याज्ञवल्क्य, शौनक, आदि शंकराचार्य, मनु, मण्डन मिश्र, पाराशर जैसे विद्वान शिक्षा शास्त्री आचार्य थे, जिन्होंने शिष्यों को सभी विद्याओं में पारंगत कर, संस्कारित शिष्यों का निर्माण किया। प्राचीन भारत के तत्कालीन वैज्ञानिक ऋषियों ने शून्य की संकल्पना विश्व को दी थी। ई.सं. 3000 पूर्व गणित सम्बन्धी महत्वपूर्ण जानकारियाँ उन्हें थी। शून्य सूत्र और ज्यामिति के अनेक सूत्रों को हमारे प्राचीनकालीन गणितज्ञ जानते थे। ग्रहों की गति, उनका राशियों में प्रवेश, कृषि, चिकित्सा, भौतिक शास्त्र, तकनीक शास्त्र का मौलिक ज्ञान भारतीय विद्वानों को था। भारत की सम्पन्न शिक्षा, व्यवस्था का वर्णन प्रसिद्ध लेखक धर्मपाल ने अपने ग्रन्थ 'सुन्दर वृक्ष' (दी ब्यूटीफुल ट्री) में किया है। अनेक विदेशी यात्रियों ने भी भारत की शिक्षा व्यवस्था की प्रशंसा की है। पाश्चात्य विद्वानों में ए. मेंकोनीची, वीलर-यूनीलकोज, पी. जॉनस्टोन, शॉपन हावेर, मैक्समूलर आदि ने भारत की शिक्षा, विकास में शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया। जेक्स सरवन श्राइवर ने 1968 में उनकी प्रकाशित पुस्तक 'द अमेरिकन चेलेन्ज' में अमेरिका के विकास का श्रेय शिक्षा पर विशेष ध्यान देना माना है। उनका मानना था कि शिक्षा ज्ञान के क्षितिज का विस्तार करती है। अस्पृश्यता, बेगार प्रथा, नारी शोषण व सामन्तवादी प्रवृत्ति को शिक्षा ने ही धराशायी किया था। इसीलिए कहा जाता है कि किसी देश की भव्यता, सुन्दरता, शालीनता तथा महानता का आकलन उस देश की भव्य व गगनचुंबी अट्टालिकाओं से नहीं किया जा सकता वरन् उस देश के नागरिकों के सच्चरित्र से किया जा सकता है। महर्षि अरविन्द के अनुसार-''शिक्षा जो केवल ज्ञान देने तक ही अपने आपको सीमित रखती है, वह कोई शिक्षा नहीं है। शिक्षा का मूल उद्देश्य बालक के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उसका चारित्रिक एवं आत्मिक उन्नति में सहायक होना भी है।'' शिक्षा का सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के विकास से है। व्यक्ति के सद्गुण, कार्य, निष्ठा देश के विकास में सहायक होते हैं।

भारत में शिक्षा का विकास :- भारत की वैज्ञानिक सोच एवं प्रगति का प्राचीन इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। आज देश कृषि उत्पादन में न केवल आत्मनिर्भर अपितु निर्यात की स्थिति में है। आधारभूत सुविधाओं का विस्तार, विशेष औद्योगिक उत्पादन, ऊर्जा में प्रगति, वैज्ञानिक अनुसंधान में प्रगति, सूचना प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष अनुसंधान, रक्षा यंत्रों में आत्मनिर्भरता हमारे देश के विकास के द्योतक हैं। भारत के चिकित्सा अनुसंधान, पर्यावरण, खनिज, सॉफ्टवेयर प्रोफेशनल्स की प्रगति, जल संरक्षण के प्रयास, इंटरनेट क्षेत्र में पारंगतता, आवागमन साधनों का विस्तार, सड़कों का जाल देश की उन्नति को दर्शाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राज्यों के विश्वविद्यालय, डीम्ड विश्वविद्यालय, निजी विश्वविद्यालयों की प्रचुर संख्या के अतिरिक्त आई आई टी., आई आई एम., एन आई टी., तकनीक शिक्षा परिषद्, यूजीसी., एन सी ई आर टी., एन सी टी ई., भारतीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, मेडिकल काउंसलिंग ऑफ इंडिया, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट ऑफ इंडिया जैसी अनेक संस्थाएँ, सभी क्षेत्रों में नवयुवकों को निपुण करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। शिक्षा में शैक्षिक गुणवत्ता पर केन्द्र और राज्य सरकारें पूरा ध्यान दे रही हैं। केन्द्र सरकार ने परिक्षाओं में सुधार हेतु 'राष्ट्रीय बोर्ड' बनाने की घोषणा की है। देश का विकास शिक्षा से ही संभव है, यह विचार व्यक्त करते हुए पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा है कि-''देश में फैली निरक्षरता, गरीबी, अज्ञानता, रूढ़िवादिता तब तक नहीं मिटेगी जब तक सरकार और जनता शिक्षा पर ध्यान देकर प्रयत्न नहीं करेगी। प्रत्येक देशवासी को आगे बढ़ने के समान अवसर तब तक नहीं मिलेंगे जब तक शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन नहीं होगा।'' उन्होंने 5 सूत्रों-निरक्षरता उन्मूलन (75 प्रतिशत साक्षरता), कठिन परिश्रम, अमीर-गरीब की खाई पाटना, पर्यावरण शुद्ध करने हेतु वृक्षारोपण, जल संग्रहण के प्रति सभी नागरिकों को ध्यान देने की आवश्यकता बताई। डॉ. कलाम के एक गीत 'यौवन का गीत' की ये पंक्तियाँ प्रासंगिक हैं-

धरती पर, धरती से ऊपर,
और धरती के भीतर भी,
मैं ज्ञान का दीपक जलाए रखूँगा,
ताकि पूरा हो सके स्वप्न-
'विकसित भारत का।'

प्रधानाध्यापक (से.नि.)
सांपला (अजमेर)-305404
मो. 9460894708

चलें चलें! चलें चलें!

चलें चलें! चलें चलें!
चलें चलें हम निशदिन अविरत,
चलें चलें हम सतत चलें।।
कर्म करें हम निरलस पल-पल,
दिनकर सब हम सदा जलें।।
सोते नर का भाग्य सुप्त है,
जागे नर का भाग्य जागता।
उठने पर वह झट से उठता,
पग बढ़ते ही वह भी बढ़ता।
आत्मवचन यह ऋषि मुनियों का,
नर है नर का भाग्य विधाता।
पुरखों की यह सीख समझकर,
कर्म लीन हो सदा चलें।
चलें-चलें।

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा-चिन्तन

❐ सुरेन्द्र माहेश्वरी

इतिहास पुरुष स्वामी विवेकानन्द ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को सम्पूर्ण विश्व में प्रचारित करते हुए अपनी ओजपूर्ण वाणी से भारतवासियों को जाग्रत करते हुए संदेश दिया है कि यदि भारत देश को अशिक्षा, कुसंस्कारों, असामाजिकता, संस्कारहीनता और दुर्बलता से मुक्ति दिलानी है तो जन शिक्षा को व्यापकता देनी होगी। श्री रामकृष्ण ने भी कहा, ''जब तक मैं जीवित हूँ तब तक सीखता रहूँगा। वह व्यक्ति, वह समाज जिसके पास सीखने को कुछ भी नहीं है, वह पहले से ही मौत के जबड़े में है।'' स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से जो भी कमजोर बनाता है उसे जहर की तरह त्याग दो। हमारा कर्त्तव्य है कि हम किसी को उसका उज्ज्वल, आदर्श जीवन जीने के संघर्ष में प्रोत्साहित करें। जीवन में उच्चादर्शों को प्राप्त करने के लिए हम जितना ज्यादा हो सके बाहर आएँ और दूसरों का भला करें। हमारा हृदय उतना ही शुद्ध होगा और परमात्मा उसमें बसेंगे।

स्वामीजी का राष्ट्रव्यापी उद्घोष था, ''मेरी समस्त भावी आशाएँ उन युवकों में केन्द्रित हैं जो चरित्रवान एवं बुद्धिमान है।'' उन्होंने आह्वान किया, ''उठो मेरे शेरो! इस भ्रम को मिटा दो कि तुम दुर्बल हो, तुम एक अमर आत्मा हो, सनातन हो, स्वच्छंद जीवन हो। हमारी सोच ही हमें महान बनाती है।'' हम वैसे हैं जैसा हमारी सोच ने हमें बनाया है। इसीलिए इस बात का ध्यान रखिए कि आप क्या सोचते हैं। शब्द गौण हैं, विचार प्रमुख हैं। वे दूर तक यात्रा करते हैं। अतः सुसंस्कारी शिक्षा की अनिवार्यता है। हमें ऐसी शिक्षा मिले कि हम हर किसी को उसका उच्चतम आदर्श जीने के संघर्ष हेतु प्रोत्साहित करें। किसी चीज से डरो मत। तुम अद्भुत काम करोगे। यह निर्भयता ही है जो क्षणभर में आनन्द लाती है। कुछ मत पूछो, बदले में कुछ मत माँगो, जो देना है वह देगा। वह तुम तक वापस आएगा पर उसके बारे में अभी मत सोचो।

स्वामी विवेकानन्द वेदान्त और पाश्चात्य शिक्षा दोनों को साथ रखते हुए शिक्षा द्वारा विश्व कल्याण की भावना को प्रसारित करना चाहते थे। स्वामीजी का शिक्षा के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण था। उच्च आदर्शों की अभिप्राप्ति के लिए शिक्षा को ही सर्वोपरि साधन मानते थे। उनके अनुसार मानव विकास के लिए आचरण शुद्धि, भाईचारा, संवेदनशीलता, बंधुत्व की भावना, दलितों का उद्धार, नारी चेतना और समरसता की प्रधानता हेतु शिक्षा की अनिवार्यता है। शिक्षा द्वारा आज का बालक जब कल का नागरिक बने तो वह समाजसेवा, धार्मिक सद्भावना, जनशिक्षा और श्रेष्ठ नागरिकता की दिशा में प्रवृत्त हो। विश्व शांति और अध्यात्म की दिशा में उन्मुख करने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण संसाधन है। शिक्षा द्वारा ही अभूतपूर्व सामाजिक परिवर्तन संभव है। स्वामीजी का शैक्षिक चिंतन जनकल्याणकारी होने के कारण ही विश्व समुदाय में आदरणीय रहा। यह गर्व की बात है कि स्वामीजी ने अपने शैक्षिक चिन्तन द्वारा ही विश्व पटल पर अपना धर्म-ध्वज लहराया। उनका जीवन दर्शन व शैक्षिक चिन्तन आदर्श, अनुकरणीय तथा लोकोपकारी सिद्ध हुआ।

स्वामीजी सभी धर्मों को समान मान्यता देते थे। स्वामीजी के अनुसार शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है। सम्पूर्ण शिक्षण प्रशिक्षण का उद्देश्य मनुष्य निर्माण का ही रहा है। वर्तमान में शिक्षा व शिक्षण पर पाश्चात्य प्रभाव अवश्य है, किन्तु स्वामीजी के शैक्षिक चिन्तन का पूरा प्रभाव समग्र शिक्षा व्यवस्था पर दृष्टिगत होता है। उनके विचार में शिक्षा का मूल उद्देश्य मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, धार्मिक, नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक विकास करना है। शिक्षा द्वारा मानव अपनी वैचारिक मुक्तता के साथ ही देश भक्ति से परिपूर्ण रहकर राष्ट्र के लिए समर्पित हो सकता है।

शिक्षा ऐसी हो जो मानव मन में आत्मविश्वास, आत्मश्रद्धा, आत्मत्याग, आत्मनियंत्रण, आत्मनिर्भरता तथा आत्मज्ञान जैसे विशिष्ट गुणों का प्रादुर्भाव कर सके। स्वामीजी के अनुसार शिक्षा बच्चे की आवश्यकता और स्वभाव के अनुसार होनी चाहिए। वे ऐसे बालकों का निर्माण चाहते थे जिनके चेहरे पर आभा, शरीर में बल, मन में प्रचण्ड इच्छा शक्ति, बुद्धि में पाण्डित्य, जीवन में स्वावलंबन, हृदय में शिव, प्रताप, ध्रुव तथा प्रह्लाद की जीवन गाथाएँ अंकित हो, उन्हें देखकर महापुरुषों की स्मृतियाँ झंकृत हो उठें।

नारी शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए स्वामीजी ने कहा है कि ''स्त्री जाति की उन्नति के बिना भारत कभी भी विकास नहीं कर सकता। उस देश व राष्ट्र के महान बनने की कोई आशा नहीं की जा सकती, जहाँ नारी जाति का अपमान हो और वह अशिक्षा के बंधन से मुक्त रह सके।'' उनकी दृष्टि में निर्धनता और दरिद्रता जनशिक्षा की राह में सबसे बड़ी बाधा है। जन शिक्षा को महत्ता प्रदान करते हुए उन्होंने कहा है कि, ''जनशिक्षा द्वारा ही राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण किया जा सकता है। शिक्षा व्यक्ति को उसके समाज, देश और विश्व के साथ जोड़कर मानवता की भावना का विकास कर सकती है। विश्व के प्रति संवेदनशील वही हो सकता है जो राष्ट्रहित के लिए मन, वचन और कर्म से तत्पर हो और वही सच्चा भारतीय कहलाने योग्य है।

स्वामीजी ने वर्तमान शिक्षा की न्यूनताओं

का वर्णन करते हुए बताया कि ''आज की शिक्षा की सबसे बड़ी खामी यह है कि इसके सामने अनुकरण करने के लिए कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है। एक चित्रकार अथवा मूर्तिकार यह जानता है कि उसे क्या बनाना है तभी वह अपने कार्य में सफल हो पाता है। आज शिक्षक को यह स्पष्ट नहीं है कि वह किस लक्ष्य को लेकर अध्यापन कार्य कर रहा है। सभी प्रकार की शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करना है। इसके लिए वेदान्त के दर्शन को ध्यान में रखते हुए मनुष्य निर्माण की शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। आज की शिक्षा अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर, प्रबंधक, प्रशासक तो तैयार कर रही है, लेकिन वो इन्सान तैयार नहीं कर पा रही है, जो संवेदनाओं से परिपूर्ण हो, जिसमें मानवता निवास करती हो, जो सृजनशील हो, जो समाज के पिछड़े वर्गों को ऊपर उठाने में परिपूर्ण हो। स्वामी जी ने विश्व शांति की परिकल्पना से अभिभूत होकर शिक्षा के क्षेत्र में विशेष परिवर्तन चाहते हुए कहा है कि हम बालक को एक ऐसे नागरिक के रूप में विकसित करना चाहते हैं जो विश्व के नागरिकों की तक़लीफ, दुख-दर्द, अभाव, कष्ट, व्यथा, संताप का अनुभव कर सके। हमें ऐसा आदमी नहीं चाहिए जो मात्र अनुभव करे पर ऐसा आदमी चाहिए जो वस्तुओं और स्थितियों को परिपूर्ण बना सके। जो प्रकृति को पूरे मन से गहराई तक समझ सके। उसमें खोज कर सके। हमें ऐसा मनुष्य चाहिए जो रुके नहीं पर निरन्तर कार्य करे और कार्यों को सही रूप में सम्पूर्णता तक पहुँचा सके।''

स्वामीजी ने युवा पीढ़ी को सन्देश दिया है कि तुम जीवन का एक ध्येय बना लो, उस पर मनन करो, उसके सपने देखो, शरीर का प्रत्येक अंग उस लक्ष्य से आप्लावित हो; अन्य सभी विचारों को छोड़ो, कठिन परिश्रम करो। अगर तुम जियो या मरो-कोई गम नहीं, बिना परिणाम सोचे अपने ध्येय की पूर्ति में लगे रहो तो मात्र छह माह में लक्ष्य की सिद्धि निश्चित होगी। स्वामीजी का विचार था कि रोगी चिकित्सक के पास जाने को तैयार नहीं हो तो चिकित्सक ही रोगी के पास क्यों न जाए? यदि गरीब लोग शिक्षा के निकट नहीं आ सकते तो शिक्षा को ही उनके लिए खेतों पर, उनकी फैक्ट्री या सर्वत्र जाना होगा।

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक चिन्तन बड़ा व्यापक था। उन्होंने धर्म की शिक्षा, नारी तथा जन शिक्षा पर विशेष बल दिया है। वे जीवनोन्मुखी और विचारोत्तेजक शिक्षा के पक्षधर रहे हैं। वे शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन से ऐसा भारत चाहते थे जो परम्परागत अंधविश्वास, पाखण्ड, अकर्मण्यता, जड़ता और आधुनिक सनक तथा कमजोरियों से स्वतंत्र रहकर आगे बढ़े। स्वामीजी शिक्षा द्वारा मनुष्य को लौकिक और पारलौकिक जीवन के लिए तैयार करना चाहते थे। कार्य के प्रत्येक क्षेत्र में व्यावहारिक बनने की उनकी सीख रही है।

स्वामीजी के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धांतों के अनुसार शिक्षा ऐसी हो जिसमें बालक का शारीरिक, मानसिक व आत्मिक विकास हो सके। बालक के चरित्र का विकास हो, उसका मन विकसित हो, बुद्धि बढ़े और वह आत्मनिर्भरता की दिशा में उन्मुख हो सके। बालक व बालिकाओं की समान शिक्षा व्यवस्था हो। धार्मिक व नैतिक शिक्षा पुस्तकों के स्थान पर आचरण व संस्कारों से दी जानी चाहिए। गुरु-शिष्य का निकटतम सात्विक संबंध हो तथा शिक्षा जन शिक्षा के रूप में सर्वसाधारण के लिए सुलभ हो सके। उन्होंने देश को विकसित करने के लिए तकनीकी शिक्षा को महत्व दिया। परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है, अतः शिक्षा यहीं से प्रारम्भ हो; इसके लिए परिवार संस्कारवान पाठशाला के रूप में प्रस्तुत हो सके।

इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने भारत राष्ट्र को सर्व शिक्षा से जाग्रत करते हुए विश्व बंधुत्व व वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को प्रगाढ़ता प्रदान की। स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक चिन्तन इस दिशा में सर्वोपरि रहा तथा उन्होंने विश्व स्तर पर भारतीय संस्कृति को प्रचारित करते हुए उसे अपने शैक्षिक चिन्तन से लाभान्वित किया।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, टहुँका
भीलवाड़ा (राजस्थान)
मो: 9829925909

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

❒ **मोहन मेघवाल**

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, जिनके जन्मदिन को हम शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हैं, हमारे दूसरे राष्ट्रपति थे। वे दर्शन जैसे गंभीर विषय को भी रोचक ढंग से पढ़ाते थे। सरलता उनके स्वभाव में थी ज्ञान की गहनता से आलोकित उनका चरित्र अपने चारों ओर प्रकाश फैलाता था। वे दार्शनिक व आदर्श होने के साथ-साथ प्रशासक, राजनयिक भी रहे। उनकी कही गई बातें आज भी आगे बढ़ने में मदद करती हैं। उन्होंने कहा है कि, ''एक बड़ा सपना किसी के जीवन की दिशा बदल सकता है। बड़ा सपना कभी भी लक्ष्य बन सकता है। ऐसे सपने अपने साथ एक किस्म का गुरुत्वाकर्षण बल लिए होते हैं, जब तक ये बने रहते हैं, तब तक यह बल इंसान को अपनी ओर खींचता है। इंसान उसकी तरफ बढ़ता जाता है। हर किसी को बड़ा सपना देखना चाहिए क्योंकि पंखों से कुछ भी नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है। भारतीय प्रशासनिक सेवा में प्रथम आने वाले अगर सपने न देखते तो प्रथम कैसे आते।''

डॉ. राधाकृष्णन ने कहा था कि किताब पढ़ना हमें एकांत में विचार करने की आदत और सच्ची खुशी देता है। किताब हर इंसान की सच्ची दोस्त होती है। किताबों से ज्ञान प्राप्त होता है, जो इंसान को महान बनाता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार ''अगर अच्छाई अपनानी है तो कुछ कष्ट भी सहन करने होंगे। कष्टों से कभी नहीं घबराना चाहिए। ये हमें बहुत कुछ सिखाते हैं।''

गाँव बावली, पोस्ट नवारा, वाया कालंद्री-307802 (सिरोही)
मो: 8890198527

कीर्ति पुरुष-स्वामी विवेकानन्द

❐ रामगोपाल राही

भारतीय दर्शन एवं अध्यात्म की चैतन्य, साकार विश्व चेतना का साकार रूप स्वरूप स्वामी विवेकानन्द थे, जिनकी वाणी में तेज, हृदय में जिज्ञासाओं का महासागर विद्यमान था। उनकी सत् साहित्य सादृश्य जीवन शैली में संजीवनी सा प्रभाव था। स्वामी जी के मानसिक वैचारिक गुणों के अमृत घट से भारत ही नहीं, अपितु संसार ने भी पाया ही पाया है। स्वामी जी ने देश व दुनिया के दिग्भ्रमित लोगों को नवजीवन, नई सोच, नई दिशा दी। सचमुच तेजस्वी जीवन के धनी गौरवशाली ज्ञान गरिमा के प्रेरक युवा युग पुरुष थे, स्वामी विवेकानन्द। स्वामी जी ने भारत की रग-रग में स्वाभिमान व राष्ट्र-चेतना का संचार किया। समाज सुधारक, राष्ट्र चेतना के उन्नायक अध्येता-ज्ञाता-कीर्ति पुरुष स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व व ज्ञान आभा से देश ही नहीं सारा संसार आलोकित हुआ था। आज भी स्वामी विवेकानन्द जी की जीवन शैली व उपदेश प्रासंगिक हैं। प्रेरणा पुरुष स्वामी विवेकानन्द जी को आज भी सारे संसार में जाना जाता है।

कहा जाता है कि लीक से हट के चलने वाला व्यक्ति प्रतिभाशाली होता है। इसी क्रम में बात, स्वामी विवेकानन्द की। समाज सुधारक राष्ट्र चेतना के कीर्ति पुरुष स्वामी जी ने विदेशी सत्ता के रहते अथवा चलते पराधीन भारत में, जुल्म-शोषण, अन्याय से दुखी, भारतवासियों में एवं राष्ट्र की जख्मी आत्मा, घायल प्राणों में राष्ट्रीय चेतना स्पंदित की। वही अंधविश्वासी, रूढ़िवादी समाज को नई दिशा दी। स्वामी जी ने अपने अध्यात्म ज्ञान व आत्मशक्ति से भारतवासियों में आत्मबल का संचार किया। विलक्षण व्यक्तित्व के धनी स्वामी विवेकानन्द का नाम व काम भारत ही नहीं, अपितु संसार में भी अमर है और रहेगा।

युवा शक्ति के प्रेरणास्रोत विवेकानन्द का जन्म बारह जनवरी, 1863 में कलकत्ता (अभी कोलकाता) शहर में पिता विश्वनाथ के घर हुआ, इनकी माँ का नाम भुवनेश्वरी था। पुत्र जन्म पर माँ को लगा, उन्होंने ध्यान कर ईश्वर से मनौती के रूप में जो मांगा था, वही मिला। स्वामी जी का प्रारंभिक नाम वीरेश्वर था, इस कारण माता ने इन्हें विले कह पुकारा, वही पिता ने नाम रक्खा नरेन्द्रनाथ। यही नरेन्द्रनाथ आगे चलके समाज व राष्ट्र चेतना का साकार रूप देश व दुनिया में भारतीयता की पहचान स्वामी विवेकानन्द बने।

ध्यान, चिंतन, मनन, पूजा इनके अपने पारिवारिक संस्कार थे। विद्यालय में प्रवेश पर अंग्रेजी में पढ़ना इन्हें रुचिकर नहीं लगा। कहते थे, यह विदेशी भाषा है लेकिन बाद में वे अंग्रेजी पढ़ने को राजी हो गए थे। बचपन से ही स्वामी विवेकानन्द मेधावी व विलक्षण थे, माना जाता है बचपन में अपने पड़ौसी से सुन-सुनकर इन्होंने मुक्तिबोध व्याकरण के सभी सूत्र कंठस्थ कर लिए थे। माँ भुवनेश्वरी से रामायण व महाभारत सुन कई महत्त्वपूर्ण अंश इन्हें याद हो गए, जो प्रायः जुबान पर रहा करते थे।

उच्च पावन संस्कारों से पल्लवित, बचपन में इनकी प्रतिभा का यह आलम था कि पढ़ते वक्त पाठ्यपुस्तकों में छोटी-सी सीमाएँ इन्हें संतुष्ट नहीं कर पाती थी। विडम्बना युवा अवस्था में पिता का साया उठने पर दुख स्वाभाविक था। नौकरी करने पर भी परिवार की स्थिति सामान्य नहीं हुई।

इन्हीं तथा और भी कई विकट हालातों से जूझते, कुछ विशेष कर गुजरने के लिए वे बड़े बेचैन रहते थे। समाज की विकृत स्थितियों ने भी इनके मन को झकझोरा। कहा जाता है निर्धन, गरीबों व दुखियों को देख इनका हृदय करुणा से भर जाता था, वह द्रवित हो, पास में देने को कुछ नहीं होता तो अपना धोती-कुरता भी दुखियों को दे देते थे। इनका चिंतन था तथा स्वभाव भी किसी के जीवन में बैठकर ही उसका प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है। अपनी व्यापक जिज्ञासाओं के चलते ये, ईश्वर की खोज में उन्मुख व चिंतित रहा करते थे। यह कई महन्तों व साधु संतों की शरण में भी गए, किसी एक धार्मिक समाज से भी जुड़े, पर बनावटीपन से इनका मन ऊब गया। यह सोचा करते थे, ऐसे तत्वदर्शी महापुरुष कहाँ मिलेंगे जो ब्रह्म से साक्षात्कार करा दे।

अपनी इसी बलवती, प्रबल इच्छाशक्ति के चलते विवेकानन्द जी को स्वामी रामकृष्ण परमहंस का शिष्यत्व मिला, जिससे इनकी जिज्ञासाओं को विराम मिला और साथ ही संतुष्टि भी। अपने गुरु से विवेकानन्द ने निर्भीकता, आध्यात्मिकता, सच्चरित्रता, स्वदेश प्रेम का वरदान व तेजस्वी व्यक्तित्व प्राप्त किया। स्वामी जी प्रायः सोचा करते थे संसार में इतनी विषमताएँ क्यों है? इसी मंथन में इन्होंने अविवाहित रहने का व्रत ले लिया और वैराग्य पथ की ओर इनके कदम बढ़ने लगे। अध्यात्म के पथ पर चलते देश व दुनिया ने स्वामी विवेकानन्द को प्रतिभा व आध्यात्मिकता के चरमोत्कर्ष पर देखा। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के शब्दों में, नरेन्द्र (यानी विवेकानन्द जी ''ध्यानसिद्ध पुरुष थे।'' साहित्य सदृश जीवन शैली के धनी स्वामी विवेकानन्द के जीवनवृत्त, आध्यात्मिकता व प्रतिभा को शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता।

सन् 1893 ई. का विश्व इतिहास में वह यादगार दिन, अमरीका शिकागो शहर में आध्यात्मिक सभा और उसमें स्वामी विवेकानन्द की उपस्थिति। मंच पर विभिन्न देशों के प्रतिनिधि, हजारों श्रोता और अन्त में बोलने की बारी आयी, स्वामी विवेकानन्द की। भाइयों और बहनों का सम्बोधन सुनते ही मंचस्थ एवं श्रोता सभी आत्मविभोर और मंत्रमुग्ध हो उठे। स्वामी जी के बोलने से पाश्चात्य जगत् को मानव जाति के एकत्व की अनुभूति हुई। मंत्रमुग्ध श्रोता अभिभूत थे। चेतनायुक्त भारतीय आध्यात्मिक दर्शन और स्वामी जी की तेजस्वी वाणी, मंत्रमुग्ध श्रोताओं की तन्मयता, एक बार तो लगने लगा कि विश्वगुरु भारत की पताका फिर फहरा उठी है। इस संदर्भ में भगिनी निवेदिता ने लिखा है, 'महासभा में स्वामी विवेकानन्द का अंतिम भाषण सताईस सितम्बर को था।

जिसने भारतीय संस्कृति के महत्व को सर्वोच्च शिखर पर अधिष्ठित कर दिया। मानना

होगा, वस्तुतः यही वह दिन था, जब विवेकानन्द विश्व में भारत की अमिट पहचान बने। तदुपरान्त स्वामी जी विभिन्न देशों में होते हुए स्वदेश लौटे, इसी क्रम में कोलम्बो से चल वह जहाज से भारतीय समुद्र तट पर पहुँचे, जहाज से उतरते ही वे, पहले धरती पर लेट गए और इधर-उधर बार-बार लेटते रहे और बोले, बहुत दिनों बाद माँ का (भारत भूमि) का स्पर्श मिला है। मातृभूमि में लिपट व सारे कल्मष दूर हो गए। बाद में स्वामी जी मद्रास रुकने के बाद कलकत्ता आए। अब जन जागरण उनका मिशन बन गया था, इसे पूरा करने वे भारत के विभिन्न अंचलों में निकल पड़े।

भारत में स्वामी विवेकानन्द ने रूढ़िवादी विचारों, अंधविश्वासों को छोड़ने एवं पराधीनता को त्यागने का आह्वान किया, उनके विचारों से जनता में विश्वास भर गया, उन्होंने स्वतंत्रता के लिए देशवासियों में स्वाभिमान जगाया। स्वामी विवेकानन्द के समाज सुधार के वक्तव्यों ने समाज में अंधभक्तों की आँखें खोल दी। इसी दौरान स्वामी जी को दुनिया के कई देशों के निमंत्रण मिले। वे फिर उन देशों में गए। अब तो विदेशों में भारतीय वेदान्त, दर्शन, आध्यात्मिकता के बजे डंके की गूँज जगह-जगह सुनाई देने लगी थी। वहाँ भी स्वामी जी ने पाश्चात्य भौतिकता की नकारात्मक सोच को उद्‌बोधित कर काफी कुछ बोला, कहा। बावजूद इसके स्वामी विवेकानन्द लोगों के चहेते विश्व में प्रिय आदर्शों के धनी, मुखरित महान् व्यक्तित्व के रूप में उन्मुखता से स्थापित हुए।

अब बात करें स्वामी विवेकानन्द जी के भारतवर्ष सम्बन्धी विचारों की। उन्होंने यथार्थ दर्शाते हुए कहा, ''भारत भूमि पवित्र भूमि है, भारत मेरा तीर्थ है, भारत मेरा सर्वस्व है, भारत की पुण्यभूमि का अतीत गौरवमय है, यही वह भारतवर्ष है, जहाँ मानव प्रकृति एवं अन्तर्जगत् के रहस्यों की जिज्ञासाओं के अंकुर पनपे थे।'' स्वामी जी कहा करते थे, ''भारत वर्ष की आत्मा उसका अपना मानव धर्म है, सहस्रों शताब्दियों से विकसित चारित्रय है।'' उन्होंने देशवासियों से कहा ''चिन्तन, मनन कर राष्ट्र चेतना जाग्रत करे तथा आध्यात्मिकता का आधार न छोड़े।''

स्वामी जी ने तत्कालीन देश, काल वातावरण पर अपना मंतव्य इस प्रकार स्पष्ट किया। ''सीखो लेकिन अंधानुकरण मत करो। नयी और श्रेष्ठ चीजों के लिए जिज्ञासा लिए संघर्ष करो।'' स्वामी जी का यह भी स्पष्ट था कि उनका (पाश्चात्य जग का) अमृत हमारे लिए विष हो सकता है। उन्होंने कहा था, दो प्रकार की सभ्यताएँ है, एक का आधार मानव धर्म, दूसरी का सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति। इन्हीं संदर्भों में उनका यह भी कहना था कि समन्वय हो, किन्तु भारत यूरोप नहीं बन सकता, उनके मतानुसार प्रेम से असम्भव भी हो सकता है। युवाओं से उनका संबोधन था, ''ध्येय के प्रति पूर्ण संकल्प व समर्पण रखो।'' उन्होंने कहा भारत के राष्ट्रीय आदर्श सेवा व त्याग है।

देश को त्यागी व समाजसेवी चाहिए। पुनरुत्थान के संदर्भ में उनका कहना था, जिन्दा रहना है तो विस्तार करो, जीवन दान करोगे तो जीवन दान पाओगे। स्वामी जी ने स्पष्ट कहा, हमें पश्चिम से मुक्त होना है, पर उनसे बहुत कुछ सीखना है, सब जगह से अच्छी बात लो। स्वामी विवेकानन्द अक्सर कहते थे, ''नैतिकता, तेजस्विता, कर्मण्यता का अभाव न हो। उपनिषद् ज्ञान के भण्डार हैं, उनमें अद्‌भुत ज्ञान शक्ति है, उनका अनुसरण कर अपनी निज पहचान स्थापित करो।''

स्वामी विवेकानन्द का अपना अनुभव, उन्होंने कहा ''नासतः सत् जायते!'' निरस्तित्व नहीं हो सकता। शून्य में से कुछ सम्भव नहीं यह 'कार्यकरण सिद्धांत' सर्वशक्तिमान है और देश कालातीत है। इस सिद्धांत का ज्ञान उतना ही पुराना है, जितनी आर्य जाति। सर्वप्रथम आर्य जाति के पुरातन ऋषि कवियों ने इसका ज्ञान प्राप्त किया, दार्शनिकों ने इसका प्रतिपादन किया और उसे आधारशिला का रूप दिया जिसके ऊपर आज भी सम्पूर्ण सनातन जीवन का प्रासाद खड़ा होता है।'' उनका चिन्तन था, वेदों में एक सुगठित देव शास्त्र, विस्तृत कर्मकाण्ड विविध व्यवसायों की आवश्यकता की पूर्ति हेतु जन्म गत वर्षों पर आधारित समाज रचना एवं जीवन की अनेक आवश्यकताओं का और अनेक विलासिताओं का वर्णन है। उनका कहना था, यही वह पुरातन भूमि है, जहाँ ज्ञान ने अन्य देशों में जाने से पूर्व अपनी आवास भूमि बनाई थी, यह वही भारतवर्ष है। इसी धरा से दर्शन के उच्चतम सिद्धांतों ने अपने चरम स्पर्श किए। इसी भूमि से अध्यात्म एवं दर्शन की लहर पर बार-बार उमड़ी और समस्त संसार पर छा गयी। वस्तुतः स्वामी विवेकानन्द जी का अपना चिंतन बहुत ही विस्तृत, महान तथा प्रेरणायुक्त है।

स्वामी विवेकानन्द जी के समय देश की हालत बड़ी जर्जर थी, उन्होंने लिखा स्वधर्मी, विधर्मी लोगों के दमन चक्र में पिसकर हम लगभग चेतनाशून्य हो गए। उन्होंने पुनरुत्थान के संदर्भ में दान का महत्व बताया, धर्मदान, विद्यादान, प्राणदान और अन्न, जल, दान और भी महत्वपूर्ण विचार उनके रहे। उन्होंने कहा सत्य दो, असत्य स्वयं मिट जाएगा। ग्रंथों में छिपे आध्यात्मिक ज्ञान अपनी अद्‌भुत शक्ति है। उनके मतानुसार निरस्वार्थ कार्यकर्ता ही सबसे सुखी होता है, निष्काम कर्म ही सर्वोत्तम है, उनका चिंतन रहा है-इच्छा चाह ही प्रत्येक दुख की जननी है, श्रेष्ठ मनुष्यों का भी लोकैषणा पीछा नहीं छोड़ती। आज के संदर्भों में देखा जा सकता है, उनके विचारों की प्रासंगिकता कितनी सटीक थी और है, कोई व्यक्ति कर्म के लिए कर्म नहीं करता, कहीं न कहीं कोई कामना विद्यमान रहती ही है। धन, सत्ता, यश, लालसा, कोई न कोई आज समाज में, राजनीति में स्पष्ट देखी जा सकती है।

भारतीय और पाश्चात्य नारी संदर्भों में स्वामी जी ने न्यूयॉर्क में भाषण देते हुए कहा, भारतीय स्त्रियों की बौद्धिक प्रगति पर मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी, यह बात उन्होंने वहाँ की स्त्रियों की बौद्धिक प्रगति देखकर कही थी। ''भारतीय स्त्रियाँ इतनी शिक्षा सम्पन्न नहीं, फिर भी उनका आचार-विचार अधिक पवित्र होता है।'' उनके मतानुसार स्वदेश भारत में प्रत्येक स्त्री को चाहिए कि वह अपने पति के अतिरिक्त सभी पुरुषों को पुत्रवत् समझे व पुरुष को चाहिए, अन्य स्त्रियों को मातृवत् समझे। शिक्षा संदर्भों को स्वामी विवेकानंद ने इस प्रकार स्पष्ट किया। उन्होंने कहा, वर्तमान शिक्षा का लौकिक परमार्थ हमारे हाथों में हो तथा हमारी आवश्यकता के अनुरूप हो। समाज सुधारक एवं प्रबल राष्ट्र चेतना के धनी स्वामी विवेकानन्द ने समाज सुधार एवं राष्ट्र उत्थान की अलख जगाकर कई महत्वपूर्ण बाते कही। उनका कहना था जिन खोजा तिन्ह पाइयां.... निस्स्वार्थ सही दृष्टिकोण हो, आदर्श के लिए जियो, पूजागृह

है। सब कुछ नहीं, मदान्ध मत बनो, कट्टरतावादी मत बनो, अंधविश्वास त्यागो, कठिनाइयों का निर्भीकता से सामना करो। वीर बनो, उदार बनो। आत्मनिरीक्षण करो, अपने में सच्चरित्र का निर्माण करो। उन्होंने कहा, अपने में क्षुद्र 'मैं' से मुक्ति पाओ।

उल्लेखनीय अध्यात्म ज्ञान-चेतना, दर्शन की मनीषी ज्ञाता, भारतीय संस्कृति के प्रखर, मुखरित प्रहरी, समाज सुधार एवं राष्ट्र चेतना जगाने वाले महान् कीर्ति पुरुष स्वामी विवेकानन्द 1892 में हिमालय से विभिन्न स्थलों पर होते हुए कन्याकुमारी पहुँचे थे, वहाँ तट पर स्थित दैवी शक्ति की वंदना कर समुद्र में तैरते हुए ढाई किलोमीटर दूर समुद्र में विशाल चट्टान पर पहुँचे, उसी चट्टान पर ध्यान लगा, चिंतन मनन में तन्मय हो गए। यहाँ स्वामी जी को दिशा बोध हुआ, ज्ञान व प्रेरणा मिली। स्वामी विवेकानन्द यहीं से जलयान द्वारा अमरीका (शिकागो) पहुँचे थे, जहाँ उन्होंने पाश्चात्य जगत को भारतीय दर्शन अध्यात्म का ज्ञान देकर चकित किया था।

कन्याकुमारी में जिस चट्टान पर स्वामी विवेकानन्द का स्मारक बना हुआ है, इस स्मारक का उद्घाटन 02 सितम्बर, 1970 को पूर्व राष्ट्रपति वी.वी. गिरी ने किया था। वस्तुतः स्वामी विवेकानन्द का स्मारक समाज सुधार, राष्ट्र चेतना जगाने वाले, युवा कीर्ति पुरुष का स्मारक है। स्वामी विवेकानन्द देश व दुनिया में अमर है। उनके द्वारा जगाई राष्ट्र चेतना देश के इतिहास का अहम हिस्सा है। उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस ने उनके सम्बन्ध में भविष्यवाणी की थी, ''तू संसार में महान् कार्य करेगा, तू मनुष्यों में आध्यात्मिक चेतना लाएगा और दीन-दुखियों के दुःख दूर करेगा'', विवेकानन्द ने यह भविष्यवाणी हमेशा याद रखी।

निस्संदेह विवेकानन्द, भारत की अमर विभूतियों में है। उनकी राष्ट्रीयता, उनके क्रांतिकारी विचार वर्तमान युवा पीढ़ी के मार्गदर्शक हैं। उनकी ओजस्वी वाणी, तेजस्वी व्यक्तित्व, चारित्रिक दृढ़ता, आध्यात्मिकता स्तुत्य व अविस्मरणीय है।

वार्ड नं. 4, लाखेरी,
जिला बूंदी (राज.)
मोः 9982491518

शिक्षक दिवस अपने अपने

❐ सुरेन्द्र 'अंचल'

अन्तरराष्ट्रीय शिक्षक दिवस : विश्व के साथ सभी सम्प्रदायों में गुरु का महत्त्व है। भारत में गुरु पूर्णिमा का दिन तो संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। इसी से प्रभावित होकर 'यूनेस्को' ने भी यह आवश्यक समझा कि शिक्षा और शिक्षकों के सम्मान में एक दिन निश्चित कर दिया जाए। सभी सदस्य-राष्ट्रों की सहमति से सन् 1994 में यह घोषणा की गई कि प्रतिवर्ष पाँच अक्टूबर को अन्तरराष्ट्रीय शिक्षक दिवस मनाया जाए।

अन्तरराष्ट्रीय शिक्षक दिवस तो विश्वभर में 5 अक्टूबर को एक साथ मनाया जाता है, किन्तु कुछ देशों के अलग से अपने शिक्षक दिवस भी हैं। इन्हें वे अपने-अपने महान धर्मगुरुओं, शिक्षाविदों या राष्ट्र निर्माताओं की याद में अपनी सांस्कृतिक विधियों से मनाते हैं।

भारतः- 'गुरु पूर्णिमा' भारतीय सनातन संस्कृति का परम्परागत पर्व है। स्वतंत्र भारत में विभिन्न समुदाय भी मिलकर 'शिक्षक दिवस' मना पाएँ, इसके लिए पाँच सितम्बर का दिन तय किया गया। स्वतंत्र भारत के दूसरे राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् का जन्म 5 सितम्बर, 1888 को हुआ था। वे मात्र राजनीतिज्ञ ही नहीं दार्शनिक और शिक्षाविद् भी थे। उन्हीं की याद में शिक्षक दिवस पाँच सितम्बर को सम्पूर्ण राष्ट्र में मनाया जाता है।

चीनः- चीन में संत कनफ्यूशियस महान गुरु हुए हैं। उनकी याद में 27 अगस्त को यह दिवस परम्परागत रूप से मनाया जाता रहा था; किन्तु राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों के तहत सन् 1985 में इस दिन को बदल कर 10 सितम्बर कर दिया गया है। राजनीतिक रूप से 10 सितम्बर, किन्तु सांस्कृतिक परम्परा के रूप में मूल चीनी 27 अगस्त को भी शिक्षक दिवस मनाते हैं।

रूस :- रूस में यूनेस्को की घोषणा के अनुसार 5 अक्टूबर को ही अन्तरराष्ट्रीय शिक्षक दिवस मनाया जाता है। इस दिन बड़े-बड़े सेमिनारों में वर्तमान शिक्षा और उसकी समस्याओं व सुधारों पर विचार किया जाता है।

अमेरिकाः- अमेरिका में शिक्षक दिवस 7 दिनों तक मनाया जाता है। प्रतिवर्ष 1 मई से 7 मई तक शिक्षकों के हित में विभिन्न आयोजन होते हैं। शिक्षक दिवस जैसा लम्बा सार्थक और भव्य कार्यक्रम अमेरिका में अन्य कोई नहीं है।

ईरानः- ईरान में शिक्षक दिवस 2 मई को मनाते हैं। 'प्रो. अयाबुल्ला मार्तेजा मोतीहारी' महान धर्म गुरु थे। तारीख 2 मई, 1980 को उनकी हत्या कर दी गई थी। जनाब मोतीहारी ईरान के राष्ट्र संत के रूप में मान्य हैं।

तुर्की :- तुर्की में 24 नवम्बर की तारीख शिक्षक दिवस हेतु निश्चित है। दिन में विभिन्न कार्यक्रमों के बाद रात को मोमबत्तियाँ जलाकर दीपावली की तरह उत्सव मनाया जाता है। इसे वे प्रकाश पर्व मानते हैं।

महत्व :- आज शिक्षा के प्रति सम्पूर्ण विश्व चिंतित और सजग है। शिक्षा में क्या-क्या परिवर्तन किए जाएँ कि वह मानव में मानवता के गुणों का विकास करने में समर्थ हो। जीवन की आधारभूत जरूरत रोटी, कपड़ा और मकान के बाद मात्र शिक्षा ही वह अमूल्य निधि है जो मानव को सम्मानपूर्वक जीने हेतु मार्गदर्शन करती है। यह एक विशेष दिन शिक्षा-व्यवस्था की दशा और दिशा पर चिंतन करने का होता है। बदलती परिस्थितियों के साथ शिक्षा और शिक्षक की कई समस्याओं का समाधान ढूँढ़ा जाना चाहिए।

मात्र एक दिन शिक्षक दिवस मना लेने से ही शिक्षकों के प्रति हमारा कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता। शिक्षकों एवं शिक्षा के प्रति सम्मान की भावना जीवन का अंग होनी चाहिए। शिक्षा जीवन का प्रकाश है तो शिक्षक प्रकाश का स्वामी है।

गुरु कुम्हार, शिष्य कुम्भ है,
घड़-घड़ काढ़े खोट।
भीतर हाथ सहार दे,
बाहर बाहे चोट।।

2/152, साकेत नगर
ब्यावर, जिला-अजमेर (राज.)
मो. 9460178511

आदिवासी अंचल के राजकीय स्कूल का आनन्द

❒ डॉ. रवीन्द्र कुमार उपाध्याय

राजकीय शिक्षक के रूप में 23 वर्षों की अनवरत सेवा उपरान्त अचानक प्रधानाचार्य के पद पर पदोन्नति के समाचार से परिजन व इष्ट मित्र प्रफुल्लित तो हुए, किन्तु घर से 150 किलोमीटर दूर आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, खैरवा, प.स. घाटोल, जिला बाँसवाड़ा में प्रधानाचार्य के पद पर पदोन्नति ने सभी की खुशियों को कम कर दिया।

तत्काल विद्यालय से कार्यमुक्ति का आदेश घर ले कर आया तो धर्मपत्नी सुशीला की आँखों से ऐसी गंगा मैया प्रवाहित हुई कि मैं डूबते-डूबते बचा। पिताजी ने भी मना कर दिया कि पदोन्नति पर इतनी दूर नहीं जाना चाहिए। संयुक्त परिवार होने से माताश्री व अनुज ने बात सँभाली और हम श्री कल्ला जी के मन्दिर में वापस जल्द लौटने की अर्जी लगाकर तैयारियों में व्यस्त हो गए।

अगले दिन ब्रह्म मुहूर्त में प्रातः 3 बजे उठकर बांसवाड़ा के लिए निकल पड़ा। श्रीमती जी ने भरी आँखों से विदाई दी और माँ अंधेरे में भी 4 बजे अकेली मुझे बस स्टेण्ड पर छोड़ने आयी तो पूर्ण विश्वास हो गया कि जल्द ही मैं वापस आ जाऊँगा। साथ में एक और पदोन्नत साथी मांगीलाल जी मेनारिया थे, जिससे वियोग और परदेस जाने का दुःख भी खुशियों भरी हँसी मजाक में बदल गया।

घाटोल से पूर्व खमेरा उतरकर खैरवा के बारे में पूछा तो किसी ने बताया कि आपकी किस्मत अच्छी होगी तो टेम्पो आ जाएगा, वरना किसी मोटरसाइकिल वाले को हाथ देना, और यदि दोनों ही ना मिले तो फिर पैदल ही चल देना।

गर्दिश में भी मेरे सितारे बुलन्द थे। कुछ समय पैदल चलने के बाद टेम्पो आ गया और मैं प्रातः 8.30 बजे ही खैरवा विद्यालय में प्रविष्ट हो गया। शिक्षकों से बातचीत हुई। कार्यग्रहण का अभिजीत मुहूर्त दोपहर 12.15 बजे निश्चित था। सोचा इससे पूर्व विद्यार्थियों से वार्तालाप कर लिया जाए। 600 से अधिक विद्यार्थियों को एक साथ प्रार्थना स्थल पर बैठाकर उनके सुख-

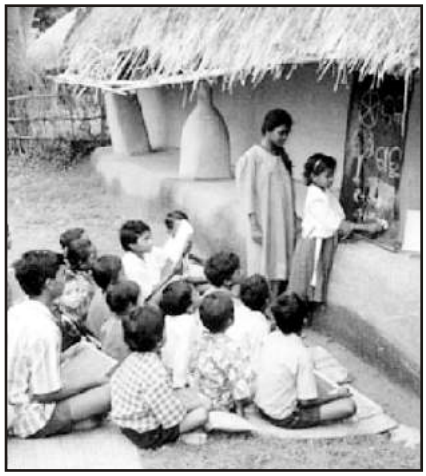

दुःख, घर-परिवार और पढ़ाई के बारे में बातचीत की। वे मेरी खड़ी हिन्दी भाषा को समझने का प्रयास कर रहे थे और बता रहे थे कि वे घर पर एक घण्टा भी प्रतिदिन अध्ययन नहीं करते हैं।

आदिवासी विद्यार्थियों की गरीबी और कष्टमय जीवन यापन की बातें जानकर, देखकर दिल भर आया, गला रुंध गया। किसी का शर्ट फटा था, किसी की फटी पेंट से काले-काले पुठ्ठे बाहर झाँक रहे थे। कुछ किशोर छात्राएँ चुनरी रहित थीं, तो किसी बालिका के फटे वस्त्रों को देखकर नजरे स्वतः ही नीचे झुक जाती थीं। कुछ गरीब बालिकाएँ अपने तंग वस्त्रों के ऊपर हाथ ढककर अपनी उम्र को छिपाती नज़र आईं।

कुल मिला कर वागड़ी भाषा में दिये गये उनके उत्तरों ने मेरा मन मोह लिया। विद्यार्थियों की 600 से अधिक संख्या होते हुए भी उनकी मासूमियत, निश्छलता और पवित्र प्रेम से मन आह्लादित हो गया। उन्हें अनुशासित और आज्ञाकारी देखकर मेरा आधा प्रशासनिक तनाव कम हो गया।

बाद में विद्यार्थियों के लिए बन रहे मध्याह्न भोजन की क्रिया पद्धति और उसे बनाने वाली माताओं की तल्लीनता से मन को और अधिक शान्ति मिली।

सम्पूर्ण विद्यालय परिसर का अवलोकन किया तो शौचालय-मूत्रालय में कुछ गन्दगी नजर आयी जिसे इशारों-ही-इशारों में दूर करने का संकेत कर दिया और मैं आगे बढ़ गया।

कार्यग्रहण से पूर्व पीपल का पौधा रोपने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हो रही थी जिसे स्टाफ की मदद से पूर्ण किया गया। शिक्षक साथियों से प्रशासनिक चर्चा की जिन्होंने मुझे पूर्ण आश्वस्त किया कि वे सब मेरे कदम से कदम मिला कर चलेंगे और शिकायत का कोई मौका नहीं देंगे। शिक्षकों की सहजता-सरलता से मन प्रसन्न था। और अभिजीत मुहूर्त में मोबाइल पर स्वस्ति वचन के साथ मैंने उपस्थिति पंजिका में हस्ताक्षर किए। अगरबत्ती की खुशबू से और वैचारिक पवित्रता से वातावरण खुशनुमा था। कार्यग्रहण के उपरान्त सभी शिक्षक कक्षाओं में चले गए और मैं वरिष्ठ लिपिक गणपत जी चरपोटा से कार्यालयी चर्चा करने लगा।

विद्यालय की पूरी छुट्टी होने पर शिक्षक साथियों ने मुझे अपने-अपने घर ले जाने का आग्रह किया, किन्तु मैंने रात्रि विश्राम विद्यालय में ही करने का निश्चय किया। शाम को पता चला कि यहाँ तो लाइट नहीं है, जहाँ मुझे सोना है।

सहायक कर्मचारी नरपत सिंह जी शक्तावत हर बात में होकम कहते और कार्य पूरा हो जाता। वे पड़ोस से खाट व बिस्तर ले आए। चिमनी जलाकर रोशनी की और गाय के गोबर का एक कण्डा/छाणा जला दिया जिससे मच्छर दूर भाग जाएँ।

खुले मैदान में मेढ़कों की टर्र-टर्र के बीच शीतल मंद सुगन्धित हवा के साथ आसमानी चाँद-सितारों को निहारते-निहारते स्वार्गिक आनन्द की अनुभूति हुई। अनुमान नहीं था कि घर से 150 किलोमीटर एकदम अनजान और सुनसान स्थान पर भी इतनी गहरी व आनन्ददायी नींद आ जायेगी।

प्रातः पाँच बजे स्वतः ही नींद खुल गई। पक्षियों की चहचहाट के बीच धरती माता को प्रणाम किया और एक लोटा पानी पीकर शौच के लिए चल पड़ा। फ्लोराइड युक्त पानी पीना दुश्वार था। पर कोई उपाय नहीं था।

खुले में शौच के लिए जंगल जाते-जाते अचानक प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छता अभियान का स्मरण आया तो पुनः स्कूल की ओर लौटा। वहाँ के शौचालय-मूत्रालय की दुर्गन्ध व दयनीय स्थिति को देख मन मारकर वापस जंगल आया और उसी दिन शौचालय-मूत्रालय को स्वच्छ कराने की दृढ़ प्रतिज्ञा की।

खैरवा गाँव में बहने वाली बरसाती नदी के कलकल करते जल और किनारे पर उगी काँटेदार झाड़ियों के काँटें भी फूल बनकर शरीर को स्पर्श कर रहे थे क्योंकि बरसात की हल्की फुहारों ने उन्हें भी कोमल बना दिया था। तत्क्षण मुझे राम वनवास में पृथ्वी द्वारा कोमल हो जाने की घटना याद आ गयी। प्रकृति का अपनापन परदेस को भी सुहाना बना देता है।

शौच से निवृत्त हो पुनः विद्यालय आया। रास्ते में नीम की दातुन से मंजन किया और विद्यालय स्थित हेण्डपम्प से स्नान किया। हेण्डपम्प हल्का होने के बावजूद खुद ही हाथों से चलाने के कारण चाहते हुए भी नहाने में ज्यादा पानी का दुरुपयोग नहीं कर पाया। स्नान करते ही सहायक कर्मचारी शक्तावत सा. गौमाता का दूध ले आये। अगरबत्ती लगा, ईश्वर स्मरण किया और प्राणायाम करने लग गया। बिना शक्कर का दुग्ध भी अलग ही मिठास दे रहा था।

शक्तावत सा. प्रार्थना की घण्टी लगाते, इससे पूर्व ही मैं प्रार्थना स्थल पर पहुँचा और नए सिरे से प्रार्थना करने के दिशा निर्देश देने लगा। प्रथम दिन विद्यार्थियों को प्रार्थना में ही प्राणायाम, योग, आसन आदि से परिचय कराया तो उन्हें कुछ अटपटा लगा तो बाद में आनंद भी आया। नैतिकता की शिक्षा दी और अगले दिन से प्रार्थना का प्रारूप बता दिया।

प्रार्थना समाप्ति पर तीन मिनट शिक्षकों से चर्चा की। वे कक्षाओं में चले गए। मैं भी शिक्षण-पर्यवेक्षण में व्यस्त हो गया। पूरा दिन प्रशासनिक निरीक्षण-पर्यवेक्षण में पूर्ण हो गया। विद्यालय छुट्टी के पश्चात भोजन किया और कुछ देर बरामदे में बैठकर पक्षियों की मधुर आवाजें सुनने लगा और आवाज के आधार पर पक्षियों को पहचानने की कोशिश करने लगा।

इसी बीच कुछ अभिभावक और ग्राम पंचायत के सरपंच श्रीमती सुरमा देवी पारगी अपने शिक्षक पति के साथ विद्यालय में आयीं। अभिभावकों ने संकोच के साथ मुझे उनके घर में निःशुल्क रहने के लिए आमन्त्रित किया तो सरपंच पति जीवतराम पारगी ने ठोक बजाकर कहा कि ''आप डंके की चोट पर विद्यालय में ही निवास कीजिए, अपने परिवार को लाइए और मैं कल ही विद्यालय की सारी लाइटें, रसोई घर, लेट्रिन-बाथरूम ठीक करा देता हूँ।'' इतना कहते ही उसने दो-तीन जगह फोन लगाया और कहा कि कल तक सब व्यवस्थित हो जाएगा।

सरपंच श्रीमती सुरमा देवी पारगी ने कहा कि आपका मन यहाँ नहीं लगे तो आप ग्राम पंचायत के अटल सेवा केन्द्र पर बने कमरों में रह सकते हैं, किन्तु गाँव में किसी के यहाँ किराया दे कर नहीं रहेंगे। आप को रत्ती भर भी तकलीफ हो तो इशारा करना, आपके सारे कष्ट दूर कर देंगे। आप केवल हमारे बच्चों को अच्छा पढ़ाओ। वैसे भी यहाँ कोई सरकारी कर्मचारी आना ही नहीं चाहता।

मैं आदिवासी अंचल के लोगों की स्नेहासिक्त बरसात में भीगता ही जा रहा था और वे तरह-तरह से मुझे उपकृत करने के आश्वासन दे रहे थे। सन्ध्या हो चुकी थी। मैंने उन्हें उनके घर भेजा। सन्ध्या वन्दन करने हेतु दीपक-अगरबत्ती स्कूल में ही किया। कुछ समय पश्चात् शक्तावत सा. गौमाता का दूध ले आये जिसका पान करके मैं खुले स्कूल-मैदान में पलंग बिछा कर आकाश में चाँद-सितारों को निहारने लगा।

मेरा मन आदिवासी अंचल के आदर्श स्कूल में मिल रही सुविधाओं, स्नेह और आनन्द को प्राप्त कर प्रफुल्लित तो था किन्तु घर से दूर अपरिचित क्षेत्र के अज्ञात भय से ग्रसित हो गृहक्षेत्र में लौटना भी चाहता था। मैं गौ माता के शुद्ध ताजा दुग्ध को छोड़कर शहर के मिलावटी दूध को नहीं पीना चाहता था; साथ ही मेरा मन भोले-भाले वनवासी ग्रामीण विद्यार्थियों को छोड़कर शहरी उद्दण्ड छात्रों के पास नहीं जाना चाहता था, जिनकी दृष्टि में एक संवेदनशील शिक्षक के त्याग, स्नेह, समर्पण का कोई मूल्य नहीं था। मेरा मन प्रकृति के इस सुरम्य शान्त और शीतल वातावरण को छोड़कर कन्क्रीट के जंगल, शहर की प्रदूषित हवा और कोलाहल में नहीं जाना चाहता था। मैं इन आदिवासियों-वनवासियों के पवित्र-निश्छल प्रेम को ठुकराना नहीं चाहता था, किन्तु घर परिवार में पत्नी-बच्चों के स्नेह और माता-पिता की सेवा-शुश्रूषा की कामना के आगे विवश था। एक ओर आदिवासी अंचल की सेवा का पुनीत अवसर था तो दूसरी ओर तुच्छ पारिवारिक मोह।

बहुत देर तक मैं चाँद सितारों के बीच आसमान में उड़ते हवाई जहाजों को निहारता रहा। स्नेह और समर्पण के स्वर्ग, आदिवासी अंचल से भागना मेरे स्वार्थ और दुर्भाग्य का प्रमाण था। जब भी मैं घर की याद करता तो मेरी आत्मा मुझे धिक्कारती और चीत्कार कर कहती कि ''तुझे ऐसे सीधे-सादे विद्यार्थी और भोले-भाले वनवासी जिन्दगी में दुबारा नहीं मिलेंगे।'' जब मैं भगवान से प्रार्थना करता कि मेरा अगला जनम इन भोले-भाले आदिवासियों के बीच ही हो, ताकि मैं इनकी सेवा-सुश्रूषा ठीक ढंग से कर सकूँ।

शीतल मंद और सुगन्धित हवा से सराबोर स्वर्ग समान धरती को छोड़कर शहरी कोलाहल में जाने की इच्छा, मेरी समझ से परे थी। शानदार विद्यालय भवन, विशाल खेल मैदान, अनेक आज्ञाकारी एकलव्य, निष्ठावान-संस्कारी वनवासी-आदिवासी, परिश्रमी शिक्षक, सहृदय व सरल स्वभाव के बाबू जी वरिष्ठ लिपिक आदि मुझे जीवन में फिर कभी नहीं मिलने वाले थे, फिर भी यह चंचल मन घर की जिद करता था, जो बिल्कुल ही अनुचित था।

आदर्श विद्यालय के आनन्द और घर की याद के द्वन्द्व में कब नींद आयी, पता ही नहीं चला और अचानक सुबह के पाँच बजते ही स्वतः ही नींद खुल गई। भगवद् स्मरण और माँ भारती को नमन् के पश्चात खैरवा के हायर सैकण्डरी स्कूल को एक आदर्श विद्यालय बनाने की भीष्म प्रतिज्ञा की, क्योंकि यह भगीरथी प्रयासों से ही सम्भव था।

विद्यालय समय से 15 मिनिट पूर्व ही मैं प्रार्थना स्थल पर पहुँचकर जल्दी आने वाले विद्यार्थियों को साथ लेकर विद्यालय मैदान की साफ-सफाई में जुट जाता। शिक्षक साथियों के सहयोग से प्रार्थना सभा की अवधि बढ़ाकर विद्यार्थियों से जीवन्त सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास किया तथा उन्हें अभिव्यक्ति के अधिक अवसर प्रदान किए।

प्रार्थना सभा का प्रारम्भ ॐ के उच्चारण से प्राणायाम के साथ होता फिर बाबा रामदेव द्वारा

बताये गये योगासन का अभ्यास कराया जाता और सूर्य नमस्कार का नजारा अलग ही आनन्द देता। फिर ईश्वर की प्रार्थना होती, शांति पाठ होता और विद्यार्थियों द्वारा समाचार वाचन होता जिससे विद्यार्थी सारे संसार की गतिविधियों-घटनाओं से परिचित हो जाते।

इसके बाद प्रत्येक कक्षा से एक विद्यार्थी हाजरी नम्बर के अनुसार प्रतिदिन अपनी मौखिक अभिव्यक्ति के लिए आता और श्लोक, कविता, कहानी, दोहे, प्रेरक प्रसंग, घटना वर्णन या किसी बिन्दु पर अपने विचार अभिव्यक्त करता।

विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति के उपरान्त मेरा बौद्धिक भाषण होता जो समाज, राष्ट्र और आदिवासी अंचल की विविध समस्याओं पर केन्द्रित होता, जिनके समाधान हेतु विद्यार्थियों से प्रश्नोत्तर होता।

प्रार्थना के अंत में प्रत्येक कक्षा से एक विद्यार्थी की पारिवारिक-सामाजिक-आर्थिक कठिनाइयों पर सामूहिक चर्चा कर उनके निवारण का प्रयास करता जिससे विद्यालय में घर का माहौल पैदा होता और विद्यार्थियों में प्रेम-भाव बढ़ता। इसका परिणाम यह हुआ कि विद्यार्थी मेरे और अधिक नजदीक आ गये। वे अपने मन की बातें बताने के साथ-साथ दूसरे विद्यार्थियों के गुनाहों का कच्चा चिठ्ठा भी खोल देते, जिससे मुझे अनुशासन-स्थापना में सहायता मिलती।

प्रभावी प्रार्थना सभा के तुरन्त पश्चात सभी शिक्षक कक्षाओं में प्रस्थान कर जाते और मैं कक्षा 11वीं के हिन्दी साहित्य के अध्यापन में डूब जाता। दो कालांश निरन्तर मैं कक्षा 11वीं में ही शिक्षण कराता।

राजकीय नियमों से परे हमने विद्यार्थियों के लिए दो कालांश पश्चात 7 मिनिट का लघु मध्यान्तर निर्धारित किया, ताकि अन्य कालांश में कोई भी विद्यार्थी कक्षा से बाहर नहीं आए और शिक्षण कार्य निर्बाध जारी रहे।

मध्यान्तर में विद्यार्थियों को गरमा-गरम मध्याह्न भोजन परोसकर आत्मा को सन्तुष्टि मिलती। विद्यार्थियों को बड़े चाव से भोजन ग्रहण करते देखकर मन बाग-बाग हो जाता। अच्छा होता सरकार मध्याह्न भोजन को शिक्षकों के लिए भी अनिवार्य कर देती ताकि सारे शिक्षक एक साथ बैठ कर विद्यार्थियों के संग भोजन करते, जिससे मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता और अधिक बढ़ जाती। मैंने कक्षा 9 से 11 तक के विद्यार्थियों को भी टिफिन लाने के लिए प्रेरित किया और विद्यालय के मध्याह्न भोजन से सब्जी-दाल लेने की छूट प्रदान की ताकि सारे विद्यार्थी एक साथ भोजन करें व बाहर के बासी कचोरी-समोसे व सड़े-गले फल आदि न खाएँ।

मध्यान्तर पश्चात पाँचवें कालांश से पुनः शिक्षण प्रारम्भ होता जो छुट्टी होने तक निर्बाध चलता रहता। पूरी छुट्टी के बाद कुछ विद्यार्थी फुटबाल खेलने लग जाते जिन्हें एक घण्टे बाद जबरदस्ती घर भेजता ताकि वो अपना गृहकार्य व अध्ययन पूरा कर सकें। यदि इन विद्यार्थियों को पूरी सुविधाएँ और प्रशिक्षण दिया जाए तो निश्चय ही इनमें से राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी तैयार हो सकते थे।

विद्यार्थियों के घर जाने के पश्चात मैं भी गाँव में विद्यार्थियों के घर व खेत-खलिहान की ओर निकल पड़ता। आदिवासियों के बहुत छोटे-छोटे खेत उन्हें आवश्यकता से अधिक पैदा नहीं करने पर विवश कर देते थे। घास-फूस की झोंपड़ियों तथा केलुपोश कच्चे मकानों में अभावग्रस्त जीवन यापन कर रहे आदिवासियों से उनके बच्चों की पढ़ाई सम्बन्धी बात करता तो पुरुषों के अधनंगे बदन देख कर आत्मा चीत्कार उठती। गरीबी और दरिद्रता का कहर इन मासूम निश्छल आदिवासियों पर ही क्यों?

कई बार घरों के बाहर, हेण्डपम्प के पास, व नदी-तालाब किनारे आदिवासी युवतियाँ, माताएँ-बहने अर्धनग्न अवस्था में स्नान करती हुई नजर आ जातीं तो नजरें स्वतः झुक जातीं, उन पर से दृष्टि हट जाती। उन्हें अर्धनग्न अवस्था में देखकर भी मन में काम-वासना जाग्रत नहीं होती क्योंकि मन उनकी गरीबी-दरिद्रता से व्यथित होता है और अन्तःकरण में ''जननी सम जानहि परनारी'' के भाव उमड़ते रहते।

कई बार घर में किसी विद्यार्थी की युवा-सुन्दर माता-बहन को देखकर भी मन वासना के कीचड़ में नहीं डूबता, बल्कि आदिवासी बाला के यौवन को देखकर उनमें माँ सरस्वती व लक्ष्मी की छवि उतर आती थी।

विद्यार्थियों के घरों में अन्न, वस्त्र और छतों की तो कमी थी ही, साथ में बिजली-पानी का अभाव भी उन्हें नारकीय जीवन जीने पर विवश कर देता। उनके कष्टमय जीवन को देख कर मैं अपने सारे दुःख भूल जाता। अभावग्रस्त जीवन के बावजूद इनका अतिथि प्रेम और गुरुजन के प्रति सम्मान व निष्ठा की भावना प्रशंसनीय व अनुकरणीय है।

शाम का कुछ समय मैं खैरवा के कल्ला जी के मन्दिर में व्यतीत करता और पूजनीय महन्त सा. श्री रामसिंह जी शक्तावत के साथ धार्मिक आध्यात्मिक चर्चा करता।

सन्ध्या वन्दन करने हेतु निकटवर्ती गांव के शिव मन्दिर में पहुँच कर आधा घण्टे तक शिव पंचाक्षर मंत्र ''ॐ नमः शिवाय'' का जाप करता।

यहाँ एक अजूबा देखा। शिव मन्दिर के पुजारी अनुसूचित जनजाति के मीणा होकर भी स्वयं को ब्राह्मण कहते और पूरे गाँव में महाराज के नाम से प्रसिद्ध थे। वह ब्रह्म मुहुर्त में प्रातः तीन बजे उठकर मन्दिर की साफ-सफाई करते, भगवान की पूजा अर्चना करते और माला फेरते। अनुसूचित जनजाति का होकर भी उन्हें ब्राह्मणों के क्रिया कर्म करते देख और ब्राह्मण बनते देख मन को बहुत खुशी हुई। काश! सभी जातियों में कुछ लोग ऐसा प्रयास करते तो हम पुनः वैदिक काल में पहुँच जाते, जहाँ व्यक्ति की जाति उसके कर्म से निर्धारित होती। मेरा उनसे रोजना शाम को मिलना निश्चित था क्योंकि मैं उनसे अपने विद्यार्थियों की जानकारी लेता रहता था।

रात्रि 9 बजते-बजते मैं अपने विद्यालय पहुँच जाता, जहाँ शक्तावत सा. द्वारा लाया हुआ गाय का दुग्ध पीता। रात्रि में विद्यालय के दो-तीन चक्कर लगा कर खुले आसमान में सो जाता।

अक्सर चाँदनी रात में तारों को निहारते हुए कल्पनाओं में खो जाना भी स्वार्गिक सुख के समान था। एक आराम और यह था कि रात्रि में जहाँ मैं सोता था, वहाँ पर मोबाइल के टावर नहीं आते थे, जिससे मानसिक शान्ति बनी रहती और परमात्मा से निकटता का अनुभव होता। विद्यालय में अकेले सोते हुए भी गहरी नींद आ जाना अद्भुत था।

घर से दूर रहकर भी इतनी शांत और आरामदायक जिन्दगी जीने के बावजूद घर का मोह सालता रहता था। इसी से निजात पाने के लिए प्रत्येक शनिवार को ड्यूटी के बाद मैं

निम्बाहेड़ा के लिए प्रस्थान कर जाता। घर वाले भी अब अधिक प्रेम-स्नेह प्रकट करते। पत्नी का बात-बात पर रूठ जाना अब बन्द हो गया। वो तो पूरी रात ही मीठी-मीठी बातों में गुजार देना चाहती थी। वह कभी पाँवों में तेल मलती तो कभी सिर में। अब वह रात्रि को सोने से पूर्व पाँव दबाना नहीं भूलती।

प्रत्येक सोमवार पत्नी प्रातः तीन बजे उठ कर भोजन तैयार करती और आँखों से गंगा-जमुना की धारा के साथ मुझे विदा करती। प्रातः चार बजे मैं बाँसवाड़ा की बस में बैठता तो अम्बावली तक आराम से सोता उसके बाद बस में बैठा-बैठा ही सागवान के घने जंगलों का आनन्द लेता।

प्रतापगढ़ के बाद और अधिक घने जंगलों से गुजरती सरपट दौड़ती बस में यात्रा करने का अलग ही आनंद था। बीच-बीच में छोटी नदियाँ, ताल, तलैया, वनस्पतियाँ आदि मन को मोह लेती थीं। घने जंगल मुझे दूर से ही पुकारते प्रतीत होते। एक अजीब-सी आवाज सुनाई देती। ''कभी तो हमारे पास आकर बैठो। जब तुम्हें दूर से ही इतना आनन्द आ रहा है तो नजदीक आने पर कितना मजा आयेगा।'' मैं प्रकृति सुन्दरी के आगोश में खो जाता था। गन्तव्य स्थल खमेरा आ जाने पर भी बस से उतरने की इच्छा नहीं होती। एक बार तो इतना भाव-विभोर हो गया था कि खमेरा ना उतर कर सीधे बाँसवाड़ा ही पहुँच गया था।

मेरे शैक्षिक-विद्यालयी जीवन की एक श्रेष्ठ यात्रा खैरवा विद्यालय की थी। जहाँ हर तरह की सुख-सुविधा के साथ अभावग्रस्त जीवन जी रहे विद्यार्थियों को पढ़ाने का आत्मिक सुख भी था।

एक दिन अचानक मेरा स्थानान्तरण खैरवा से बड़ोलीघाटा हो गया। विदाई समारोह में मेरी आत्मा धिक्कार उठी। ''तू इतना स्वार्थी कैसे हो गया? देश प्रेम और समाज सेवा का संकल्प लेने वाला तू, घर-परिवार के लिए इतना अधीर-विचलित क्यों हो गया?'' पूरे विदाई समारोह में शिक्षक-शिक्षार्थी मेरा बखान करते रहे और मैं सिर्फ आँसू-दर-आँसू बहाकर अपना स्वार्थ पाप धोता रहा। मैंने विदाई बेला में स्टाफ के साथियों का आभार प्रकट किया। बाबूजी गणपत लाल जी चरपोटा, रामकिशोर जी मीणा, लक्ष्मण जी यादव, प्रियंका, सुलोचना जी चौबीसा, पूनम चंद जी डामोर, टेलर सा., नरतप सिंह जी शक्तावत सा. सभी को धन्यवाद दिया। अपने स्वार्थ के आगे में इतना शर्मिन्दा था कि बच्चों से आँखे भी नहीं मिला पा रहा था। मैं बस रोता ही जा रहा था। रोते हुए मैंने विद्यालय, खैरवा और आदिवासी अँचल को अलविदा कहा।

मुझे आज भी आदिवासी अँचल खैरवा का वो आदर्श विद्यालय पहले प्यार की तरह याद है, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।

मित्रो! इस संसार में ऐसा पवित्र, निश्छल प्रेम आदिवासी-वनवासी समाज से ही मिल सकता है, बशर्ते हम उनके करीब जाएँ। उनके पास जाने पर ही पता चलता है कि इन गरीब, अनपढ़ भोले-भाले वन आदिवासियों में प्यार का कितना बड़ा समन्दर लहरा रहा है। इन के प्रेम में जो डूबेगा वही तर जायेगा और जो इन्हें दरकिनार करने अर्थात् इनसे पार जाने का प्रयास करेगा वह अवश्य ही डूब जाएगा।

पूर्व प्रधानाचार्य
रा.आ.उ.मा.वि., खैरवा
जिला-बाँसवाड़ा, राजस्थान
मो. 9468661278

कुम्हार की माटी-सा छात्र

❐ **ज्योत्सना सक्सेना**

सजीव शिल्प के रचनाकार शिल्पकार को नमन करते हुए दुआ है कि भारत में ज्ञान, विनम्रता और सम्मान की त्रिवेणी निर्बाध बहती रहे... व्यक्तित्व निर्माण के बीज कर्मठता की धरती में प्रस्फुटित होते रहें... डॉ. राधाकृष्णन का जन्मोत्सव गुरु ऋण से उऋण होने का गौरवशाली परंपरा की शाश्वतता को बरकरार रखने का, गुरु सम्मान को पावन अक्षत सा अक्षुण्ण बनाने का संकल्प दिवस है। गुरु की संकल्पना में दीनहीन विपिन्न पुरुष और साथ में गुरु माता का तेजोमय स्वरूप हमारे जेहन में आता है, उन्हें जो सामाजिक सत्कार व सम्मान प्राप्त था वो अतुलनीय था। त्याग की प्रतिमूर्ति थे वो जो इस सम्मान के सच्चे हकदार थे क्योंकि करुणा, अपनत्व और प्रेम की अंतःसलिल से ओतप्रोत थे वो... ज्ञान की निर्झरणी उनके मुखारबिंद से टपकती थी। बच्चों द्वारा घर में उपद्रव करने पर उसे गुरु के पास ले जाने की धमकी ही पर्याप्त होती थी। शिक्षक की भाव भंगिमा ही पर्याप्त थी उसे सही मार्ग में ले जाने को... प्रत्येक शुभ मंगलकार्य हेतु गुरु का शुभाशीष, उसकी सफलता का संकल्पसूचक होता था। गुरु अपनी आँखों के अनुभव पैमाने से छात्र के पीछे छिपे अनन्य ऊर्जा स्त्रोत को नाप लेते थे। कभी दंड कभी पुरस्कार देकर, कठोर परिश्रम कराकर, उत्कृष्ट मूल्यों के आभूषणों से उसका व्यक्तित्व संवारते थे। उनकी स्वार्थरहित भावना के कारण ही बच्चे औपचारिक शिक्षण के पश्चात् भी गुरु सीख का ताजिन्दगी अनुसरण करते रहते थे। जाने-अनजाने ये संस्कार पूरे परिवार में कालान्तर में परिलक्षित होते थे।

ऐसा नहीं है कि आज पूर्णतः निष्ठावान गुरुओं का लोप हो गया है, या दीन-हीन बनने से उनके प्रति विनीत भाव जाग्रत हो जाएगा। अभिभावकों एवं गुरुओं के मध्य भावों का तालमेल आपसी विश्वास के समन्वयन का स्त्रोत जगाना होगा। शिक्षा की उपादेयता के लिए जहाँ हमारे शिक्षकों को ज्ञान की गंगालहरों में गहराई से डुबकी लगाने के साथ ही शिक्षार्थी के भीतर भी ज्ञान लालसा की उत्कंठा को जन्म देना होगा.... वही अभिभावक को भी अपने बालक को विद्यालय में सौंपते समय जीवन संघर्ष में विजय पाने हेतु मजबूत बनाने वालों के प्रति विश्वास व्यक्त करना होगा... तभी वे उन्मुक्त आकाश में पंछी के मानिंद विचरण कर सकेंगे... छात्र तो कुम्हार की माटी सा है... उसे कूटना पीटना कुम्हार के चाक में घूमना और भट्टी में तपना पड़ता है... तब जाकर एक खूबसूरत स्वरूप प्राप्त कर पाता है... यद्यपि कठोर नियंत्रण व दबाव डालने की नीति अव्यावहारिक है... पर कठोर परिश्रम ही उन्हें आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करेगा, जो समाज की नींव को मजबूती प्रदान करेगा। परिवार, समाज, मीडिया और सरकारी नीतियाँ ये मजबूत स्तंभ हैं शिक्षार्थी के व्यक्तित्व में प्रकाश भरने के लिए... कठोर परिश्रम ही उनमें अदम्य साहस संचरित करेगा। कच्चे लोहे को इस्पात बनने के लिए कष्टदाई प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। स्वयं निर्णय लेने की क्षमता पूर्णतः विकसित हो। भावी पीढ़ी संस्कारित मूल्यवान हो सके इसके लिए सभी का सकारात्मक समन्वयन आवश्यक है। 'वयं राष्ट्रे जाग्रयाम पुरोहितः' हम शिक्षक ही इस राष्ट्र को जाग्रत बनाए रखेंगे।

प्रधानाचार्य, रा. उच्च माध्यमिक विद्यालय, सतना, भिंडर, उदयपुर, **मो: 9829577660**

जनजीवन में प्रतिबिम्बित शिक्षा

❐ देवेन्द्र पाण्ड्या

मानव जीवन गतिशील व्यवहारों, प्रयासों और अन्तःक्रियाओं के द्वारा सुरम्य बहिर्मुखी ओर नवोन्मुखी बनाया जा सकता है। इसके लिए हमें प्राकृतिक सौन्दर्य, सामुदायिक जीवन, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सोपानों को करीब से देखना, दिखाना आवश्यक है, और उसी ओर बढ़ता एक कदम है-पर्यटन। विश्व की विविधता को स्वाध्याय से जानने के साथ-साथ यदि प्रत्यक्ष अवलोकन का भी अवसर मिल जाए तो सोने में सुहागा हो जाता है। ऐसा ही सुन्दर, सजीव व सुखद अनुभव प्राप्त करने का एक अवसर हमें भी मई, 2016 में अपनी यूरोप में नव देशों की यात्रा के दौरान प्राप्त हुआ। भ्रमण हेतु निर्धारित स्थान क्रमशः (1) यू.के. - लन्दन (लन्दन आइ, टॉवर ब्रिज, रिवर थेम्स, बिगबेन, बंकिधम पैलेस तथा मेडम तुसाद वेक्स म्यूजियम) (2) द नीदरलैण्डस-एमस्टर्डम (कुकेनहाफ, विण्डमिल, केनाल क्रूज, न्यूचर्च, द रायल पैलेस एण्ड नेशनल मॉन्यूमॅन्ट) (3) बेल्जियम-ब्रुसेल्स (4) फ्रान्स-पेरिस, (पार्क एस्टिरिक्स, रिवर सेइने क्रूज, लिडो शो, पेरिस बाय नाइट, ग्लास पिरामिड, एफिल टॉवर) (5) स्विट्जरलैण्ड-जेनिवा, लायसिन, ल्यूक्रेन, जुंगफ्राउ एवं इन्टरलेकन, टॉप ऑफ यूरोप ए वण्डरफुल वर्ल्ड आफ ग्लेशियर्स एण्ड इटरनल आइस (6) लिचिस्तीन-वडुज, व्यू ऑफ बडुज कासल (7) आस्ट्रिया- वेटन्स, इन्सब्रूक (8) जर्मनी- म्यूनिक-बी.एम.डब्ल्यू म्यूजियम, ओलम्पिक स्टेडियम (9) इटली- फ्लोरेन्स, रोम, द वेटिकन, पीसा, वेनिस, पाडोवा आदि देश व शहर रहे।

अल्प समय में भी वहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति, उनकी परम्पराएँ, रहन-सहन, रुचियाँ एवं आतिथ्य भावना आदि हर क्षेत्र में वहाँ के लोगों द्वारा गृहीत शिक्षा का वास्तविक प्रतिबिम्ब उनके व्यवहार रूपी दर्पण में हमें भली-भाँति दिखाई दिया। यद्यपि हमारे यहाँ भी साँस्कृतिक चेतना, शिक्षा व शैक्षिक वातावरण की कोई कमी नहीं है परन्तु फिर भी सीखे हुए ज्ञान का जो व्यावहारीकरण (फंक्शनल फॉर्म), उच्चस्तरीय

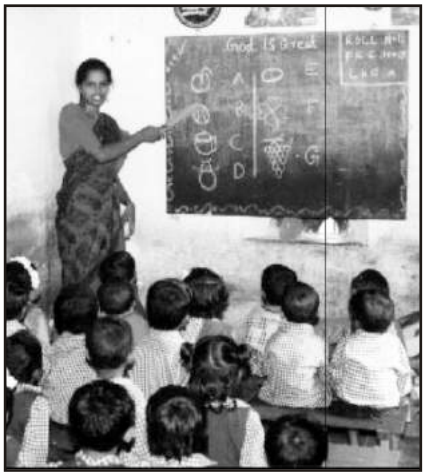

नागरिकता की भावना एवं कर्तव्यबोध से भरी वहाँ की सुखद जीवन शैली आदि ने हमें बरबस वहाँ के उत्कर्ष की कहानी को सहज में समझने हेतु आकृष्ट किया। अतः अपने प्रवास के दौरान वहाँ के लोगों के साथ कुछ समय बिताकर जिन बातों से हमारा परिचय हुआ तथा वे बातें जो हमारे जनजीवन में वांछित हैं और जिन्हें अपनाकर हम हमारे सामाजिक जीवन को उन्नत कर सकते हैं, उन्हें निम्न प्रकार बयां किया जा सकता है-

(1) स्वानुशासित जीवन शैली को आत्मसात किए हुए यूरोपीय लोगों को कहीं भी नियमों का उल्लंघन करते हुए नहीं पाया। चाहे सड़क पर चलने के नियम हों, स्वच्छता की बात हो या दुकानों पर खरीददारी का काम हो कहीं पर भी उन्हें कहने, टोकने या रोकने की आवश्यकता नहीं होती। दुकानों पर सेल्समेन भी लाइन में खड़े हुए व्यक्ति को ही सामान देता है। पंक्ति में खड़े रहने की बात मानों उनकी आदत का हिस्सा हो चुकी है। इस प्रकार स्वानुशासन के अभ्यस्त वहाँ के नागरिक स्वप्रेरणा से कार्य करते जाते हैं।

(2) प्राकृतिक सौन्दर्य को बनाए रखने के लिए समुचित व्यवस्था करना एवं हर थोड़े से अन्तराल में उन्हीं प्राकृतिक स्थलों को पर्यटन हेतु नया रूप देते हुए अन्य नए स्थान भी तैयार करने की कला वहाँ पर बेजोड़ है। यथा बेल्जियम जाते हुए एमस्टर्डम तथा ब्रुसेल्स की यात्रा के दौरान कुकेन हाफ टयूलिपगार्डन का भ्रमण एवं एमस्टर्डम में केनाल क्रूज के अनुभव बड़े ही आनंदप्रद (रिवार्डिंग) हैं। इतना ही नहीं ब्रुसेल्स जाने पर शानदार गोथिक सेन्ट माइकल कॅथीड्रल का अवलोकन एवं यूरोप का सर्वाधिक सुन्दर चौक एवं संसार का पहला शॉपिंग मॉल सेन्टहर्बट देखते ही मनुष्य दंग रह जाता है। पेरिस में सेइन नदी में क्रूज का आनन्द, संसार का प्रसिद्ध लिड़ोशो, पेरिस शहर के विशालदर्शी स्थलों का भ्रमण, एफिल टॉवर के तीसरी मंजिल पर पहुँच कर वहाँ से पेरिस शहर का अवलोकन, माउण्ट कॉक्स एण्ड किंग्ज जाने हेतु केबल कार राइड एवं वहाँ की गॉल इवनिंग सदैव अविस्मरणीय बने रहेंगे। स्विट्जरलैण्ड में ग्लेशियर तीन हजार चिरकालिक बर्फीले पहाड़ पर केवल कार से सुन्दर व आकर्षक आल्प्स पर्वत शृंखला के शिखर पर पहुँचना तथा हृदय की धड़कन बढ़ा देने वाला संसार की उच्चतम बोबस्लेज गाड़ी के मार्ग पर भ्रमण आदि के आनन्द अद्वितीय हैं। लूसर्न में वहाँ के मनोरम पहाड़, झीलें, मर्मस्पर्शी शेर स्मारक (जो कि बहादूर स्विस सैनिकों के फ्रेन्च रिवोल्यूशन में शहीद होने पर स्मरणोत्सव के रूप में निर्मित किया गया था) पर चंद पल ठहरने की अनुभूति अवर्णनीय है। 'जुंग फ्राउ' टाप आफ यूरोप एवं शाश्वत बर्फीले एवं संसार के अद्भुत ग्लेशियर पर आकर्षक कागहिलट्रेल से संसार के उच्चतम रेलवे स्टेशन पर पहुँच कर सुरम्य श्वेत पहाड़ की सैर की दुर्लभ अनुभूति से मनुष्य का मन मयूर नाचने लग जाता है। इस पर भी वहाँ के पर्यटन विभाग द्वारा पर्यटकों को दी जा रही व्यवस्थाएँ व रोमांचक अनुभव हमारे आनन्द को द्विगुणित कर देते हैं। यहाँ पर यह कहना समीचीन होगा कि हमारे देश में भी प्राकृतिक सौन्दर्य की कोई कमी नहीं है पर उनकी देखरेख, व्यवस्था और पर्यटकों के लिए विभिन्न नवीन रोमांचक अनुभवों की कमी से हम स्थानीय व विदेशी पर्यटकों को अधिक लुभा नहीं पा रहे हैं।

(3) स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण तथा प्रकृति प्रेम यूरोपीय देशों के नागरिकों की जीवन

शैली व दिनचर्या में आदत का स्थान ले चुका है। यह बात न केवल वैयक्तिक स्तर पर ही अनुभव की गई अपितु सरकार द्वारा की जा रही व्यवस्थाएँ भी प्रशंसनीय हैं। वहाँ पर हर शहर में हर तीस मीटर की दूरी पर तथा राजमार्गों पर भी एक निश्चित फासले पर एवं बसों के मध्य भाग में भी कचरा पात्र लगे रहते हैं तथा इन सभी कचरा पात्रों की बहुत कम अन्तराल में सफाई होते रहना वहाँ के लोगों की स्वच्छता व स्वास्थ्य के प्रति सजगता का द्योतक है। वहाँ के सार्वजनिक टायलेट्स का नियत समय पर खुलना एवं बन्द हो जाना तथा उनकी नियमित सफाई होते रहना वहाँ के सामाजिक जीवन की स्वच्छता की पहचान है। संक्षेप में हरियाली, स्वच्छ वायु एवं स्वच्छ पानी तो वहाँ के जनजीवन का प्राण है।

(4) श्रमसाध्य जीवन शैली, दायित्व बोध एवं व्यावसायिक दक्षता आदि का यूरोपीय देशों के सार्वजनिक स्थानों को देखने भर से ही परिचय हो जाता है। हर बस में ड्राइवर के साथ कोई सहायक कर्मचारी नहीं होता। वही यात्रियों का सामान बस में रखता है तथा उतारता भी है, जबकि हमारे यहाँ पर ड्राइवर के साथ एक हेल्पर होता ही है तथा ड्राइवर यात्रियों के सामान को रखने में प्रतिष्ठा से नीचे का काम समझता है। इतना ही नहीं प्रत्येक ड्राइवर को वहाँ दिन मे केवल 11 (ग्यारह) घण्टे ही गाड़ी चलाने की स्वीकृति होती है। प्रत्येक दो घण्टे बाद पन्द्रह मिनट का ब्रेक होना अनिवार्य होता है। इन सभी बातों के नियमन हेतु बसों में ऐसी यांत्रिक व्यवस्था होती है जिससे नियंत्रण कक्ष को सब मालूम हो जाता है। वहाँ व्यक्ति कर्त्तव्य बोध से काम करता है चाहे वो सार्वजनिक निर्माण कार्यों को देखने से पता चल जाता है कि वे लोग निर्माण कार्य से सम्बद्ध हर तकनीकी पहलू पर सूक्ष्म रूप से ध्यान देते हैं। अपनी नव देशों की यात्रा के दौरान मैंने यह अनुभव किया की प्रायः वर्षा होते रहने पर भी वहाँ की सड़कों एवं सार्वजनिक चौक आदि स्थानों पर एक कटोरी भर पानी भी एक जगह पर इकट्ठा नहीं दिखाई दिया। ऐसी है वहाँ की पानी निकासी की व्यवस्था। वहाँ पर सार्वजनिक स्थलों यथा संग्रहालय, चर्च, बाग-बगीचे, समुद्र तट, नदी के किनारे एवं बाजार हर जगह सफाई का वो आलम रहता है कि कोई भी व्यक्ति चॉकलेट पर लगा रेपर तक इधर उधर कोनों में डालने की हिम्मत नहीं जुटा सकता। कई बार व्यक्ति उस रेपर को अपनी जेब में ही रख लेता है। तात्पर्य यही है कि स्वच्छता एवं प्रदूषण विहीन स्थितियाँ जीवन में कितनी अनिवार्य हैं उसे केवल सैद्धान्तिक जानकारी तक सीमित नहीं रखकर अनिवार्यतः जीवन में व्यावहारिक रूप दिया जाता है। एक वक्त ऐसा भी आया कि हम अपनी बस से उतर कर किसी रेस्तराँ में प्रवेश कर रहे थे, हमें ऐसा आभास हो रहा था कि रेस्तराँ का हॉल बिलकुल खाली है तथा हॉल में शान्ति है परन्तु अन्दर प्रवेश करने पर देखा कि पूरा हॉल व्यक्तियों से भरा हुआ है तथा लोग आपस में बातचीत भी कर रहे हैं। हमारे प्रवेश पर वो बोल उठे ''नाऊ द इण्डियन्स हेव कम'' यह आवाज भी हमें बड़ी मुश्किल से ही सुनाई दी। तात्पर्य यही है कि साधारण सी भी ऊँची आवाज वहाँ पर शोर या ध्वनि प्रदूषण के रूप में समझी जाती है।

(5) ललित कला के क्षेत्र में विशेषकर स्थापत्यकला, मूर्तिकला एवं चित्रकला से जुड़े हर कार्य में जितनी उच्चस्तरीय सक्रिय तथा अति संवेदनशीलता एवं सूक्ष्मग्राहिता जर्मनी, इटली व रोम, फ्लोरेन्स इन्सब्रुक, म्यूनिख आदि स्थानों के अप्रतिम सौन्दर्य एवं दक्षतापूर्ण कार्यों में देखने को मिली उतनी हमारे यहाँ नजर नहीं आती है। यद्यपि भारत के कई दर्शनीय स्थल विश्व धरोहर हैं परन्तु इन धरोहरों का रखरखाव एवं उनका प्रस्तुतीकरण उन्हें अधिक आकर्षक रूप नहीं दे रहा है। एक अर्थ में हम यह सकते हैं कि हम अपने सोने के सिक्के को भी उसका वास्तविक महत्व नहीं दे पा रहे हैं।

इसी क्रम में कला का एक अद्भुत नमूना यथा इन्सब्रूक पंद्रहवी शताब्दी में सम्राट मक्सिमिलिअन प्रथम द्वारा निर्मित स्वर्णरंजित ताम्बे के कंकड़ों से सुसज्जित गॉथिक बालकनि, म्यूनिख का विश्व प्रसिद्ध पिनाकोथेन कला संग्रहालय, ओलम्पिक स्टेडियम, सेंट पीटर्स चर्च एवं पुनर्जागरण काल के कलात्मक खजाने की मंजुषा कहा जाने वाला विश्व प्रसिद्ध फ्लोरेन्स आदि अद्वितीय एवं अनुपम हैं। यहीं पर एक विलक्षण इतालवी गिरजाघर (डुवोमो) जो कि विश्व का चौथा विशाल कॅथीड्रॅल माना जाता है से हम रूबरू होते हैं। इसी के सिगनोरिया चौक अलवा में ''गेट-वे-टू पेरेडाइज'' जो कि स्वर्णजड़ित आकर्षक एवं चमकीले कांस्य वर्णी बेप्टिस्ट्रि के वे दरवाजे दृश्यगत होते हैं। ठीक इसके बाद रोम में प्रवेश करते ही वहाँ हमारा सामना वहाँ के 'ट्रेविफाउन्टेन', अतिविशाल कॅलॉजियम जहाँ पर कि घमासान व रक्तरंजित ग्लेडिअटोरियल खेल खेले जाते थे, से होता है। इटली में विश्व प्रसिद्ध पीसा की झुकती हुई मीनार है तथा इसके साथ ही पैदल चलने वालों का शहर वेनिस और उसका एक भाग अतिप्रसिद्ध एवं अनोखा जादुई लगून शहर तथा अविश्वसनीय छोटी केनाल जिसके दोनों तरफ इमारतें हैं में क्रूज से जाते हुए सेन्टमार्कस स्क्वेयर पर उतरना जिसे नेपोलियन ने यूरोप का सुन्दर ड्राइंग रूम कहा था और गण्डोला राइड के आनन्द सदैव अवस्मरणीय बन गए हैं। ये सभी आनन्द तथा अनुभूतियाँ हर व्यक्ति अपने वतन में भी चाहने की इच्छा करे तो इसमें कोई गलत बात तो नहीं हो सकती।

उपर्युक्त विदेश भ्रमण के अनुभवों के विवरण के आधार पर एक बात स्पष्ट हो जाती है कि केवल विषय के संदर्भ में सैद्धान्तिक जानकारी ही पर्याप्त नहीं होती अपितु उसका व्यावहारीकरण ही उसे पूर्णता प्रदान करता है और शिक्षा का बुनियादी उद्देश्य तो बालक को एक अच्छा इन्सान बनाना ही है। हमें बालक के जीवन को सुरभित करने हेतु उसमें दोनों प्रकार के विकास की ओर ध्यान देना होगा, अर्थात उसमें संज्ञानात्मक Cognitive aspects के साथ साथ Non-Cogniitive Aspects असंज्ञानात्मक पक्षों को भी समान रूप से मजबूत करना होगा। यही बात गुणवत्तायुक्त शिक्षा की संकेतक है। शिक्षा के माध्यम से हम व्यक्ति को इस लायक बनाएँ कि वो दूसरों के अनुभवों का ठीक से विश्लेषण करते हुए तथा उसमें अपनी समझ को भी जोड़कर अपने लिए नई राह का निर्माण कर सके। आवश्यकता है बालक जो जीवन कौशल की शिक्षा देने की जिसमें जीवन के सभी पक्ष समाहित हैं। इसके अन्तर्गत बालक पहले ज्ञान का अर्जन करता है, फिर उस ज्ञान का अपने स्वयं के एवं सामाजिक जीवन में उपयोग करना सीखता है। इस प्रकार की शिक्षा से व्यक्ति की दृष्टि बनती है जिसका उपयोग वह अपने स्वयं

के नैतिक चरित्र को निखारने में कर सकता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जीवन कौशल की यह शिक्षा बेहतर जीवन जीने आनंदमय एवं प्रेममय बना सकती है तथा यही एक ऐसा माध्यम हो सकता है, जिसके द्वारा वैश्विक जागरूकता एवं मानवीय मूल्य आधारित समझ पैदा करना सम्भव है।

अस्तु यहाँ पर यह कहना समीचीन होगा कि वे सभी नागरिक गुणवत्ता जो हमें यूरोप के देशों के पर्यटन के माध्यम से अनुभव हुई वे सभी गुण हमारे यहाँ के नागरिकों में भी आवश्यकतानुसार लाने हेतु प्रयास किए जा सकते हैं, हमारे यहाँ भी एक अच्छी जीवन शैली के प्रति सोच बनाई जा सकती है। यदि प्रारम्भ से ही बालकों को आवश्यक संस्कार प्रदान किए जाएँ क्योंकि वांछित संस्कारों का प्रस्फुटन व उनका पल्लवन तो बाल्यावस्था में ही होता है तथा संस्कार अवदान के अनुकूल स्थान तो घर एवं विद्यालय ही माने गए हैं। इस पर भी विद्यालय तो संस्कार अवदान एवं जीवन निर्माण का उत्तम स्थान है तथा घर तो इसकी पहली एवं महत्त्वपूर्ण पाठशाला है। निःसन्देह यदि विद्यालयों में भी मानवीय संसाधनों की क्षमताओं के अनुरूप पर्यटन को महत्त्व दिया जाए एवं इसे जीवन धर्म के रूप में भी स्वीकार किया जाए तो बालकों की सर्वांगीण उन्नति के साथ साथ ज्ञान एवं भावना की भूमि को व्यापक रूप मिल सकता है।

से.नि. प्रधानाचार्य
सिविल लाइन्स, गढ़ी
बाँसवाड़ा (राज.)-327022

जीवन के शाश्वत सत्य

❐ अचलचन्द जैन

जीवन के कुछ सच ऐसे हैं, जो शाश्वत हैं और हमें जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराते हैं। जीवन के ये ही शाश्वत सत्य स्वाभाविक रूप से बार-बार हमारे जीवन में घटित होते रहते हैं और विभिन्न रूपों में अलग-अलग तरीके से हमारे सामने आते हैं। वे हमें रुलाते हैं, दुःख-दर्द और पीड़ा देते हैं। इनके उपस्थित होने पर हमारी मानसिक स्थिति बिगड़ जाती हैं, क्योंकि हम मानसिक रूप से इनके लिए तैयार नहीं होते। जीवन के शाश्वत सत्यों में से कुछ इस प्रकार हैं-

(1) मृत्यु- मृत्यु जीवन की सच्चाई है। जो जन्मता है, उसकी मृत्यु निश्चित है। हम सभी अपने जीवन में किसी न किसी को मरते देखते हैं। मृत्यु से जीवन की क्षणभंगुरता का ज्ञान होता है। शमशान घाट पर जब हम मृत व्यक्ति को जलाने जाते हैं तो हमें संसार की असारता का ज्ञान होता है। मन में वैराग्य-सा उत्पन्न होने लगता है, परन्तु कुछ समय पश्चात् हम सब कुछ भूल जाते हैं। दूसरे व्यक्तियों की मृत्यु के बजाय हमारे अपने स्वजनों व आत्मीयजनों की मृत्यु हमें ज्यादा विचलित करती है। इसका कारण स्वजनों के प्रति हमारी आसक्ति है। जीवन की नश्वरता को जानते हुए भी हम वास्तविकता को स्वीकार नहीं कर पाते। मृत्यु के पश्चात थोड़ा समय व्यतीत होने पर मन फिर से संसार में आसक्त हो जाता है और सब कुछ सामान्य होने लगता है। जरूरी है कि हम जीवन की वास्तविकता को समझें एवं जीवन में परोपकार के कार्य कर अपना जीवन सार्थक बनाएँ।

(2) परिवर्तन- मृत्यु की तरह परिवर्तन भी शाश्वत है। संसार की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। हमारा जीवन गतिशील है, हमारे जीवन में हरपल परिवर्तन होते रहते हैं। आज जो जवान है, कल वह बुढ़ापे की ओर अग्रसर होगा। अर्थात् परिवर्तन ही जीवन है। परिवर्तन की इस धारा में वस्तु हो या व्यक्ति या अन्य कोई चीज, सबके स्वरूप, स्वभाव बदलते रहते हैं। सब कुछ नष्ट होने व पुनः सँवरने के लिए तैयार होता है। हम देखते हैं कि वृक्षों के पत्ते पीले होकर झड़ने लगते हैं फिर वृक्षों पर कोंपल आती हैं और उससे नए पत्तों का निर्माण होता है।

जब किसी चीज का निर्माण होता है तो उसका सृजन होता है लेकिन सृजन होने के तुरन्त बाद से उसका क्षरण होने लगता है, यह क्षरण इतना धीमी गति से होता है कि हमें उसका पता ही नहीं लगता। मनुष्य का शरीर भी एक सीमा तक विकसित होता है, फिर वह कमजोर होने लगता है और धीरे-धीरे बूढ़ा होने लगता है। रात के बाद दिन आता है, दुःख के बाद सुख आता है, इस तरह परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। जिंदगी की परिस्थितियाँ कैसी भी हो। अच्छी हो या बुरी, उनमें बदलाव अवश्य आएगा। इसलिए मनुष्य को सदैव आशावान रहना चाहिए।

(3) जैसा करोगे वैसा भरोगे- हम हमेशा जैसा करते हैं, वैसा ही भुगतते हैं। यह शत प्रतिशत सही है, इसलिए शाश्वत सत्य है कि-

बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से होय।

अर्थात् बबूल का पेड़ बोने पर आम नहीं मिल सकते।

कर्म सिद्धांत में भी यही है कि-जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल मिलेगा। इसलिए दूसरों के दबाव में या क्रोध वश अथवा लोभ के कारण गलत काम नहीं करना चाहिए। 'सुनना सबका और करना मन का' के अनुसार सभी दृष्टियों से सोच-समझकर ही अच्छे काम करने का निर्णय लेना चाहिए।

दूसरों को दुःखी करके हम कभी सुखी नहीं हो सकते। अतः हमें दूसरों की भलाई करने में लग जाना चाहिए। हमें याद रखना चाहिए कि अच्छे का फल अच्छा और बुरे का फल हमेशा बुरा होता है।

(4) सफलता की राह में असफलताओं का सामना भी निश्चित है- सफलता के लिए हर व्यक्ति कोशिश करता है लेकिन कुछ को सफलता मिलती है तो कुछ को असफलता। मनुष्य को असफलता से घबराना नहीं चाहिए, बल्कि कमियों और कमजोरियों को दूरकर तथा असफलताओं से सीखकर आगे बढ़ना चाहिए। असफलता ही सफलता तक पहुँचने के मार्ग की सीढ़ी हैं।

सफलता मिलने पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए और असफलता मिलने पर कभी मायूस नहीं होना चाहिए। जीवन सफलता-असफलताओं का संगम है। अतः असफलता मिलने पर पुनः नए सिरे से पूरी शक्ति लगाकर आत्मविश्वास के साथ प्रयास करना चाहिए। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि-''कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।'' जीवन के शाश्वत सत्यों से परिचित होकर हम जीवन में सही निर्णय लेकर आगे बढ़ सकते हैं।

गाँधी मुहल्लों का बास
सायला (जालोर)
मो: 02977272079

शिक्षा क्या और कैसी हो?

❐ पी.डी. सिंह

मनुष्य और अन्य प्राणियों में एक बड़ा अंतर यह है कि पशुओं के शावकों में जो भी कुछ बुद्धि होती है वह उनके जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त होती है, किंतु मानव शिशु की बुद्धि का विकास किये बिना उसका जीवन-निर्वाह होना सहज नहीं है, अतः उसे विकसित करने से ही वह अद्भुत शक्तियों को प्राप्त कर बड़े-बड़े काम कर सकता है। यदि बुद्धि को विकसित या जाग्रत न किया जाए तो मनुष्य जानवरों की अपेक्षा कहीं अधिक निर्बल और निःसहाय रहेगा और उसके लिए मनुष्यत्व प्राप्त करना तो दूर रहा, जीवन निर्वाह करना भी दुष्कर हो जायेगा।

बुद्धि मनुष्य के जीवन-रथ की सारथि है। शिक्षा में बुद्धि विकास और ज्ञानोपार्जन का तो प्रमुख स्थान है ही, साथ-साथ व्यक्तित्व के दूसरे पक्षों पर भी ध्यान देना चाहिए। शरीर को स्वस्थ और बलिष्ठ, भावों को सुंदर और संयत, चरित्र को निर्मल, परोपकारी तथा धार्मिक बनाना आवश्यक है। यह सारा काम उत्तम शिक्षक द्वारा ही किया जा सकता है। बचपन में बालक की शिक्षा का उत्तरदायित्व उसके माता-पिता पर होता है। वे ही उसके प्रथम गुरु हैं। वयस्क लोगों के आचार-व्यवहार और उपदेशों का प्रभाव बालकों के जीवन पर बहुत दूरगामी होता है।

कुछ बड़ा होने पर बालक पाठशाला में प्रवेश करता है। वहाँ उसे नियमित रूप से पढ़ना-लिखना और सदाचरण सीखने का अवसर मिलता है। इस प्रारंभिक शिक्षा में अपने देश का भूगोल तथा इतिहास, सामान्य ज्ञान और विज्ञान, स्वास्थ्य-सिद्धांत आदि जीवनोपयोगी सामग्री सम्मिलित होनी चाहिए। इससे आगे चलकर शिक्षा में विशेषीकरण आरंभ हो जाता है। शिक्षार्थी अपनी रुचि से और योग्यता तथा समाज की आवश्यकतानुसार अपने पाठ्य विषय चुन लेता है। माता-पिता और विद्यालयों से मिली हुई शिक्षा बड़े महत्त्व की होती है, किन्तु उससे भी अधिक महत्त्व की शिक्षा वह होती है जिसे व्यक्ति पठन-पाठन, सोच-विचार, अवलोकन एवं विचार-विमर्श आदि के द्वारा

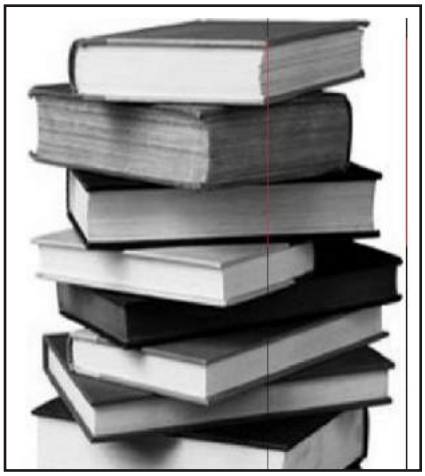

स्वयं अपने आप को देता है। बुद्धिमान एवं प्रगतिशील पुरुष अपने मन के द्वार को नए विचारों के लिए सदा खुला रखता है। वह आजीवन एक शिक्षार्थी बना रहता है वह अपने अनुभव से तो सीखता ही है, दूसरों के अनुभव का भी पूरा लाभ उठाता है। इस प्रकार वह अपने ज्ञान, योग्यता और कार्यकुशलता में निरंतर वृद्धि करता रहता है। शिक्षा वही उपयुक्त है जो विद्यार्थी में नयी बातों को सीखने की तथा ज्ञापोपार्जन की उत्कंठा जगाए और बढ़ावा दे।

मानव-जीवन की विशेषता यह है कि मनुष्य के शरीर का विकास तो प्रौढ़ावस्था में रूक जाता है, किन्तु ज्ञान एवं साधनों का विकास वृद्धावस्था तक जारी रखा जा सकता है। इसके लिए शर्त यह है कि मनुष्य नए विषय सीखने और कठिन समस्याओं का हल खोजने में बुद्धि का निरंतर प्रयोग करता रहे। बुद्धि को क्रियाशील बनाये रखने से मन प्रसन्न रहता है और समस्त शरीर को भी सुखी और स्वस्थ रखने में बड़ी सहायता मिलती है। बुद्धि और मन को शुभ चिंतन और शुभ कार्यों में लगाए रखना दीर्घायु का भी एक रहस्य है।

शिक्षा की सफलता के लिए यह परमावश्यक है कि विद्यार्थियों के मन में अपने शिक्षकों के प्रति प्रेम और आदर का भाव हो। शिक्षा का स्तर तभी ऊँचा हो सकता है जब अध्यापक स्वयं अपने को आदर का पात्र बनाए। शिक्षक भावी राष्ट्र के निर्माता हैं। अच्छी शिक्षा द्वारा भारत को पृथ्वी पर स्वर्ग सरीखा बनाया जा सकता है, यही हमारा उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षा वही है जिससे मनुष्य जीवन के हर पहलू का विकास और उत्थान हो। ऐसी शिक्षा में मानव जीवन के सारे कर्तव्यों, उद्देश्यों, आदर्शों, धर्म-ज्ञान और विज्ञान का सार समाविष्ट होना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें तो उत्तम शिक्षा वही है जो विद्यार्थियों को ज्ञानवान बनाने के साथ-साथ स्वधर्म पालन का पाठ भी सिखाए और उनके मन में यह बात अच्छी तरह जमा दे कि अपने कर्तव्य एवं धर्म को कुशलता और निष्ठापूर्वक निभाने वाले परम सिद्धि को प्राप्त कर लेते हैं। वही शिक्षा गुणकारी होती है जो सदाचरण, दायित्व वहन, अहिंसा, करुणा एवं माता-पिता के प्रति जीवन भर सेवा का भाव सिखाए; साथ ही आत्म-विश्वास संपूरित करे और भौतिक सफलता भी प्राप्त करा सके। परोपकार की भावना तथा ईर्ष्या रहित होना, लोभ का त्याग इत्यादि भाव भर सके।

संसार का कार्य चलाने के लिए साधारण दक्षता तो पर्याप्त है ही किन्तु समग्र राष्ट्र और विश्व की उन्नति के लिए उत्तम दक्षता की आवश्यकता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मूर्धन्य विद्वान, कार्य-कुशल एवं उदार महापुरुषों की आवश्यकता है। समय के साथ आगे बढ़ते रहने के लिए बालकों तथा नवयुवकों में महानता तथा नेतृत्व के गुणों का विकास होना चाहिए। हमारे देश को तपस्वी संतों और धर्माचार्यों से साथ-साथ महान वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, डॉक्टरों, शिक्षाविदों, निःस्वार्थ राष्ट्र-भक्त राजनेताओं, सुयोग्य प्रशासकों और उदार उद्योगपतियों की भी आवश्यकता है। यह सब उत्तम शिक्षा से ही संभव है।

शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो धर्म, व्यक्तित्व, आचरण व सेवा के सभी तथ्य एवं लक्ष्य स्पष्ट करे। हमारे शास्त्रों में धर्म के चार चरण या स्तम्भ बताये गये हैं-तपस्या/ साधना, सत्य, संयम और परोपकार। इसी तरह शास्त्रों में जीवन के चार मुख्य उद्देश्य या फल भी बताए

गये हैं–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। आवश्यकता ऐसे शिक्षकों की है जो मनुष्य को चारों ही पदार्थों की प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित करें और यह भी कि प्रत्येक व्यक्ति पूरा पुरुषार्थ तो करे किन्तु केवल अपने ही लाभ के लिए नहीं अपितु सभी के कल्याण के लिए करे। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो मेहनत और ईमानदारी से प्राप्त साधनों का सबकी भलाई के लिए सदुपयोग करना सिखाए। सात्त्विक सुख वही है जो दूसरों को सुख देने से मिलता है। भक्त कवियों ने कहा है–

'सुख दीन्हे सुख होत है' 'पर हित सरिस धर्म नहिं भाई', 'वैष्णव जन तो तेने कहिए, जो पीर पराई जाणे रे'।

समष्टि अर्थात् समाज के प्रति,राष्ट्र एवं संसार के प्रति व्यक्ति का क्या कर्तव्य है, शिक्षा में यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाना चाहिए। समष्टि भगवान के विराट स्वरूप का ही अंग है, उनसे ओत-प्रोत है। इसलिए समाज की सेवा विराट् भगवान की अराधना है। समुचित शिक्षा वही है जो मनुष्य को बुद्धिमान, विद्या-प्रेमी और कार्य-कुशल बनाए, उसे संयम, सदाचार,शील और परोपकार के मार्ग पर अग्रसर करे। गीता के शब्दों में वह श्री, विजय, विभूति और नीति से सम्पन्न हो।

रामचरित मानस ने राष्ट्र में राम राज्य होने का आधार बताया है–

''दैहिक, दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहि व्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीति।
चलहिं स्व धर्म निरत श्रुति नीति।।
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।
नहिं कोउ अबु धन लच्छन हीना।।
सब निर्दंभ धर्मरत पुनी।
नर अरू नारि चतुर सब गुनी।।
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी।
सब कृतग्य नहिं कपट सयानी।।
राम राज कर सुख संपदा।
बरनि न सकई कनीस सारदा।।

ऐसे महान, सुंदर, सुखी, समृद्ध, ऐश्वर्यशाली और सदाचारी राष्ट्र का निर्माण करना ही शिक्षा का परम लक्ष्य है।

टैगोर ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स
शास्त्री नगर, जयपुर 302016
मो: 9829014513

इंडिया दैट इज भारत

❐ आनन्द कुमार नायर

भाषा को जानने, पढ़ने व लिखने से ज्यादा जरूरी है भाषा में ही अर्थ को समझना। हिन्दी के मामले में नई पीढ़ी बेशक हिन्दी बोल व समझ रही है, लेकिन वह हिन्दी को पूर्णार्थ के साथ नहीं समझ पा रही है। उदाहरण के लिए, अगर रविवार कहा जाए और किसी बच्चे को समझ न आए तो हम फटाक से कह देते हैं 'सण्डे'। इस तरह बच्चे के मन में सण्डे का अनुवाद रविवार के रूप में दर्ज हो जाता है। अगली बार जब भी वह रविवार शब्द सुनता है तो उसे सण्डे के रूप में ही समझता है। वह यह नहीं जान पाता की रविवार सोमवार से पहिले या शनिवार के बाद आता है, रविवार यानी रवि का वार, रवि सूर्य का पर्यायवाची है यानी भगवान सूर्य के नाम पर इसे रविवार कहा जाता है।

आप गौर करेंगे तो जानेंगे कि हिन्दी कहाँ और कैसे धीरे-धीरे खत्म हो रही है। पहले पढ़ाई लिखाई में 'कोशिका' यानी 'सेल' समझाया गया। फिर 'कोशिका' शब्द अनावश्यक व कठिन माना जाने लगा और सिर्फ 'सेल' ही बच गया। अब यह प्रवृत्ति आम बोलचाल के शब्दों में भी घर करती जा रही है। बच्चा पूछता है कि 'किसान' किसे कहते हैं तो अध्यापक/अभिभावक 'फार्मर' बता कर छुट्टी पा लेते हैं। इस तरह किसान का मतलब तो जान पाया लेकिन अगली बार जब उसे खेती करने वाले व्यक्ति के बारे में कुछ बोलना होगा तो किसान की जगह उसके मस्तिष्क में 'फार्मर' ही उभरेगा। इस तरह हिन्दी के सैकड़ों शब्द अंजाने में ही हिन्दी की डिक्शनरी में बेमतलब होते जा रहे हैं।

इसमें मूल बात यह है कि हम सही व गलत के स्थान पर सरल व कठिनता के मापदण्ड को अपनाते हुए जल्दी से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विस्तार से बताने के बजाय जल्दी के चक्कर में पिण्ड छुड़ाने की मानसिकता से जवाब दे रहे हैं। शिक्षा से जुड़े अध्यापक वर्ग व अभिभावक के इस प्रयोग के कारण ही पत्रकार व मीडिया जगत भी उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल करने लगे हैं। जिससे यह समस्या और ज्यादा बढ़ती जा रही है।

सोचना चाहिए, क्या हम अपने आलस व लापरवाही के कारण अपने बच्चों/छात्रों को उनकी जड़ (मातृ/राष्ट्र भाषा हिन्दी) से दूर तो नहीं कर रहे हैं। हिन्दी के कई शब्द व अंक तो इसी कारण कब से लुप्त हो गये हैं पता ही नहीं चला। अब समय व दूरी की समझ, पौने, सवा व ढाई की गणना, उन्हें न समझाकर क्या उन्हें उन्हीं की दुनियाँ से अनजाने में हम दूर नहीं कर रहे? भारतीय लिखित संविधान की पहली पंक्ति में 'इंडिया दैट इज भारत' से ही शायद इसकी शुरुआत हो गई थी। अंग्रेजों ने भले ही हार कर भारत को आजाद कर दिया परन्तु अंग्रेजी नहीं हारी व आज भी नई पीढ़ी की चहेती है। हर भाषा का अपना महत्त्व है पर हिन्दी भाषा के अर्थ को समझाने के लिए हिन्दी का प्रयोग जब किया जा सकता है तो फिर अन्य भाषा के समानान्तर शब्दार्थ को समझाने का प्रयास हिन्दी के लिए ठीक कैसे है? हम भारत का अर्थ इंडिया के बजाय हिन्दी में भारतवर्ष के बारे में विस्तार से समझाने का ही प्रयास करेंगे तो हिन्दी के लिए व समझने वाले बच्चे/छात्र दोनों के लिए भी अच्छा होगा। वह भारत के बारे में भी कभी भी बात करेगा तो उसे भारत ही समझेगा, इंडिया नहीं। भारत के बारे में कभी बोलना भी पड़ेगा तो विस्तार से बता भी सकेगा। भारत वह महान् देश है जो.....।

वरिष्ठ लिपिक
2 ई-64 जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर
मो. 9414327725

विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा : शिक्षक की भूमिका

❐ कन्हैयालाल जैन

वर्तमान शैक्षिक जगत में ज्ञान का विस्फोट हो रहा है। यह विस्फोट शैक्षिक जगत के लिए चिन्तनीय और सोचनीय है। आज का बालक कल के राष्ट्र की धरोहर है। शिक्षक का दायित्व है कि बालक की समस्त ऊर्जा का उपयोग कर उसकी प्रतिभा में निखार लाएँ। बालक के चहुँमुखी विकास के लिए कक्षा-कक्ष अध्यापन के साथ-साथ सहगामी प्रवृतियाँ भी आवश्यक है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है ''महान कार्य महान त्याग से ही सम्भव हो सकते हैं।'' यह त्याग बालक के व्यक्तित्व निर्माण हेतु शिक्षक व अभिभावक द्वारा होता है। शिक्षा से बालक का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। इसमें मस्तिष्क, हृदय एवं हाथों का समन्वित विकास होना चाहिए।

विद्यालय वह मंच है, जहाँ शिक्षक रूपी कलाकार के साथ बालक साहित्यिक, सांस्कृतिक, खेलकूद, कला, आध्यात्मिक क्षेत्र में स्वस्थ प्रतियोगिता के द्वारा अपनी योग्यता को प्रदर्शित कर सकते हैं। प्रत्येक बालक जन्म से कुछ न कुछ प्रतिभा लेकर इस जगत में आता है, किन्तु आवश्यकता होती है उसको जाग्रत कर परिवर्धन एवं परिमार्जन करने की। बालक बचपन से जो कुछ देखता है, सुनता है, भीतर और बाहर की प्रतिक्रिया करता है, समझ का विस्तार तो उसके साथ ही होता चला जाता है। समझ शब्दों की मोहताज नहीं होती। एक शब्द भी पढ़े बिना, जीवन भर समझ का यह विस्तार संभव है तो जाहिर है कि शब्दों से पहले दुनिया को पढ़ना जरूरी है। फ्रेयरे का कहना है कि शब्दों को पढ़ने से पहले दुनिया को पढ़ने की बात करते समय मेरे सामने प्रश्न था कि पढ़ने की इन दोनों प्रकार की क्रियाओं को एक साथ कैसे रखा जाए। आज मैं भूखा क्यों हूँ? इसका उत्तर है कि मेरे पास खाने को कुछ नहीं है। भोजन क्यों नहीं है क्योंकि मेरे पास कोई धंधा नहीं है। मुझे धंधा क्यों नहीं मिल सकता? एक प्रश्न से दूसरा प्रश्न पैदा होता है और भिन्न-भिन्न उत्तरों के बीच में अध्येता के सामने वे कारण उद्घाटित होते चले जाते हैं जो उस परिवेश के लिए जिम्मेदार हैं।

यही तो शिक्षा की यात्रा है और ऐसे प्रश्नों से जूझते हुए जो शिक्षा प्राप्त होती है, वह आगे जाकर शब्दों की शिक्षा की भावभूमि बनती है।

विद्यालय के वातावरण में शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक क्षेत्र में विद्यार्थियों की मानसिकता उनकी इच्छा और आकांक्षाओं के अनुरूप स्वस्थ वातावरण निर्मित किया जाए तो विद्यार्थियों में नवीन उत्साह एवं परिवर्तन देखने को मिलेगा। बालक जन्म से मृत्यु पर्यन्त परिवर्तन की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता है तथा स्वयं को परिस्थितियों के अनुरूप ढालने का प्रयास करता है। जो बालक सकारात्मक प्रतिस्पर्धा के साथ आगे बढ़ता है, उसकी दशा और दिशा दोनों बदल जाती है। जो विद्यार्थी स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के बजाय नकारात्मक सोच से आगे बढ़ता है वह दिग्भ्रमित हो जाता है। उसकी उमंग, उल्लास, सपने एवं कल्पनाएँ साकार रूप नहीं ले पाती और वह निराश-हताश होकर जीवन को नीरस बना देता है। मानसिकता परिवर्तन विद्यार्थियों में विचार शक्ति को बढ़ाता है और बौद्धिक परिवर्तन उसे परिपक्वता की ओर ले जाने के लिए प्रेरित करता है। कक्षाओं में दी जाने वाली शिक्षा मात्र एक औपचारिकता का निर्वाह करती है, किन्तु सह-शैक्षिक प्रवृत्तियाँ बालक में अनौपचारिक ढंग से जीवनोपयोगी गुणों को विकसित करने का एक सशक्त माध्यम है। इन प्रवृत्तियों के द्वारा विद्यार्थियों में पारस्परिक सहयोग, आदर, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, अनुशासन, अवकाश के क्षणों का सदुपयोग, उदारता व सामाजिक उत्तरदायित्वों के मूल्यों का विकास होता है जो निस्सन्देह एक सफल जीवन के लिए आवश्यक है।

शिक्षक का कर्तव्य है कि परिवर्तन की प्रत्येक अवस्था में विद्यार्थियों को अनेक प्रतियोगिताओं द्वारा उचित मार्गदर्शन प्रदान करें। अन्यथा शिक्षक की उपेक्षा खिलती हुई कलियों को समय से पूर्व मुरझाने पर विवश कर सकती है। ऐसे में शिक्षक का दायित्व है कि वह बालक की आत्मा का शिल्पी बने तथा सृजन रूपी हथियार द्वारा बालक की ऐसी मूर्ति बनाए जो संसार में शिक्षक, माता-पिता एवं राष्ट्र का नाम रोशन करे।

आज समय की माँग है कि शिक्षक विद्यार्थी को जिज्ञासु बना दे। बिना जिज्ञासा का मनुष्य आलसी, प्रमादी हो जाता है, तुच्छ रह जाता है जबकि जिज्ञासु मनुष्य हर कार्य में तत्पर एवं कर्मठ होता है। जिस विद्यार्थी में जिज्ञासा है, वह छोटी-छोटी बातों में भी बड़े-बड़े रहस्य खोज लेगा और जिसके जीवन में जिज्ञासा नहीं है, वह रहस्य को देखते हुए भी अनदेखा कर देगा। कक्षा में शिक्षक तो सब विद्यार्थियों के लिए एक ही होते हैं, पुस्तकें भी एक-सी होती है, किन्तु जिज्ञासु विद्यार्थी प्रतिस्पर्धा द्वारा माता-पिता, गुरुजनों एवं विद्यालय का नाम रोशन करते हैं।

साथियों, हर मिट्टी में कलाएँ छिपी होती है। जिस मिट्टी को संवर्द्धन किया गया, वह अपने को साँचों में ढलकर मूर्त रूप प्राप्त कर लेती है एवं जिसे शिल्पी न मिला वह मिट्टी की मिट्टी ही रह जाती है। कभी-कभी कुदरत किसी इन्सान के साथ ऐसा मजाक करती है कि उसकी जिन्दगी तबाह हो जाती है, किन्तु लक्ष्य सामने हो, हौंसले बुलन्द हो, कार्यशक्ति मजबूत हो तो जीत निश्चित होती है। आप जी टी.वी. देखते होंगे। 'Dance India Dance' में पेरेलिसिस से पीड़ित हुआ व्यक्ति कमलेश पटेल जो वडोदरा गुजरात का निवासी है, अपने हाथों के बल

'दुनिया वालों बुरी नजर ना हम पर डालो, सबसे आगे होंगे हिन्दुस्तानी' गीत पर जो डाँस किया, उससे जजों के आँखों में आँसू छलक आए। इससे एहसास होता है कि शिक्षक विद्यार्थियों को अनेक क्षेत्रों से परिचित कराए तो स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के माध्यम से बालकों में छिपी हुई प्रतिभा में निखार निश्चित रूप से हो सकता है, जिन्हें निर्देशन द्वारा पूरा किया जा सकता है।

साथियों, विद्यालय को घर बनाइए, विद्यालय को खेल बनाइए, विद्यालय को पहेली बनाइए, विद्यालय को जिज्ञासा, प्रश्न और खोज बनाइए। तभी विद्यालय विद्यार्थी का आनन्द केन्द्र बनेगा।

विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकास के आयामः–

1. **प्रार्थना सभा–** 'प्रार्थना वह स्वर्ण पंख है, जिसके सहारे आत्मा स्वर्ग की ओर जाती है।' प्रार्थना सभा में सभी कक्षा के बालकों को बारी-बारी से प्रतिदिन संस्कारयुक्त विषयों पर पाँच मिनट अभिव्यक्ति हेतु कहा जाए। प्रतिस्पर्धा में सभी बालकों को सराहा जाए, किन्तु विशिष्ट व्यक्तित्व की पहचान बालकों के माध्यम से हो। बालक ही श्रेष्ठ बालक का नाम घोषित करे, इससे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास होगा।
2. **उपस्थिति–** विद्यालय में प्रतिमाह अधिकतम उपस्थित रखने वाले छात्र की कक्षा को Running Shield दी जाए। एक माह तक कक्षा में Shield रहेगी, जिससे अधिकतम उपस्थिति रहने की स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित हो सकेगी।
3. **पुस्तकालय–** प्राचीन काल में शिक्षा का एकाधिकार शिक्षक में निहित था। आज टी.वी., रेडियो, कम्प्यूटर, पुस्तकालय, पत्र-पत्रिकाएँ, पत्राचार पाठ्यक्रम, दूरस्थ शिक्षा, शिक्षण के सशक्त विकल्प एवं प्रतिस्पर्धी बनकर उभरे हैं। विद्यार्थियों की बौद्धिक एवं मानसिक भूख को मिटाने के लिए प्रत्येक विद्यालय में एक अच्छा पुस्तकालय होना चाहिए। विद्यार्थियों को पुस्तकालय का अधिकतम उपयोग करने को कहा जाए। विद्यार्थियों द्वारा पढ़ी हुई पुस्तक का सारांश लिखित में प्राप्त किया जाए। सभी विद्यार्थियों के अनेकों सारांशों में से सर्वश्रेष्ठ सारांश का चयन कर प्रार्थना सभा/मीटिंग में सुनाया जाए तथा बालकों द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा का चयन कराया जाए। जिससे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास होगा।
4. **विचार-क्रान्ति योजना–** विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों, समस्याओं एवं विकास को निरूपण करने हेतु चार्ट्स, पेन्टिंग छात्रों को बनाने को कहा जाए। विवेकानन्द जयन्ती पर अनमोल वचन, श्लोक, कहानी, प्रेरक प्रसंग, भाषण, संस्मरण, स्वानुभव, सहिष्णुता, विद्यालय सौन्दर्यकरण, राष्ट्रीय एकता, शैक्षिक निर्देशन सम्बन्धी आपसी चर्चा द्वारा विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास किया जा सकता है।
5. **स्व-अनुशासन–** आत्म-विश्वास उत्पन्न करने का तरीका यह है कि किसी भी स्थिति में विद्यार्थी को आवश्यकता से अधिक सहायता न दी जाए। हर स्थिति में बालक को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए, ताकि वह आत्म-विश्वास बनाए रख सके, आत्म-सम्मान की रक्षा कर सके एवं विद्यालय व समाज में सेवक एवं नेता दोनों रूप में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा कर अपने कर्तव्यों का भली प्रकार पालन कर सके। अनुशासनहीनता पर विद्यार्थियों में गलती की स्वानुभूति व स्वीकारोक्ति कराकर सुधार हेतु प्रेरित किया जाए। अपराध प्रवृत्ति पर प्रश्नोत्तर हो।
6. **सर्व धर्म शिक्षा–** राष्ट्रीय क्रांतिकारी संत मुनि श्री तरुणसागर जी के अनुसार जैन धर्म से अहिंसा, हिन्दू धर्म से भक्ति, बौद्ध धर्म से करुणा, इस्लाम धर्म से भाईचारा, ईसाई धर्म से सेवा, सिक्ख धर्म से शौर्य भाव ग्रहण करना पड़ेगा। इन सबके सम्मेलन से मानवता तो समृद्ध होगी ही, साम्प्रदायिक सद्भावनाओं को भी बल मिलेगा। ऐसी विचारधारा का विद्यार्थियों में विकास स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को जन्म देगा।
7. **राष्ट्रीय चेतना प्रायोजना–** राष्ट्रीय पर्वों पर विद्यार्थियों द्वारा एक-दूसरे को राष्ट्रीय संदेशों का आदान-प्रदान करा स्वस्थ राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का विकास किया जा सकता है।
8. **संप्रेषण प्रक्रिया–** प्रत्येक क्षेत्र में नवीन व गहनतम ज्ञान को विद्यार्थियों व जनसमूह तक पहुँचने में संप्रेषण प्रक्रिया महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा एवं विद्यार्थियों की सफलता का आधार आज प्रभावी संप्रेषण बन गया है। शिक्षक के संप्रेषण से ही विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास होगा। संप्रेषण अभिप्रेरणादायक होना चाहिए।
9. **गृहकार्य योजना–** गृह कार्य द्वारा छात्र में छिपी हुई प्रतिभा एवं रचनात्मकता का विकास होता है। गृह कार्य से छात्रों में आत्म विश्वास पनपता है। विषयाध्यापक द्वारा अपने विषय से सम्बन्धित महत्वपूर्ण प्रश्नों की प्रश्न मंजूषा बनाकर प्रति बालक एक प्रश्न का उत्तर लिखकर लाने को कहा जाए। प्राप्त विभिन्न प्रश्नों के उत्तर का बालकों में आपसी आदान-प्रदान करा स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास किया जा सकता है। इससे गृह कार्य की बोझिलता कम हो जायेगी।
10. **छात्रों का टोली में समूहीकरण–** प्रत्येक कक्षाध्यापक द्वारा कक्षा में 10 या 15 विद्यार्थियों का ग्रुप बनाया जाए। प्रत्येक ग्रुप के प्रत्येक विद्यार्थी के बारे में समस्त जानकारी हासिल करने को कहा जाए। वर्ष में दो या तीन बार समूह परिवर्तन से सभी विद्यार्थियों में आपसी मेल-जोल बढ़ेगा एवं प्रतिभाओं का आपस में लोकतांत्रिक ढंग से स्थानान्तरण होगा।
11. **विद्यालय विकास समिति एवं शिक्षक का योगदान–** विद्यालय विकास समिति के माध्यम से समाज सुधारक एजेन्सियों से विद्यार्थियों को जोड़ा जाए। विद्यालय प्रशासन एवं शिक्षकों द्वारा ऐसी व्यूहरचना करनी चाहिए कि अभिभावक स्वयं बालक के प्रति सजग एवं सतर्क हो जाए तथा विद्यार्थियों में संस्कारों का विकास हो सके। इस हेतु दुनिया में महापुरुषों, कलाकारों एवं उद्यमियों ने जो लक्ष्य बनाए एवं हासिल किए, उसे विद्यार्थियों

के सामने प्रस्तुत किए जाने चाहिए, जैसे बिल गेट्स का सपना, ताजमहल का सपना, पेरिस ऐफिल टॉवर का सपना, लक्ष्मी नारायण मित्तल का सपना। बालकों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा हेतु ऐसी विधा विकसित की जाए कि प्रत्येक बालक अपने सपने को, लक्ष्य को एक कागज पर लिखकर ऐसे स्थान पर चिपका दे जहाँ प्रतिदिन उसकी दृष्टि बार-बार उस पर पड़े और उसे लक्ष्य हासिल करने की याद दिलाए। बालकों की आकांक्षाओं, अभिलाषाओं एवं अपेक्षाओं को समय के साथ जोड़ दीजिए, कब, क्या, कितना भाग पूरा करना है, अवश्य ही बालक का भविष्य सँवर जाएगा।

12. **सामाजिक उत्तरदायित्वों का बोध कराना**–विद्यार्थियों में राष्ट्र भावना उत्पन्न की जाए। विद्यार्थियों को ऐसी जिम्मेदारियाँ सौंपी जाए, जिससे उनकी ऊर्जा का सदुपयोग हो सके। विद्यालयों में विचार मंच, चर्चा, परिचर्चा, समूह चर्चा, अभिनय, विशिष्ट एवं साधारण व्यक्तियों से साक्षात्कार कराकर उनके अनुभवों को सुना जाए एवं समाज का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाए।
13. **अभिनव प्रयोग**–कक्षा-कक्ष में अर्द्धवार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर बालकों का चार श्रेणियों में समूहीकरण किया जाए-

A- 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्तकर्ता।
B- 60 प्रतिशत से 80 प्रतिशत तक अंक प्राप्तकर्ता
C- 40 प्रतिशत से 60 प्रतिशत तक अंक प्राप्तकर्ता।
D- 40 प्रतिशत से कम अंक प्राप्तकर्ता।

चार ग्रुपों में प्रत्येक ग्रुप के ज्ञान का आपस में आदान-प्रदान कराया जाए अथवा सी एवं डी ग्रुप के छात्रों को ए एवं बी ग्रुप के साथ जोड़ा जाए तो निश्चित ही स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास होगा एवं परीक्षा परिणाम उन्नत होंगे।

14. **सेवा सम्बन्धी कार्य**–विद्यार्थियों को एन.एस.एस., एन.सी.सी., स्काउटिंग, समाज सेवी संस्थाओं से जोड़ा जाए तो स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का सामाजिक क्षेत्र में विकास होगा।
15. **स्वाध्याय मार्गदर्शन योजना**–शिक्षकों द्वारा प्रतिभावान एवं कमजोर छात्रों को गोद लेकर उनके घर स्वाध्याय का अवलोकन किया जाए एवं उनके कमजोर पक्ष को उजागर कर बालकों को सबल बनाने का प्रयास किया जाए तो निश्चित ही बालक में शिक्षा के प्रति एवं शिक्षक के प्रति अनुराग बढ़ेगा तथा शैक्षिक जगत् में गुणवत्ता का विकास होगा।
16. **अन्य कार्य**–इन सबके अतिरिक्त प्रजातांत्रिक शिक्षण, अन्वेषण प्रवृति का विकास, शिक्षक संकुल योजना, दलीय परिचर्चा एवं कक्षा खेल प्रतियोगिता में विद्यार्थियों का जुड़ाव स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकास में सहायक होगा।

अन्त में सारांश में यह कहना चाहूँगा कि शिक्षा बालक का समग्र विकास करती है किन्तु एज्युकेशन रेल के डिब्बों की तरह 95% एक जैसे विद्यार्थी बना रही है, वह भी अपूर्ण। शिक्षित विद्यार्थी शरीर व बुद्धि में आगे होगा लेकिन मन व आत्मा से शून्य; क्योंकि हमारी शिक्षा आज भी विदेशी नकल पर आधारित है। शिक्षा प्रणाली में बुनियादी तब्दीली लाने के लिए किसी अवतार की अपेक्षा न करें। यह कार्य तो स्वयं शिक्षक को ही करना होगा। उसी पर परिवर्तन की उम्मीदें टिकी हैं। वही दृष्टा है, वही अन्वेषक है, वही माध्यम है, वही मेसेज है। अगर शिक्षक के भीतर का कम्युनिकेशन जिन्दा है तो तामील का वांछित असर विद्यार्थियों पर पड़ेगा ही पड़ेगा और भविष्य में स्वस्थ, उन्नत, प्रगतिशील, विकसित, समृद्ध एवं शिक्षित राष्ट्र का निर्माण होगा।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
शिक्षा विभाग, राजस्थान
तहसील रोड खेरवाड़ा, उदयपुर
मो. 9414976757

कर्म स्वदेशी धर्म स्वदेशी

एक समय ऐसा था, जब इंग्लैण्ड में भारतीय कपड़े की बिक्री पर बंदिश लगा दी गई थी। भारतीय कपड़ा तस्करी के माध्यम से इंग्लैण्ड में बिकता था और इसके विरोध में वहाँ स्वदेशी हलचल चल रही थी। मैनचैस्टर से सस्ता कपड़ा भारत आने लगा था। इस कारण भारतीय कपड़ा और भी मंदा हो गया। बेरोजगारी बढ़ी और देश का पैसा भी इंग्लैण्ड जाने लगा। तिलक जी ने 'विदेशी का बहिष्कार' और 'स्वदेशी अपनाओ' के मंत्र से जनता को परिचित कराया। महात्मा गाँधी ने इसका प्रचार-प्रसार देश भर में किया। इस प्रचार की आग पुणे जिले की अँबिगाँव तहसील के ग्राम महालुंगे पडवल पहुँची। इसी गाँव का एक नौजवान जो मुम्बई में आटा चक्की में काम करता था, स्वदेशी का प्रचार-प्रसार करता हुआ मित्रों के साथ अपने मुहल्ले में घूमा करता था। एक दिन खबर सुनी गई कि मुम्बई की गोदी में मैनचैस्टर से आया हुआ कपड़ा उतरा है और उसको 12 दिसम्बर को ट्रकों में लादकर विभिन्न शहरों में पहुँचाया जाना है। सबने तय किया कि यह नहीं होना चाहिए। घर-घर, गली-गली में प्रचार शुरू हुआ। 'रास्ता रोको अभियान' का निश्चय हुआ।

आखिर 12 दिसम्बर 1930 की सुबह का समय आया। मुम्बई के कालबा देवी इलाके में एक जन सैलाब उमड़ पड़ा। 'जय स्वदेशी' 'भारत माता की जय' के नारों से आसमान गुंजित हो उठा। अंग्रेज सरकार ने भी दमन का पक्का बन्दोबस्त कर रखा था। जैसे ही कपड़ों की पहली गाड़ी कालबा देवी पहुँची, ड्राइवर बलवीरसिंह को अचानक गाड़ी के ब्रेक लगाना पड़ा। भीड़ रास्ता रोके खड़ी थी। साथ बैठे अंग्रेज सार्जेन्ट ने संगीन चुभोकर ड्राईवर को आगे बढ़ने को कहा। गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। वीर युवा बाबू गेनू ने आव देखा न ताव, सीधे जाकर गाड़ी के सामने लेट गया। अब ड्राइवर को गाड़ी रोकनी ही पड़ी। लेकिन क्रूर अंग्रेज सार्जेन्ट कहाँ मानने वाला था? उसने ड्राइवर को धक्का मारकर खुद गाड़ी संभाली। फिर क्या था। दुष्टता की सारी हदें तोड़ते हुए गाड़ी बाबू गेनू का सीना चीरते हुए आगे बढ़ गई। पल भर में धरती उस देशप्रेमी के खून से लाल हो गई। एक साधारण-सा 22 वर्षीय नौजवान असाधारण साहस दिखा गया। क्रुद्ध भीड़ बेकाबू हो गई और सारी गाड़ियाँ उसी समय आग के हवाले कर दी। स्वंतत्रता पूर्व विदेशी सामान के लिये शहीद होने वाले एकमात्र युवक को शत्-शत् प्रणाम।

राष्ट्रीय कार्यक्रमों में शिक्षकों की भूमिका

❐ राकेश मोंगिया

प्राचीन समय से लेकर वर्तमान की स्थितियों में यदि हम गहनता से अवलोकन करें तो पाएँगे कि शिक्षक राष्ट्र के विकास की सीढ़ियाँ चढ़ता आ रहा है।

राष्ट्रीय विकास में चाहे कोई क्षेत्र क्यों न हो शिक्षकों के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। चाहे वह ज्योतिष का क्षेत्र हो या गणितीय गणनाओं का, चिकित्सा का क्षेत्र हो या योग-साधना का, भौतिक सुख-सुविधा बढ़ाने हेतु नित नए आविष्कार हों अथवा आध्यात्मिक ज्ञान की बात हो।

चरक द्वारा स्थापित प्राकृतिक चिकित्सा आज भी सभी देशों को अपनी ओर आकर्षित करती है। भगवान धनवन्तरी-आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के महान शिक्षक रहे। पतंजलि, सुश्रुत, आर्यभट्ट, सर सी. वी. रमन, डॉ. होमी जहांगीर भाभा जैसे महान शिक्षाविदों ने राष्ट्रीय उत्थान व विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मानव जाति के उत्पन्न होने से आज तक जितने भी राष्ट्रीय विकास के कार्यक्रम रहे। उनमें मूल रूप से शिक्षक की ही भागीदारी रही है।

जीवन के हर क्षेत्र में दिशा बोध देने वाला शिक्षक ही होता है चाहे वह माता-पिता रूप में हो अथवा कक्षा कक्ष में पढ़ाने वाले अध्यापक के रूप में। देश के राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास हेतु विभिन्न कार्यक्रम समय-समय पर चलाए जाते हैं और वे सभी शिक्षकों के सहयोग से ही सम्पन्न होते हैं। किसी ने सच कहा है-

''भारत के भाग्य का निर्माण विद्यालय की कक्षा में होता है।''

मौलाना आजाद का शिक्षा व संस्कृति के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। उनके द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना की गई। उन्होंने कहा था कि लोग उच्च वैज्ञानिक शिक्षा के लिए भारत आया करेंगे। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन मूल रूप से शिक्षक थे। उनका राष्ट्रीय एवम् शैक्षिक कार्यो में अभूतपूर्व योगदान रहा।

श्री कन्हैयालाल मणिक लाल मुंशी जी -

वीर स्वतन्त्रता सेनानी थे, बम्बई प्रान्त के मंत्री थे, हमारे प्रतिनिधि रहे, केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के सदस्य रहे। वे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल थे, उन्होने 'भारतीय विद्याभवन' की स्थापना की। उक्त सभी राष्ट्रीय कार्यक्रमों में अपनी भूमिका निभाने वाले माननीय मुंशी जी मुख्य रूप से शिक्षक ही थे। गाँधी जी, शास्त्री जी, इंदिरा जी, जाकिर हुसैन, जय प्रकाश नारायण, विनोबा भावे, बंकिमचन्द्र चटोपाध्याय, बाणभट्ट, डॉ. सारा भाई, डॉ. अब्दुल कलाम, महात्मा बुद्ध, महावीर जी, विवेकानन्द, श्री अरविन्द, परमहंस, सूरदास, प्लेटो, स्पेन्सर, सुकरात, अरस्तु, वाल्मीकि, तुलसीदास, रैदास, डॉ. अम्बेडकर, कल्पना चावला, गुरु नानक, मदर टेरेसा, कबीर जी, बाबा रामदेव, चाणक्य..... जीभ थक जाती है, परंतु देश उत्थान में अपनी भागीदारी निभाने वाले शिक्षकों की सूची समाप्त नहीं होती। किस-किस का नाम गिनाऊँ -चहुँ ओर शिक्षकों का योगदान फैला हुआ है।

महान राजनीतिज्ञ चाणक्य भी मुख्य रूप से शिक्षक ही थे, जिन्होने शिष्य चन्द्रगुप्त के माध्यम से सम्पूर्ण राष्ट्र की दशा ही बदलकर रख दी। उन्होंने सामाजिक व्यवस्थाओं में स्त्री धर्म के लिए, राजधर्म के लिए विभिन्न नीतिगत शिक्षाएँ देकर सम्पूर्ण राष्ट्र का मार्गदर्शन किया है।

आधुनिक भारत में देश को आजाद करवाने वाले गाँधी जी, भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, मंगल पाण्डे, चन्द्र शेखर आजाद वगैरह-वगैरह सभी शिक्षक ही तो थे।

आज के समय में देखा जाए तो राजनीतिक क्षेत्र के चुनाव, आर्थिक जनगणना, पशुगणना, धर्म अथवा सामाजिक सरोकार यथा स्वच्छता, बाल विवाह की रोकथाम, दहेज प्रथा की रोकथाम, कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम, जल संरक्षण, पर्यावरण सुरक्षा आदि-आदि में शिक्षक प्रमुख भूमिका निर्वाह कर रहा है।

अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला ही नहीं अपितु सभी में अपनी भागीदारी निभाने वाला है। वह कौनसा कार्य है जो बिना शिक्षकों के सुलभ हो जाता है? अंत में मैं कहना चाहूँगी-

कल के गुरु आज की टीचर,
वेद ऋषि हो गए रिसर्चर
जनगणना के बने कम्प्यूटर,
निर्वाचन के तुम्हीं कलेक्टर
साक्षरता की आत्मरक्षा तुम,
बाल श्रमिकों की बैसाखी भी तुम
नामांकन के तुम संवाहक,
रैलियों के तुम संचालक
योग गुरु बन तुम्हीं हो वाहक
तुम ही जीवन-कौशल के प्रेरक
राष्ट्रीय कार्यक्रम के तुम संयोजक
सदा रहे तुम पथ प्रदर्शक।

प्रधानाचार्या
रा.बा.उच्च.मा.वि. तेलीपाड़ा, जयपुर
मो: 9414605767

तेरे होते सीमाओं पर दुश्मन न आने पाएँ,
आ जाए तो वापस अपना शीश न ले जाने पाएँ
जिधर बढ़ो तूफाँ शरमाए,
सागर पर्वत झुक जाएँ
शीश जहाँ अर्पण हो जाए,
वहीं तीर्थ भी बन जाएँ
भारत माँ की लाज बचाना
पहला काम हमारा है।

क्रिया आधारित शिक्षण

❐ डॉ. रामनिवास

नवाचार शोध

1. भूमिका– 'इंटेलीजेंस' और 'क्रियेटीविटी' का आपस में संबंध पाया जाता है। शिक्षक को चाहिए कि वह कक्षा में इंटेलीजेंस की पहचान कर बच्चों को क्रियेटिव बनाए। विभिन्न एक्टीविटी के माध्यम से बच्चे क्रियेटिव बन जाते हैं। बच्चों की रुचि को ध्यान में रखकर उन्हें सर्जनात्मक गतिविधियाँ अवश्य कराएँ। पाठ शिक्षण के बाद विद्यार्थियों को समूह में विभाजित करके प्रत्येक समूह को अलग-अलग एक्टीविटी दी जा सकती है। उनमें एक ग्रुप लीडर बना दिया जाए, जो समूह द्वारा की गई सारी एक्टीविटी को प्रस्तुत करेगा। ग्रुप लीडर बनने का अवसर बारी-बारी से प्रत्येक विद्यार्थी को मिलना चाहिए। प्रतिदिन ग्रुप लीडर बदलते रहना चाहिए। प्रत्येक विषय और शिक्षक के लिए यह आवश्यक है।

2. प्रशासनिक पक्ष–सरकारी विद्यालयों में शिक्षा संबंधी सर्वे किए जाते हैं और शिक्षकों के शिक्षण का स्तर ऊँचा उठाने की बात की जाती है तो कार्य की अधिकता का रोना रोया जाता है। विद्यार्थियों अभिभावकों की शिकायत भी शिक्षकों द्वारा की जाती है। तात्पर्य यह है कि अपनी जिम्मेदारी से साफ बचने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है। ऐसा भी शिक्षक कहते हैं कि- ''सर आपने जो नई रिसर्च की है उसकी एक्टीविटी संबंधी साहित्य हमें उपलब्ध करा दीजिए हम अपने कक्षा शिक्षण में उसे प्रयोग कर लेंगे।'' स्पष्ट है कि स्वयं शोध करने में रुचि नहीं है। नए ढंग से सोचना, नई गतिविधियों के निर्माण में कोई जागरूकता नहीं है, कुछ अपवादों को छोड़कर। सरकारी कार्यालयों में ऐसे भी कर्मचारी आसानी से मिल जाते हैं जो 'साइड बिजनेस' करते रहते हैं, शिक्षा जगत भी इससे अछूता नहीं है। एक कर्मचारी के व्यवहार का प्रभाव दूसरे कर्मचारियों पर पड़ता ही है। फील्ड में जाकर सर्वे, शोध, डाटा इकट्ठा करते समय इन सब बातों का पता लगता है। विवाद से बचने के लिए कोई इन जानकारियों को अध्ययन में शामिल नहीं करता। शिक्षा संबंधी नीतियाँ

बनाने तथा लागू करते समय संबंधित बड़े अधिकारी-प्रशासक इसका ध्यान अवश्य रखें। शिक्षा का स्तर जिन प्रदेशों, जनपदों, कस्बों और गाँवों-ढाणियों में संतोषजनक नहीं पाया जाता वहाँ प्रशासन को दुरुस्त करना अनिवार्य है। शिक्षा नीतियाँ नई हो या पुरानी; वे तभी अपने उद्देश्यों में सफल होंगी जब उन्हें लागू करने वाले प्रशासक अपने कर्मचारियों का 'साइड बिजनेस' चलाना पूर्णतया बंद कर दें।

3. शिक्षा और प्रशासन का संबंध– अकादमिक पक्ष के साथ-साथ उतना ही ध्यान प्रशासनिक पक्ष पर भी देना अनिवार्य है। हम सब देख रहे हैं कि उच्च स्तर के अधिकारी अथवा उच्च वर्ग और यहाँ तक कि मध्यम वर्ग भी अपने बच्चों को सरकार द्वारा स्थापित सरकारी विद्यालयों में नहीं पढ़ाता। ऐसा क्यों है? कारण स्पष्ट है कि वहाँ शिक्षा प्राप्त करने के नाम पर बच्चे प्रत्येक दृष्टि से जीवन की दौड़ में पीछे रह जाएँगे।

आज शिक्षा में जहाँ विभिन्न प्रोजेक्ट चल रहे हैं गुणवत्ता के स्तर को लेकर शोध परियोजनाएँ चलाई जा रही हैं। इन सभी शोधों की रिपोर्ट आँकड़े शिक्षा के प्रशासनिक पक्ष को दृढ़ता के साथ प्रस्तुत नहीं करते। अतः आज शिक्षा के प्रशासनिक पक्ष को लेकर भी शोध प्रोजेक्ट चलाए जाने चाहिए। जिनके अध्ययन निष्कर्ष से शिक्षा के गिरते हुए स्तर में प्रशासनिक पक्ष का स्पष्ट पता चल सके। जिस दिन अमेरिका में बड़ा आतंकी हमला हुआ, टावर ढहाए गए, उस समय अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति एक विद्यालय में बच्चों को पढ़ा रहे थे। वहीं पर कक्षा में ही उन्हें घटना की सूचना दी गई। ऐसे उदाहरण से पता चलता है कि वे शिक्षा के प्रति कितने जागरूक और समर्पण का भाव रखते हैं। आप देखते हैं कि दुनिया के अधिक से अधिक आविष्कार भी पश्चिमी जगत में ही हुए हैं। विकासशील और निर्धन राष्ट्रों का रक्षा बजट अधिक होता है। शिक्षा पर वे उतना खर्च नहीं कर पाते। प्रतिभाओं के पलायन की बुनियादी समस्या यही है। अच्छी चिकित्सा सेवा के लिए विदेश जाना, दवाइयाँ आयात करना, यह सब उन्हीं देशों में पाया जाता है जिन देशों ने शिक्षा में, रीसर्च में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं किया।

4. शिक्षण में नवाचार समय के साथ कदम ताल– शिक्षकों के सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर दृष्टि डालें तो पता लगता है कि ऐसे भी शिक्षक हैं जो अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए वर्ष में कुछ पुस्तकें भी क्रय नहीं करना चाहते हैं, वे शिक्षा संबंधी कोई भी पत्र-पत्रिका प्रधानाचार्य से कहकर भी नहीं मंगवाते। स्वयं खरीदने की बात तो दूर है। नवाचार से भी उनका परिचय नाममात्र का ही पाया जाता है। प्रत्येक शिक्षक से अपेक्षा है कि वह-

- अपने शिक्षण विषय की दो मासिक, त्रैमासिक पत्रिका स्वयं मंगवाए।
- अपने शिक्षण विषय की दो नई पुस्तकें वर्ष भर में स्वयं खरीदे।
- अपने घरेलू पुस्तकालय की स्थापना।
- अपनी कक्षाओं एवं विद्यालय में ही विद्यार्थियों पर लघु शोध करे।
- अपने विषय के विषय विशेषज्ञों (राज्य या राष्ट्रीय स्तर) के संपर्क में रहे, पत्राचार बनाए रखे।
- गूगल, वाट्सएप, फेसबुक का शिक्षण हेतु उपयोग करे।

5. क्रियापरक शिक्षण– विद्यालयी स्तर पर क्रियापरक शिक्षण की माँग चार दशक पूर्व से

ही जोर पकड़ रही है। परम्परागत ढंग से शिक्षण करना शिक्षण कार्य पर प्रश्न चिह्न है। जिससे विद्यार्थियों के साथ न्याय नहीं हो पाता। उनकी सीखने की क्षमता भी प्रभावित होती है। क्रियापरक शिक्षण की विशेषता यह है कि इसके द्वारा विद्यार्थी स्वयं अपने अनुभव के द्वारा सीखते हैं। विभिन्न शैक्षिक क्रियाओं के द्वारा ज्ञान ग्रहण करने में उन्हें आसानी होती है। उन्हें रुचिपूर्वक विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से सीखना, पढ़ना, लिखना और अपने अनुभव बाँटना सरल और सहज लगता है। आज कोई भी विषय हो, उससे संबंधित सृजनात्मक गतिविधियाँ विद्यार्थियों को कराना अनिवार्य है। 'नवाचार' के माध्यम से प्रत्येक विषय के शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने शोध, अनुभव के द्वारा नई-नई उपयोगी गतिविधियों का निर्माण अवश्य करें एवं उनका उपयोग कक्षा में किया जाए।

6. बाल उपयोगी गतिविधियों का रूप–भाषा, सामाजिक विज्ञान विषयों के शिक्षण में भी शिक्षकों को शिक्षण के लिए पर्याप्त समय और अवसर मिलता है, इसलिए भाषा संबंधी एक्टीविटी कक्षा में संपन्न कराई जानी चाहिए। भाषा खेल भी सुझाए जा सकते हैं। यदि शिक्षक कक्षा में लिखित अभिव्यक्ति मजबूत करना चाहता है तो वह विद्यार्थियों को पत्र लेखन संबंधी बुद्धिमता एवं सृजनात्मक गतिविधि कराएँ, जैसे कि-

- विद्यार्थियों द्वारा एक दूसरे को पत्र लिखना।
- गर्मी की छुट्टियों के समय की गई यात्रा का वर्णन लिखना।
- घर में त्योहार अथवा उत्सव की चहल-पहल को लिपिबद्ध करना।
- आपको कक्षा में अध्ययन करते समय क्या-क्या कठिनाई आ रही हैं लिखना।
- किन विषयों का शिक्षण आपकी रुचि के अनुकूल है; उसके कारण भी बताना।
- वे कौन से विषय हैं, जिन्हें सीखने में कठिनाई आ रही है; यह कठिनाई किस स्तर पर है यथाः घर, परिवार, धन संबंधी-कक्षा में सहपाठी विद्यार्थियों का व्यवहार-शिक्षकों का व्यवहार, अन्य कोई समस्या लिखना।

छोटे बच्चों को भाषा संबंधी खेल खेलने में आनंद आता है और वे इन खेलों में बढ़ चढ़कर भाग लेते हैं। प्राथमिक स्तर पर उच्चारण और वर्तनी की शिक्षा देने हेतु वर्ण, मात्रा, शब्द संबंधी एक्टीविटी कराएँ, जैसे-गत्ते के छोटे-छोटे गोल या चौकोर टुकड़े काटकर उन पर वर्ण, मात्राएँ और शब्द लिख दें, फिर इनकी सहायता से टुकड़े जोड़कर शब्द बनाना, उन्हें बोलना कि अमुक शब्द बनाया गया है। ऐसे ही शब्दों को जोड़कर वाक्य की रचना, फिर उस वाक्य को पढ़कर सुनाना। इस प्रकार खेल-खेल में इस एक्टीविटी को आगे भी व्याकरण पक्ष को ध्यान में रखकर बढ़ाया जा सकता है। विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए शब्दों के विलोम, पर्यायवाची पूछना। ऐसे ही वाक्यों को लेकर उन्हें स्त्रीलिंग-पुल्लिंग एकवचन-बहुवचन में बदलना। इस प्रकार छात्र-छात्राएँ शब्द, वाक्य के प्रकारों से परिचित हो सकते हैं। उन्हें सोचने-विचारने का भी पर्याप्त समय मिलता है। वे अपने साथियों के साथ समूह में मिलकर नया ज्ञान सरल ढंग से ग्रहण कर लेते हैं।

7. कविता शिक्षण आधारित गतिविधियाँ– कविता शिक्षण में भी बालक-बालिकाओं को उनकी रुचि और पसंद के अनुसार गतिविधि कराई जा सकती है। कक्षा में शिक्षक कविता के वाचन, काठिन्य निवारण, सरलार्थ और प्रश्नोत्तर करने के उपरांत समझ लेते हैं कि पाठ पढ़ा दिया गया और फिर गृह कार्य दे दिया जाता है। यह सब परम्परागत है, वर्षों से कक्षा में यह सब होता आया है। ऐसा करने से शिक्षण में नवीनता नहीं आती और एक ही प्रकार की कक्षा शिक्षण परम्परा प्रतिदिन झेलते हुए बच्चे एकरस हो जाते हैं। कक्षा कोई भी हो बच्चे तब ही उसमें रुचि लेंगे जब उन्हें कुछ नया ज्ञान, विचार सीखने को मिलेगा। रोचक एक्टीविटी, नया और उनकी रुचि का ज्ञान जो सीखने में सरल और सहज हो तो बच्चे स्वयं ही पढ़ने के लिए उत्सुक रहते हैं। जिन विद्यालयों और कक्षाओं में ऐसा नहीं है, वहाँ शिक्षकों को शिक्षण में कठिनाइयाँ तो आती ही हैं, उनके छात्र-छात्राएँ भी पिछड़ जाते हैं। नियमित रूप से बच्चे कक्षा में आ रहे हैं और शिक्षक भी नियमित पढ़ा रहे हैं, परंतु गुणवत्ता पर्याप्त मात्रा में नहीं है तो ऐसे बच्चे प्रतिस्पर्धा में, प्रतियोगिता परीक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने में पीछे रह जाते हैं। कविता आप किसी भी भाषा में पढ़ाएँ और विद्यालय की कोई भी कक्षा हो, शिक्षक कुछ मौलिक गतिविधियाँ अवश्य कराएँ यथाः

बुद्धिमता : (इंटेलिजेंस/टेलेंट की पहचान)

- आपके आस-पड़ोस और घर में किन-किन अवसरों पर गीत गाए जाते हैं।
- गीतों का गायन कैसा लगता है? क्या आप किसी गीत के संबंध में बता सकते हैं?
- क्या आपको कोई गीत अथवा भजन-आरती याद है, आप गाकर सुना सकते हैं?
- बच्चो से सामूहिक रूप से गीत-कविता का गायन कराना। फिर उस पर चर्चा, विचार करना।
- स्वयं के गाने और दूसरों को गाते हुए सुनने में आपको क्या अच्छा लगता है?
- गाना और रोना मनुष्य जीवन की प्राकृतिक स्वाभाविक क्रियाएँ हैं। क्या आप ऐसा कोई आदमी बता सकते हैं, जो कभी रोया नहीं जिसने और गाया न हो स्पष्ट कीजिए।
- पशु पक्षी भी रोते और गाते हुए देखे जा सकते हैं क्यों? लिखिए।
- 'यदि मनुष्य समाज में रोना और गाना नहीं हो तो जीवन कैसा बन जाएगा', विषय पर परस्पर विद्यार्थियों के विचार आमंत्रित करना।
- दूरदर्शन पर किसी कवि सम्मेलन अथवा लोक संगीत कार्यक्रम जो आपने देखा हो, उसकी उपयोगिता पर लिखिए-
  - भाषा की दृष्टि से
  - संगीतप्रियता की दृष्टि से
  - विचार, भाव संप्रेषण की सफलता की दृष्टि से।
  - मनोरंजन, आनंद की दृष्टि से।
  - वेशभूषा, नृत्य कला की दृष्टि से।

सृजनात्मकता (क्रियेटीविटी में संवर्धन)

- कोई छोटी क्लिप, सी.डी. या लघु फिल्म भी दिखाई जाए जो गीत-कविता से भरपूर हो। बाद में विद्यार्थियों से विचार आमंत्रित भी किए जाएँ कि गीत-कविता

का कितना अर्थ विद्यार्थी स्वयं सुन-देखकर, भाव भंगिमाओं के माध्यम से समझ सकते हैं।

- पढ़ाई गई कविता के विचार, भाव की प्रस्तुति चित्रात्मक रूप से प्रस्तुत कराएँ।
- ''कविता में कम शब्दों में अधिक से अधिक विचार प्रकट किए जाते हैं,'' जैसे विषय पर विद्यार्थियों से विचार विमर्श करना।
- विद्यार्थियों को सृजनशील बनाने हेतु उन्हें कविता रचना के लिए प्रेरित किया जा सकता है कि अपने मनपसंद विषय पर कविता लिखिए।
- पढ़ाई गई कविता का गद्य रूपांतरण कराना।
- ''क्या प्रत्येक व्यक्ति कविता रचना कर सकता है।'' पक्ष विपक्ष में छात्र-छात्राओं से बोलने के लिए कहा जाए।
- कुछ कविताएँ, लोकगीत, गजल, भजन, आरती इत्यादि लोकप्रिय हो जाती हैं और वे जनसाधारण की जबान पर चढ़ जाती हैं; उनमें ऐसी क्या विशेषता, गुण होता है लिखिए।

8. गद्य शिक्षण आधारित गतिविधियाँ–गद्य शिक्षण में भी छात्र-छात्राओं से विभिन्न गतिविधियाँ करायी जा सकती हैं, जिससे उनकी भाषिक अभिव्यक्ति के दोनों पक्ष मौखिक और लिखित मजबूत हो सकें। गद्य पाठों के शिक्षण में वाचन, काठिन्य निवारण, व्याख्या और प्रश्नोत्तर के बाद गृह कार्य दे दिया जाता है। कुछ भाषा संबंधी कार्य श्यामपट्ट पर कक्षा में कराने के बाद शिक्षक समझते हैं कि पाठ संपन्न हो गया है। एक्टीविटी प्रत्येक पाठ के साथ कराई जाएँ। गद्य पाठों से संबंधित कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार हैं-

बुद्धिमत्ता : (इंटेलिजेंस/टेलेंट की पहचान)

- गद्य पाठ को कविता में रूपांतरित कराना।
- पाठ में आए हुए विचार, भाव अथवा घटना की चित्रात्मक प्रस्तुति कराना।
- पढ़ाया गया पाठ यदि एकांकी, नाटक विधा में है, तो उसे कहानी के रूप में लिखवाना।
- बच्चों को चित्र दिखाकर उसके द्वारा जो भी विचार प्रकट हो रहा हो, उसे लिखवाना।
- अधूरी लघुकथा, कहानी को पूरा कराने की प्रेरणा देना।
- किसी आँखों देखी घटना को लिपिबद्ध कराना।
- वृक्षारोपण, जल संरक्षण, राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान जैसे नए और राष्ट्रीय सामाजिक प्राथमिकताओं से संबंधित विषयों पर लेखन कराना।
- पर्यटन-भ्रमण की रिपोर्ट लिखवाना।
- समस्या पूर्ति कराना। पहेलियाँ पूछना व लिखवाना।
- गाँव के आसपास लगने वाले मेले, हाट की उपयोगिता पर विद्यार्थियों से चर्चा कर उसे लिखवाना।

सर्जनात्मकता : (क्रियेटीविटी में संवर्धन)

- वेशभूषा, रहन सहन, खानपान में आता हुआ बदलाव कितना उपयोगी है। स्पष्ट कीजिए।
- धनी और निर्धन परिवारों की जीवन शैली में कितना अंतर और समानताएँ हैं। निम्नलिखित शीर्षकों द्वारा स्पष्ट कीजिएः
- आवास के आधार पर अंतर
- बोलचाल, भाषा व्यवहार की दृष्टि से अंतर
- भोजन के स्तर की दृष्टि से अंतर
- -वस्त्राभूषण के स्तर की दृष्टि से अंतर
- पाठ्यपुस्तकों में उपलब्ध कहानी, निबंध, पत्र, यात्रा-वृत्तांत, नाटक जीवनी, आत्मकथा इत्यादि क्या हमारे सामाजिक जीवन से मेल खाते हैं? लिखिए।
- सोचकर लिखिए कि आज से एक सौ वर्ष बाद आपके विद्यालय और गाँव का स्वरूप कैसा हो सकता है?
- अपने दादा-दादी, ताऊ या अन्य वयोवृद्ध व्यक्तियों से पूछकर लिखिए कि आज से पचास वर्ष पूर्व आपके गाँव का क्या स्वरूप था?
- आज से ठीक पचास वर्ष बाद आप अपने आपको किस रूप में देखना चाहते हैं? विचार करके अपना संभावित रूप लिखिए।
- आपने अपने जीवन के भविष्य की क्या-क्या योजनाएँ सोच रखी हैं? लिखिए।
- 'तारे जमीन पर' और 'थ्री इडियट्स' फिल्में दिखाकर उनके उद्देश्य लिखवाएँ। विमर्श करें।

9. गतिविधियाँ जीवन अनुभव से छनकर आए– जिस जीवन अनुभव को साझा किया जा सकता है, उस अनुभव को गतिविधि का रूप दिया जाना चाहिए। इससे शिक्षण आवश्यकताओं का ज्ञान होगा। क्रिया आधारित शिक्षण से यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों के साथ मित्रवत् हो। विभिन्न 'एक्टीविटी' कराते समय शिक्षक को विद्यार्थियों से चर्चा, वार्तालाप और मार्गदर्शन करना होता है। जहाँ पर विद्यार्थी अटक जाए वहाँ शिक्षक का दायित्व होता है कि वह छात्र की समस्या को दूर कर उसे आगे बढ़ाए। एक्टीविटी संपन्न कराते समय छात्र-छात्राओं को स्वतंत्र चिंतन-मनन का अवसर दिया जाए। वे अपने रुचि और पंसद के अनुसार लिखें। उनकी स्वतंत्र सोच का निर्माण हो। वे अपने ढंग से और नए तरीके से विचार रखें। उनकी सोच पर शिक्षक, समाज, परिवार की परम्परागत धारणाएँ हावी नहीं होनी चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टि, चिंतन-मनन नए विचारों को प्रस्तुत करने हेतु छात्र-छात्राओं से ऐसे विषयों पर विचार करवाया जाए जो कहीं न कहीं उनके जीवन से जुड़े हैं। बेबाक राय प्रस्तुत करना और जीवन अनुभव को साझा करने हेतु कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार है-

बालक-बालिकाओं की व्यक्तिगत रुचि:

- उस दिन को लिखिए जो आज तक आपको सर्वाधिक प्रसन्नता देने वाला रहा है।
- क्या जीवन में कभी ऐसा दिन बीता है कि घर में भोजन था, परंतु आपको नहीं मिला।
- जीवन का वह दिन लिखिए, जिसने आपको सर्वाधिक दुखी किया हो।
- वह दुखदायी घटना लिखिए, जिसका आपसे कोई संबंध है।
- ऐसे कौन से कार्य आपने सोच रखे हैं, जिन्हें आप अपने जीवन में करना चाहते हैं।
- वे कौन से कार्य है, जिन्हें आप कभी नहीं करेंगे। क्या जाने-अनजाने में आपने कभी किसी प्राणी को कष्ट दिया है? मनुष्य

पशु-पक्षी कोई भी हो, लिखिए।

- उन व्यक्तियों/महापुरुषों के नाम लिखिए, जिनसे आप सर्वाधिक प्रभावित हैं। उनके योगदान को भी स्पष्ट कीजिए।
- अपने गाँव/कॉलोनी के विकास के लिए आप क्या-क्या सुविधाएँ चाहते हैं?
- आपकी कक्षा में सबसे अच्छी पढ़ाई हो इसके लिए संबंधित लोगों को क्या-क्या करना चाहिए-
  -कक्षा के विषय अध्यापक
  - कक्षा के सभी छात्र-छात्राएँ
  - विद्यालय के प्रधानाध्यापक
  -अभिभावक
  -गाँव प्रधान/सरपंच/नगर पालिका अध्यक्ष/पार्षद
- विद्यालय का पहला दिन याद होगा, उसके संबंध में लिखिए।
- आज तक आपने जो अच्छे कार्य किए हैं, उनकी सूची बनाइए।

10. शिक्षक-शिक्षिकाओं की रुचि और सर्जनशीलता अहम है- शिक्षक-शिक्षिकाएँ सम सामयिक समस्याओं को लेकर छोटे-छोटे एकांकी की रचना करें और कक्षा में पाठ शिक्षण के बाद विद्यार्थियो को उसका मंचन भी कराएँ। स्त्री पात्रों के संवाद लड़कियाँ और पुरुष पात्रों के संवाद लड़के बोलेंगे। शिक्षक विद्यार्थियों को परामर्श निर्देशक की भूमिका का निर्वाह करें। ये लघुनाटिका, एकांकी दस-पंद्रह मिनट की अवधि के होने आवश्यक हैं। ये भाषा तत्त्व, विचार, भाव, वाक् पटुता, विश्लेषण करना जैसी दक्षताओं का विकास करने में सहायक हैं। इन सब गतिविधियों के निर्माण एवं संपन्न कराने में वही शिक्षक शिक्षिका सफल हो सकेगा, जो कि शिक्षण के क्षेत्र में स्वयं सर्जनशील हो। एक्टीविटी की रचना करने और बालक-बालिकाओं को गतिविधि कराने में उसे आत्मसंतोष और आनंद का अनुभव होता हो। दूरदर्शन और पत्र-पत्रिकाओं में ज्वलंत सामाजिक-राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर डिबेट साक्षात्कार प्रसारित होता रहता है। सामाजिक राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को जनग्राह्य बनाने हेतु सरकार की ओर से संचार माध्यमों से विज्ञापन प्रसारित होते रहते हैं। इन विषयों को भी शिक्षण में किसी न किसी रूप में स्थान दिया जाए। जहाँ हम कक्षा शिक्षण में पाठ और क्लास रूम को बाहर के संसार के संदर्भ में जोड़ते हैं, वहाँ हमारा शिक्षण का दायरा व्यापक स्वरूप ग्रहण कर लेता है और जो शिक्षण में गुणवत्ता लाता है। प्रतियोगी परीक्षाएँ हों अथवा पढ़-लिखकर विद्यार्थी स्वरोजगार करना चाहे तो भी उसे एक मजबूत आधार मिलेगा। यही वर्तमान युग की आवश्यकता है और शिक्षा में इसी की माँग है। शिक्षण सिर्फ पाठ्यपुस्तकों और परीक्षा पास कर लेने तक ही सीमित नहीं किया जा सकता। जीवन जीने की कला का विकास भी शिक्षण के क्षेत्र में आता है। वर्तमान समाज की कठिनाइयाँ शिक्षा से अलग करके नहीं देखी जा सकती हैं। यह हम सभी को ध्यान रखना है। पाठ्यक्रम में दूरदर्शन और पत्र-पत्रिकाओं में दिए गए नए-नए विषय सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक चेतना, शिक्षा, पर्यावरण, स्वच्छता, बालिका संरक्षण, स्वास्थ्य, योग जैसे विषय भी शामिल किए जाएँ।

11. गृहकार्य का स्वरूप- गृहकार्य बच्चों की रुचि और पसंद के बिना बच्चों पर थोप दिया जाता है। आप बच्चों का सर्वे कर लीजिए, प्रश्नावली भरवाकर या मौखिक साक्षात्कार ले लीजिए, आपको पता लग जाएगा कि बच्चे इसे कितना और किस रूप में पसंद करते हैं। यह प्रयोग कक्षा में करके देखिए। पाठों का कुछ भाग शिक्षक ने कक्षा में पढ़ा दिया तो कुछ भाग बच्चे गृहकार्य के रूप में घर से करके लाएँ। यह प्रवृत्ति ठीक नहीं है। एसाइंमेंट भी छोटे बच्चों को दे दिए जाते हैं। जिससे उनकी सर्दियों और गर्मियों की छुटिट्याँ नीरस हो जाती हैं। बालक-बालिकाएँ मानसिक दबाव में आ जाते हैं, यहीं से उनका बचपन छिनता है। जो कार्य शिक्षक घर से पूरा करके लाने के लिए देना चाहता है वह कक्षा में ही क्यों नहीं कराया जा सकता। एसाइन्मेंट कक्षा में पूर्ण कराए जाएँ। पाठ्य पुस्तकों में इतने पाठ नहीं दिए जाते जो कि वर्ष भर में शिक्षक पूरे न करा पाएँ। जब पाठ्य पुस्तकें बनती हैं, उनके पाठों का लेखन किया जाता हैं, तब इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि निश्चित समय में कोर्स पूर्ण हो जाए। गृहकार्य छोटे-छोटे एसाइन्मेंट, लघु प्रोजेक्ट जो भी छात्रों में सर्जनात्मकता का विकास में सहायक हों, उनसे संबंधित सामग्री विद्यालय में बच्चों को उपलब्ध कराई जाए और शिक्षक के मार्गदर्शन में वे अपने दिए गए प्रोजेक्ट पूरा करें। शिक्षण विषय कोई भी हो उसका अभ्यास और प्रयोग कक्षा शिक्षण में सामूहिक रूप से कराया जाना ही उचित है। वहाँ सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। अधिकांशतः बच्चे जो कि गरीब परिवारों से आते हैं, उन्हें घर पर गृहकार्य पूर्ण करने में कोई सहायता नहीं मिलती, सामग्री उपलब्ध नहीं होती। ऐसे परिवारों के बच्चे छुट्टियों के बाद स्कूल जाने के पूर्व घर पर रोते भी देखे जाते हैं, जो कि विद्यालय जाने में अरुचि का कारण बनता है। परिणामस्वरूप कुछ बच्चे विद्यालय छोड़ भी देते हैं, इसलिए यदि गृह कार्य देना भी चाहते हैं तो वह ऐसा दिया जाए जो कि प्रत्येक बच्चा आसानी से करके लाए और उत्सुकतापूर्वक उसे शिक्षक को दिखाए। बच्चों की रुचि, पसंद और उनकी क्षमता का ध्यान रखा जाए। एक ही तरह का गृह कार्य सभी बच्चों को दिया जाता है, इस रुढ़ि में भी बदलाव की आवश्यकता है। घर पर बिताई गई छुट्टियाँ, दिया गया गृह कार्य बच्चों को आनंद देने वाला अनुभव बने यह शिक्षकों को दृष्टिगत रखना है। शिक्षण में गृह कार्य के विषय हैं:-

- बच्चों का परिवेश, जलवायु, खान-पान, रहन-सहन वेशभूषा।
- फसल का बोना, पकना, काटना।
- पशु, पक्षी, तालाब, नहर, नदी सिंचाई के साधन।
- गाँव-नगर-कस्बों के उद्योग।
- पर्व, त्योहार, मेले इत्यादि।

ऐसा भी किया जा सकता है कि प्रत्येक बच्चे के साथ विचार करके शिक्षक-शिक्षिका ऐसा गृह कार्य भी दे सकते हैं, जिसे बच्चा स्वयं पसंद करे। गृह कार्य चुनने का अवसर बच्चों को दिया जाए। शिक्षक गृहकार्य में अपनी रुचि और पसंद को अलग रखे।

एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
पुष्कर मार्ग, अजमेर-305004
मो: 09549737800

***भारत माँ फिर अन्नपूर्णा विश्व गुरु का पद पाएँ।
मर्दन करके असुर-शक्तियाँ दिव्य संपदा फैलाएँ।***

समावेशी शिक्षा पद्धति

❐ डॉ. योगेन्द्र सिंह नरुका 'फूलैता'

दिव्यांग बालक-बालिकाओं को विशेष विद्यालयों में विशेष शिक्षकों द्वारा विशेष शिक्षा पद्धति से अध्ययन-अध्यापन कराया जाता है। इस कारण दिव्यांग बालक-बालिका सामान्य जीवन में असहज महसूस करते हैं, वे सामान्य रूप से आम समाज में आसानी से घुलमिल नहीं पाते, उन्हें हमेशा उनके आसपास वैसा ही वातावरण चाहिए होता है, जैसा विशेष विद्यालयों में होता है, वे सामान्य व्यक्ति से सहजता से वार्तालाप नहीं कर पाते।

विशेष शिक्षा व विशेष शिक्षकों के सहारे दिव्यांगजन अपना उच्च अध्ययन तो पूर्ण कर सकता है लेकिन उसका समाजीकरण कठिन हो जाता है। ऐसे में समावेशी शिक्षा के द्वारा इस समस्या को हल किया जा सकता है। समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत दिव्यांगों को सामान्य विद्यालयों में सामान्य शिक्षकों से सामान्य विद्यार्थियों के साथ अध्ययन-अध्यापन करवाया जाता है।

समावेशित शिक्षा पद्धति में दिव्यांग बालक-बालिका सामान्य विद्यार्थियों के साथ रहकर अनुकरण से सहज भाव से सीखते हैं, जिससे इनका सीखने का स्तर भी बढ़ता है। सामान्य बालकों की भाँति दिव्यांग बालक-बालिकाओं में भी सामाजिक कौशल का निरन्तर विकास होता रहता है।

सामान्य बालकों का दिव्यांग बालक-बालिकाओं के साथ आत्मीय संबंध बन जाता है, जिससे वे एक-दूसरे की सहायता एवं अपने विचारों का आदान-प्रदान सरलता से कर पाते हैं। इस शिक्षा पद्धति के माध्यम से दिव्यांग बालक आसानी से समाज की मुख्य धारा से जुड़ जाते हैं। सामान्य बालकों के साथ रहने से दिव्यांग बालकों का भी उनकी भाँति सर्वांगीण विकास होता है, यथा- शारीरिक, मानसिक, संवेदनात्मक, संज्ञानात्मक एवं भावनात्मक आदि। सामान्य बालकों के साथ दिव्यांग बालक-बालिकाओं का भी पूर्व व्यावसायिक कौशलों का अनायास विकास होता रहता है।

दिव्यांग विद्यार्थियों के अध्ययन-

अध्यापन में सामान्य शिक्षकों की भूमिका को लेकर यह सवाल रहता है कि उसकी कक्षा में सामान्य विद्यार्थियों के साथ बैठे दिव्यांग विद्यार्थियों को वे किस तरह से शिक्षा प्रदान करेगा? उसके लिए आवश्यक है कि सामान्य शिक्षक मन से इस बात से तैयार हो कि दिव्यांग विद्यार्थी की विशेष आवश्यकताओं के आधार पर विद्यालय व कक्षा कक्ष की संरचना भी आवश्यक है, इसके साथ ही सामान्य शिक्षकों को यह प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाना चाहिए कि दिव्यांग बालकों को किस तरह से पढ़ाया जा सकता है, जैसे-चक्षु बाधित के लिए ब्रेल लिपि का ज्ञान, मूक-बधिर के लिए सांकेतिक भाषा, लिप रीडिंग (ओष्ठ पठन) का ज्ञान शिक्षक को भी होना चाहिए। दिव्यांग विद्यार्थियों को कक्षा की अग्रिम पंक्ति में बैठाने की व्यवस्था करनी चाहिए, ताकि वे शिक्षक के बोलते समय उनके चेहरे के हाव-भाव को आसानी से पढ़ सकें, स्पष्ट रूप से आवाज को सुन सकें तथा उन्हें श्याम पट्ट स्पष्ट रूप से दिखाई दे सके। शिक्षक टी.एल.एम. का निर्माण करते समय दिव्यांग विद्यार्थियों का भी विशेष ध्यान रखे तथा कक्षा में प्रस्तुतीकरण में भी उन्हें विशेष तौर पर अलग से सहज भाव से समझाने का प्रयास करे। दिव्यांग विद्यार्थियों के सामान्य विद्यार्थियों के साथ पीयर ग्रुप का निर्माण भी किया जा सकता है तथा शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक गतिविधियों में समूह आधारित गतिविधियों को बढ़ावा देने का प्रयास भी होना चाहिए।

यदि कोई अध्याय बहुत बड़ा हो तो उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट कर सरल व रोचक ढंग से समझाने का प्रयास किया जाना चाहिए। उनके समझने योग्य सरल उदाहरण प्रस्तुत करने चाहिए। नोट्स की प्रतियाँ भी ऐसे दिव्यांग विद्यार्थियों को प्रदान करनी चाहिए, ऐसे बच्चों पर किसी प्रकार की सख्ती का प्रयोग अथवा दण्डात्मक कार्यवाही का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यदि किसी दिव्यांग बालक को लेकर समस्या अधिक है तो उसकी काउंसलिंग किसी विशेषज्ञ से करवानी चाहिए। अब तक शोधों से यह ज्ञात हुआ कि समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत सामान्य विद्यालयों में सामान्य शिक्षकों से सामान्य विद्यार्थियों के साथ पढ़े दिव्यांगजन निजी जीवन व प्रतियोगी परीक्षाओं में अधिक सफल हुए हैं, जबकि विशेष विद्यालयों में विशेष शिक्षकों व विशेष वातावरण में पढ़े दिव्यांगों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने में कठिनाइयाँ आई हैं तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता का औसत भी कम रहा है। इसलिए दिव्यांगजन की शिक्षा के लिए समावेशी शिक्षा एक बेहतरीन विकल्प है, जिसमें सामान्य शिक्षक अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।

ज्ञान के विज्ञान के भी
क्षेत्र में हम बढ़ चलेंगे
नील नभ के रूप में नव
अर्थ भी हम कर सकेंगे।

भोग के वातावरण में
त्याग का संदेश देंगे।
दास्य के घन बादलों से
सौख्य की वर्षा करेंगे।

व्याख्याता
राजकीय सेठ आनन्दीलाल पोद्दार मूक बधिर
उ.मा.विद्यालय, जयपुर (राज.)
मो. 9602942594

शैक्षिक नवाचार

❐ गायत्री शर्मा

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा के अनेक आयाम हैं जो राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हैं। वास्तविक रूप में शिक्षा का आशय है, ज्ञान का विकास करना। ज्ञान के विकास का आकांक्षी है-विद्यार्थी और इस ज्ञान को विकसित करता है शिक्षक।

प्रत्येक वस्तु या क्रिया में परिवर्तन प्रकृति का नियम है। परिवर्तन से ही विकास के चरण आगे बढ़ते हैं। परिवर्तन एवं गतिशीलता आवश्यक क्रिया है जो समाज को वर्तमान व्यवस्था के अनुकूल बनाती है। परिवर्तन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से व्यक्ति और समाज को स्फूर्ति, चेतना, ऊर्जा एवं नवीनता की उपलब्धि होती है। परिवर्तन की तुलना हम नवाचार से भी कर सकते हैं। नवाचार कोई नया कार्य करना मात्र ही नहीं है वरन् किसी भी कार्य को नए तरीके से करना भी नवाचार है। शिक्षा के क्षेत्र में नवीन तरीकों को अपनाना ही शैक्षिक नवाचार है।

शैक्षिक नवाचारों का उद्भव स्वतः नहीं होता बल्कि उन्हें खोजना पड़ता है तथा सुनियोजित ढंग से इन्हें प्रयोग में लाना होता है, ताकि शैक्षिक कार्यक्रमों को परिवर्तित परिवेश में गति मिल सके और परिवर्तन के साथ गहरा तारतम्य बनाये रख सकें। इस प्रकार कहा जा सकता है कि नवाचार एक विचार अथवा वस्तु है जो नवीन और वर्तमान का गुणात्मक स्वरूप है।

शिक्षा शब्द संस्कृत की 'शिक्ष्' धातु से बना है जिसका अर्थ बुद्धिमता का विकास करना है। शिक्षा द्वारा जीवन को मार्गदर्शन मिलता है जिससे प्राप्तकर्ता सही दिशा की ओर सफल कदम बढ़ाता है। नवाचार के माध्यम से शैक्षिक कार्य को और अधिक उत्कृष्ट बनाया जा सकता है। शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जिसको किसी कौशल या कार्य निष्पादन तक ही सीमित नहीं किया जा सकता है। इसके द्वारा विद्यार्थियों की आंतरिक क्षमताओं का विकास करने के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व को सामाजिक व राष्ट्रीय

दृष्टि से भी उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया जा सकता है। विद्यार्थियों में मानवता का बोध एवं सांस्कृतिक चेतना को जाग्रत करना शैक्षिक नवाचारों के माध्यम से ही संभव है।

शिक्षा को जीवन की प्रयोगशाला कहा गया है तथा शिक्षक ही शैक्षिक नवाचारों के माध्यम से विद्यार्थियों में उनके शरीर, मन और आत्मा का समन्वित विकास कर समाज एवं राष्ट्र को योग्य नागरिक प्रदान कर सकता है। नागरिकों को अपनी सम्भावनाओं की सर्वोच्चता पर प्रतिष्ठित करना गुणात्मक शिक्षा के साथ-साथ शैक्षिक नवाचारों का भी कार्य है। शिक्षा के गुणात्मक विकास के लिए शैक्षिक सुधारों के नियोजन, निरूपण व परिणाम की प्रक्रिया में नियंत्रण व परिवर्तन के निरन्तर प्रयासों को बढ़ाना होगा। विद्यार्थियों के पुस्तकीय ज्ञान को उनके बाहरी जीवन से जोड़ा जाए और यह शैक्षिक नवाचारों के माध्यम से ही संभव है।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना होता है और इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु जिस ज्ञान एवं अभ्यास की आवश्यकता पड़ती है वही शैक्षिक नवाचार की विषयवस्तु है। शिक्षण एक कला भी है और विज्ञान भी। जिसका वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक अध्ययन किया जा सकता है। शिक्षा प्रक्रिया के दो प्रमुख पक्ष है- शिक्षण एवं नवाचार। शिक्षण एक कला है, जबकि नवाचार एक विज्ञान है।

शैक्षिक नवाचारों की आवश्यकता

जिस प्रकार हमारे सामान्य जीवन में विज्ञान और तकनीकी ज्ञान तथा विधियों के प्रयोग से कम समय में कम से कम शक्ति लगाकर अधिक से अधिक लाभ उठाने की आवश्यकता है उसी प्रकार शैक्षिक नवचारों की शिक्षा के क्षेत्र में आवश्यकता अनुभव होती है। शिक्षा में शैक्षिक नवाचारों की आवश्यकता निम्न कारणों से है-

1. शैक्षिक नवाचार शिक्षण प्रक्रिया को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल, रुचिकर व प्रभावशाली बनाने में सहयोग करते हैं।
2. शैक्षिक नवाचार शिक्षण समस्याओं के समाधान के लिए उचित मार्गदर्शन करते हैं।
3. शैक्षिक नवाचार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जैसे-शिक्षण लक्ष्यों को निर्धारित करना, विद्यार्थियों के प्रारम्भिक व्यवहार की जाँच करना, पाठ्यवस्तु का चयन व आयोजन करना एवं उचित शिक्षण विधियों एवं सहायक सामग्री का चुनाव करना।
4. शैक्षिक नवाचार शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मध्य होने वाले विचारों के आदान-प्रदान एवं सम्प्रेषण को एक प्रभावशाली कला के रूप में महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाते हैं।
5. शैक्षिक नवाचारों के अन्तर्गत विज्ञान, मनोविज्ञान एवं तकनीकी सभी प्रकार की कलाओं, विधियों, सामग्री, कौशलों, सिद्धान्तों व यन्त्रों का प्रयोग सम्मिलित है।
6. शैक्षिक नवाचार उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अधिगम परिस्थितियों की व्यवस्था करते हैं तथा उन पर नियंत्रण रखते हैं।
7. शैक्षिक नवाचार शिक्षण के लिए नई-नई विधियों के विकास पर बल देते हैं।
8. व्यवहार परिवर्तन के मापन के लिए तथा

शिक्षण प्रक्रिया के परिणामों की जाँच के लिए उचित मूल्यांकन प्रविधियों के विकास पर बल देते हैं।

9. शैक्षिक नवाचार शिक्षण प्रशिक्षण के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
10. शैक्षिक नवाचारों के माध्यम से विद्यार्थियों में बाल्यावस्था से ही शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न की जा सकती है।

शैक्षिक नवाचारों का उद्देश्य

शैक्षिक नवाचारों के माध्यम से शिक्षण प्रक्रियाओं को प्रभावशाली बनाया जा सकता है साथ ही इनकी सहायता से लक्ष्यों की पहचान की जा सकती है। शैक्षिक नवाचारों के उद्देश्य निम्न हैं–

1. शैक्षिक नवाचारों का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने की प्रविधियों से है।
2. शैक्षिक नवाचार शिक्षण के ज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा मनोविज्ञानात्मक तीनों ही प्रकार के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सभी प्रकार के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हैं।
3. शैक्षिक नवाचार शिक्षक, विद्यार्थी तथा शिक्षा से संबंधित सभी व्यक्तियों के लिए उपयोगी हैं।
4. शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शैक्षिक नवाचार विभिन्न प्रकार की व्यूह रचनाओं के निर्माण, निर्धारण तथा विकास पर बल देते हैं।
5. शैक्षिक नवाचारों का उद्देश्य शिक्षण प्रक्रिया को सरल, सहज एवं प्रभावी बनाने के साथ–साथ सार्थक बनाना है।
6. शैक्षिक नवाचार शिक्षा को योजनाबद्ध तथा व्यवस्थित रूप प्रदान करके उसे सरल, सहज, वस्तुनिष्ठ तथा उद्देश्यनिष्ठ बनाते हैं।
7. शैक्षिक नवाचार जहाँ एक ओर सहायक सामग्री तथा शिक्षण यंत्रों के प्रयोग पर बल देते हैं, वहीं दूसरी ओर वे उन्नत शिक्षा प्रविधियों के माध्यम को भी स्वीकार करते हैं।

शैक्षिक नवाचार की पद्धतियाँ

वर्तमान समय में शिक्षा पूर्णतया बालकेन्द्रित है। हमारी सरकारों द्वारा विद्यालयों को भौतिक सुविधाएँ तो प्रदान की जा रही हैं जिसके परिणामस्वरूप विद्यालयों में नामांकन में वृद्धि हुई है लेकिन गुणात्मक शिक्षण में अभी भी आशानुरूप सफलता नहीं मिली है और इस सफलता के लिए शिक्षा में शैक्षिक नवाचारों की आवश्यकता है। जब तक कक्षा में उचित एवं उपयोगी शिक्षण पद्धति को नहीं अपनाया जाएगा तब तक इसमें सफलता मिलना मुश्किल है।

वास्तव में देखा जाए तो नवाचार वह विचार है, जिसमें नवीन एवं पुरातन का मिश्रण कर एक नवीन एवं परिमार्जित इकाई के रूप में अपने गुणों एवं विशिष्टताओं को प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें व्यक्ति नवीनता का अनुभव करता है। एक अच्छे शिक्षक को विभिन्न शैक्षिक नवाचारों से अवगत होना अत्यन्त आवश्यक है जिससे वे अपने शिक्षण व अधिगम प्रक्रिया को सहज व सरल बनाने के साथ इस हेतु शिक्षा में प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न शैक्षिक नवाचारों का प्रयोग कर सके। विद्यार्थियों के पुस्तकीय ज्ञान को उनके बाहरी जीवन से जोड़ा जाए। शैक्षिक नवाचारों के माध्यम से विद्यार्थी भयमुक्त वातावरण में स्वतंत्र होकर अपना कार्य सुगमता से कर सकते हैं जिससे उनमें अभिव्यक्ति, अन्वेषण, निर्णय लेने, स्वमूल्यांकन करने की क्षमता, सृजनात्मक, रचनात्मक और आत्मविश्वास जैसे कौशलों का विकास हो सकेगा। शैक्षिक नवाचार में ऐसे तो बहुत–सी विधियाँ या पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं–

1. स्मार्ट बोर्ड 2. स्मार्ट कक्षाएँ 3. मल्टीमिडिया एप्रोच 4. इंटरनेट 5. ऑडियो विजुअल 6. विडियो विजुअल 7. श्याम पट्ट 8. टेलीकान्फ्रेंसिंग 9. प्रोजेक्टर 10. एज्युकेशन एप्पस 11. कहानी विधि 12. सेटेलाइट संप्रेषण। वैसे तो शैक्षिक नवाचार के लिए बहुत प्रकार की पद्धतियों का प्रयोग प्राचीन काल से ही किया जा रहा है जैसे श्यामपट्ट, कहानी विधि, प्रदर्शन विधि, करके सीखना, टेलीविजन, रेडियो इत्यादि। यहाँ पर उन विधियों पर फोकस किया जा रहा है जो नवीन एवं आधुनिक हैं–

1. स्मार्ट कक्षाएँ एवं स्मार्ट बोर्ड–

आज स्कूलों में शिक्षा की तस्वीर बदल रही है अब कक्षाओं में छात्रों की पढ़ाई पहले से ज्यादा सुविधाजनक, रोचक, सरल एवं हाइटेक हो गई है। देश के कई स्कूलों में ब्लेक बोर्ड का स्थान स्मार्ट बोर्ड एवं स्मार्ट कक्षाओं ने ले लिया है। आज टीचर के हाथ में चॉक एवं डस्टर के स्थान पर स्टाइलिश डिवाइस और बच्चों के हाथ के पैन–पेंसिल की जगह रिमोट आ गया है। आज हमारी पढ़ाई केवल किताबों तक ही सीमित नहीं रही है। आज बच्चों को वीडियो, पिक्चर्स, ग्राफिक की सहायता से पढ़ाया जा रहा है और रिमोट के साथ छात्र जवाब दे रहे हैं। इस प्रकार की तकनीकी बच्चों के साथ–साथ टीचर्स के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो रही है। इसमें टीचर अपने चैप्टर को विडियो एवं ग्राफिक व चित्रों के साथ सरल एवं रुचिकर बना सकता है।

2. प्रोजेक्टर

वर्तमान समय में शिक्षण की विधियों में प्रोजेक्टर का उपयोग किया जा रहा है। प्रोजेक्टर भी कई प्रकार के होते हैं। शिक्षण विधियों में पहले स्लाइड प्रोजेक्टर तथा ऑवर हैड प्रोजेक्टर का उपयोग किया जाता था। आज कल प्रोजेक्टर का प्रयोग किया जाता है, जिसमें विद्यार्थियों को उनके विषय के बारे में सीडी या पैन ड्राइव की सहायता से सरलता एवं सहजता से समझाया जाता है। इस विधि की सहायता से कठिन से कठिन विषय को सुगमता से समझाया जा सकता है।

3. श्रव्य उपागम

शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए जिन श्रव्य उपागमों का उपयोग किया जाता है, उनमें रेडियो, टेपरिकार्डर, रिकॉर्ड प्लेयर प्रमुख है। इन उपकरणों की सहायता से विद्यार्थियों में ज्ञानात्मक एवं भावात्मक पक्षों का विकास आसानी से किया जा सकता है।

4. दृश्य उपागम

शिक्षण में दृश्य उपागमों के माध्यम से शिक्षण कार्य करने से विद्यार्थियों की दृश्य इंद्रियों को क्रियाशील बनाया जाता है। मुख्य दृश्य साधन चित्र, ग्राफ, स्लाइड एवं मॉडल इत्यादि हैं। शिक्षण में इस प्रकार की तकनीकी का प्रयोग कर शिक्षा के ज्ञानात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहयोग मिलता है।

5. श्रव्य दृश्य उपागम

शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थियों की श्रव्य–दृश्य इंद्रियों को एक साथ क्रियाशील करने के लिए इस प्रकार की शैक्षिक तकनीकी का प्रयोग

किया जाता है। इस प्रकार की शिक्षण तकनीकों से विद्यार्थियों में तारतम्यता उत्पन्न हो जाती है। इसमें टी.वी, वीडियो एवं चलचित्र इत्यादि आते हैं।

6. विभिन्न एप्स एवं इंटरनेट

इंटरनेट की सहायता से विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों का ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। विभिन्न एप्स एवं इंटरनेट द्वारा सेल्यूलर फोन की सहायता से भी रोचकता एवं सरलता के साथ शिक्षण कार्य किया जा सकता है।

प्राथमिक शिक्षा में शैक्षिक नवाचार

माध्यमिक और उच्च शिक्षा में तो शैक्षिक नवाचारों का उपयोग काफी हद तक हो रहा है क्योंकि उनके पास भौतिक संसाधन हैं, जिससे शिक्षण में शैक्षिक नवाचारों का उपयोग कर शिक्षण कार्यों को रोचक, सरल एवं रुचिकर बनाया जा रहा है।

प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विद्यालयों में भौतिक संसाधनों, विशेषकर बिजली की कमी को देखते हुए नए शैक्षिक संसाधनों जैसे-स्मार्ट बोर्ड, स्मार्ट कक्षाएँ, प्रोजेक्टर, टी.वी. एवं शिक्षा से जुड़े विभिन्न प्रकार के एप्स का प्रयोग ना के बराबर हो रहा है। वैसे देखा जाए तो वर्तमान में भारत की प्राथमिक शिक्षा नीतिगत बदलाव के दौर से गुजर रही है तथा इस नीतिगत बदलाव की कहानी को आगे बढ़ाने के लिए अनेक कार्यक्रम बनाए जा रहे हैं तथा शिक्षण को आनन्ददायक एवं रुचिकर बनाने के प्रयासों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। विद्यालयों में भयमुक्त वातावरण की नीतियों पर विचार विमर्श हो रहा है। विद्यालय तथा समुदाय के मध्य संवाद प्रारम्भ करने के लिए विद्यालय प्रबन्ध समितियों को सक्रिय बनाने, बच्चों के माता-पिता एवं अभिभावकों को स्कूल में बुलाने और बच्चों की शैक्षिक प्रगति से उनको अवगत करवाने का कार्य किया जा रहा है। शिक्षा को बच्चों के मौलिक अधिकार के रूप में देखा जा रहा है, ताकि कोई भी शिक्षा से वंचित ना रहे। साथ ही इस टेक्नॉलोजी के जमाने में प्राथमिक शिक्षा में भी शैक्षिक नवाचारों का प्रयोग होने लगा है। आज प्राथमिक शिक्षा की शुरूआत में बच्चों को शैक्षिक नवाचारों की नई-नई तकनीकों से अवगत करवाया जा रहा है। जिससे बच्चों में शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न हो रही है। आज प्राथमिक कक्षाओं में भी विद्यार्थियों को ऑडियो-वीडियो जैसे शैक्षिक संसाधनों द्वारा शिक्षण करवाया जा रहा है। जिससे बच्चों में सीखने की संभावनाएँ बढ़ रही हैं।

शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप लाने एवं आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु सक्षम बनाने के लिए नए विचारों, नई विधियों एवं नवाचारों की आवश्यकता होती है। शैक्षिक नवाचारों का उद्भव स्वतः नहीं होता वरन उन्हें खोजना पड़ता है तथा सुनियोजित ढंग से प्रयोग में लाना होता है, ताकि शैक्षिक कार्यक्रमों को परिवर्तित परिवेश में गति मिल सके जिससे विद्यार्थियों की सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। आज जीवन एवं समाज के प्रति दृष्टिकोण बदल रहा है, भौतिकवाद बढ़ रहा है तथा आध्यात्मिक चिंतन लुप्त हो रहा है। रहन-सहन, वेशभूषा, व्यवहार, चिंतन एवं चरित्र बदल रहा है तथा इन परिवर्तनों के कारण शिक्षा में नए परिवर्तन एवं नवाचार अपरिहार्य हो गए हैं। शैक्षिक नवाचारों से शिक्षण प्रक्रिया को रोचक, सुगम एवं सरल बनाकर विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है।

प्रधानाध्यापिका
राज. प्रा. वि. बड़ी की ढाणी
मुहाना सांगानेर, जयपुर।
मो: 8829075513

कोई कार्य छोटा नहीं होता

इंग्लैण्ड में एक बार विशाल समारोह का आयोजन किया गया था। इस समारोह में देश-विदेश के अनेक लोगों को आमंत्रित किया गया। समारोह की अध्यक्षता करने के लिए एक भारतीय विद्वान को आमंत्रित किया गया।

निश्चित दिन समय पर भारतीय विद्वान समारोह पर पहुँच गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि कोई भी व्यक्ति सभास्थल पर नहीं बैठा है। समारोह में आमंत्रित विद्वान एक तरफ खड़े थे एवं समारोह देखने आए लोगों की भीड़ एक तरफ खड़ी थी। यह देखकर भारतीय विद्वान ने संयोजकों से पूछा कि '' ये लोग एक तरफ क्यों खड़े हैं समारोह स्थल पर बैठते क्यों नहीं?'' आयोजकों ने झिझकते हुए जवाब दिया, ''दरअसल सफाई कर्मचारी के अभी तक नहीं आने से सभा स्थल की सफाई नहीं हो पाई है। अतः ये लोग एक तरफ खड़े हैं।''

''तो इस तरह समारोह निर्धारित समय पर नहीं हो सकेगा।'' ''जी हाँ, कुछ इंतज़ार करना होगा।'' आयोजकों ने उत्तर दिया। आयोजकों का उत्तर सुनकर भारतीय विद्वान ने झाड़ू उठाकर सभास्थल की सफाई शुरु कर दी, कुछ समय में उन्होंने सभास्थल साफ कर दिया। मुख्य अतिथि को सफाई करते देख संयोजक किंकर्तव्यविमूढ़ रह गए। ''यह आप क्या कर रहे हैं, यह काम आपके लिए अच्छा नहीं हैं।''

''कोई काम छोटा नहीं होता। हर व्यक्ति को आत्मनिर्भर होना चाहिए और यह तभी हो सकता है जब हर व्यक्ति अपना कार्य स्वयं करे और दूसरों के भरोसे नहीं रहे। दूसरे के सहारे रहने वाला जीवन में कभी सफल नहीं हो सकता।'' भारतीय विद्वान ने गर्व से कहा। उनकी बात सुनकर आयोजकों एवं विदेश से आए सारे विद्वानों का सिर शर्म से झुक गया। किसी भी कार्य को छोटा या बड़ा नहीं समझकर अपना कार्य स्वयं करने वाले भारतीय विद्वान का नाम **ईश्वरचन्द्र विद्यासागर** था।

संकलन-**डॉ. विजय शंकर आचार्य**
उपनिदेशक (मा.) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414426060

शुद्ध अन्तः करण-सद्गुरुओं से सम्भव है

❐ सतीश चन्द्र श्रीमाली

श्री रामकृष्ण परमहंस से एक व्यक्ति ने कहा- स्वामी जी मैंने एक ऐसे व्यक्ति को देखा है जो अनेक शास्त्रों का ज्ञाता है, जिसने अनेक पुस्तकें लिखी हैं तथा जिसके सैंकड़ों की संख्या में शिष्य हैं, लेकिन जब मैंने उनका निजी जीवन देखा तो मैं विस्मित रह गया क्योंकि वह उनके बाह्य व्यवहार से बिलकुल विपरीत और विषमय था। ऐसा क्यों? उन्होंने जो शिक्षा प्राप्त की है, उससे उनमें परिवर्तन क्यों नहीं आया?

श्री रामकृष्ण परमहंस ने उससे कहा कि मैं उन महाशय से परिचित नहीं हूँ अतः उनके बारे में कुछ नहीं कहता, परन्तु तुम्हारी जिज्ञासा के सन्दर्भ में कहना चाहूँगा कि- गिद्ध आकाश की ओर सबसे ऊँचाई पर उड़ने वाला पक्षी है और वह इतनी ऊँचाई पर उड़ता है जहाँ धूल के कण भी नहीं पहुँच पाते। वह ऐसे पवित्र वातावरण में विचरण करता है लेकिन जब पृथ्वी पर कोई मृत जानवर उसे दृष्टिगोचर होता है तब वह तत्काल उस पवित्र वातावरण को त्याग कर पृथ्वी की ओर आकर अपनी चोंच उस मृत जीव की देह में डालता है।

श्री रामकृष्ण परमहंस का उक्त कथन हमें यह विचार करने के लिए प्रेरित करता है कि सामाजिक प्रतिष्ठा केवल उच्च शिक्षा प्राप्त करने से, उच्च पदों को प्राप्त करने से, सामाजिक-राजनैतिक क्षेत्र में नेतृत्व के पदों को प्राप्त करने से ही प्राप्त नहीं होती है, इसके लिए हमारा आचरण भी श्रेष्ठ और पवित्र होना चाहिए। इसलिए हमारे देश में शिक्षा के सन्दर्भ में विमर्श हुआ तथा विद्या-अविद्या को पृथक-पृथक परिभाषित किया गया। चूँकि अविद्या आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त नहीं करती है। अतः पढ़े-लिखे व्यक्तियों में मनोविकार (तम, मोह, महामोह, तामिस्र, अन्धतामिस्र) यथावत् बने रहते हैं। ऐसी शिक्षा प्राप्त करके वे समाज में किसी भी पद पर आसीन होकर उचित दायित्त्वों का निर्वहन नहीं कर सकते। इसके ठीक विपरीत 'विद्या' के सन्दर्भ में कहा गया है कि- 'सा विद्या या विमुक्तये।' विद्या वह है जो मनोविकारों से मुक्त करे।

मनोविकारों से युक्त व्यक्ति ही मूर्ख कहलाता है और समाज उसका सम्मान नहीं करता, चाहे उसका पद कैसा ही हो। इसी प्रसंग में 'भोज प्रबंध' में कहा गया है कि-

विप्रोऽपि यो भवेन्मूर्खः स पुराद्बहिरस्तु मे।
कुम्भकारोऽपि यो विद्वान्सतिष्ठतु पुरे मम।।

मनोविकारों को समाप्त करवाने में सद्गुरु ही सक्षम होते हैं; चूँकि वे ही शिष्यों को ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा देने के साथ-साथ यह भी ध्यान देते हैं कि शिष्यों में आत्मिक विकास हो रहा है या नहीं। चूँकि सद्गुरु ही अविद्याजनित अन्तःकरण की गाँठ का भेदन करने वाले होते हैं तभी शिष्यों का अन्तःकरण शुद्ध होता है।

वर्तमान समय में नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देने की चर्चाएँ बहुत हो रही हैं। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को लागू करने के लिए अनेक प्रयोग किए जाते हैं परन्तु वे पूर्णरूपेण सार्थक होते दृष्टिगोचर नहीं होते चूँकि वे मनोविकारों को मिटाने में प्रभावशाली नहीं हैं। इसी कारण आज भी हम अनेक प्रकार की सामाजिक बुराइयों से मुक्त नहीं हो सके।

विद्यार्थियों के जीवन में आचरण की शुद्धि के लिए शिक्षक की भूमिका सदा से ही महत्त्वपूर्ण रही है। हमारे भारतीय समाज में ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन की श्रेष्ठता का श्रेय अपने गुरुओं को दिया है और वे गर्व से कहते हैं कि यदि सद्गुरुओं का सान्निध्य उन्हें प्राप्त नहीं होता तो वे 'मन की पवित्रता' के महत्त्व से वंचित रहते और अपना जीवन श्रेष्ठत्तम (पवित्र) नहीं बना सकते थे।

यह सच है कि विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के जीवन को शिक्षकों का व्यवहार भी अधिक प्रभावित करता है। अतः शिक्षकों का दायित्त्व केवल पाठ्यक्रम पूर्ण करवाने तथा परीक्षा लेने मात्र तक सीमित नहीं है बल्कि यह भी देखना होता है कि विद्यार्थियों का मानसिक विकास हो रहा है अथवा नहीं। शिक्षक के व्यवहार से छात्र कैसे प्रभावित होता है यह जानना आवश्यक है। जब छात्र ज्ञानार्जन के लिए विद्यालयों में आते हैं और वे विषयों का अध्ययन करते हैं। विद्यार्थियों की मनः स्थिति को समझते हुए विषय की जटिलता को सरलता की ओर ले जाकर उन्हें अध्ययन करवाते हैं तथा विषय के प्रत्येक पक्ष से विद्यार्थियों को परिचित करवाते हैं। ऐसे मनोयोग से पढ़ाने वाले शिक्षक ही आदर्श शिक्षक होते हैं और यह तभी सम्भव है जब वे स्वयं आत्मिक विकास से परिपूर्ण हों।

आत्मिक विकास के सन्दर्भ में सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष साहित्य, संगीत और कला को माना गया है। व्यक्ति इन्हीं से जुड़कर जीवन को सरस एवं विकारों से मुक्त रख सकता है लेकिन उसके लिए ये केवल 'स्वान्तः सुखाय' होने चाहिए व्यवसाय नहीं। शिक्षा के अन्य पक्ष हमें भौतिक प्रगति की ओर अग्रसर करने वाले हैं। अतः श्रेष्ठ शिक्षक ही विद्यार्थियों के जीवन में उक्त दोनों पक्षों का सामंजस्य करवा सकते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं। प्रसंगवश मैं उल्लेख करना चाहूँगा हमारे देश के महान वैज्ञानिक एवं राष्ट्रपति रहे डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का। इनके जीवन में भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान का संतुलित सामंजस्य था। जिसका श्रेय सदा उन्होंने अपने सद्गुरुओं को दिया। वर्तमान में जब उनके 'स्टेच्यु' का अनावरण किया गया तो उस 'स्टेच्यु' में डॉ. कलाम को वीणा बजाते हुए दिखाया है तथा आध्यात्मिक ग्रन्थ उनके पास रखे गए हैं। चूँकि उनका जीवन संगीत-साहित्य से प्रेरित था। इसी कारण भौतिक विज्ञान में सर्वश्रेष्ठ होने पर भी उनका आत्मिक विकास भी उन्नत था अर्थात् उनका अन्तःकरण 'शुद्ध अन्तःकरण' था जो उनके कर्म और व्यवहार से परिलक्षित होता था।

'शुद्ध अन्तःकरण' से युक्त व्यक्ति ही श्रेष्ठ समाज और राष्ट्र निर्माण में श्रेष्ठत्तम योगदान कर सकते हैं, तभी हमारे समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयाँ समाप्त हो सकेंगी।

जस्सुसर गेट रोड, धर्म काँटे के पास,
बीकानेर (राज.)
मो: 9414144456

श्रीगीता में योग-दर्शन

❐ जगदीश चन्द्र मेहता

योग शब्द 'युज' धातु से बना है। 'युज' का अर्थ है जोड़ना, योग्य बनाना, नीरोग बनाना। जो व्यक्ति लौकिक जीवन (इहलोक) में यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) और नियम (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर, प्रणिधान) का हृदय से पालन करता है, वह योगी की श्रेणी में आता है। वह विचारों से, मन से, क्रियाओं से पवित्र होता है।

श्रीगीता का दर्शन है-'कर्मसु कौशलं योग' अर्थात कर्मों को कुशलता से करना, पवित्रता से करना, मन से करना योग की श्रेणी में आता है।

सम्पूर्ण गीता के अठारह अध्याय के सात सौ श्लोक योग पर ही आधारित हैं। प्रत्येक अध्याय के अन्त में योग ही है। मानव जीवन की समस्त क्रियाएँ योग पर ही आधारित होती हैं। योग की क्रियाएँ सभी धर्मों में हैं। गीता में न हिन्दू धर्म है, न मुस्लिम धर्म है, न सिक्ख धर्म है, न ईसाई धर्म है। श्री गीता में केवल मानव धर्म है। मानव धर्म ही भारतीय वैदिक संस्कृति का मूल है। मानव धर्म ही सत्य है अर्थात ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।''

पतंजलि के अनुसार -''योगश्चित्तवृत्ति निरोध'' अर्थात चित्त मन इन्द्रियों पर कंट्रोल कर, उसको मायावी संसार से बचाना ही योग है। इसके लिए भोजन आहार-विहार का ध्यान रखना चाहिए।

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नाव बोधस्य योगः भवति दुःख हा।।
(गीता 6/17)

अर्थात-दुःखों का नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार-विहार करने वाले कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वाले और यथायोग्य सोने तथा जागने वाले का ही सिद्ध होता है। मानव जीवन का प्रथम सुख निरोगी काया है। इस काया को स्वस्थ रखने के लिए हितभुक्, ऋतभुक्, मितभुक् का ध्यान रखना चाहिए। हितकारी भोजन के सम्बन्ध में श्री कृष्ण भगवान द्वारा श्रीगीता ग्रंथ के सत्रहवें अध्याय में कहे श्लोक 8, 9, 10 जीवन उपयोगी हैं जो योग सिद्धि में सहायक होते हैं। जीवन में हितकारी भोजन करो, ऋतु के अनुसार भोजन करो और भूख से कुछ कम भोजन करो। जीवन का यथार्थ योग तो 'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्' में ही है। निरोगी काया द्वारा ही चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। श्रीगीता ग्रंथ में 'योग क्षेम' का दर्शन है। जो मानव को नई ऊर्जा, दिशा और संरक्षता प्रदान करती है। घेरण्ड संहिता (1-10) में योग के आठ अंग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि बताये गये हैं। उसमें लिखा है-

षट्कर्मणा शोधनं च, आसनेन भवेद दृढ़म्।
मुद्रयास्थिरता चैव, प्रत्याहारेन धीरता।।
प्राणायामाल्लाघवं च, ध्यानाप्रत्यक्षमात्मनि।
समाधिना निर्लिप्तं च, मुक्तिरेव न संशय।।

अर्थात्- षड्कर्मों द्वारा शरीर का शोधन होता है। आसनों द्वारा शरीर में दृढ़ता आती है। मुद्राओं से शरीर में स्थिरता रहती है। प्राणायाम से शरीर में स्फूर्ति एवं लघुता प्राप्त होती है। प्रत्याहार से धीरता बढ़ती है। ध्यान आदि द्वारा आत्मा-परमात्मा का प्रत्यक्ष अनुभव होता है तथा निर्विकल्प समाधि द्वारा निर्लेप होकर साधक-उपासक जीवन मुक्त जीवन का आनन्द प्राप्त करता है। योग सिद्धि से ही भगवान की प्राप्ति हो सकती है। मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य तत्त्व ज्ञान, प्रभु की प्राप्ति करना ही है।

यह चित्त की वृत्तियों पर नियंत्रण हमने सिद्ध कर लिया तो फिर ऐसी कोई भी शक्ति नहीं है, जिसे प्राप्त नहीं किया जा सकता है। मनुष्य को योग सिद्धि प्राप्त करने में मन ही एक अवरोध होता है। शास्त्रों में लिखा है-''मन एवं मनुष्याणं कारणं बन्धमोक्षयेः।'' अतएव मन की चित्तवृत्तियों को सही दिशा देने के लिए वैराग्य और अभ्यास द्वारा धीरे-धीरे रोका जा सकता है। वृन्द कवि ने लिखा है-

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।।

एक शायर ने लिखा है- ''हिम्मते मर्दां, मददे खुदा।'' चित्त का कन्ट्रोल करने के लिए हिम्मत, साहस, धैर्य से काम करना चाहिए तो प्रभु भी मददगार हो जाता है।

कुण्डलिनी- प्राणवायु की अपनी गति उर्ध्व है परन्तु पूरक क्रिया उसे अधोगति प्रदान करती है। इसी प्रकार अपानवायु की अपनी स्वाभाविक अधोगति है, परन्तु रेचक क्रिया उसे उर्ध्वगति प्रदान करती है। कुम्भक क्रिया प्राण और अपान को मिलाकर प्राणायाम का परायण करती है। जब कुम्भक सिद्ध हो जाता है तो मूलाधार चक्र में मन-स्थिर हो जाता है और मनुष्य समाधि की ओर बढ़ता है। योग सिद्धि से वह मानवता की ओर बढ़ता है। गुदा से दो अंगुल ऊपर तथा जननेन्द्रिय से दो अंगुल नीचे मनुष्य का मध्य भाग है। इसे ही मूलाधार चक्र कहते हैं। यह अग्नि का स्थान माना गया है। यहाँ ध्यान देना है। पैरों और हाथों के अंगूठों में भी अग्नि का स्थान माना गया है। हस्त मुद्राओं द्वारा शारीरिक रोगों को दूर किया जाता है। मूलाधार चक्र वर्ण में तपाए हुए स्वर्ण के समान एवं आकृति में त्रिकोण माना जाता है। मूलाधार से ही समस्त तंत्रिकाओं की उत्पत्ति योगशास्त्र में मानी है।

तंत्रिकाओं को नाड़ी कहा जाता है। शरीर में 727210201 नाड़ियों का जाल है। इसमें इड़ा (चन्द्र नाड़ी, गंगा), पिंगला (सूर्य नाड़ी, यमुना) तथा सुषुम्ना (सरस्वती नाड़ी) मुख्य हैं। इन तीन मुख्य नाड़ियों के अतिरिक्त सात नाड़ियाँ है-यशस्विनी नाड़ी बाएँ कान में, गान्धारी नाड़ी नाक में, हस्तजिह्वा नाड़ी दाहिनी आँख में, पूषा नाड़ी दाहिनी कान में, अलम्बुषा नाड़ी मुख में, कुहू नाड़ी लिंग देश में और शंखिनी नाड़ी गुदा में स्थित होती है।

सुषुम्ना नाड़ी के वाम भाग (Left side) में इड़ा नाड़ी और दक्षिण भाग (Right side) में पिंगला नाड़ी रहती है। सुषुम्ना, इड़ा, पिंगला नाड़ी तिलक स्थान मिलकर त्रिवेणी आज्ञा चक्र कहलाती है। इड़ा नाड़ी ऊपर बायें (वाम) नासिका तक जाती है। पिंगला नाड़ी दक्षिण (दाहिना) नासिका तक जाती है। श्वास-प्रश्वास इन तीन नाड़ियों द्वारा होता है। जो एक-एक घंटे से स्वस्थ शरीर में नाक के दोनों छिद्रों से क्रमशः

अपने आप परिवर्तित होता रहता है, परन्तु सुषुम्ना नाड़ी गुप्त रहती है।

मूलाधार चक्र को कुण्डलिनी का मूल स्थान माना जाता है। जिस प्रकार वृक्ष की जड़ खराब (कीटाणुओं युक्त) हो जाने पर वृक्ष नष्ट हो जाता है उसी प्रकार मूलाधार चक्र में खराबी होने पर सारा शरीर रोग ग्रस्त हो जाता है। कुण्डलिनी को अष्ट प्रकृति रूपा अर्थात् पंच महाभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) मन, बुद्धि, अहंकार माना गया है। यह साढ़े तीन कुण्डलियों में अवस्थित है। तीन कुण्डलियाँ मानव शरीर के तीन गुण (गीता-अध्याय 14) सत, रज, तम, गुणों को व्यक्त करती है। आधी कुण्डली विकृति प्रकृति (काम, क्रोध, लोभ आदि आसुरी वृत्तियाँ) गीता अध्याय 16 को व्यक्त करती है। मायिक क्षण भंगुर संसार में मनुष्य पर इस विकृति कुण्डली का प्रभाव विशेष रूप से पड़ने से उसका जीवन अधोगति में चला जाता है।

इसी कारण भगवान श्रीकृष्ण ने गीता (7/3) में कहा है, ''हजारों मनुष्यों में कोई एक मेरी प्राप्ति के लिए यत्न करता है और उन यत्न करने वाले योगियों में भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्व से यथार्थ रूप से जानता है।'' कुण्डलिनी सुषुम्ना नाड़ी के मुख को अपने मुख में आवेष्टित रखती है। ऐसा योग शास्त्र का दर्शन है।

प्राणायाम के निरन्तर अभ्यास में कुम्भक द्वारा प्राणशक्ति बढ़ जाती है। प्राण अधोगति होकर तथा अपना उर्ध्वरति होकर जब परस्पर मिल जाते हैं तो कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। योगी जन अपानवायु में प्राणवायु और प्राणवायु में अपानवायु का हवन करते हैं।

कुण्डलिनी जाग्रत होने पर मन, प्राण और शरीर तीनों ही संगठित हो जाते हैं। सत्यम् शिवम्, सुन्दरम् से मनुष्य गुणातीत हो जाता है। श्वास की उर्ध्वगति द्वारा सुषुम्ना के मार्ग पर स्थित सभी चक्र भी क्रियाशील हो जाते हैं। मनुष्य नीरोग अनुभव करता है। शरीर में ऊर्जा, शक्ति, प्रज्ञा, विवेक, ज्ञान का संचार हो जाता है। षड़चक्र इस प्रकार है-

पहला मूलाधार चक्र गुदा में अन्नमय कोश के साथ स्थित है। इसको भौतिक स्थूल शरीर भी कहते है। इसमें पृथ्वी तत्व की प्रधानता है। यह एक चतुर्दल कमल के सदृश है।

दूसरा स्वाधिष्ठानचक्र मूलाधार के ऊपर तथा नाभि के नीचे अन्नमयकोश के साथ स्थित है। इसमें जल तत्व की प्रधानता के साथ आकाश शरीर भाव भी प्रकट होता है। यह चक्र छह चक्र पंखुड़ी वाला है।

तीसरा चक्र नाभि स्थान मणिपूरक चक्र प्राणमय कोश सूक्ष्म शरीर के साथ होता है। इसमें अग्नि तत्व के साथ दस चक्र पंखुड़ी वाला कमल है।

चौथा चक्र अनाहत चक्र नाभि से ऊपर और सीने से कुछ नीचे बारह पंखुड़ी वाला कमल मनोमयकोष के साथ स्थित है। इसमें वायु तत्व की प्रधानता मनोमय शरीर के रूप में स्थित है।

पाँचवाँ चक्र कण्ठ (गला) में सोलह पंखुड़ी वाला कमल विशुद्ध चक्र अध्यात्म शरीर के साथ विज्ञानमय कोष है। इसमें आकाश तत्व की प्रधानता है।

छठा चक्र तिलक स्थान कपाल भूमध्य भाग पर स्थित आज्ञा चक्र है। आनन्दमय कोष द्विदल ब्रह्म शरीर के साथ है। इसमें सर्वदा सोऽह मंत्र अपने इष्ट देव का चिन्तन होता है।

मुख्य रूप से षट्चक्र ही माने गये है किन्तु कुछ आचार्यों ने दो चक्र और भी बताये हैं। (1) बिन्दू चक्र और (2) सहस्रार चक्र। सहस्रार चक्र को ही सहस्रदल कमल भी कहा गया जाता है। इस प्रकार कुल चक्रों की संख्या 8 हो जाती है।

संसार (इहलोक) मायावी, वासनायुक्त, क्षणभंगुर होने के कारण तीन चक्र मूलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र और मणिपुर चक्र में ही मनुष्य अपना जीवन अधोगति में व्यतीत करता है, जिसमें आसुरी वृत्तियाँ प्रेयभाव होती हैं।

इसी प्रकार अनाहद चक्र, विशुद्ध चक्र, आज्ञा चक्र में पशुता के स्थान पर मानवता दैवी सम्पदा श्रेय भाव से भरा रहता है। इसमें मानवता का विकास होकर जीवन उर्ध्व गति प्राप्त करता है। परमात्मा की प्राप्ति कर जीवन का कल्याण कर लेता है।

कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाने पर संसार में मानव ही महामानव बन जाता है। उसके पास सभी प्रकार की शक्तियों को प्राप्त करने की क्षमता आ जाती है। योगसिद्धि से ही योग शक्ति और योग शक्ति से योग सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

मानवीय दैवी सम्पदा गुण एकाग्रता, तन्मयता, मौन शक्ति आदि का प्रत्यक्ष आत्मानुभव हो जाता है। आत्म दर्शन से आत्म कल्याण हो जाता है।

योग सिद्धि भारतीय सनातन संस्कृति परम्परा का एक अमूल्य उपहार विश्व को दिया गया है। योग से ही सर्वांगीण विकास शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति होती है। मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करने का बड़ा ही उत्तम तरीका योगसिद्धि ही है।

इससे मनुष्य दैवी सम्पदा गुणों को प्राप्त कर विश्व में शांति और सौहार्द्र पैदा कर 'उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का निर्माण करता है। भारत के प्रधानमंत्री श्रीमान् नरेन्द्र मोदी जी ने योग दिवस का प्रस्ताव दिनांक 11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रस्तुत किया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने सहर्ष एकमत से, एक स्वर से योग दिवस मनाने का निर्णय लिया, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ ने 'शरीरमाद्यम् खलुधर्म साधन' का सिद्धांत समझा। संयुक्त राष्ट्र संघ ने दिनांक 21 जून 2015 से योग दिवस विश्व में मनाना प्रारम्भ कर दिया। इस वर्ष भी 21 जून 2017 बुधवार को भारतवर्ष के साथ सम्पूर्ण विश्व में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर योग दिवस मनाया गया।

विशेष : 21 जून के दिन- दिन बड़ा होता है और रात छोटी होती है। यह भी प्रकृति की ओर से एक प्रकार का योग दिवस ही माना गया है। अंत में कुण्डलिनी जागरण के लिए प्रतिदिन अभ्यास के साथ निम्न प्रकार की मानसिक भावना रखने से योग सिद्धि में सफलता शीघ्र मिलती है-

1. मैं पूर्ण आरोग्य स्वरूप हूँ।
2. मैं पूर्ण ज्ञान रूप हूँ।
3. मैं पूर्ण आनन्द रूप हूँ।
4. मैं सर्वोन्नति का मूल हूँ।
5. मैं काल, कर्म, माया से मुक्त हूँ।
6. मैं अजर, अमर, अविनाशी, निर्लेप, निर्विकार व्यापक शांत स्वरूप हूँ।

पैलेस रोड़ गेट, भोजापलियाँ बांसवाड़ा
(राज.)-327001
मो :09414101983
फोनः 02962-241608

विज्ञान एवं अध्यात्म में सामंजस्य आवश्यक

❒ रूपनारायण काबरा

वस्तु जगत की शिक्षा अपने आप में अपूर्ण है, क्योंकि जब तक शिक्षा में आध्यात्मिक चेतना का समावेश नहीं होगा, जीवन जीने योग्य शिक्षा में पूर्णता नहीं आयेगी। विद्यालयों में भीड़ तो बढ़ती जाएगी पर सांस्कृतिक चेतना एवं मूल्यों की शिक्षा के अभाव में यह भीड़ अपसंस्कृति की ओर बढ़ती जाएगी।

आज विद्यालयी शिक्षा में पूर्णता नहीं है। साथ ही तथाकथित धर्म संस्थान एवं धर्म गुरु भी व्यावसायिक हो गये हैं, उनकी भी अपनी संघीय राजनीति होती है, अपनी स्वयंभू सत्ता होती है। प्रकाश देने वाले ये संस्थान आपस में ही प्रतियोगी बनते जा रहे हैं और प्रकाश व दिशा बोध देने के स्थान पर अपनी गतिविधियों से भ्रमित कर देते हैं। वस्तुतः धर्म संस्थानों और शिक्षण संस्थानों को एक रूप होकर समाज की शिक्षा का संचालन करना है। दोनों के मिले-जुले प्रयास से ही प्रबुद्ध नागरिकों का विकास होगा। धर्म संस्थानों द्वारा केवल उपदेश देना, धर्म चर्चाएँ कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। अध्यात्म को जाग्रत करने एवं चेतन करने हेतु गहरी निष्ठा, समर्पित साधना, निस्वार्थ सेवा करना और किसी भी प्रकार के लोभ या कीर्ति की लालसा का नहीं होना बहुत आवश्यक है। धर्म संस्थानों में परस्पर अनुराग और सहयोग होना चाहिए न कि प्रतिद्वंद्विता एवं प्रतियोगिता। जब तक धर्माचार्य सत्ता भाव एवं पद लोलुपता में लिप्त रहेंगे तब तक समाज को अपेक्षित दिशा बोध नहीं मिल पाएगा, क्योंकि उपदेश से अधिक प्रभावित करता है-कृतित्व, आचरण एवं सादगी।

यद्यपि विद्यालयी शिक्षा द्वारा वह सब तो मिल जाता है जिस पर जीवन निर्वाह, भोगपूर्ति एवं अर्थोपार्जन आधारित होता है पर प्रियता और अप्रियता, मानवीय और अमानवीय तथा सत्य एवं असत्य के संवेदन से हटकर समता, समादर भाव एवं समानुभूति जाग्रत नहीं होती है; अतः शिक्षा अपूर्ण रहती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब वैज्ञानिक विकास हमारी जीवनशैली और विचारधारा में समा गया

है तो विज्ञान का प्रभाव समग्र मानव चेतना को प्रभावित कर रहा है। सुविधा के साधनों, मनोरंजन एवं भोग की सामग्री ने स्थितियों को शक्तिशाली बना दिया है लेकिन मनुष्य कमजोर हो गया है। वह स्वयं की शान्ति और विवेक खोता जा रहा है। विज्ञान ने सुविधा और भोग के साथ ही विनाश के भयंकर साधनों का भी निर्माण कर लिया है। उद्योगवाद से उत्पन्न पर्यावरण प्रदूषण, पेयजल की कमी, रोगों का प्रसार इत्यादि समस्याएँ भी अपने विनाशकारी रूप में विकासमान हैं।

विज्ञान की द्रुत गति को रोकना न अपेक्षित है और संभव भी नहीं है। विज्ञान तो तीव्र गति से बढ़ता चला जाएगा। क्लोन का निर्माण, परखनली शिशु, जीन्स द्वारा स्वास्थ्य में क्रांति तथा अन्तरिक्ष यात्राएँ जब पराकाष्ठा पर होंगे तो विश्व की क्या स्थिति होगी, अकल्पनीय है। अतः आज ही, अभी ही, अविलम्ब सभी को स्वीकारना होगा कि नई पीढ़ी के व्यक्तित्व में अध्यात्म और विज्ञान का सामंजस्य हो। दोनों का सुसमन्वित रूप ही श्रेयस्कर है। अध्यात्म तो कभी भी खतरनाक हो ही नहीं सकता पर निरंकुश विज्ञान भयंकर विनाश का अग्रदूत हो सकता है, इसमें संदेह नहीं।

अवैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिणाम है मूर्खता, अज्ञान और अंधविश्वास। धर्म के साथ भी आडम्बर, पाखंड, कर्मकांड से अंधकार तथा संकीर्णता प्रसारित होती है। दृष्टिकोण को तो वैज्ञानिक होना ही है और यह अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय से ही संभव है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण और अध्यात्म दोनों की पहली शर्त है सत्य की खोज में लगे रहना। सत्यान्वेषण की यात्रा जीवन में निरन्तर चलती रहे यही तो वैज्ञानिक दृष्टिकोण है और अध्यात्म इस दृष्टिकोण को दिशा देता है। हमारा जीवन भी तीन प्रकार के जीवन का सम्मिश्रण है-पहला शारीरिक जीवन, दूसरा मानसिक जीवन और तीसरा होता है भावनात्मक जीवन अर्थात् आध्यात्मिक जीवन। शारीरिक जीवन स्वास्थ्य का नियंत्रण करता है, मानसिक जीवन जीवनयापन एवं ऐन्द्रिक सुखों को समर्पित होता है और भावनात्मक जीवन को सही दिशा देकर नियंत्रित करता है-आध्यात्मिक जीवन।

आज की द्रुतगामी दुनिया में जब नित नये वैज्ञानिक, प्राकृतिक और जीवनशैली संबंधी परिवर्तन आ रहे हैं; आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपरिहार्य हो गया है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से ही भाव-भावना शुद्ध होंगे और मानवीय संवेगों एवं संवेदन में जागृति आएगी तथा मूल्यों में आस्था बढ़ेगी और तभी सब ओर शान्ति, बन्धुत्व, प्रेम, सहयोग, सत्य, न्याय, त्याग व सुख-समृद्धि प्रसारित होगी।

ए-438, किशोर कुटीर
वैशाली नगर, जयपुर-302021
मो: 8233360830

बिना संस्कार चरित्र निर्माण नहीं

❐ वृद्धि चन्द गोठवाल

लोग चर्चा करते हैं आजकल के बालक शैतान है, कहना ही नहीं मानते, जब देखो तब उछल-कूद और झगड़ते रहते हैं। कहीं भी अनुशासन तो रहा ही नहीं। बालकों के ऐसे व्यवहार से कई समस्याएँ उत्पन्न हो गईं। पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण भी विभिन्न हरकतों से प्रभावित होता है। इसके कारण एवं निदान क्या हो सकते हैं? अभिभावकसम्पर्क किया। मैंने एक माता से पूछा कि ''क्या आप बच्चों को अच्छे संस्कार सिखाने पर समय एवं ध्यान देती हैं?'' वह कुछ क्षण चुप रही फिर बताया ''कब और कैसे संस्कार? गृहस्थी के कार्यों को निपटाने में ही दिन पूरा हो जाता है।'' बात को बदलकर पुनः पूछा ''इनके पापा तो जरूर थोड़ा-बहुत समय देकर अच्छी शिक्षा देते होंगे?'' उसे हँसी आई और कहा ''वे तो जल्दी ही काम पर चले जाते हैं, उन्हें फुरसत कहाँ, देर तक घर आते हैं।'' अधिकतर परिवारों में जिम्मेदार लोगों और माता-पिता का यही हाल है। माता-पिता की व्यस्तता से बच्चे मोहल्ले एवं पड़ौस के बच्चों के सम्पर्क से जैसा सीखते हैं, वही तो करते हैं। भिन्न-भिन्न आदत के बच्चों में भिन्न-भिन्न गुण और अवगुण होते हैं। संस्कार आए तो कहाँ से आए? प्रस्थान के समय फिर भी उस माता को कहा कि ''बच्चों को प्रातः माता-पिता एवं बड़ों को प्रणाम करना, दैनिकचर्या का निर्वाह समय पर कर लेना, पढ़ाई करना और प्रेमपूर्वक बोलना, आज्ञा मानना आदि सामान्य बातों की शिक्षा तो अवश्य दें।'' उसने हल्की मुस्कान के साथ गरदन हिला कर कहा-''हाँ।''

बच्चों की शिक्षा की प्रथम सीढ़ी परिवार ही है और वहाँ ही प्राथमिक तौर पर संस्कार डालने पर ध्यान दिया जाना अनिवार्य है। जो अभिभावक जागरूक हैं उस परिवार के बच्चे अल्पायु में संस्कारित हो जाते हैं। मार्केट जाते समय मार्ग में एक मित्र का मकान था। कार्यवश मिलना था। घर के बाहर की घंटी बजाई। दो बालक कोई 8-9 वर्ष के होंगे बाहर आए। मुझे देखते ही बोले नमस्ते अंकल, अन्दर पधारिए। समाचार पत्र देकर कहा-''पापा स्नान करके आने ही वाले हैं, चाय आ गई, बालक मेरे पास बैठकर कुछ बातचीत करने लगे इतने में मित्र से मुलाकात हो गई। बाद की बात बाद में हुई। होनहार एवं संस्कारयुक्त बच्चों को देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। एक परिवार और दूसरे परिवार में कितना अन्तर है? मेरा अनुभव कहता है माता-पिता शिक्षित हों अथवा अशिक्षित। सामान्य संस्कार तो बच्चों को सिखा ही सकते हैं। अन्यथा हम शिकायत करें या पछतावा, कोई फ़र्क नहीं होगा। परिवार के सदस्य अपने बालकों के चरित्र निर्माण हेतु सद्गुण एवं अच्छे संस्कार नहीं सिखाएँगे तो क्या अन्य व्यक्ति आएँगे? तो पड़ौसी को क्या पड़ी है, जो वे सिखाएँगे? दिनभर खेलकूद में मोहल्ले के सभी बालक संस्कारी तो होते नहीं और जो संस्कारित होते हैं उनके माता-पिता असंस्कारित बच्चों के साथ खेलने एवं सौबत में भेजते नहीं। बच्चों का अनुशासित जीवन होना अभिभावकों का गैर जिम्मेदार होना है।

परिवार के बाद फिर बात होती है विद्यालय की। विद्यालय द्वारा ही बालक के जीवन का निर्माण होता है; क्योंकि वहाँ शिक्षक सेवा ही इसलिए होती है कि वे बालकों के चरित्र का निर्माण करें, उत्कृष्ट शिक्षा से बालकों को संस्कारवान बनाएँ, देशप्रेमी बनाएँ, समाजसेवी बनाएँ और मानवीय दृष्टिकोण उत्पन्न करें। विषयवस्तु के साथ जीवन का व्यावहारिक ज्ञान विद्यालय परिवार के बीच रहकर ही अधिक से अधिक सीखते है। विद्यालय में हर वर्ग के बालकों से तरह-तरह का ज्ञान मिलता है। विद्यालय की प्रार्थना सभा से और वर्षभर मनाए जाने वाले उत्सव एवं विभिन्न गतिविधियों तथा खेलकूद के माध्यम से नैतिक शिक्षा का ज्ञान कराया जा सकता है। किन्तु कार्यक्रमों का आयोजन उत्साहहीन होने, न नियमितता होने एवं कैलेण्डर का होना न होना बराबर प्रतीत होता है। अतः उद्देश्य निर्मूल साबित हो रहे हैं। आवश्यकता है इनका आयोजन योजनाबद्ध एवं प्रभावी ढंग से निर्धारित समय के अनुसार अभिवार्य रूप से होना ही चाहिए। विद्यालय निरीक्षण के दौरान इसके मूल्यांकन हेतु रेकार्ड की जाँच को महत्त्व मिलना चाहिए। ताकि औपचारिकता मात्र न रह जाए। संस्कारवान बालकों से ही शिक्षा की उपादेयता मालूम होती है। माना गया है कि संस्कारों से ही चरित्र का निर्माण होता है और चरित्र ही जीवन की आधारशिला है। इसलिए बचपन से ही हमें बच्चों को अच्छे संस्कार सिखाने चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा काम है।

बच्चों में अच्छे संस्कारों का प्रभाव हो, इसके लिए उन्हें टी.वी. फैशन और पाश्चात्य सभ्यता से दूर रखा जाना चाहिए। मोबाइल संस्कृति से सावधान किया जाए। इसके साथ ही अभिभावक तथा शिक्षक समाज अपना जीवन आदर्शमय जीएँ; क्योंकि बालक जैसा देखते हैं, वैसा ही करते हैं। बचपन में बच्चों को बहुत बड़े-बड़े काम करना आ जाए, इसके लिए दबाव एवं जबरदस्ती की आकांक्षाएँ न तो संजोएँ और न ही प्रयास करें। बल्कि दैनिक जीवनोपयोगी संस्कार युक्त प्रवृतियाँ तो जरूर सिखाई जा सकती हैं। जैसे-प्रातः जल्दी उठना, माता-पिता एवं बड़ों को प्रणाम करना, मधुर वाणी में बोलना, प्रेम से रहना, विद्यालय समय पर जाना, शैतानी नहीं करना, दूसरों की वस्तु नहीं चुराना, सदा प्रसन्न रहना, गुरुओं का आदर करना, धूम्रपान नहीं करना, झूठ नहीं बोलना, चुगली नहीं करना, साफ-सुथरा रहना, स्वच्छता का ख्याल रखना, अच्छी तरह मन लगाकर पढ़ाई करना, आज्ञा पालन करना, कर्त्तव्य पालन करना, परिश्रम करना, मेहमान का सम्मान करना, अच्छे मित्रों की संगत में रहना, शुद्ध वस्तुएँ खाना, सादा जीवन बिताना, भद्दी पोशाक नहीं पहनना, अपना काम स्वयं करना आदि संस्कार सिखाकर अच्छे चरित्रवान इन्सान बनाना चाहिए। परिवार, समाज और राष्ट्र का सुख इसी में निहित है। इसी में मानव का उत्थान एवं उपकार निहित है और इसी में व्यक्तिगत जीवन का सुख है।

व्याख्याता (से.नि.)
पो. कपासन, चितौड़गढ़ (राज.)
मो. 9414732090

अनुशासन और चरित्र निर्माण

❑ शशिकांत द्विवेदी 'आमेटा'

अनुशासन ही राष्ट्र को महान बनाता है अर्थात् केवल विद्यालय के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए अनुशासन जरूरी है। किसी भी राष्ट्र का निर्माण वहाँ के विद्यालयों में होता है, जहाँ भावी नागरिकों में राष्ट्र प्रेम के संस्कार रोपित किए जाते हैं। इन्हीं संस्कारो से देश, समाज व व्यक्ति का विकास होगा। यही समय की माँग है व समाज में व्याप्त समस्त समस्याओं का हल भी यही है। जीवन निर्माण में अनुशासन का बहुत महत्व रहा है। व्यक्ति के विकास का आधार है- अनुशासन। प्रत्येक देश और समाज के सुखमय जीवन तथा उन्नति के लिए अनुशासन बहुत जरूरी है, इसमें दो राय नहीं। अनुशासनहीनता ही सदैव अशान्ति का कारण बनती है।

'अनुशासन' शब्द का अर्थ है-नियंत्रण। कुछ विशेष नियमों में बंध कर चलना, शासन के अनुकूल कार्य करना होता है और नियमों को तोड़ना अनुशासन भंग करना कहलाता है। यदि हम गौर से देखें, समझें तो सम्पूर्ण जीवन ही अनुशासन में बँधा हुआ है। अनुशासन का अर्थ होता है शासन का अनुसरण करना तथा शासन के अनुसार चलना। विद्यालय में शासन होता है या शिक्षा होती है। शासन तो सरकार का होता है, लेकिन विद्यालय में शासन अप्रत्यक्ष रूप में होता है, जबकि राज्य में शासन प्रत्यक्ष होता है। इसी कारण विद्यालय में अनुशासन स्थापित किया जा सकता है लेकिन विद्यालय प्रशासन को स्वयं अनुशासित होना पड़ता है। विद्यालय भी एक छोटा-मोटा परिवार है। परिवार में भी अनुशासन की आवश्यकता पड़ती है।

पण्डित जवाहर लाल नेहरु का कहना था कि-''बच्चे मुल्क की शानदार इमारत की ईंटें हैं। मजबूत मुल्क के लिए इन्हें अच्छी तरह पकाओ।'' आज का युवा विद्यार्थी देश के भविष्य की धरोहर है। स्वामी विवेकानन्द भारतीय आदर्शवादी चिन्तक थे। अतः वे बालक के आत्मानुशासन पर बल देते थे। वे चरित्र निर्माण को अनुशासन का महत्वपूर्ण अंग मानते थे। उन्होंने व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों प्रकार के अनुशासन पर बल दिया। स्वामी जी का कहना था कि 'पहले आज्ञा पालन करो, आज्ञा देना स्वयं आ जावेगा। पहले सेवक बनना सीखो, एक योग्य गुरु हो जाओगे।'

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया और समाज की प्रगति का दर्पण है। महात्मा गाँधी ने कहा था, ''शिक्षा का सबसे बड़ा मकसद यही है कि वह विद्यार्थी में स्वविवेक जाग्रत करे।'' शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की पहली आवश्यकता है। समय बदल गया है। मूल्य बदल गए हैं। शिक्षा के जरिए हम वर्तमान समाज को आगे बढ़ाना चाहते हैं, क्योंकि शिक्षा का काम निरन्तर आगे बढ़ाना है और समाज को निरन्तर विकसित होने में मदद देना है। पर क्या आज स्थिति शिक्षा के इस उद्देश्य के अनुकूल है? क्या हम शिक्षा और विद्यालयों की सामाजिक छवि से सन्तुष्ट हैं?

अनुशासन के बिना न तो परिवार चल सकता है, न संस्था और न ही राष्ट्र। वास्तव में अनुशासन ही संगठन की कुंजी है और प्रगति की सीढ़ी है। अनुशासित नागरिक समृद्ध राष्ट्र की धरोहर है। एकता और अनुशासन दोनों ही किसी राष्ट्र की समृद्धि के दृढ़ स्तंभ हैं।

डॉ. दौलत सिंह कोठारी ने कहा था कि चरित्र निर्माण करना ही शिक्षा की मूल भूमिका है। शायद शिक्षा का पहला काम यही है कि हम नैतिकता को जीवन शक्ति बनाएँ तथा इसे स्फटिक चेतना का रूप दें। चरित्र एक व्यापक शब्द है, जिसमें धर्म, सदाचार आदि समस्त गुणों का समावेश हो जाता है। वर्तमान में चरित्र निर्माण के लिए जिस गुण की सर्वाधिक आवश्यकता है वह है-अनुशासन। प्राचीन काल में अनुशासन को दूसरे शब्दों में संयम भी कहा जाता था। संयम का ही समानार्थी शब्द मर्यादा है। चरित्र निर्माण हेतु कठोर अनुशासन का पालन आवश्यक है। नियम की शृंखला में बंधे जीवन को ही अनुशासन बद्ध जीवन की संज्ञा दी जाती है। स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में चारित्रिक हीनता तथा संस्कार विहीनता राष्ट्र की मृत्यु के कारण होते हैं।

आज विद्यार्थियों के अनुशासन की विकट समस्या बन गयी है। अनुशासनहीनता के मूल में बाह्य तत्व ही अधिक कार्य करते हैं। स्वयं विद्यालय में ऐसा कोई दुर्गुण नहीं है, जिससे कि अनुशासनहीनता का बीजारोपण हो। ऐसा माना जा रहा है कि आजकल विद्यालयों में अनुशासन हीनता बढ़ रही है। छात्र और शिक्षक के बीच तारतम्य नहीं बैठ रहा है। छात्र आए दिन शिक्षकों की आज्ञा की अवहेलना करने लग गए हैं। यह सब विद्यालय के बिगड़े अनुशासन के कारण ही है।

विद्यार्थी विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। अगर शिक्षण सुरुचिपूर्ण हो तो अनुशासन की समस्या पैदा ही नहीं हो सकती। अभिप्राय यह है कि विद्यालय में अनुशासन की अपेक्षा सुरुचिपूर्ण शिक्षा व्यवस्था हो। अब समय आ गया है, जब अनुशासन को नये आदर्शों के आधार पर प्रजातंत्र का अनुगामी बनाया जाए। शिक्षा बाह्य अनुशासन से मुक्त होनी चाहिए। अनुशासन की जगह विवेक सिखाया जाना चाहिए। आज्ञाकारिता की जगह विचार करना सिखाया जाना चाहिए। इसी आत्मविवेक से अनुशासन का जन्म होना चाहिए। यही अनुशासन शुभ फलदायी हो सकेगा। भीतरी अनुशासन विचार एवं विवेक सीख कर ही आता है। आत्मानुशासन ही सर्वोच्च आनन्द है। भय और आदेश से लादा गया अनुशासन स्वच्छंदता का रास्ता खोलता है। अनुशासन में वह गुण है जो अन्य सब गुणों को अपने में समेट सकता है। आत्मानुशासन व्यक्ति को सदाचारी, परोपकारी, दयालु और देशप्रेमी बना सकता है।

शिक्षण न सजा है, न भय, न लालच, न स्पर्धा ही है। शिक्षण आनन्द की जीवन्त प्रक्रिया है और सच्चा शिक्षक बालकों में प्रश्नानुकूलता व जिज्ञासा पैदा करता है। अनुशासन के नाम पर बालकों की स्वस्फूर्ति और जिज्ञासा को दबाना गलत है, क्योंकि अनुशासन कोई बाहरी चीज नहीं होती है; अपितु वह शिक्षण की परिणति ही है। सच्चा शिक्षण आंतरिक अनुशासन पैदा करता है। गाँधी जी दमनात्मक अनुशासन के

विरोधी थे। उनके अनुसार अच्छा अनुशासन आत्मप्रेरित होता है। अतः अध्यापक छात्रों के समक्ष आदर्श आचरण प्रस्तुत करे तो छात्र अच्छे आचरण के प्रति स्वतः प्रेरित होंगे। अनुशासन बनाने में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। शिक्षक अपने विषय का ज्ञाता होना चाहिए। व्यक्तित्व भी अनुशासन का अहम गुण है। शिक्षक द्वारा बार-बार विद्यार्थियों को उनकी कमजोरियों का अहसास नहीं करना चाहिए। दुर्भाग्य है कि वर्तमान में विद्यालयों में भी सैनिक अनुशासन की अपेक्षा की जाती है। सैनिक अनुशासन मानवीय प्रकृति को निर्जीव व ज्ञान शून्य बना देता है। सैनिक अनुशासन में व्यक्तित्व का विकास सुप्त प्रायः हो जाता है।

प्रार्थना सभा पाठशालायी कार्यक्रम का अनिवार्य अंग है। छात्रों को सुबह की प्रार्थना से मानसिक शान्ति और शुद्धि प्राप्त होती है। इससे विद्यार्थियों में नैतिकबल और आत्मबल जागता है तथा वे उत्तम आचरण की ओर प्रवृत्त होते हैं। खेल एवं अनुशासन का वही सम्बन्ध है, जो आत्मा का शरीर से होता है। अगर खेलों को विद्यालय से हटा दें तो निश्चित रूप से विद्यालय अनुशासनहीन होकर बरबादी के कगार पर पहुँच जायेंगे। शिक्षा मनोविज्ञान भी इस बात पर जोर देता है कि शिक्षा में खेलों का समावेश अत्यंत आवश्यक है। खेल से जुड़ा होना ही व्यक्ति को सकारात्मक सोच देता है।

मेरी मान्यता है कि मानव जीवन में चरित्र निर्माण ही एक ऐसा पक्ष है जो मनुष्य को निम्न धरातल से सर्वोच्च शिखर पर ले जाने की क्षमता रखता है। शिक्षा का ध्येय बालक को श्रेष्ठ मानव बनाना होना चाहिए; और मानव बनना बहुत गौरव का काम है। ठीक ही कहा गया है, ''मानव का दानव बनना उसकी पराजय है। मानव का फरिश्ता बनना चमत्कार और मनुष्य का मानव बनना उसकी जीत है।''

मुझे उम्मीद है हमारे विद्यालय और गुरुजन इस दिशा में सोचेंगे और आगे बढ़ेंगे।

प्राध्यापक (से.नि.)
फोरेस्ट चौकी के पास,
लोहारिया बांसवाड़ा (राज.)-327605
मो: 9460116012

दूसरे तुम्हारे साथ क्या करते हैं, इसकी चिंता न करो। आत्मोन्नति में तत्पर रहो।

बच्चों को बनाइए अच्छाइयों के वारिस

❐ सांवलाराम नामा

बच्चे कोमल हैं, पवित्र हैं, एक कोरा कागज हैं, उन्हें जैसा वातावरण मिलता है वे वैसा ही आचरण करते हैं। कोई बच्चा अपने जीवन में असफल नहीं होना चाहता लेकिन ऐसी स्थिति आ भी जाए तो उसके मूल कारणों पर ध्यान दीजिए, बच्चे को ताना देकर उसके कोमल हृदय को कमजोर न बनाएँ।

सब बच्चों के सपने सुंदर होते हैं, उनका मनोबल बढ़ाइए, आपके शाबाशी के दो बोल बच्चों की प्रेरणा बन सकते हैं। आधुनिकता की चकाचौंध हर जगह दिख रही है। बच्चों के दिशाहीन होने में पैसे का भी बहुत बड़ा हाथ है। अर्थशास्त्र में एक बात आती है कि पैसा एक अच्छा मित्र हो सकता है, अच्छा सेवक हो सकता है लेकिन बुरा मालिक भी हो सकता है; आप अपने पैसे को अच्छा सेवक बनाइए। अपने बच्चों को आवश्यकता के अनुसार पैसा दीजिए, नहीं तो बच्चे दुरुपयोग करके दुर्व्यसनों की गिरफ्त में पड़ जाएँगे।

आप अपनी संपत्ति के प्रति सजग रहते हैं, पर आपकी असली जागीर तो आपके बच्चे हैं। अपने व्यस्त जीवन में से अपने बच्चों के लिए समय अवश्य ही निकालिए, बच्चों के अंदर अच्छे गुण रोपने हेतु भाषण की जरूरत नहीं है, उनके साथ बैठकर आचरण प्रस्तुत करने से ज्यादा प्रभाव पड़ता है। घर में माता-पिता का व्यक्तिगत व्यवहार ही बच्चों को दिशा प्रदान करता है। कुछ समय पहले मनोवैज्ञानिकों ने ऐतिहासिक पुरुषों पर खोज की तो यह ज्ञात हुआ कि इतिहास में सबसे ज्यादा हिंसक लोगों के माता-पिता भी बहुत क्रूर थे। ईदी अमीन युगांडा का राष्ट्रपति था। उसने पाँच लाख लोगों की सिर काटकर हत्या की। उसके फ्रिज से बच्चों के कटे हुए सिर निकलते थे। मनोवैज्ञानिकों ने लिखा कि ईदी अमीन के पिता बहुत क्रूर इंसान थे और शराब पीकर अपनी पत्नी को हंटर से इतना मारते थे कि लहूलुहान कर देते थे और छोटा बच्चा कोने में खड़ा होकर देखता था, मजबूर होकर दाँत पीसता रहता था, उसके मन-मस्तिष्क में वही जहर इतना भर गया कि जब वह बड़ा हुआ

तो उसने अपने पिता से तो बदला लिया ही, उसे दूसरों को भी सताने में मजा आने लगा।

आप अपने बच्चों से जासूसी का कार्य न कराएँ। प्रायः देखा जाता है कि माता-पिता अपने सुकोमल मन-मस्तिष्क बच्चों से कहते हैं कि जाओ सुनकर आओ कि तुम्हारे चाचा-चाची या पड़ोसी क्या कह रहे हैं? कई बार लोग बच्चों से झूठ बुलवाते हैं, अगर कोई मिलने आता है तो कहते हैं कि जाओ कहना पिताजी घर पर नहीं है। बच्चों को तो झूठ बोलना आता नहीं, जैसे ही दरवाजा खोलते हैं, आने वाले व्यक्ति से कहते हैं कि पिताजी ने कहा है कि वह घर पर नहीं है। ऐसा करने से बच्चों में झूठ बोलने की बुरी आदत पड़ जाती है।

जापानी मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि बच्चों के मस्तिष्क में जो न्यूरॉन्स होते हैं वे सात वर्ष की अवस्था तक पूरे विकसित होते हैं और जीवन भर काम आते हैं। अतः अपने बच्चों को कभी डराना नहीं चाहिए अन्यथा वे डरपोक हो जाएँगे। कभी उनके कोमल हृदय में हीन भावना न आ जाए, यह ध्यान रखना चाहिए। बच्चे भगवान का रूप होते हैं और जब इंसान अपने भगवान के समक्ष उपस्थित होता है तो पूर्ण तैयारी के साथ जाता है, अपने तन-मन को श्रद्धा से सजाकर अंतःकरण से प्रार्थना, उपासना, आराधना करता है और भोग लगाता है। अपने बच्चों के सामने जब भी बोलें तो समझिए आप अपने भगवान बाल-गोपाल के सामने बोल रहे हैं।

सेवानिवृत्त, व्याख्याता
सदर बाजार रोड़, निकट बड़ा चौराहा
भीनमाल-343029, जालोर

दृढ़ संकल्प से सफलता

❒ सुभाष चन्द्र कस्वां

सृष्टि के प्राणियों का जीवन सरल नहीं है। बाधाएँ हर मोड़ पर अपना करिश्मा दिखाने से कभी थकती नहीं। जीवन को पड़े-पड़े नीरस अवस्था में नहीं जिया जा सकता। एक तरफ रूकावटें हैं तो दूसरी तरफ उनसे निपटने का साहस भी ब्रह्मा ने मनुष्य में भरा है। रूकावटें महज इच्छा शक्ति से ही सहज में हार मानने वाली सिपहसलार नहीं हैं, उन्हें पराजित करने के लिए संकल्प का सहारा लिया जाता है। जब कोरा संकल्प कामयाब नहीं होता तब ब्रह्मास्त्र के रूप में दृढ संकल्प को हथियार बनाया जाता है। दृढ संकल्प का ही दूसरा नाम भीष्म प्रतिज्ञा है। जब व्यक्ति आखिर क्षण तक दृढ संकल्प पर बना रहता है तब बाधाओं को पता चल जाता है कि इस व्यक्ति की शक्ति हमसे कहीं अधिक है और वे उससे नाता तोड़ लेती हैं। दृढ़ संकल्प के बाद कोई विकल्प नहीं बचता। यदि व्यक्ति सकारात्मक विचारों से घिरा रहता है तब सकारात्मकता व्यक्ति में आवश्यकता पड़ने पर संकल्प शक्ति को जन्म दे उसे मजबूत भी बना डालती है तथा व्यक्ति की बाधा को प्रशस्त करने का जोखिम भी उठा लेती है। वजह यह है कि संकल्प से मस्तिष्क केन्द्रीय तंत्रिका-तंत्र के माध्यम से शरीर से जुड़ जाता है। मस्तिष्क और शरीर के सामंजस्य से ही सही समाधान सामने आता है। इसलिए दोनों के बीच सकारात्मकता का सेतु जरूरी है। अपने मन की बेड़ियों को पहचानना रूकावटों को दूर करने का अहम व पहला कदम है। इसके पश्चात् मन प्रश्न करेगा यह बेड़ियाँ(बाधाएँ) क्यों हैं और कैसे मिले इनसे मुक्ति? हमारी सारी बाधाएँ पिघल जाएँगी, यदि उनके सामने दुबकने के बजाय हम उनसे निडरतापूर्वक निपटने का मानस बनाएँ। सही मायने में देखा जाए तो निडरता ही संकल्प का पराक्रमी रूप है। एक छोटा बच्चा जब किसी वस्तु के लिए मचलता है तब हम जिद्दी कहकर डाँटते हैं। यह उसकी जिद नहीं संकल्प शक्ति है जो उसे बार-बार वस्तु की प्राप्ति के लिए प्रेरित करती है। संकल्प व निडरता का संगम ही ऐसा है कि उसके आगे तो बड़े-बड़ों को घुटने टेकने पड़ते हैं।

अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जंग में भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव का दृढ़ निश्चय ही था कि चाहे जो कुछ हो जाए अंग्रेजों को भारत से भगाना है। यह उनका दृढ़ संकल्प ही था। यदि दृढ़ संकल्प नहीं होता तो अंग्रेज उन्हें नज़र अंदाज कर देते तथा वे फाँसी से बच जाते। उनकी छोड़ी हुई मुहिम आखिर रंग लाई। उनकी निडरता की सीख से उन का खून खोलता रहा। अंग्रेजों को आखिर जाना ही पड़ा। मगध का शासक घनानंद विलासिता में इतना डूब गया कि उसे राजकार्यों की फुरसत ही नहीं रही। यह बात चाणक्य के हृदय में फाँस की तरह धँसी हुई थी। एक दिन जब राजसभा में समूचे आर्यावर्त की स्थिति का विवेचन करते हुए चाणक्य ने घनानंद को राजा के कर्तव्यों व आचरण की याद दिलवाई तब राजा तिलमिला उठे। राजा ने चाणक्य को अपने सैनिकों से धक्के मारकर बाहर निकालने का तुरंत ही आदेश दे दिया। इस धक्का-मुक्की में चाणक्य की शिखा (चोटी) की गाँठ खुल गई। चाणक्य ने उसी समय दृढ़ संकल्प ले लिया कि इस शिखा की गाँठ तभी बँधेगी जब मैं नंदवंश का समूल विनाश न कर दूँगा। एक लम्बे समय से स्थापित साम्राज्य को उखाड़ फेंकना कोई सरल कार्य नहीं था। राह की हर ऊँचाई व ढलान फिसलन व अवरोधों से भरी हुई थी कि थोड़ी सी ही चूक सब कुछ खाक में मिला सकती थी। कहते हैं 'जहाँ चाह वहाँ राह'। चाणक्य को घूमते-घूमते अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए चन्द्रगुप्त मिल ही गया। चाणक्य ने अपने कार्य को मूर्तरूप देने के लिए चन्द्रगुप्त में छिपी प्रतिभा व संभावनाओं को तराशा। चाणक्य की चाल व चन्द्रगुप्त की सेना ने नंदवश को हराकर चाणक्य के दृढ़ संकल्प की आख़िर लाज रख ही ली।

महाराणा प्रताप मुगलों से देश की आजादी के लिए लड़ते रहे। आखिर ऐसी स्थिति आ गई जिससे उन्हें राजसी ठाट-बाठ छोड़ने पड़े व जंगल में दर-दर भटकना पड़ा। राजस्थान के गाड़ियाँ लुहारों से अपने राजाओं की ऐसी स्थिति देखी नहीं गई। उन्होंने दृढ़ संकल्प लिया जब तक मेवाड़ मुगलों के शासन से पूर्ण रूप से मुक्त नहीं होगा तब तक हम भी घुम्मकड़ जीवन जियेंगे। यद्यपि गाड़ियाँ लुहारों के पास कोई सैन्य शक्ति नहीं थी लेकिन उनका दृढ़ संकल्प मेवाड़ के शासकों के खून में उबाल लाता रहा। गाड़िया लुहार वर्षों से एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकते रहे। अब जाकर वे किसी निश्चित भू-भाग पर आवास बनाने लगे हैं। महात्मा गाँधी ने जब अपने ही देश के लोगों के तन को वस्त्र रहित देखा तब उनकी आत्मा कराह उठी। उन्होंने दृढ़ संकल्प लिया कि जब तक मेरे देशवासियों के तन को ढकने के लिए पर्याप्त कपड़ा नहीं मिलेगा तब तक मैं भी आधे तन को ही ढके रखूँगा। महात्मा गाँधी मृत्यु तक शरीर पर एक लंगोटी (धोती) को ही धारण करते रहे। गरीब व जरूरतमंद लोगों को प्रेरित करने के लिए स्वयं चरखे से सूत कात एक नजीर पेश की, ताकि वे भी ऐसा कर सकें। ग्रामीण व गरीब तबके में हाथ करघा उद्योग को बढ़ावा दिया। जिससे गरीब लोग स्वयं अपना वस्त्र तैयार कर सकें। महात्मा गाँधी के दृढ़ संकल्प का नतीजा यह निकला कि ग्रामीण क्षेत्र के गरीब अपना वस्त्र अपने घर में ही तैयार कर स्वावलंबी बनने की दिशा में कदम बढ़ाने लगे। अब्राहम लिंकन के कहे हुए यह शब्द शायद इसी बात की पैरवी करते नजर आते हैं- ''सफलता पाने के लिए आपके दृढ़ निश्चय से ज्यादा महत्त्वपूर्ण कुछ भी नहीं है।''

चाहे देश का पहला स्पेस शटल आरएलवी-टीडी की कामयाबी हो या रियो ओलम्पिक -2016 पदक विजेता पी.वी. सिंधु व 2015 नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी व मलाला यूसुफजई। उनका रास्ता पग-पग पर चुनौतियों से व कठिनाइयों से भरा पड़ा था। हमारे इसरो वैज्ञानिकों की कठिन मेहनत व कार्य के प्रति पैदा हुए दृढ़ संकल्प का ही ऐसा जादू था, जिसमें उन्होंने अमेरिका व रूसी तकनीक के समकक्ष पहुँच अंतरिक्ष मिशन के एलीट क्लब में हमें शामिल करवा दिया। पी.वी. सिंधु ने बैडमिंटन खेल में भारत के भरोसे को अपने दृढ़ संकल्प से डिगने नहीं दिया। मैदान में उतरने से पहले उसने दृढ़ संकल्प ले लिया था कि मुझे इस खेल में भारत को स्थान दिलवाना है। किसी कार्य में सफलता तभी मिलती है, जब

पहले से कोई धारणा मन में हो। निर्णायक मैच की आखिर शटल कॉक तक अपना वर्चस्व बनाने के लिए अटल रही। स्वर्ण पदक तो नहीं मिला पर रजत पदक दिलाकर भारत का गौरव बढ़ा दिया। 'बचपन बचाओ आन्दोलन' के प्रणेता कैलाश सत्यार्थी व उसके कार्यकर्ताओं को जान का खतरा भी बन आता, जिसमें चार-पाँच कार्यकर्ताओं की जाने भी गईं, पर दृढ़ संकल्प खतरों से खेलने की शक्ति देता गया और वे आगे बढ़ते गए। जिन गरीब व बेसहारा बच्चों के हाथों में किताब की जगह कुदाल आ गई उन्हें किताब दिलवाई। मलाला यूसुफजई ने तालिबानी आतंकवादियों के स्त्री शिक्षा विरोधी मंसूबे पर उस समय पानी फेर दिया जब दृढ़ संकल्प के साथ उनकी बन्दूक की नोंक की परवाह किए बिना विद्यालय जाती रही।

इतिहास देखें, चाहे पौराणिक कथाओं, गाथाओं को पढ़ें। पाँच हजार या दस हजार वर्ष के सारे सांस्कृतिक विकास का अवलोकन करें; उन सबमें जितने भी बड़े कार्य व महान व्यक्ति हुए हैं उन सबने रुकावटों का डटकर मुकाबला किया है। उनके विवेकपूर्ण संकल्प ने उन्हें कभी विचलित नहीं होने दिया तथा मुसीबतों को हराते आगे बढ़ते चले गए। यह एक निर्विवाद सिद्धान्त है 'जिन खोजा तिन पाइया' जो खोज करेगा वह पाएगा। दृढ़ संकल्प से व्यक्ति यदि यह ठान ले कि ''जब तक यह कार्य पूर्ण न हो जाए तब तक मुझे थकना नहीं है'' ऐसी सोच में मानसिक उत्साह कभी मंद नहीं होता; क्योंकि मानसिक उत्साह करणीय कार्य के प्रति अत्याधिक मनोभाव का योग लिए हुए होता है। एक जीवंत उदाहरण है- एक छात्रा जो चिकित्सक बनना चाहती थी का पहली दफा पी.एम.टी. (प्री. मेडिकल टेस्ट) में चयन नहीं हुआ। दूसरी बार उसने संकल्प लिया कि इस बार मुझे इस परीक्षा में चयनित होना है; परन्तु फिर भी परिणाम विपरीत निकला। छात्रा हताश नहीं हुई। तीसरी बार उसने दृढ़ संकल्प लिया कि ''जब तक मेरा इस परीक्षा में चयन नहीं होता तब तक मैं चारपाई पर नहीं फर्श पर ही सोऊँगी।'' उसने ऐसा ही किया। फर्श उसके लिए दृढ़ संकल्प का प्रतीक बन गया और तीसरी बार उसने अव्वल अंकों से परीक्षा को उत्तीर्ण कर डाला। यही दृढ़ संकल्प की असली ताकत है। यह सब तभी हो सकता है, जब व्यक्ति अपनी क्षमता, उपयोगिता और सीमा का बोध करके लक्ष्य निर्धारण करे। कभी-कभी अपनी क्षमता, योग्यता व सीमा को समझे बिना भावावेश में लिया गया दृढ़ संकल्प बहुत बड़ा दुष्परिणाम भी ला देता है। जन कल्याणकारी दृढ़ संकल्प कभी डिगता नहीं। वह वांछित पा ही लेता हैं। इसी वजह से महात्मा गाँधी के आमरण अनशन से अंग्रेजों के पाँव और हृदय हिल गए थे।

19वीं शताब्दी के प्रसिद्ध अंग्रेज कवि जॉन कीट्स अपनी युवावस्था में अत्यधिक कष्टों के दौर से गुजरे। समीक्षक उनकी कविताओं का मजाक उड़ाते रहे। उसी दौरान उन्हें क्षय रोग हो गया, जिसका उस समय समुचित इलाज नहीं था। उनकी महिला मित्र भी उनका साथ छोड़ गई। कीट्स जीवन संग्राम में डटे रहे। दृढ़ निश्चय के साथ अपनी कविताएँ लिखते रहे। एक मित्र को उन्होंने अपने दिल की बात कही- ''मैं इग्लैंड के महानतम कवियों में से एक बनूँगा, चाहे अपनी मृत्यु के बाद ही सही।'' उनकी यह बात वास्तव में सच भी निकली। 1921 में केवल 25 वर्ष की आयु में यह युवा कवि दुनिया छोड़ गया। अपनी कृतियों के माध्यम से कीट्स आज अमर हैं, जिनका कभी उपहास किया गया था। बुरे वक्त में कीट्स के दृढ़ संकल्प ने उनके हौसले को गिरने नहीं दिया। जो दृढ़ संकल्प व विश्वास से भरा होगा वह नकारात्मक शक्तियों को पराजित करने में हमेशा समर्थ बना रहेगा। ग्रीम क्लेग्ग भी दृढ़ संकल्प की शक्ति में विश्वास करते हुए बड़े उत्साह के साथ यह कहते नहीं थकते- ''कुछ व्यक्ति सफल होते हैं क्योंकि उनका भाग्य उन्हें सफलता प्रदान करता है, लेकिन अधिकतर वही सफल होते हैं, जिनमें दृढ़ संकल्प होता है।'' इससे जुड़ी एक बात यह भी है- ''Determination Can Over Come Every Obstacle.'' अर्थात दृढ़ संकल्प से हर रूकावट दूर हो सकती है। दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति के सामने पर्वत हिलने लगते हैं, सागर में कंपकपी छूटने लगती है तथा धरती थर्राने की स्थिति में पहुँच जाती है।

प्राध्यापक
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय,
नूँआ (झुंझुनूँ) 333041
मो: 9460841575

प्रेरक प्रसंग

आत्म-सम्मान

सिक्खों के 10वें गुरु गोविन्द सिंह योद्धा होने के साथ-साथ महान् कवि भी थे, उनके दरबार में 52 उच्च कोटि के कवि थे। उनके दरबारी कवि टहकण ने महाभारत के अश्वमेध पर्व का अनुवाद 'मोरध्वज' चंद्रहास' की कथा के नाम से किया था।

एक दिन टहकण ने अपने इसी काव्य ग्रंथ के कुछ दोहे और चौपाइयाँ गुरु गोविन्द सिंह को सुनाई। चौपाइयाँ, वीरता का संदेश देने वाली थी, सुनकर गुरु भी खिल उठे और अपनी पगड़ी के आगे लगी कलंगी भेंट स्वरूप टहकण की पगड़ी में लगा दी।

जब गुरु गोविन्द सिंह औरंगजेब की सेना का मुकाबला करते हुए जंगलों में भटकने लगे और उनके अधिकांश सैनिक मारे जा चुके थे, फिर भी उन्होंने औरंगजेब के आगे झुकना स्वीकार न किया था।

उन्हीं दिनों टहकण कवि की ख्याति सुनकर औरंगजेब ने उसे दरबार में बुलाया, कायदे के अनुसार उसने शहंशाह की शान में सिर झुकाने से पहले पगड़ी उतारकर छाती पर रख ली और सिर झुका दिया।

औरंगजेब को कवि की इस हरकत पर बड़ा आश्चर्य हुआ, उसने टहकण से उसका कारण पूछा तो वह बड़ी नम्रता से बोला, ''जहाँपनाह, इस पगड़ी पर लगी कलंगी मेरी नहीं है, वीरों के वीर गुरु गोविन्द सिंह की है, मेरा सिर व पगड़ी आपके सामने झुक सकती है पर यह कलंगी नहीं झुक सकती।''

संकलन-आशीष राजोरिया
बी-104, आनन्दपुरी, एम.डी. रोड,
जयपुर-302004
मो. 9929320531

स्वास्थ्य और शिक्षा

❐ आसू राम स्वामी

विश्व का कोई भी देश सुदृढ़ मजबूत और आत्म निर्भर तभी बन सकता है, जब उसकी सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी मूलभूत व्यवस्था स्वदेशी तकनीक पर आधारित हो। आज चीन विश्व में ड्रैगन इसलिए कहलाता है कि उसकी बहुत सी व्यवस्थाएँ स्वदेशी हैं जबकि जापान ने सारी व्यवस्थाएँ योरोप की अपना ली, जिससे उसको अनेक पहलुओं पर संकट का सामना करना पड़ रहा है।

भारत में आयुर्वेद के विषय में यही कहा जा सकता है कि आयुर्वेद पूर्णतः भारतीय पद्धति है जिसका उपयोग कर हम प्रतिवर्ष करोड़ों अरबों रुपये की महंगी विदेशी दवाइयों और उसके इलाज से छुटकारा पा सकते हैं। आयुर्वेद और योग एक दूसरे के पूरक है। अभी इसमें और निवेश और कार्य करने की जरूरत है; लेकिन समय के साथ हम आयुर्वेद में काफी पीछे रह गए हैं।

आयुर्वेद में सैकड़ो वर्षों पूर्व दवा और आहार के विषय में जो लिखा गया है, वह आज भी वैसा ही सटीक और उपयोगी है, जबकि पाश्चात्य मेडिकल साइंस में नियम रोज बदलते रहते हैं। पहले मेडिकल साइंस कहता था जले पर पानी न डालें लेकिन नवीन खोजों के आधार पर नियम पलट दिया है कि जल जाने पर पानी डालें।

अंग्रेजी दवा प्रणाली बहुत महंगी है और सारी दवाइयाँ केमिकल पर आधारित बहुत तेज (उग्र) प्रकृति की हैं जो या तो तेजी से कार्य करती हैं या नुकसान। साथ में प्रत्येक दवा का साइड इफेक्ट है, जबकि भारत की आयुर्वेद की दवाएँ सभी प्राकृतिक जड़ी-बुटीयाँ भस्में हैं जो खनिजों को प्राकृतिक वनस्पतियों का रस पिलाकर बनाई जाती हैं जिसमें नुकसान की गुंजाइश न के बराबर है और सभी दवाइयाँ ताकतवर होती हैं। दुनिया में ताकतवर दवाइयाँ सिर्फ आयुर्वेद की ही है, ऐसा योरोपियनों का मानना है।

आयुर्वेद के द्वारा हम मामूली से पैसे की दवा से भी अनेकों बीमारियों का सस्ता इलाज कर सकते हैं। आयुर्वेद में निदान के बारे में बात करें तो इसमें माना गया है कि जब तक शरीर में वात, पित्त और कफ साम्य अवस्था में रहते हैं, शरीर स्वस्थ रहता है। जब इनमें से एक भी अधिक या कम हो जाता है तो व्यक्ति बीमार हो जाता है।

1.वात– वायु सारे शरीर में विचरण करती है अर्थात शरीर की सभी धातुओं (रक्त, माँस, मज्जा) को चलायमान करती है। वात का प्रकोप जब बढ़ जाता है तो साधारण भाषा में इसको बादी कहा जाता है। आयुर्वेद में साइटिका को रिंगण वाय कहते हैं। यह वायु की प्रकृति से होने वाली बीमारी है। कमरदर्द, शरीर के किसी हिस्से में होने वाला दर्द या शरीर के जोड़ों का दर्द इत्यादि वायु जनित रोग होते हैं। उदाहरण के लिए घुटने के दर्द में डॉक्टर कहते हैं कि आपके घुटनों के बीच सीट घिस गई है इससे दर्द होता है जबकि आयुर्वेद के अनुसार जब दही जैसी अवरोधक चीज खाई जाती हैं तो वह नाड़ियों में आवागमन को अवरोधित करता है, जिससे खून रुक जाता है और जो रिपेयर खून के आवागमन (परिसंचरना) से होनी चाहिए वह नहीं हो पाती। फलतः घुटनों में दर्द होने लगता है लेकिन यह बात भी ध्यान रखनी चाहिए कि आयुर्वेद में सुबह और दोपहर तक ही दही सेवन करना चाहिए शाम को दही सेवन वर्जित है जिसका परिणाम बहुत लम्बे समय बाद हमें देखने को मिलता है और समय बीत जाने पर घुटनों की रिपेयर जैसा कार्य दवाइयों से कठिन हो जाता है।

वात का प्रकोप ग्रीष्मऋतु के अन्त में होता है इसलिए जब बरसात की ऋतु शुरू हो रही हो हमें वायु बढ़ाने वाली चीजों का सेवन बन्द कर देना चाहिए, जिनमें सभी गरिष्ठ व तला हुआ भोजन सम्मिलित है। वर्षाऋतु के शुरू में चीनी का सेवन भी नहीं करना चाहिए चीनी मिलाने से भोजन में वात कारक गुण बढ़ जाता है। सभी दालें, तली हुई चीजें व आलू, अरबी, बैंगन, कटहल जैसी सब्जियाँ वात कारक होती हैं इनसे बचना चाहिए।

2. पित्त– हमारे शरीर में रक्त एक मुख्य वस्तु है, जिसमें पित्त प्रमुख घटक है। इसको अंग्रेजी में कॉलेस्ट्रोल कहा जाता है। इसके अलावा कई प्रकार के कॉलेस्ट्रोल शरीर में होते है जो अच्छे और नुकसानदायक माने जाते हैं। इसी प्रकार से पित्त हमारे खून में पाया जाता है लेकिन उम्र के साथ रक्त में इसकी मात्रा बढ़ती जाती है जो अच्छा नहीं माना जाता है। आयुर्वेद के अनुसार वर्षा ऋतु में शरीर में पित्त का संचय होता है और शरद ऋतु में वह प्राकृतिक होता है जिससे अक्टूबर माह तक लोगों को अनेक प्रकार के बुखार व अन्य प्रकार के अवसाद घेर लेते हैं।

शरीर के ताप का बढ़ना और बुखार आना शरीर का स्वाभाविक क्रम है, जिससे वह अपने आप बढ़े हुए पित्त को बाहर निकालता है; लेकिन अंग्रेजी चिकित्सा में उसे दवा देकर रोक दिया जाता है, जिससे उसके अनेक दुष्प्रभाव शरीर में देखने को मिलते है। आयुर्वेद में इस प्रकार मौसमी बुखार के लिए बुखार के प्रकार के अनुसार दवा दी जाती है और अंग्रेजी दवा (Antibiotic) लेने के बाद पाचन बिगड़ जाता है जी मचलाना व हाथ-पैर टूटने जैसी समस्याएँ बुखार उतरने के बाद भी रह जाती हैं।

आयुर्वेद में इन सभी ज्वरों (एक दो को छोड़कर जैसे चिकनगुनिया) से पूर्णतया निजात पाने के लिए नींबू का प्रयोग अति उत्तम माना गया है। बुखार में दिन में 2, 3 बार नींबू की शिकंजी या नींबू पानी + काली मिर्च +काला नमक+मिश्री मिलाकर देना चाहिए (चीनी नहीं मिलाएँ क्योंकि चीनी दस्तावर है जबकि मिश्री दस्त बंद करती है)।

नींबू का रस + मिश्री + काली मिर्च + नमक मिलाकर चटनी बनाई जा सकती है। दिन में थोड़ा खाएँ इससे मुँह का स्वाद व जी मिचलाना भूख लगना आदि ठीक हो जाएगा।

3. कफ– शरद ऋतु में कफ का संचय होता है। सर्दी में जो भारी वस्तुएँ खाई जाती हैं वे सब कफ वर्द्धक होती हैं और बसन्त के आते-आते कफ प्राकृतिक होता है। उस ऋतु में प्रकृति में पकी हुई अदरक जैसी कन्द बहुतायत से उपलब्ध होती है। इसलिए इस ऋतु में तुलसी

अदरक और काली मिर्च का उपयोग कफ के शमन के लिए किया जाना चाहिए।

हमारे शरीर की जैसी प्रकृति है उसी के अनुरूप खान-पान दिनचर्या का ध्यान रखना चाहिए अर्थात पित्त प्रकृति वालों को उष्ण चीजें नहीं खानी चाहिए। गर्म मसाला, अदरक, आम इत्यादि का सेवन कम या नियंत्रित मात्रा में करना चाहिए।

इसी प्रकार कफ प्रकृति वाले को मीठा, ठंडे व खट्टे फलों का सेवन नहीं करना चाहिए।

कफ प्रकृति वालों को भारी व बादी कारक चीजों का इस्तेमाल सोच-समझकर करना चाहिए। इलाज की अपेक्षा बचाव अच्छा है; यह आयुर्वेद का नियम है। अंग्रेजी में Prevention is better than curve है।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा. विद्यालय सिंजगुरू (नोखा)
मो: 9252175974

हँसते रहो, मुस्कुराते रहो

उठो! जागो! रुको मत!!! जब तक की लक्ष्य न प्राप्त न हो जाए।

कोई दूसरा हमारे प्रति बुराई करे या निंदा करे, उद्वेगजनक बात कहे तो उसको सहन करने और उसे उत्तर न देने से वैर आगे नहीं बढ़ता। अपने ही मन में कह लेना चाहिए कि इसका सबसे अच्छा उत्तर है मौन। जो अपने कर्त्तव्य कार्य में जुटा रहता है और दूसरों के अवगुणों की खोज में नहीं रहता उसे आंतरिक प्रसन्नता रहती है।

जीवन में उतार-चढ़ाव आते ही रहते हैं। हँसते रहो, मुस्कुराते रहो।

ऐसा मुख किस काम का जो हँसे नहीं, मुस्कुराए नहीं।

जो व्यक्ति अपनी मानसिक शक्ति स्थिर रखना चाहते हैं। उनको दूसरों की आलोचनाओं से चिढ़ना नहीं चाहिए।

विद्यालय प्रवेश : सही उम्र

❐ डॉ. राजेन्द्र श्रीमाली

घर की माताएँ अपनी सहूलियत, अपेक्षाओं और बढ़ती प्रतिस्पर्धा को देखते हुए दो साल के बच्चों को नर्सरी और प्ले स्कूल में डाल देती हैं। यह धारणा मिथ्या है कि समय से पूर्व बच्चों को स्कूलों में डालकर अच्छी प्रतिभा का विकास किया जा सकता है। कम वय में स्कूल भेजने पर कुछ ही दिनों में बच्चे के स्वभाव में परिवर्तन नजर आने लगता है। वह या तो बिलकुल चुप रहने लगता है या फिर गुस्से का शिकार होने लगता है।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के एक अध्ययन के अनुसार जिन बच्चों के साथ बचपन से ही बुरा व्यवहार अर्थात् डाँट-डपट, रोक-टोक, तनाव से व्यवहार करना या समय से पूर्व स्कूल भेजना आदि होता है उनकी मानसिक चेतना प्रतिकूल हो जाती है। बचपन में माँ से मिलने वाले वात्सल्य से बच्चा जितना दूर होने लगता है, उसकी अनुमस्तिष्क की हलचलें उतनी ही बढ़ जाती हैं। अक्सर देखा गया है कि नर्सरी स्कूल जाने वाले बच्चों में, घर में रहने वाले बच्चों की अपेक्षा तनाव पैदा करने वाला कॉर्टिसोल हार्मोन दो गुणा ज्यादा पाया जाता है।

समय से पहले स्कूल भेजना बच्चे की सेहत और बचपन से खिलवाड़ के सिवाय कुछ नहीं है। इसके कारण बच्चे का स्वभाव कली की तरह बंद रहकर दिशा परिवर्तन करने लगता है। बच्चा अकेलेपन का शिकार होने लगता है। उसके हाव-भाव और बौद्धिक शक्ति का विकास रुक जाता है। चूँकि खेल-कूद की उम्र में उसे स्कूल भेजा जाता है, इससे उसके शारीरिक विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

बाल मनोचिकित्सकों का मानना है कि दिनचर्या में बदलाव आने से बच्चों में तनाव आ जाता है। यह तनाव बचपन में स्रावित होने वाले हार्मोन की प्रतिरोधी शक्ति के रूप में सामने आता है; जो भविष्य में उनके लिए जोखिम भरा हो सकता है। बच्चा अजनबी लोगों के बीच संकोची और निर्लज्ज महसूस करने लगता है। अमेरिका की एक संस्था 'कंट्री फोर चाइल्ड' के अनुसार पाँच साल तक बच्चे को माता-पिता के

संपर्क में रखने से मानसिक अभियोग्यता में 50 से 60 प्रतिशत की वृद्धि हो जाती है। इस संस्था ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में करीब तीन लाख बच्चों पर अध्ययन किया तो पाया कि शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को 70 प्रतिशत तक कम मानसिक दबाव झेलना पड़ता है।

छोटे बच्चों को स्कूल में भेजना अब माता-पिता की मानसिक रुचि बन चुकी है। स्कूल में आने के बाद स्कूल गृहकार्य और उसके दिमाग पर शिक्षण थोपना अब समय की पहचान हो गई है। इस कार्य के लिए पूरे समाज में होड़ लग गई है। माता-पिता की भावना बदल चुकी है। घर में भी बच्चे को खेलने और बचपन की शरारतों पर बंदिशें लगाई जाने लगी हैं। नर्सरी स्कूल में डाँट से अधिक माता-पिता की डाँट खानी पड़ती है। इस बचपन को लौटाने के लिए न तो सरकारी स्तर पर प्रयास हुए हैं और न ही कोई कड़े नियम बने हैं। बच्चे के इस अधिकार को छीनने के लिए माता-पिता सबसे अधिक उत्तरदायी है।

जन्म के बाद पाँच साल तक बच्चे की नाजुक अवस्था रहती है। इस अवस्था में घर में ही जीवन के पहलुओं पर शिक्षा देना जरूरी है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि बच्चों को पाँच साल से पूर्व भेजना उसकी स्मरण शक्ति को कम कर देता है। ब्राजील में बच्चों पर सर्वे पर छपी एक पुस्तक के अनुसार पाँच साल का होने पर ही बच्चों को प्री-स्कूल भेजना चाहिए। बड़ी स्कूल में जाने से पूर्व प्री-स्कूल रिहर्सल होती है।

करणी माता मन्दिर के पीछे,
जस्सूसर गेट के बाहर, बीकानेर (राज.)
मो. 9414742973

अक्षय पेटिका : समुदाय का विद्यालय के प्रति समर्पण

❒ विष्णु स्वामी

प्रदेश के विद्यालयों में 'अक्षयपेटिका' का नवाचार निश्चय ही वंदनीय है। छोटे से बड़े विद्यालयों में थोड़ी-बहुत धनराशि विशेष अवसरों पर जनसमुदाय, अभिभावकों, अध्यापकों, जनप्रतिनिधियों या भामाशाहों से नगद के रूप में प्राप्त होती रहती है और उसका निरन्तर सदुपयोग भी छात्रहित में होता रहा है। इसे ही 'क्राउड फंडिंग' का नाम दिया गया है जिसे एक तालाबन्द पेटिका में अर्पित किए जाने का प्रावधान हाल में ही शिक्षा विभाग ने किया है।

समुदाय से प्राप्त 'क्राउड फंडिंग' को संस्थागत स्वरूप प्रदान करने के लिए ही 'अक्षय पेटिका' जैसा नवाचार सभी के समक्ष आया। नि:सन्देह दान देना सभी धर्मों का एक ध्येय है। भारतीय संस्कृति की तो यह परम्परा रही है और आमजन ने इस परम्परा को जीया भी है।

शिक्षा जैसे पवित्र कर्मरूपी यज्ञ में आहुति प्रदान करना हमारे देश में पुरातन समय से ही चला आ रहा है जहाँ ऋषि-मुनियों के आश्रम में विद्यार्थियों की समस्त व्यवस्थाओं को स्थानीय लोग ही संभाला करते थे। हमारे यहाँ यह व्यवस्था किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है या यों कहें कि सामाजिक मांगलिक कार्यों में इस सहयोग को मंदिर-मस्जिद, गौशाला के साथ स्कूल के निमित्त राशि भी ली जाती है। मांगलिक कार्यों में आज बालक का जन्मदिन मनाया जाना आम हो गया है। विद्यार्थी के माता-पिता को इस व्यय का एक अल्पअंश

'अक्षय पेटिका' में समर्पित करने हेतु प्रेरित किया जा सकता है। जहाँ शहरों-कस्बों में माता-पिता की विवाह वर्षगाँठ मनाना भी आम बात है वहीं घर में किसी बालक की सफलता का जश्न भी खर्चीला होने लगा है। इन्हीं अवसरों के व्यय का थोड़ा भाग ही 'अक्षयपेटिका' की शोभा बढ़ा सकता है, पर यह उत्साहित किए जाने वाले सत्कर्म का जिम्मा तो शिक्षक का ही है न। सामान्यत: आज बालक को कुछ न कुछ जेबखर्ची माँ-बाप के द्वारा दी जाती है वह उसका अपव्यय नहीं करें तथा न ही बेजा खाद्य में व्यय करें अपितु उसे समझा कर ऊर्जा प्रदाता खाद्य में व्यय हो तथा इसकी बचत भी 'अक्षय पेटिका' में जाए। विद्यालय में मनाए जाने वाले उत्सवों में अधिकाधिक लोगों को आमन्त्रित करें। पंचायत राज संस्थाओं के जनप्रतिनिधियों को मान देकर बुलाएँ, उनका स्वागत करें। किसी अवसर पर गाँव व अपनी पहचान के किसी भामाशाह व जनप्रतिनिधियों को यथा-समय विद्यालय में सम्मान से याद करें। एस.डी.एम.सी. बैठकों में 'अक्षय पेटिका' को अवश्य रखें। शिक्षक-अभिभावक बैठक के अवसर पर भी यह रखी रहनी चाहिए। इसी के साथ प्रतिदिन विद्यालय खुलने के समय से लेकर बंद होने तक यह किसी जिम्मेदार व्यक्ति की देखरेख में रखी रहनी चाहिए।

सरस्वती मंदिर या प्रधानाध्यापक कक्ष के बाहर ही इस पेटिका को रखा जाना उचित होगा। माह में एक बार इस पेटिका को सहमति से एस.डी.एम.सी./एस.एम.सी. के सदस्यों के समक्ष खोलकर राशि को विकास समिति के खाते में जमा करना चाहिए तथा इसे पोर्टल पर भी दर्ज करना चाहिए। यह राशि विद्यालय की ही है जो सभी की सहमति से अत्यावश्यक कार्यों में व्यय की जानी चाहिए। आप शिक्षा के इस क्राउड फंडिंग के संस्थागत स्वरूप की देखरेख उचित तरीके से करते रहेंगे तो प्रदेश की शिक्षा उड़ान भरने लगेगी और बालकों को अनेकानेक सुविधाएँ स्वत: ही प्राप्त होंगी। आओ आह्वान करें इस महायज्ञ में प्रत्येक व्यक्ति अपनी आहुति अर्पित करे और प्रदेश की शिक्षा को भारत में प्रथम स्थान दिलाएँ। यह सभी के परिश्रम से ही संभव है। तभी तो चरितार्थ होगा शिक्षा के लिए दान, माँ सरस्वती का सम्मान।

उप निदेशक (कनिष्ठ)
प्रारम्भिक शिक्षा , जयपुर

ध्यान या सेवा?

एक दिन संत ज्ञानेश्वर महाराज प्रातः काल नदी तट पर टहलने निकले। उन्होंने देखा कि एक लड़का नदी में डूब रहा है। निकट ही, एक संन्यासी आँखे मूँदे बैठा था। ज्ञानेश्वर महाराज तुरन्त नदी में कूदे, डूबते हुए लड़के को बाहर निकाला और फिर संन्यासी को पुकारा। संन्यासी ने आँखे खोली तो ज्ञानेश्वर जी बोले-''क्या आपके ध्यान लगता है?'' संन्यासी ने उत्तर दिया-''ध्यान तो नहीं लगता, मन इधर-उधर भागता है।'' ज्ञानेश्वर जी ने फिर पूछा ''लड़का डूब रहा था, क्या आपको दिखायी नहीं दिया?'' उत्तर मिला-देखा तो था, लेकिन मैं ध्यान कर रहा था। ज्ञानेश्वर जी ने समझाया-''आप ध्यान में कैसे सफल हो सकते हैं? प्रभु ने आपको किसी की सेवा करने का सुअवसर प्रदान किया था। यही आपका कर्तव्य भी था। यदि आप पालन करते, तो ध्यान में भी मन लगता। प्रभु की सृष्टि, प्रभु का बगीचा बिगड़ रहा है। बगीचे का आनन्द लेना है, तो बगीचे को संवारना सीखें।

यदि आपका पड़ौसी भूखा सो रहा है और आप पूजा-पाठ करने में मस्त हैं, तो मत सोचिये कि आपके द्वारा प्रभु का कार्य हो रहा है, क्योंकि भूखा व्यक्ति उसी की छवि है जिसे पूजा-पाठ करके आप प्रसन्न करना या रिझाना चाहते है। क्या वह सर्वव्यापक नहीं है?''

वन्देमातरम् के रचयिता बंकिमचन्द्र चटर्जी

❐ विजयसिंह माली

वन्देमातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्
शस्य श्यामलाम्। मातरम्। वन्देमातरम्
शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम्। मातरम्। वन्देमातरम्...

राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' भारतीय स्वातंत्र्य समर का बीज मंत्र है, जिसका उद्घोष करते हुए असंख्य देशभक्त क्रान्तिवीर, स्वातंत्र्य सैनिक फाँसी के तख्त पर हँसते-हँसते चढ़ गए। इस देश के राष्ट्रजीवन में 'वन्देमातरम्' को श्रीमद्भगवद्गीता जैसा असाधारण महत्त्व व स्थान प्राप्त हुआ है। 'वन्देमारतरम्' का उद्घोष देशभक्ति की गर्जना समझी जाती है। राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' के रचयिता थे बंकिमचन्द्र चटर्जी।

बंकिमचन्द्र चटर्जी का जन्म बंगाल के चौबीस परगना जिले के कांतलपाड़ा गाँव में 27 जून, 1838 को विद्वान ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता यादव चन्द्र मिदनापुर के डिप्टी कलेक्टर थे। माता बड़ी स्नेहमयी साध्वी स्त्री थी। बचपन से ही रामायण-महाभारत की कहानियों ने इनके चरित्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनकी शिक्षा मिदनापुर में ही आरम्भ हुई। ये बड़े मेधावी छात्र थे। इनकी बुद्धिमता से लोग बड़े प्रभावित होते थे। शालान्त परीक्षा उत्तीर्ण कर इन्होंने हुगली के मोहसिन कॉलेज में प्रवेश लिया। कॉलेज की प्रत्येक परीक्षा में वे प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। खेलकूद की अपेक्षा उन्हें पुस्तकों से अधिक लगाव था। संस्कृत में इनकी काफी रुचि थी। सन् 1856 में उन्होंने कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी कॉलेज में प्रवेश किया। बी.ए. उत्तीर्ण कर ये डिप्टी कलेक्टर बन गए। इस बीच कानून की भी परीक्षा पास कर ली। तत्पश्चात् इन्हें डिप्टी मजिस्ट्रेट बनाया गया। बंकिमचन्द्र बड़े सजग व स्वाभिमानी अधिकारी थे। इसके कारण नौकरी के दौरान ये कभी भी एक ही जगह टिक न सके, परिश्रम के बावजूद ऊँचे ओहदे तक नहीं पहुँच पाए। 32 वर्ष तक सरकारी नौकरी करके उन्होंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली।

अपनी पत्नी राजलक्ष्मी देवी से उन्हें 3 पुत्रियाँ हुई। जैसोर में इनका परिचय नामी बंगला नाटककार दीनबन्धु मिश्र से हुआ। वे दोनों घनिष्ठ मित्र बन गए। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'आनंदमठ' उन्होंने अपने दीनबंधु मिश्र को ही समर्पित की है। बंकिमचन्द्र ने पहले कुछ कविताएँ लिखीं, फिर अंग्रेजी में एक उपन्यास लिखा। इसके बाद अपनी मातृभाषा बंगाली में लिखना प्रारंभ किया। उन्होंने बंग दर्शन नामक मासिक पत्रिका चलाई थी। आनंदमठ उपन्यास उसी में प्रकाशित हुआ। बाद में 1882 में वह पुस्तक के रूप में छपा। इस उपन्यास ने बंकिम चन्द्र को कीर्ति के शिखर पर पहुँचा दिया। बंकिम चन्द्र की लेखन शैली से बंगला भाषा को नया गौरव मिला। बंकिम के उपन्यास पाठकों के लिए एक नई अनुभूति थी। बंगाल की जनता तो उनके पीछे दीवानी थी। उन्होंने कुल 15 उपन्यास लिखे। जिसमें आनंदमठ, देवी चौधरानी तथा सीताराम में उस समय की परिस्थिति का चित्र है। दुर्गेशनंदिनी, कपाल कुडंला, मृणालिनी, चन्द्रशेखर व राजसिंह बहुत ही लोकप्रिय हुए। विषवृक्ष, इंदिरा, युगलांगुरिया, राधारानी, रजनी और कृष्णकांत की वसीयत में समाज की अच्छाइयों व बुराइयों का चित्रण हुआ है। वे उन महान लोगों में से थे जिन्होंने भारतीयों को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। उनके लेखन से राष्ट्रीयता का अर्थ लोग समझ सके। 'आनंदमठ' राष्ट्रभक्ति पर लिखा शानदार उपन्यास है।

सन् 1773 में बंगाल में पड़े भीषण अकाल के समय अंग्रेजी अत्याचार के खिलाफ स्वराज्य के लिए जो आंदोलन हुआ, उसी की कहानी 'आनंदमठ' में है। 'आनंदमठ' देश के लिए जीने वाले और देश के लिए मरने वालों की कहानी है। सत्यानंद, भवानंद, महेन्द्र, जीवानंद, शांति आदि का मातृभूमि से प्रेम अनुकरणीय है। महेन्द्र से भवानंद कहते हैं ''हमारी तो बस एक ही माँ है और वह है मातृभूमि। न हमारी और कोई माँ है, न कोई पिता, न पत्नी, न बच्चे, न

घर- द्वार। यह सुजलां सुफलां धरती ही तो हमारी माँ है।'' 'आनंदमठ' उपन्यास का गीत वन्देमातरम् 1875 में बंकिमचन्द्र की साहित्यलता पर खिला हुआ सर्वश्रेष्ठ पुष्प है। बंकिमचन्द्र की प्रतिभा का सम्पूर्ण सौन्दर्य, सौरभ तथा सुधा की माधुरी इस काव्य में एकत्रित हुई है। यह गीत आगे चलकर देशभक्तों का कंठहार बन गया तथा स्वाधीनता संग्राम का शस्त्र बन गया। बंकिम चन्द्र के जीवनकाल में ही इसका अन्य भाषाओं हिन्दी, अंग्रेजी, तेलगु, कन्नड़ में अनुवाद हुआ। 1883 में इसकी लोकप्रियता का लाभ उठाते हुए नेशनल थिएटर के अध्यक्ष केदारनाथ चौधरी ने इसका नाट्य रूपान्तरण किया। 1896 के काँग्रेस अधिवेशन में सर्वप्रथम इसे गाया गया। इसके बाद लगातार कांग्रेस के मंच पर मंगलाचरण के रूप में इसका गायन होता रहा है। यह गीत वहाँ राष्ट्रीयता का प्रखर बोध जगाता रहा। 1905 के बंगाल विभाजन के समय वन्देमातरम् का नारा सर्वत्र गूँज उठा। इसी प्रकार 1865 में 'दुर्गेशनंदिनी' का प्रथम प्रकाशन हुआ और 28 वर्षों में इसके 13 संस्करण निकालने पड़े। बंकिमचन्द्र के उपन्यासों ने मनोरंजन के साथ-साथ लोगों की विचार शक्ति को भी जाग्रत किया। स्वामी रामकृष्ण परमहंस भी इनके ऐतिहासिक उपन्यासों से प्रभावित थे, उन्होंने नरेन्द्र (विवेकानन्द) को भी इनके पास भेजा था।

बंकिम चन्द्र ने उपन्यास लेखन के साथ-साथ अन्य उत्कृष्ट ग्रंथ भी लिखे-जैसे- कृष्ण चरित, धर्मतत्व, देवतत्व, श्रीमद्भगवद्गीता पर विवेचन। अंग्रेजी और बांग्ला में उन्होंने हिन्दुत्व पर लेख लिखे, अंग्रेजी के ग्रंथों का भी उनका अध्ययन गहरा था, वे स्वयं एक सनातन हिन्दु परिवार के तत्व चिंतक थे। उनका लिखा कृष्णचरित उत्कृष्ट रचना है। बंकिम चन्द्र ने महाभारत, हरिवंश तथा पुराणों का गहराई से अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि कृष्ण ने जो जीवनदर्शन दिया है, उससे बढ़कर दर्शन कोई नहीं दे सकता। कृष्ण पवित्रता व न्याय की साकार मूर्ति थे। उन्होंने स्वयं के लिए कुछ अपेक्षा नहीं की। कृष्ण-सा त्यागी महापुरुष दूसरा हो ही नहीं सकता, इसलिए उनका जीवन अनुकरणीय है, वह हमेशा प्रेरणा देता रहेगा।

बंकिमचन्द्र पत्रकार भी रहे। 1872 में बंग

दर्शन पत्रिका आरंभ की। पत्रिका के पहले अंक में वे लिखते हैं-''जब तक हम अपनी भावनाओं को, अपने विचारों को मातृभाषा में व्यक्त नहीं करेंगे, तब तक हमारी उन्नति हो ही नहीं सकती।'' बंकिमचन्द्र लोगों की विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाना चाहते थे। रविन्द्रनाथ ठाकुर ने भी बंग दर्शन को आषाढ़ की प्रथम बौछार सा सुखद बताया। आषाढ़ की पहली बौछार से गर्मी से झुलसते पेड़-पौधों को नवजीवन मिलता है। बंग दर्शन ने जनता को प्रगति का नया रास्ता दिखाया, जनता उसके अंकों की प्रतीक्षा करती थी। उपन्यास, नाटक, काव्य, लेख-आलोचना के स्तंभ इसमें रहते थे। भावी पत्रिकाओं के लिए इसने मार्ग प्रशस्त किया।

बंकिमचन्द्र मातृभाषा के अनुरागी थे। उन्होंने अंग्रेजीयत के प्रति आकर्षित लोगों को लक्ष्य कर कहा-''अपनी भाषा से ही लोग प्रगति कर सकते हैं। हमें किसी भाषा से घृणा नहीं करनी है, हमें तो अपना ज्ञान संग्रह बढ़ाने के लिए प्रत्येक भाषा का प्रयोग करना चाहिए परन्तु पर यदि प्रगति करनी है तो एक ही मार्ग है, अपनी भाषा का।'' बंकिमचन्द्र राष्ट्रभक्त थे। एक बार एक व्यक्ति कविता पठन के दौरान दरिद्र भारतीय का उपहास कर रहा था तो बंकिम से रहा नहीं गया। वे वहाँ से तुरन्त चले गए। रामकृष्ण परमहंस भी बंकिमचन्द्र की राष्ट्रभक्ति के कायल थे। एक बार रामकृष्ण ने उनसे पूछा कि ''तुम किस कारण बंकिम (तिरछे) हो।'' बंकिमचन्द्र ने हँसते-हँसते उत्तर दिया ''ब्रिटिशों की ठोकरों से।'' एक बार स्वामी विवेकानन्द ढाका आए। युवकों से बातचीत के दौरान एक युवक ने उनसे पूछा, ''हमें क्या पढ़ना चाहिए?'' तब उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया- ''बंकिम का साहित्य।'' सचमुच बंकिमचन्द्र की लेखनी ने भारतवर्ष में चेतना जाग्रत की। उनके 'वन्देमातरम्' ने भारत के इतिहास को नया मोड़ दिया। बंकिमचन्द्र अपने माता-पिता को देवतुल्य मानते थे। उनके चरण स्पर्श कर उनका चरणोदक लिए बगैर वे कोई भी काम आरंभ नहीं करते थे।

परन्तु वे लेखनकार्य को अधिक समय नहीं दे पाए। उनका स्वास्थ्य खराब हो गया, जीवन से मोह समाप्त हो गया, श्रीमद्भगवद्गीता के अध्ययन से उनका स्वभाव पूर्णतः परिवर्तित हो गया। 8 अप्रैल 1894 को उनका देहावसान हो गया। अन्ततः सचमुच वे ऋषि थे जिन्होंने हमें नये भारत का सृजन करने के लिए 'वंदेमातरम्' का संजीवन मंत्र दिया। बाद में इसी उपन्यास 'आनंदमठ' पर इसी नाम से फिल्म भी बनीं, जिसमें स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने 'वन्दे मातरम्' गीत को अपने स्वरों में यादगार बना दिया। बंकिमचन्द्र के इस संजीवन मंत्र को स्वर देते हुए हम भारत को परम वैभव के पथ पर ले जाएँ, यही बंकिम चन्द्र को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रधानाचार्य
रा.आ.उ.मा.वि., गुड़ाजाटान (पाली)
मो: 9829285914

राष्ट्र की जय चेतना का गान वन्देमातरम्।
राष्ट्र भक्ति प्रेरणा का गान वन्देमातरम्।।
सृष्टि बीज मंत्र का है मर्म वन्देमातरम्।
राम के वनवास का है काव्य वन्देमातरम्।।
दिव्यगीता ज्ञान का संगीत वन्देमातरम्।
हल्दी घाटी के कणों में व्याप्त वन्देमातरम्।।
दिव्य जौहर ज्वाल का है तेज वन्देमातरम्।
वीरों के बलिदान की हुंकार वन्देमातरम्।।

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति

❒ डॉ. गिरीश दत्त शर्मा

वस्तुतः हमारे कार्यों की सिद्धि और उसमें अपेक्षित सफलता हमें निरन्तर कार्य करते रहने से ही प्राप्त हो सकती है, मात्र उनकी कल्पना विचार और स्वप्न देखने से नहीं। ठीक जिस प्रकार सामर्थ्यवान बलशाली शेर को भी अपना शिकार प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना पड़ता है। मात्र बैठे रहने और सोते रहने पर मृग शावक स्वयं उसके मुख में प्रवेश नहीं करते। अतः हमें भी अपने कार्यों लक्ष्यों, परिकल्पनाओं से संबंधित स्वप्नों को देखने के स्थान पर उनकी पूर्ति के लिए अनथक परिश्रम में जुट जाना चाहिए, तभी हम अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकेंगे और हमारा जीवन सुखद और गतिमान बन सकेगा।

प्रायः देखने में आता है कि अनेक व्यक्ति मस्तिष्क में कोई नया विचार एवं कल्पना आते ही उस पर पूर्ण रूप से विचार किए बिना प्रारम्भ तो जोर-शोर से कर देते हैं परन्तु कार्य करते समय कोई बाधा या रुकावट आने से जोश ठण्डा पड़ने लगता है, कार्य में शिथिलता आ जाती है, कार्य करने में रुचि कम होने लगती है। अन्त में कार्य पूर्ण होने की संदिग्धता में बीच में ही छोड़ देते हैं या उसमें पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती। ऐसी परिस्थिति में सारा दोष, समय, साधन, भाग्य या अन्य किसी कारण को देते हैं जबकि असफलता का कारण उनका अपेक्षित श्रम न करना भी रहता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने महाभारत के युद्ध में अर्जुन को विषाद की स्थिति में देखकर युद्ध करने को प्रेरित करते हुए कहा था- 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' अर्थात् तू युद्ध के परिणाम की कल्पना कर क्यों दुःखी होता है क्योंकि तेरा अधिकार मात्र कार्य करना है न कि उसके फल के बारे में सोचना। कारण, यदि हम कार्य करते समय उसके अपेक्षित फल के बारे में सोचने लगते हैं तब हमारा आधा अवधान तो फल सोचने में ही बँट जाता है। परिणामस्वरूप पूर्ण रूप से मन कार्य में न लगने से कार्य की सिद्धि संदिग्ध बन जाती है और हमें अपेक्षित सफलता नहीं मिल पाती। यदि हम फल

के संबंध में सोचना छोड़कर एकाग्रचित्त से कार्य के संयोजन में लग जाए तो सफलता निश्चित रूप से मिलने की सम्भावना रहती है।

श्रीमद्भगवद्गीता में ही एक स्थान पर भगवान श्रीकृष्ण ने कर्म का महत्त्व बताते हुए उसे 'योगःकर्मषुकौशलम्' की संज्ञा दी है। योग का सामान्य अर्थ जोड़ना होता है, परन्तु शारीरिक योग का तात्पर्य मनुष्य को अपने तन, मन व बुद्धि सभी को एक बिन्दु पर केन्द्रित करना बताया है। उसी प्रकार हम भी अपने तन-मन-बुद्धि को सब प्रकार के वातावरण से हटाकर किसी कार्य को करने के लिए केन्द्रित करते हैं तो वह योग के सदृश रूप ले लेता है। कोई भी कार्य पूर्णता के लिए कौशल चाहता है और पूर्ण कुशलता मनुष्य तभी प्राप्त कर सकता है जब वह दत्तचित्त होकर कार्य का संयोजन करता है।

हमारा सूर्य हमसे करोड़ों किलोमीटर दूर अन्तरिक्ष से अपनी गर्म तप्त रश्मियाँ पृथ्वी पर भेजता है। ये रश्मियाँ चारों ओर बिखरी होने के कारण तप्त होते हुए भी ज्वलनशील महसूस नहीं होतीं परन्तु जब इन किरणों को नतोदर शीशे के माध्यम से किसी बिन्दु पर केन्द्रित किया जाता है तब वह जल उठता है। उसमें अग्नि की चिन्गारी उत्पन्न हो जाती है। ठीक इसी प्रकार जब कार्य करते समय हमारा अवधान इधर-उधर की वस्तुओं, विचारों और कल्पनाओं में भटकता है तब हम कार्य के सम्पादन में एकाग्र नहीं हो पाते और सफलता संदिग्ध हो जाती है। अतः कार्य की सफलता के लिए कार्य करते समय लक्ष्य पर एकाग्रचित्त होने की आवश्यकता अपेक्षित रहती है।

समाज में कुछ व्यक्ति कार्य की सफलता के लिए प्रारम्भ करने से पूर्व विभिन्न प्रकार की पूजा, अर्चना, मनोतियाँ मनाते हैं, शुभ घड़ी, मुहूर्त की प्रतीक्षा करते हैं। परिणामस्वरूप उनका काफी समय कार्य प्रारम्भ करने की प्रतीक्षा में निकल जाता है और वे कार्य में पिछड़ जाते हैं। वस्तुतः समय बहुत मूल्यवान है। जो समय सोचने-विचारने में निकल गया उसकी भरपायी नहीं हो पाती। कार्य में विलम्ब होने या पिछड़ने पर ऐसी अवस्था में मात्र पछतावा रह जाता है। दूसरे, कोई समय या घड़ी अशुभ नहीं होती क्योंकि उस घड़ी या मुहूर्त में विश्व के कितने ही लोगों के कार्य पूर्ण एवं सफल होते हैं। अतः हमें शुभ मुहूर्त, घड़ी आदि का विचार न करते हुए अपने कार्य के सम्पादन में यथाशीघ्र लग जाना चाहिए।

समय के संबंध में आइंस्टाइन का सापेक्षवाद का सिद्धांत बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस सिद्धांत के अनुसार आपकी कार्य करने की गति जितनी तीव्र होगी उसमें लगने वाला समय उतनी ही कम रफ्तार से चलेगा। अतः हमें भी शिथिल एवं गतिहीन होकर बैठने के स्थान पर कार्य की प्रगति में सचेष्ट होकर संलग्न हो जाना चाहिए। इससे समय की गति कम होने से हमारे समय की बचत होगी और हम अधिक कार्य कर सकेंगे।

समय की अवधि निश्चित है। हमें अपने जीवन के समस्त अपेक्षित कार्य जीवन की निश्चित अवधि में ही पूर्ण करने हैं अतः समय को दिवस, माह, वर्ष आदि अलग-अलग भागों में विभक्त किए बिना व्यर्थ की बातों में समय न गवाँ कर कार्यों को पूर्ण करने के प्रयास में निरन्तरता बनाए रखनी चाहिए, तभी कार्य की सिद्धि की सम्भावना की जा सकती है।

विश्व में ऐसे भी अनेक व्यक्ति रहते हैं जो

समय के महत्त्व को नहीं पहचानते हैं। परिणाम स्वरूप वे समय की उपेक्षा करके निरर्थक कार्यों, गपशप, छोटी-छोटी बातों में उलझकर उसे बर्बाद कर देते हैं। कभी-कभी तो उन्हें समाज में आलोचना, वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष और अनर्गल बातों को सहना पड़ता है, उनकी प्रतिष्ठा में आघात पहुँचता है और वे निराशा एवं हताशा के शिकार हो जाते हैं। अच्छा हो ऐसे व्यक्ति इन दुर्व्यसनों की संगति से बचकर काव्य, शास्त्र एवं उपयोगी साहित्य का अध्ययन मनन करते हुए रचनात्मक कार्यों में अपना समय व्यतीत करें। इससे न केवल उनका सम्मान बढ़ेगा अपितु वे समाज के लिए भी उपयोगी बन सकेंगे।

हमारे कार्य समय पर पूर्ण और सफल हों इसके लिए कार्य की योजना बनाकर कार्य करना श्रेयस्कर रहता है। यदि सामर्थ्य से अधिक कार्यों का उत्तरदायित्त्व लेकर हम कार्य करना प्रारम्भ कर देते हैं तो समयाभाव एवं अन्य कारणों से समय पर उनकी पूर्ति नहीं हो पाती है। ऐसी अवस्था में हम तनावग्रस्त हो जाते हैं, मन में विषाद की स्थिति बन जाती है जिससे हमारी सम्पूर्ण दिनचर्या दुःखद और अव्यवस्थित बन जाती है। अतः सफलता के लिए अपनी अवस्था, स्वास्थ्य और क्षमता के अनुसार ही कार्य सम्पन्न करने का प्रयास करना चाहिए।

कभी-कभी कार्यों में निरन्तर कुछ असफलताएँ मिल जाती हैं। हमें इनसे दुःखी और निराश न होकर इन्हें चुनौतियों के रूप में लेना चाहिए। संसार में ऐसे अनेक महा पुरुष हुए हैं जिन्होंने अनेक बार विफलताओं का सामना करते हुए अन्त में सफलता का मधुर रसास्वादन किया हैं। यही नहीं, कुछ विकलांगों ने तो अपने साहस और दृढ़ मनोबल के आधार पर अक्षम होते हुए भी अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। अतः कहा भी है-

मानव का उद्देश्य नहीं है
श्रान्त भवन में टिके रहना,
किन्तु पहुँचना उस सीमा तक
जिसके आगे राह नहीं है।

4/82, चौटाला रोड
वार्ड-23, संगरिया, जिला-हनुमानगढ़
(राज.)-335063
मो. 8561069364

पहला मनीऑर्डर

❐ डॉ. श्याम मनोहर व्यास

अभिव्यक्ति मानव का स्वाभाविक गुण है। अभिव्यक्ति दो प्रकार से की जा सकती है। प्रथम बोलकर एवं द्वितीय लिखकर। हर व्यक्ति का जीवन एक खुली पुस्तक के समान होता है जिसमें अनुभूतियाँ एवं अपने आसपास की घटनाओं का समुच्चय होता है।

वैसे मैं विज्ञान का छात्र रहा हूँ पर लिखने के अंकुर मेरे मस्तिष्क में बचपन से ही प्रस्फुटित होने लगे थे। अपने विद्यालय से निकलने वाली 'शेर बच्चा' दीवार पत्रिका में अपनी टूटी-फूटी रचनाएँ दिया करता था, जिसे हमारे शिक्षक संपादक सुधार कर पत्रिका में किसी छात्र से सुपाठ्य रूप से लिखवाते थे।

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका में भी जब मेरी प्रथम रचना छपी तो उस रचना को देखकर मन प्रसन्न हो उठा। हमारे घर में गीता प्रेस, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) से प्रकाशित सुप्रसिद्ध धार्मिक पत्रिका 'कल्याण' आती थी। इसमें प्रकाशित धार्मिक लेख व कहानियाँ प्रेरणाप्रद व पठनीय होते हैं। जब मैं कॉलेज पढ़ने उदयपुर आया तो इसमें मेरी लिखने की इच्छा जाग्रत हो उठी। 2-3 भक्ति सम्बन्धी रचनाएँ इसमें प्रकाशनार्थ भेजी, पर छपी नहीं। मित्रों ने मज़ाक बनाया कि 'कल्याण' में लिखना बच्चों का खेल नहीं है, फिर मैं तो विज्ञान का छात्र हूँ। पर मैंने हार नहीं मानी। मैंने परिश्रम कर 'ईश्वर में आस्था' एक प्रेरक प्रसंग 'कल्याण' में प्रकाशनार्थ भेजा। वह आखिर मार्च सन् 1960 के 'कल्याण' के अंक में छप गया। संपादक जी ने एक लेखक प्रति भी मेरे पास भेज दी। पहली बार एक प्रतिष्ठित पत्रिका में अपनी रचना छपी देखकर मन आह्लादित हो उठा। जो मित्रगण मेरे लेखन से ईर्ष्या करते थे, वे अब मुझे बधाइयाँ देने लगे। कहा भी है- 'गुण बिना पूजा नहीं।' उसी वर्ष मैंने एम.एससी. गणित विषय में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और एक राजकीय महाविद्यालय में अस्थाई रूप से प्रध्यापक नियुक्त हो गया।

'कल्याण' ने मेरा उत्साह बढ़ाया। धर्म, दर्शन, शिक्षा, विज्ञान एवं बाल साहित्य आदि विधाओं पर कलम दौड़ने लगी। तत्कालीन दैनिक वीर अर्जुन, संघशक्ति, गौतम सखा, सिद्धांत आदि पत्र-पत्रिकाओं में मेरी रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं। अभी तक लेखकीय प्रति तो आती थी पर रचना का पारिश्रमिक मानदेय नहीं मिला।

मुझको पारिश्रमिक देने वाली प्रथम पत्रिका रामतीर्थ थी जो मासिक थी और मुंबई (महाराष्ट्र) से निकलती थी। 200 पृष्ठ की इस पत्रिका का मूल्य मात्र पचास पैसे था। मई सन् 1963 के अंक में इसमें मेरा एक जीवन मूल्यों से सम्बन्धित लेख प्रकाशित हुआ था। पत्रिका के सम्पादक ने लेखकीय प्रति के साथ दस रुपये का मनिऑर्डर भी भेजा जो उस समय एक अच्छी राशि मानी जाती थी। सस्ता जमाना था। 4 रुपये किलो मावे की मिठाई थी। उस राशि से ढाई किलो मिठाई खरीद कर परिजन एवं मित्रों में बाँट दी। लेखकीय पारिश्रमिक का यह पहला मनिऑर्डर था। पिताजी ने कहा कि परिवार में यह पहला अवसर ही है जब लेखन कार्य का मानदेय तुम्हें मिला है।

आज तो उनके आशीर्वाद से ढेरों रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में छप रही हैं, प्रकाशक गण भी मेरी पुस्तकें छाप रहे हैं, पर जो आत्मीय प्रसन्नता 'रामतीर्थ' मासिक पत्र में लेख छपने पर मिली वह आज भी मेरे लिए अविस्मरणीय है।

लेखक पर माँ सरस्वती की सदैव से कृपा रही है कि प्रशासनिक पदों पर कार्यरत रहते हुए भी लेखक की रचनाएँ अनवरत रूप से छपती रही हैं। अब तो सेवानिवृत्ति के पश्चात् लेखन दिनचर्या ही बन गया है। मई सन् 1963 से प्रतिमाह रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं।

नवोदित लेखकों से मेरा निवेदन है कि वे परिश्रम व चिन्तन-मनन कर मौलिक सृजन करें। लेखन में स्वाध्याय आवश्यक है। लेखक को पाठकों की रुचि का भी ध्यान रखना पड़ता है। रचना की भाषा शैली सुपाठ्य व सरल हो।

आज प्रतिस्पर्धा अधिक है अतः लेखक को देखना चाहिए कि पाठक की अभिरुचि किस में है, उस विषय पर ही गहन अध्ययन कर लिखना चाहिए। सृजन हेतु कई क्षेत्र खुले हैं, कई विधाएँ हैं जिन पर लिखा जा सकता है। जब पत्र-पत्रिकाओं के लिए रचना भेजें तो पूर्व में उसे अच्छी तरह से पढ़ें, कोई त्रुटि हो तो उसे ठीक कर लें। नवोदित लेखकों को प्रारंभ में पारिश्रमिक की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। जब स्तरीय पत्रिका में रचना छपेगी तो स्वतः ही संपादक/प्रकाशक पारिश्रमिक भेज देगा।

पूर्व शिक्षा उपनिदेशक एवं प्राचार्य (डाइट)
15, पंचवटी, उदयपुर- 313004 (राज.)
मो: 9414615397

सेवा कार्य का महत्त्व

❐ श्रीकिशन वैष्णव

हमारा जीवन तथी सार्थक है जब हम किसी को कुछ दें। पाने की अपेक्षा देना ही श्रेष्ठ हैं अर्थात् सच्चा आनन्द प्राप्त करने के लिए सेवा ही सार है। वृक्ष दूसरों की भलाई के लिए जिन्दा रहते हैं। बदले में किसी से भी कुछ न पाने की आशा रखे यह हवा धूप, वृष्टि, शीत में स्वयं रहते हुए भी हमारी रक्षा करते हैं और छाया देते हैं।

सेवा कार्य की आवश्यकता:

जीवन में जीवित रहना ही पर्याप्त नहीं है और यह कहना कि मेरी आय पर्याप्त है, पारिवारिक समस्या से मुक्त हूँ काफी नहीं है। इसके अतिरिक्त भी हमें कुछ करना हैं, हमें दरिद्रनारायण बनना है। इसके लिये हमें यद्यपि पारिश्रमिक नहीं मिलता फिर भी सुविधाएँ प्राप्त हैं। हमें उनका पूरा लाभ उठाना चाहिए और अपने समय को परोपकार में लगाना चाहिए।

आत्मबलिदान, निःस्वार्थ भावना, अथाह प्रेम जैसे अद्वितीय गुण का विकास तभी होगा जब हम हमारे समाज के सभी वर्गों को तथा विशेषकर विद्यार्थियों को निस्वार्थ सेवा करने की शिक्षा व प्रेरणा देंगे।

दूसरों के लिए जिएँ :

जो समाज में रहता हुआ अपने साथियों के साथ अपने सामाजिक सम्बन्धों का ख्याल न करके केवल अपनी भलाई के लिये जीता हैं ऐसा व्यक्ति शीघ्र की समाज में घृणा का पात्र बन जाता हैं। लेकिन जब वह अपने समाज के अन्य लोगों की निःस्वार्थ सहायता करता है तो वह प्रभावकारी नागरिक बनता है।

सामाजिक सेवा सम्बन्धी कार्य :

समाज की सेवा सम्बन्धी कुछ न कुछ कार्य अवश्य ही करना चाहिये। इस क्रम में निम्न कार्य किए जा सकते हैं।

1. असहाय एवं विधवाओं की सहायता।
2. आँखों की निशुल्क शल्य चिकित्सा।
3. रक्तदान शिविर।
4. प्रौढ़ शिक्षा सेवा।
5. स्वरोजगार सहायक कार्य।
6. विवाह योग्य युवक/युवतियों की सूचना।
7. परिवार नियोजन केन्द्र।
8. बेरोजगारी निवारण केन्द्र।
9. नव-युवक सेवा समिति का गठन।
10. निःशुल्क कानूनी सलाह।
11. प्रतिभावान व्यक्तियों का सम्मान कार्य।
12. धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा प्रसार।
13. सामुदायिक स्वच्छता।
14. सामूहिक विवाह केन्द्र।
15. निःशुल्क स्वास्थ्य सहायता।
16. सरकारी योजनाओं की जानकारी केन्द्र।

सेवा से परमानन्द की प्राप्ति

मानव बुराईयों का पुतला हैं और लगातार शान्ति के लिये प्रयासरत रहता है। परमानन्द प्राप्ति का सबसे सुलभ एवं प्रभावकारी मार्ग गरीबों के उत्थान के लिये उनकी सेवा में आने को समर्पित करना, अर्थात् जीवन में परम शान्ति का अनुभव करने के लिये परोपकार एवं निस्वार्थ सेवा ही सबसे अच्छी औषधी है। जब कोई व्यक्ति अपनी परवाह न करके दूसरों की चिन्ता करता हैं एवं अन्य व्यक्तियों की नजर में सम्मानित होता है तब उसका जीवन सच्चे अर्थों में आनन्दित होता है।

रामचरित मानस में भगवान श्रीराम ने अपने श्रीमुख से मित्रों को विदा करते समय कहा

अब गृह जाहु सखा सब, भजेहु मोहि दृढ़ नेम।
सदा सर्बगत सर्वहित जानि करेहु अति प्रेम।।

अर्थात् प्रभु की व्याप्तता को ध्यान में रखते हुए स्वार्थपरता को छोड़कर हमें प्रभु के नाते सबकी सेवा करनी चाहिए। इसलिये रामचरित मानस में रावण के मरने के बाद भगवान राम ने अपने मित्रों से कहा कि तुम सब अपने-अपने घर जाओ और दृढ़तापूर्वक तथा नियम से मेरा भजन करना। इसका अर्थ यह हैं कि मैं (श्रीराम) सबके भीतर हूँ और सबका हित चाहता हूँ इसे जानकर जो सबको प्यार करता है वही भगवान सच्चा भजन करता है। इसलिए सेवा ही सच्चा ईश्वर भजन है, यह मानकर हमें सेवा करनी चाहिए।

मानव सेवा से पवित्रता:-

मानव सेवा से हमारा मन, हृदय और तन पवित्र होते हैं।

एक बार आनन्दपुर (पंजाब) मे सिक्खों के दसवें गुरु श्री गोविन्दसिंह जी प्रवचन दे रहे थे, कुछ समय बाद गुरुजी को प्यास लगी और उन्होंने पानी पीने की इच्छा प्रकट की। इतने में ही कई व्यक्ति पानी लेने के लिए आगे बढ़े। उन्हीं श्रोताओं में से एक धनवान व्यक्ति ने अपने हाथ से जल पिलाने की इच्छा प्रकट की । गुरुजी ने गर्दन हिलाकर उसे स्वीकृति प्रदान की। वह तुरन्त ही लोटा पानी भरकर गुरु गोविन्दसिंह जी को पानी पिलाने के लिये गया। एकाएक उसका हाथ गुरुजी के हाथ से छू गया और तभी गुरुजी पानी पीते-पीते रुक गए। वे गंभीर होकर बोले- ''तुम क्या काम करते हो?'' तब उस अमीर व्यक्ति ने कहा कि वह बहुत ही अमीर है, उसे कोई काम हाथ से नहीं करना पड़ता। तब गुरुजी बोले- ''क्योंकि तुम्हारे हाथ इतने नरम हैं, इसी से मुझे लग गया था कि तुम कुछ भी काम अपने हाथ से नहीं करते हो। जो व्यक्ति अपने हाथ से काम नहीं करते और विशेषकर मानव सेवा नहीं करते उनका हाथ पवित्र नहीं होता। इसलिए जाओ, मानव सेवा करो और अपने हाथ को पवित्र करो, तभी मैं तुम्हारे हाथ का जल ग्रहण कर सकूँगा।'' इसलिये हमें अपने आपको पवित्र करने के लिए मानव सेवा में यथाशक्ति लगे रहना चाहिए।

निरन्तर सेवा कार्य:-

हमें अपने परोपकार एवं सेवा कार्य का स्वमूल्यांकन करना चाहिए तथा आवश्यकतानुसार नियन्त्रण करना चाहिए। जरूरतमन्दों की सहायता करने पर आत्मिक शान्ति व सन्तोष प्राप्त होता है। इसलिए अपने सामर्थ्य व समय के अनुसार हमें निःस्वार्थ होकर परसेवा के कार्य निरन्तर करते रहना चाहिए। इसी में परमानन्द है।

प्राध्यापक,
राज. पटेल. उ.मा.वि. ब्यावर, अजमेर (राज.)

सेवा है यज्ञ कुण्ड समिधा सम हम जलें।
ध्येय महासागर में सरित रूप हम मिलें।।

'मूड' के रूप और प्रभाव

❐ छाजूलाल जाँगिड़

क्या घर क्या बाहर प्रायः यही ध्वनि सुनने में आती है आज उनका 'मूड' खराब है, इसलिए आज यह कार्य नहीं हो सकता। डॉक्टर का मूड बिगड़ा तो रोगी गंगाजी के घाट गया। न्यायाधीश का मूड बिगड़ा तो न्याय का गला घुट गया। परीक्षक का मूड ऑफ हो गया तो उत्तर पुस्तिकाओं पर क्रॉस के चिह्न चील की तरह मंडराने लगे। मूड नहीं बना तो रचनाकार की रचना नहीं बन सकी और कवि की कल्पना भी उड़ान नहीं भर सकी। यह मूड की बीमारी सर्वव्यापी है। मजदूर और मालिक, शिक्षक और शिक्षार्थी, नेता और अभिनेता, अफसर और बाबू प्रत्येक मनुष्य इस बीमारी से ग्रस्त है, आतंकित है।

एक दिन किसी अफसर की पत्नी का मूड बिगड़ा तो अफसर का मूड बिगड़ गया। कार्यालय में पहुँचा तो बाबू और कर्मचारियों पर अपना क्रोध उँड़ेल दिया। एक-दो बाबू और कर्मचारी से ऐक्सन काल और स्पष्टीकरण माँगे। किसी बाबू से अपनी पत्नी की साड़ियों की माँग पूरी नहीं हुई तो पत्नी का भवानी रूप उभर आया। घर में कलह खड़ी हो गई। बर्तन खनकने लगे। बच्चों पर डाँट-फटकार पड़ी। बाबूजी बिगड़े मूड में निस्तब्ध होकर कार्यालय में बैठ गए मानो कोई पाप का प्रायश्चित कर रहे हों। घर में नोंक-झोंक हो जाती है तो पत्नी का मूड बिगड़ जाता है। घर में भूचाल आ जाता है। दवा का व्यय बढ़ जाता है।

विद्युत कार्यालय में जब फाइल पर विचार नहीं हुआ तो लिपिक के मुख से ये शब्द मुखरित हो गए-''आज साहब का मूड ठीक नहीं इसलिए कार्य नहीं हो सका।'' कभी-कभी शिक्षक की नीयत पढ़ाने की नहीं होती है तो बच्चों को कह उठता है-''आज पढ़ाने का मूड नहीं है, अपना कार्य करो।''

अपने अधिकारी का मूड स्वस्थ रखने के लिए प्रायः लोग उनका मनोरंजन करते रहते हैं। समय-समय पर प्रस्तुत की जाने वाली भेंट और उपहार भी मूड को अनुकूल रखने का तरीका है जो समय-समय पर लोग अपनाते रहते हैं।

मूड का बनना-बिगड़ना, ऑफ हो जाना, मूड में आना, मूड खराब होना, ठीक होना आदि मूड के विविध रूप हैं। आप किसी मनुष्य के दुर्गुणों और कमजोरियों को उभारते हैं तो उसका मूड बिगड़ जाता है। यदि उसके गुणों का यशोगान करते हैं तो मन रूपी सुमन खिल उठता है। स्वाभिमानी चरित्रवान व्यक्ति को यदि आप रिश्वत देकर गलत कार्य कराना चाहें तो उनका मूड बिगड़ जाता है। यदि भ्रष्ट अधिकारी को चरित्र का उपदेश देकर काम बनाना चाहें तो वह भी बिगड़ जाता है।

मन की प्रतिकूलता में 'मूड' बिगड़ जाता है। रुग्णावस्था में कार्य की अधिकता होने पर मन बदल जाता है। मन में संजोए सुख और इच्छाओं की पूर्ति न होने पर मन को अखरने वाली व्यक्तित्व पर आघात पहुँचाने वाली प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष बात कहने पर हमारा 'मूड' ऑफ हो जाता है। मस्तिष्क की विकृति, क्रोध व आवेश उत्पन्न करने वाले वातावरण के कारण भी मन का रंग बदल जाता है।

संसार के कुछ व्यक्ति महत्त्वाकांक्षी होते हैं, जिनको उचित सम्मान व प्रोत्साहन न मिलने पर वे बिगड़कर खड़े हो जाते हैं। अर्थ की वितृष्णा, बढ़ती महँगाई, भौतिक सुख की प्राप्ति न होने से भी हमारा 'मूड' बिगड़ जाता है। किसी के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण, प्रभाव, दबाव

एवं उच्चता की भावना लेकर किसी को कार्य करने के लिए हम बाध्य करते हैं तो उसका 'मूड' गड़बड़ हो जाता है। दुश्चिंताओं, निराशाओं और कुण्ठाओं के कारण भी मूड ग्रसित हो जाता है।

'मूड' चित्त की एक वृत्ति है, जो प्रतिकूल परिस्थितियों में बिगड़ जाती है। मनःस्थिति की प्रतिकूलता में कार्य में शिथिलता एवं व्यवधान पैदा होता है। संवेगशील व्यक्ति प्रायः मूडी (Moody) होते हैं। वे भावुक क्रुद्ध, उदासीन, चिड़चिड़े होते हैं। ऐसे व्यक्तियों का न तो स्वयं का जीवन सुखी होता है और न दूसरों का रहने देते हैं। बच्चों को मूडी (Moody) बनने से बचाने के लिए उनमें रूठने, बिगड़ने और क्रोध करने की आदत न डाली जाए। फैशन की बढ़ती अभिलाषा को कम किया जाए। कुण्ठाओं, आक्रोश को न बढ़ने दिया जाए।

संतुलित मस्तिष्क में स्थिरता अधिक होती है। ऐसे लोग वातावरण को नहीं बिगड़ने देते हैं और बिगड़ी बात को अपने वाक्चातुर्य से सुधार लेते हैं। उनका जीवन सुखमय होता है। कार्य करने की दक्षता उनमें अधिक होती है। संतुलित चित्तवृत्ति के लिए यह आवश्यक है कि हमारा भोजन, साहित्य और परिवेश भी सात्विक हो। नैतिक आचार-विचार से ही मनुष्य में सात्विक वृत्तियाँ और संस्कार आते हैं।

दाम्पत्य जीवन में मूड की विकृति आने पर जीवन संकटमय बन जाता है। नारी पुरुष की जीवन संगिनी है और विधाता की अनुपम कृति है। नारी मनुष्य जीवन के समतल भूभाग में पीयूष श्रोत सी बहकर जीवन दान देती है। फिर भी एक दूसरे के प्रति संदेह, विरोध और असंतोष के कारण जीवन संकटमय बन जाता है। दोनों के मूड बिगड़ जाते हैं। बाल-विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा तथा कुरूपता नारी जाति के लिए अभिशाप हैं। कम आयु, अधिक संतान व दुर्व्यसनी पति के कारण भी नारी का जीवन दयनीय बन जाता है। अभाव और घुटन की जिन्दगी में कुण्ठा, निराशा और असंतोष उत्पन्न होते हैं।

शेष पृष्ठ 68 पर...

भारत के तीर्थ धाम

❐ जगदीश कुमार

बरसते बादलों की रिमझिम में योगी रविनाथ जी की गौरक्ष टेकड़ी मंचर में रात्रि विश्राम के बाद अल सुबह बस भीमाशंकर के लिए रवाना हुई। अद्‌भुत अलौकिक अनूठे आनंद का आप्लावन करता सह्याद्रि पर्वत शृंखला की सर्पिल ऊँचाइयों, अद्‌भुत वनकटी घाटियों का मार्ग श्यामल, हरीतिमा लिए शाल, सागवान, आमों और अन्य वृक्षावलियों से यह मार्ग पहाड़ी ढलानों के सौंदर्य में श्रीवृद्धि करता रुद्रप्रयाग और बद्री विशाल के पहाड़ों की सघनता को भी मात दे रहा था। ऊपर चढ़ती सड़क के नीचे गहराती गोलाकार घाटी किसी हरे दोने में ऊँचाई से गिरते नयनाभिराम झरने का जल दोना-सा बनाता दीख रहा था। प्राकृतिक सौंदर्य की इस स्वर्गिक छटा से प्रभावित होकर ही शिव यहाँ विराज गए हैं। पूरी यात्रा में देखे गए सभी ज्योतिर्लिंगों में बड़े सुकून और मन को शीतलता देते भगवान के रजत मंडित लिंग विग्रह के दर्शन अर्चन का अवसर बड़ा सुलभकारी महसूस हुआ।

भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग का यह सनातन पुण्य लिए शैव स्थल-गर्भ गृह से पहले 29 स्तंभों पर टिका मंदिर काले पत्थर के शिल्प वैभव की कहानी की पुरातनता कह रहा था। घोड़े-गाँव क्षेत्र के शिनोली, खोदेल, पोखे गाँवों के आदिवासियों के धान के छोटे-छोटे खेत उनकी शान्त जीवन शैली को प्रकटाता बीहड़ वन प्रदेश में वन्य जीवों की उपस्थिति का अंदाज भी बयाँ कर रहा था। ऐसे रमणीय सुरम्य देवस्थान को फिर-फिर देखने को मन बँधे जा रहा था। यहीं से हमने आगे बढ़ते हुए शिदनापुर के शनिदेव मंदिर पहुँचकर सूर्य-पुत्र शनिदेव के श्याम प्रस्तर विग्रह को पीत वस्त्र पहने आराध्य को सरसों के तेल से अभिषेक कराते देखा। हे सूर्यपुत्र! हम पर पड़ रही सभी विपदाओं को दूर कर न्यायमय वातावरण की ओर अग्रसर करिए। तथास्तु। शनि सिंधनापुर ग्राम क्षेत्र में घरों एवं प्रतिष्ठानों के ताले नहीं लगाए जाने की बात अपनी आँखों से देख हम शनि महिमा से अभिभूत हो गए और शनि-विश्राम 'सबका मालिक एक-श्रद्धा और सबूरी' से सांप्रदायिक सौहार्द्र की जीवन्त मिसाल शिरड़ी के साँई बाबा धाम में किया। इतनी अकूत भीड़ कि कमरे व धर्मशाला तो दूर, तम्बुओं के नीचे अस्थाई पड़ाव लेना पड़ा। भोर से ही पंक्तिबद्ध होकर कोई तीन घण्टे की प्रतीक्षा के बाद रेलिंग की लम्बी कतारों से बँधे-बँधे हमने उस विराट दिव्य पुरुष की भव्य मुखर मूर्ति के दर्शन किए जिसका छत्र सिंहासन और मुकुट सभी कुछ स्वर्णमंडित था। देने वाला साँई और पाने वाला साँई। अभी एकात्म से तादात्म्य कराता आस्था का वातावरण प्रदायक श्री साँई के उस गर्भगृह को छोड़ देने को मन नहीं मान रहा था। पर नियति में सब कुछ बँधा-बँधा जो था। आज गुरुवार आश्विनी शुक्ला नवमी श्री साँई का पूज्य दिवस होने से श्रद्धालुओं की भीड़ कुछ अधिक ही थी। अपने पुत्र पुत्री की उनकी मनोच्छा पूर्ति की श्री साँई को अनुनय करते-करते उस विग्रह को नमन करते, मैं श्रद्धा विभोर हुआ, सबूरी लिए सपत्नीक बाहर आ गया। 'साँई सुनेगा तो सही, साँई सुनेगा तो सही'-यही पूरा विश्वास मन में अब भी भरा-भरा है। सभी महिमा मण्डित स्थानों पर शासकीय व्यवस्थाओं के बावजूद दर्शकों की लापरवाही जताती धक्का-मुक्की आस्थायुक्त वृद्धों, महिलाओं को किसी भी अनहोनी को आमंत्रण देने की आशंका उजागर किए रहती हैं। सरकार और मन्दिर प्रबन्धन दोनों इसे गंभीरता से ले लें तो श्रेयकर होगा। श्री साँई शिरड़ी की श्रद्धा सबूरी को नमन करते हम नासिक की ओर रवाना हो गए। भारतीय राजस्व एवं मुद्रा अंकन मुद्रण का केन्द्रीय स्थान-नासिक। श्री सीता-राम वनवास के समय लक्ष्मण द्वारा शूर्पनखा की नाक काटी जाकर गोदावरी के जिस दूसरे तट पर फैंकी गयी, वह स्थान बन गया नासिक। सिंहस्थ कुम्भ को अंजाम देता आस्था स्थल नासिक। महारानी अहल्या द्वारा चढ़ाए गए स्वर्ण कलश का राममन्दिर और श्री सीता जी की पर्ण कुटी जहाँ छाया सीता रह गई और मूल सीता अग्निदेव के संरक्षण में दे दी गयी। रावण द्वारा सीता हरण प्रसंग भी इसी स्थल पर घटित हुआ। वह पवित्र पौराणिक दक्षिणाभिमुखी गोदावरी आज बहुत मैली-मैली सी दीखती है। मानव के मिजाज ने उसे प्रदूषित कर दिया हैं। पता नहीं राम कब पुण्य सलिला गोदावरी को स्वच्छ सलिला करेंगे। इसी गोदावरी तट पर भगवान त्रयंबकेश्वर का भव्य परिसर में श्याम पत्थर पर उत्कीर्ण ज्योतिर्लिंग बरबस ही भक्तों को बाँध लेता है। लम्बी कतारों की प्रतीक्षा के बाद ये क्षणिक दर्शन भी मन को असीम शान्ति और सन्तोष से भर देते हैं। यही तो है आध्यात्मिक आस्था।

भारत का अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्मिश्रण वाला महानगर मुम्बई। भारत की आर्थिक राजधानी मुम्बई वाहनों और मानवों की रेलमपेल में हाथ ठेलों पर ही सुस्ताते मजदूरों और आलीशान बंगलों में आराम फरमाते आभिजात्य वर्ग की आर्थिक खाई में समाती महा नगरी मुम्बई को रात की नीरवता में भी जागते ही पाया। कहीं मुंबई कभी सोई भी हैं? सृष्टिकर्ता की समझ से परे है। मुम्बा देवी की रजतमण्डित गवाक्षों वाली रक्ताभिमुखी बोलती मूरत के दर्शन देखते ही बनते हैं। तो सिद्धि-विनायक के त्रिरूप-स्वर्ण गणेश, रजत गणेश, रक्ताभ गणेश के साथ रजत निर्मित विशाल वाहन मूषक गणेश भक्तों की आस्था का ज्वार लंबी कतारों की कड़ियों में गूँथा-गूँथा-सा मन को बाँध देता है। बाबूलनाथ महादेव की पहाड़ी टेकरी की चढ़ाई भगवान भोलेनाथ के वृद्ध रूप को अपनी अंक में बिठाए अर्द्धांगिनी पार्वती के साथ आकर्षक अनोखी झाँकी है। मछुआरों को समुद्र से प्राप्त महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती का जगदम्बा मंदिर की स्वर्णमंडित मूर्तियों के सौंदर्य का अप्रितम अलौकिक स्वरूप दर्शाता नेत्र विस्फारित कर देता है। इस्कान के 'हरे रामा हरे कृष्णा' मंदिर की राधा कृष्ण की मूर्तियाँ वहाँ का शान्त स्वच्छ चित्ताकर्षक वातावरण स्वयं मुँह बोलती। ईश्वरीय छबि को हमारे मन के अंतःस्थल तक उतार जाता है। जुहू चौपाटी पर उत्ताल तरंगों को तट से टकराता सागर अपनी मर्यादा में रहने का बोध करा जाता हैं तो चौपाटी

की भेलपूड़ी और 'ये हैं बंबई नगरिया तू देख बबुआ'-फिल्मी सितारों के शहर में आज अमिताभ के जन्मदिन पर उसके बंगले के बाहर प्रशंसकों की कारों की कतार आधुनिक रंगढ़ंग के अलग अंदाज को बयाँ कर रही थी। मुम्बई को सलाम कहते हुए हम चारोटी तलासरी होते आगे सौराष्ट्र की ओर बढ़ गए।

सहज स्नेह की भूमि गुजरात के भरुच शहर में रात्रि विश्राम पूण्यसलिला नर्मदा के तट पर शिव मंदिर में किया। दिन भर गुजरात की गर्मी, हमें तपाती रही अक्टूबर में भी ऐसी गर्मी। काठियावाड़ क्षेत्र की समान धरातल लिए लहरों के पानी से लबालब भरे खेतों में चावल, मूँगफली और चनों की हरियाली से भरी धरती कहीं कहीं केलों और गन्नों के झाड़ भी दिखाती जा रही भरुच में तारापुरा और लींबड़ी तक ऐसी ही प्राकृतिक छटा थी। चौटिल टीला चौराहे से जूनागढ़ की ओर आगे बढ़ते पहाड़ियों के दीदार होने लगे थे। पार्वती विवाह में भाई गिरिधर द्वारा उत्कृष्ट उपस्थिति से प्रसन्न विष्णु ने गिरिनारायण नाम से इस पर्वत की स्थापना की। जहाँ पत्थरबुतों से इंसान बनाने वाले गोरक्षनाथ ने अपनी तपस्या की और राजा भर्तृहरि तथा दत्तात्रेय की तपोभूमि पाण्डव प्रवास स्थली भी रही। ऐसे सिद्ध पर्वतगढ़, गिरनार की दस हजार पहाड़ी मार्ग की ऊँचे कदमों वाली सीढ़ियों वाली गुरु गोरखनाथ और बैरागी राजा भर्तृहरि की तपोभूमि को आँखों से देख पाना स्थगित करना पड़ा। बाईपास सर्जरी के बाद की यह दुर्गम पैदल चढ़ाई की जोखिम उठाने को मन तैयार नहीं हुआ। गुरु गोरक्ष क्षमा करें- उन्हें यहीं से नमन वन्दन कहने को गिरनार के प्रवेश द्वार से निरंजनी अखाड़ा तक एक सौ इक्यावन सीढ़ियों तक सपत्नीक पहुँच कर भगवान दत्तात्रेय और माँ जगदम्बा को वहीं से नमन कर लिया-प्राकृतिक छटादर्शन से भी वंचित रहना ही पड़ा- हरि इच्छा।

व्याख्याता,
रा.उ.मा.विद्यालय, जसोल
बालोतरा, जिला-बाड़मेर
मो: 9460537037

अपना सुधार ही
संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

सितम्बर 2017					
रवि		3	10	17	24
सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	27
गुरु		7	14	21	28
शुक्र	1	8	15	22	29
शनि	2	9	16	23	30

शिविरा पञ्चाङ्ग

सितम्बर 2017 ● कार्य दिवस-20, रविवार-04, अवकाश-06, उत्सव-03 ● 1 से 5 सितम्बर-प्रथम समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (अधिकतम 4 दिन) **2 सितम्बर**-ईदुल जुहा (अवकाश चन्द्र दर्शनानुसार) **5 सितम्बर**-शिक्षक दिवस (उत्सव), **राज्य स्तरीय** शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत शिक्षक दिवस पर झण्डियों की बिक्री का शुभारम्भ। **5 से 9 सितम्बर**-द्वितीय समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (अधिकतम 4 दिन) **8 सितम्बर**-विश्व साक्षरता दिवस (उत्सव) **9 सितम्बर**-अध्यापिका मंच की प्रथम बैठक (सर्व शिक्षा अभियान) **13 से 15 सितम्बर**-जिला स्तरीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी तथा जनसंख्या शिक्षा मेला एवं रोल एवं फोक डान्स प्रतियोगिता का आयोजन (SIERT) **14 सितम्बर**-हिन्दी दिवस (उत्सव) **15 से 16 सितम्बर**-जिला स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन (शिक्षकों के लिए अवकाश) **17 से 22 सितम्बर**-प्रथम समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन। **19 से 22 सितम्बर**-प्राथमिक विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता (ब्लॉक स्तरीय) **20 सितम्बर**-समुदाय जागृति दिवस (अमावस्या)(सर्व शिक्षा अभियान) अभिभावक-शिक्षक बैठक (PTM) का आयोजन। **21 सितम्बर**-नवरात्र स्थापना (अवकाश) **23 सितम्बर**-बालिका शिक्षा के अन्तर्गत समस्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 'मीना दिवस' (24 सितम्बर के उपलक्ष्य में) का आयोजन (सर्व शिक्षा अभियान), किशोर जागृति दिवस (SIERT) **24 से 29 सितम्बर**-द्वितीय समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन। **25 से 27 सितम्बर**-प्राथमिक विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता (जिला स्तरीय) **25 से 30 सितम्बर**-(अन्तिम सप्ताह) विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं हेतु अंग-उपकरण वितरण कैम्प आयोजन (सर्व शिक्षा अभियान) **28 सितम्बर**-दुर्गाष्टमी (अवकाश) **29 सितम्बर-1.** राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत झंडियों की बिक्री से प्राप्त राशि का बैंक ड्राफ्ट सचिव, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान,बीकानेर के नाम से बनाकर प्रेषित करना एवं सर्वश्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार-2017 के प्रस्तावों का मूल्यांकन कर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) द्वारा मण्डल अधिकारी को प्रेषित करना। **2.** SDMC की कार्यकारिणी समिति में अनुमोदित कार्ययोजना के अनुरूप विद्यार्थी कोष/विकास कोष के माध्यम से किए जाने वाले कार्य/क्रय कार्यवाही पूर्ण करना। **30 सितम्बर**-विजयादशमी (अवकाश), डाइस डाटा भरने की आधार तिथि। **नोट-1.** प्रथम योगात्मक आकलन का आयोजन (09 से 14 सितम्बर के मध्य)-CCE/SIQE संचालित विद्यालयों में। **2.** 24 सितम्बर-राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस (जिन विद्यालयों में यह योजना संचालित है) **3.** विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का ब्लॉक स्तर पर आयोजन (माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर) **माह सितम्बर : 2017 में सर्व शिक्षा अभियान से सम्बन्धित कार्यक्रम-**● एआरजी का प्रशिक्षण ● कम्प्यूटर प्रशिक्षण ● शिक्षिकाओं को स्काउट एवं गाइड प्रशिक्षण ● यूपीएस शिक्षकों हेतु एमटी प्रशिक्षण ● यूपीएस शिक्षकों के विषयवार शिक्षक प्रशिक्षण ● Divisional Level Workshop for Capacity Building for Wash in Schools (RPs/Engineers/Nodal Principals & BEEOs) ● सामान्य शिक्षकों,केजीबीवी शिक्षिकाओं एवं संदर्भ व्यक्तियों हेतु 10 दिवसीय आईसीटी प्रशिक्षण ● शाला-सिद्धि प्रशिक्षण (प्रति ब्लॉक संस्था प्रधान) ● केजीबीवी शिक्षिकाओं हेतु विषयवार कार्यशाला।

आदेश-परिपत्र : सितम्बर, 2017

1. 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' के अन्तर्गत जिले की दो मेधावी व बी.पी.एल. परिवार की एक मेधावी (Meritorious) छात्राओं को वित्तीय वर्ष : 2017-18 से वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाने बाबत।
2. गो विज्ञान एवं सामान्य ज्ञान परीक्षा आयोजन के सम्बन्ध में।
3. शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा 9 आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2017 के आयोजन में सहयोग प्रदान करने बाबत। (माध्यमिक शिक्षा)
4. भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2017 में सहयोग करने हेतु। (प्रारंभिक शिक्षा)
5. विद्यालय प्रसारण।

1. 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' के अन्तर्गत जिले की दो मेधावी व बी.पी.एल. परिवार की एक मेधावी (Meritorious) छात्राओं को वित्तीय वर्ष : 2017-18 से वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाने बाबत।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● क्रमांकः-शिविरा/माध्य/मा/बाप्रोयो/मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना/2016-17 दिनांकः 16.08.2017 समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) विषयः 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' के अन्तर्गत जिले की दो मेधावी व बी.पी.एल. परिवार की एक मेधावी (Meritorious) छात्राओं को वित्तीय वर्ष : 2017-18 से वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाने बाबत। ● प्रसंगः शासन का पत्रांकः प.17 (11) शिक्षा-1/2015 जयपुर, दिनांकः 16.10.2015 05.05.2016 व 12.07.2016 व इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 1.8.16 के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत शासन के प्रासंगिक निर्देशों के क्रम में लेख है कि 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' के अन्तर्गत राजकीय विद्यालयों में अध्ययनत राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सैकण्डरी परीक्षा में प्रत्येक जिले की दो मेधावी (Meritorious) छात्राओं को वित्तीय वर्ष 2015-16 से वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। शासन के प्रासंगिक पत्र दिनांक 5.5.16 द्वारा निर्देशित किया गया है कि इस योजना के अन्तर्गत पूर्व वर्ष की भाँति जारी निर्देर्शों के अनुसार दो मेधावी छात्राओं को वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाने के अतिरिक्त बी.पी.एल. परिवार की एक जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली मेधावी छात्रा को भी सम्मिलित किया जाना है।

इस हेतु आपको बोर्ड से सत्र 2017 परीक्षा में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाली पात्र तीन छात्राओं की सूची (दो सर्वोच्च अंक एवं एक बी.पी.एल. सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली) की सॉफ्ट कॉपी सलंग्न कर प्रेषित की जा रही है। यह भी निर्देशित किया जाता है कि आप अपने स्तर पर उक्त विद्यालयों से जानकारी प्राप्त कर संलग्न सूची में से सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली बालिकाओं के चयन की पुष्टि करेंगे। इन बालिकाओं के चयन के सम्बन्ध में यह भी स्पष्ट किया गया था कि बी.पी.एल. परिवार की छात्राओं के सन्दर्भ में यदि दो बालिकाओं के अंक समान है तो शासन के पत्र दिनांक 12.7.16 के बिन्दु 2.4 के अनुसार राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर की कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में समान अंक होने पर जिस बालिका के क्रमशः गणित, विज्ञान, अंग्रेजी में अधिक अंक होंगे उसका चयन किया जाएगा। इन विषयों में भी समान अंक होने पर अधिक उम्र वाली बालिका का चयन करें।

यह भी सुनिश्चित करें कि गत वर्ष की चयनित बालिकाओं को इस वर्ष की सहायता राशि आवश्यक रूप से उपलब्ध करवा दी गई है, यदि नहीं करवाई गई है तो उसके लिए भी बालिका फाउण्डेशन से राशि प्राप्त कर तत्काल उपलब्ध करावें।

● उप निदेशक (माध्यमिक), माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. गो विज्ञान एवं सामान्य ज्ञान परीक्षा आयोजन के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● क्रमांक-शिविरा/माध्य/मा-स/22496/विविध परीक्षा/2015-16/ दिनांक : 09.08.2017 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा-प्रथम/द्वितीय ● विषयः गो विज्ञान एवं सामान्य ज्ञान परीक्षा आयोजन के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रांसगिक पत्र के साथ संलग्न क्षेत्रीय प्रभारी अधिकारी परम पूज्य माधव गो-विज्ञान अनुसंधान समिति, जोधपुर के पत्र दिनाक : 23.06.2017 में निर्देशानुसार लेख है कि गो-विज्ञान अनुसंधान एवं सामान्य ज्ञान परीक्षा दिनांकः 14 सितम्बर, 2017 को आयोजित होगी। इस सम्बन्ध में आपको निर्देशित किया जाता है कि आप अपने अधीनस्थ संस्थाप्रधानों को उक्त परीक्षा के आयोजन हेतु सहयोग प्रदान करने हेतु पाबन्द करें। साथ ही आगामी वर्षो के लिए उक्त परीक्षा करवाने की स्थायी अनुमति भी प्रदान की जाती है।

● **(विजय शंकर आचार्य)** उप निदेशक (माध्यमिक) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2017 के आयोजन में सहयोग प्रदान करने बाबत। (माध्यमिक शिक्षा)

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● क्रमांकः-शिविरा/माध्य/मा/स/22448/2014/16 दिनांकः 12.05.2017 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय ● विषयः शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2017 के आयोजन में सहयोग प्रदान करने बाबत।

● प्रसंगः राज्य सरकार का पत्रांकः प.16(36) शिक्षा-6/2004, जयपुर, दिनांकः 23.09.2014 एवं जिला सचिव, भा.सं.ज्ञा. परीक्षा प्रकोष्ठ, बीकानेर का पत्रांकः भासंज्ञाप/2017/04 दि. 05.05.2017

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार द्वारा प्रासंगिक पत्र में पूर्व प्रदत्त निर्देशों के क्रम में जिला सचिव, भा.सं.ज्ञा. परीक्षा प्रकोष्ठ, बीकानेर द्वारा अवगत करवाया गया है कि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2017 का आयोजन **09 नवम्बर-2017 (गुरुवार) को दोपहर 12.00 बजे से 1.00** बजे तक किया जाएगा, जिसमें कक्षा-5 से 12 तक के विद्यार्थी भाग ले सकेंगे।

शासन के प्रासंगिक निर्देशों के क्रम में लेख है कि अधीनस्थ संस्थाप्रधानों को विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी उक्त परीक्षा के सुचारू संचालन हेतु आयोजकों को वांछित सहयोग प्रदान करने हेतु निर्देशित करें।

● **(अरुण कुमार शर्मा)** उप निदेशक (माध्यमिक) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2017 में सहयोग करने हेतु। (प्रारंभिक शिक्षा)

● कार्यालय-निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः-शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/विविध/11-12/52 दिनांकः 18.05.2017 ● उप निदेशक प्रारंभिक शिक्षा (समस्त), जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक शिक्षा (समस्त) ● विषयः शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2017 में सहयोग प्रदान करने हेतु। ● प्रसंगः शासन का पत्रांकः प.16(36) शिक्षा-6/2004, जयपुर, दिनांकः 23.09.2014 एवं जिला सचिव, भा.सं.ज्ञा. परीक्षा प्रकोष्ठ, बीकानेर का पत्र दिनांकः 05.05.2017

उपर्युक्त विषय एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में जिला सचिव, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ, शांति कुंज हरिद्वार (उत्तराखण्ड), जिला शाखा बीकानेर द्वारा यह अवगत कराया गया है कि विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा भारतीय संस्कृति परीक्षा का आयोजन दिनांक **09 नवम्बर 2017, गुरुवार को दोपहर 12.00 से 01.00 बजे** तक करवाया जा रहा है।

अतः आप अपने अधीनस्थ संस्थाप्रधानों को उक्त परीक्षा में वांछित सहयोग प्रदान करने हेतु निर्देशित करें।

● **अतिरिक्त निदेशक (शैक्षिक)**, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

माह : सितम्बर, 2017

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
1.9.2017	शुक्रवार	जयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	6	भारत में राष्ट्रीयता
4.9.2017	सोमवार	उदयपुर	9	संस्कृत (तृ. भाषा)	5	शश-गजराज-कथा
5.9.2017	मंगलवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		शिक्षक दिवस-उत्सव
6.9.2017	बुधवार	उदयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	6	बीज बना पौधा
7.9.2017	गुरुवार	जयपुर	4	हिन्दी	7	वीर बालक अभिमन्यु
8.9.2017	शुक्रवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		विश्व साक्षरता दिवस
9.9.2017	शनिवार	जयपुर	8	विज्ञान	7	रक्त परिसंचरण
11.9.2017	सोमवार	उदयपुर	10	हिन्दी (अनिवार्य)	7	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
12.9.2017	मंगलवार	जयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	7	जनसंख्या
13.9.2017	बुधवार	उदयपुर	12	हिन्दी-।	7	आत्म-परिचय, एक गीत
14.9.2017	गुरुवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		हिन्दी दिवस-उत्सव
18.9.2017	सोमवार	उदयपुर	9	विज्ञान	7	जैव विविधता
19.9.2017	मंगलवार	जयपुर	9	संस्कृत (तृ. भाषा)	7	प्रेरणा-पुंजः विवेकानन्दः
20.9.2017	बुधवार	उदयपुर	3	हिन्दी	8	गीत यहाँ खुशहाली के
22.9.2017	शुक्रवार	जयपुर	7	हिन्दी	8	चंद्रशेखर आजाद
23.9.2017	शनिवार	उदयपुर	5	हिन्दी	8	नया समाज बनाएँ
25.9.2017	सोमवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	8	जीव-जंतुओं की निराली दुनिया
26.9.2017	मंगलवार	उदयपुर	6	विज्ञान	9	पौधों के प्रकार एवं भाग
27.9.2017	बुधवार	जयपुर	10	हिन्दी (अनिवार्य)	9	ऋतुराज
29.9.2017	शुक्रवार	उदयपुर	4	हिन्दी	10	कूड़ेदान की कहानी अपनी जुबानी

● निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

शिक्षा के सारथी

❐ ओम प्रकाश सारस्वत

बालिका शिक्षा के उन्नयन की दिशा में अन्तर्मन से सहयोग करने को सतत तत्पर श्री जस्साराम चौधरी, राजस्थान प्रशासनिक सेवा (RAS) के वरिष्ठ अधिकारी हैं। हाल ही में बालिका शिक्षा के लिए साढ़े सात लाख रुपये दान करने की घोषणा कर इस दिशा में सकारात्मक वातावरण बनाने का सराहनीय कार्य आपने किया हैं। पहली फरवरी 1958 को नागौर जिले की डीडवाना तहसील के गाँठ बेमोठ में जन्मे श्री चौधरी का राजस्थान प्रशासनिक सेवा में 1984 में चयन हुआ। आप राजनीति विज्ञान में अधिस्नातक हैं। शिक्षा, विशेषकर बालिका शिक्षा के लिए तन-मन-धन से सहयोग करने का आपका उदात्त भाव वंदनीय व अनुकरणीय है। आप अगले वर्ष जनवरी, 2018 में सेवानिवृत होंगे। सामान्यतः सेवानिवृत होने वाले कार्मिक सेवानिवृत्ति पर प्राप्त होने वाले परिलाभों को निवेश करने के लिए योजनाएँ बनाते हैं, मगर श्री जस्साराम चौधरी इसके अपवाद हैं। सेवानिवृत्ति पर जमा उपार्जित अवकाश के नगदीकरण पेटे पन्द्रह लाख रुपये मिलने सम्भावित हैं। इस राशि का आधा 7.50 लाख रुपये बालिका शिक्षा हेतु सहर्ष दान में दे रहे हैं। क्यों, है न अद्भुत निवेश। **समाज से पाया-समाज को लौटाया** की यह शानदार नज़ीर है। मुख्यमंत्री महोदया ने आपके इस अवदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की है जो हमारे लिए गर्व की बात है।

बालिका शिक्षा के लिए अमृतभाव शुरु से ही आपके हृदय में हिलोरे लेते रहे हैं। अपने मातृ जिले नागौर में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आपने परिजनों, साथी मित्रों, भामाशाहों को अभिप्रेरित कर ग्रामोत्थान विद्यापीठ की स्थापना में अग्रणी भूमिका निभाई और इस पावन यज्ञ में ग्यारह लाख रुपये की अर्थाहुति प्रदान कर परिवार का गौरव बढ़ाया। यह उल्लेखनीय है कि ग्रामोत्थान विद्यापीठ के तत्वावधीन डीडवाना एवं नागौर में बालिकाओं के लिए उच्च माध्यमिक स्तर के प्रतिष्ठित विद्यालय संचालित हैं जिनमें हजारों बालिकाओं

ने शिक्षा ग्रहण की/कर रही हैं। आप अनेक शिक्षा संस्थाओं के प्रवर्तक, पोषक, मार्गदर्शक एवं हितैषी हैं।

राजस्थान प्रशासनिक सेवा अधिकारी के रूप में आपकी सेवाएँ सदैव प्रतीमानकारी रही है। विकास अधिकारी, उप खण्ड अधिकारी, सचिव, राजस्थान आवासन बोर्ड, सचिव, राजस्थान पाठ्य पुस्तक मण्डल, अतिरिक्त आयुक्त, वाणिज्य कर विभाग, अतिरिक्त आयुक्त, खाद्य विभाग एवं जनगणना विभाग सभी में आपने अपने कार्य एवं व्यवहार की छाप छोड़ी है। आप एक कुशल अधिकारी से पूर्व एक श्रेष्ठ इन्सान हैं, जिनके व्यक्तित्व में मक्खन-सी कोमलता एवं चट्टान-सी दृढ़ता के सहज ही में दर्शन होते हैं।

ग्राम विकास को समग्र विकास का बीज मानने वाले श्री चौधरी आधा दर्जन जिलों में जिला परिषद के सी.ई.ओ/ए.डी.एम (डवलपमेंट) रहे हैं। आपकी साधना को शासन द्वारा आपको Best CEO का एवार्ड देकर सम्मानित किया है। विगत तीन वर्षो से आपने अतिरिक्त परियोजना निदेशक, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद (अब राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद) के रूप में कार्य करते हुए प्रदेश को शिक्षा के क्षेत्र में 'नम्बर वन' बनाने की दिशा में जो अप्रतिम योगदान दिया है, वह सर्वपरिचित-सर्वमान्य है।

संयुक्त निदेशक (प्रशिक्षण),
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414060038

जीवन राग

❐ सूर्य प्रकाश जीनगर

खेजड़ी से लिपटकर
बयार ने
कदम रखा
मेरे मन के आँगन में
ओ कवि!
छू लूँ जरा
पोर-पोर....
कैसा है
तुम्हारा अंतस...?
मेरा मधुर राग
सुनाई देता है
होले से
बताओ जरा...।
मेरे आँचल को
विकास की भेंट चढ़ाकर
तब्दील कर दिया
कंकरीट के जंगल में...।
जहाँ-तहाँ खड़े हैं
प्रदूषण के बड़े-बड़े केन्द्र
मेरे जीवन का राग
उनमें कहीं दफन हो रहा है
देखो तुम!
ये अकाल पीड़ित
मरुधरा...
वहाँ भी
नया जीवन रचने को
बाट जोह रही है
प्यासी धरती का जर्रा-जर्रा
क्या तुम लिखोगे
मेरे मन का गीत
मन मीत बनकर
लोक की पुकार सुनकर।

वरिष्ठ अध्यापक
253-ए, 'हरिसदन', इन्दिरा कॉलोनी, फलोदी
जिला जोधपुर (राज.) 342301
मो: 9413966175

अनुसंधान प्रेमी डॉ. विद्यासागर शर्मा

❒ डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर

एक बार नदी बनकर देखो। बहते रहने का अनुभव होने दो, तरंगें उठने दो। फिर बहना नहीं छोड़ सकते, चाहे कितना दूर चले जाएँ। उनके बहने का कल-कल संगीत, अंतर्मुखी और अलख होने पर भी, सदा हृदय में अनुगूँजतर रहेगा। कुछ इस तरह जिये थे विद्या सागर, आसक्ति से विरक्ति तक। वो उस अंतरालय के संगीत थे, जहाँ मंदिर, मज़्जिद, चर्च आदि अपनी पहचान तलाश करते-करते उसकी पहचान बन जाते हैं। उनकी अनुसंधान-चेतना का ऐसा प्रभाव था कि वो सतत प्राणों को ऊर्जा देता हुआ समग्र मानवता को उस कल-कल ध्वनि का सहयात्री बनने की प्रेरणा देता था।

एम.एससी., एम.एड., पी.एचडी. (शिक्षा) उपाधियों से अलंकृत उस पक्षी ने उड़ान भरना भीलवाड़ा के एक स्कूल से शुरू किया था और एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर में अनुसंधान अधिकारी बनकर उन्होंने पूरी निष्ठा और समर्पण से इतना कार्य किया, जिसकी गूँज एन.सी.इ.आर.टी., नई दिल्ली तक होने लगी।

जब सरकारी चाकरी सेवा बनने लगती है, तब अनुभूतियों की लहरों का संगीत ऐसा बाँधने लगता है कि चाहकर भी व्यक्ति अपने को उससे अलग नहीं कर सकता। विद्या सागर शर्मा इसी अंतरंगता से जुड़ कर यह विस्मृत करने लगे कि वे आठ घंटे की चाकरी पर हैं, दिन रात के नहीं - हर समय उठते-बैठते एक ही धुन कि मेरे देश का विद्यार्थी समस्त मानवता का प्रेमी बनकर अपने सपनों को साकार करे, ताकि धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी और बराबरी के समाज की जो उन्होंने संकल्पना की है, वह चरितार्थ हो।

शिक्षा प्रक्रिया से जुड़े साधनों को इतना सरल-सुबोध और प्राणवान बनाओ कि वह विद्यार्थी के जीवन का संगीत बन जाए। उन्होंने पचासों शिक्षक प्रशिक्षण का नेतृत्व कर एक ही संदेश दिया ''मेरे शिक्षकों, आप सब द्रोणाचार्य हो पर एक बार एकलव्य बनने की कोशिश तो करके देखो, फिर आप अपने होने की शिखर चूमती ऊँचाइयों का डॉ. कलाम की तरह आनंद ले सकोगे।''

डॉ. विद्या सागर शर्मा का एकमात्र अनुसंधान यही था कि साधन को साध्य बनाना है। साधन साध्य बन गया तो व्यक्ति को धरती पर स्वर्ग उतारने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, क्यूँकि धरती ही स्वयं स्वर्ग बन जाएगी।

यही कारण था जब विद्या सागर ने शिक्षा के प्रशासनिक क्षेत्र का उत्तरदायित्व अतिरिक्त शिक्षा अधिकारी, प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी और उपनिदेशक जैसे पदों पर सम्भाला तब भी उनके मन में एक शिक्षक और एक बालक की संस्कृति और संस्कार जड़ पकड़े रहे, और शिक्षक को समस्या मुक्त करने का अभियान चलाया - पत्र लिखो, अपने स्थान पर बैठे समाधान पाओ और उलझन बने तो कारण जान सहयोग करो। उनका मित्रवत साधु व्यवहार, कर्मनिष्ठा, तत्परता, समर्पण और सेवा सद्भाव ने जहाँ भामाशाह योजना से जोड़ा और अंत में सेवानिवृत्ति के बाद भी वे राजस्थान महिला टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, उदयपुर के प्राचार्य पद को सुशोभित कर सके। यथार्थ ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी, शिक्षा जगत के सच्चे सेवी और अनुसंधान प्रेमी को क्या कभी भूला जा सकता है!

105, सेक्टर 9-A,
हिरण मगरी, उदयपुर-313002
मो. 7597207563

अंतरात्मा का सहारा पकड़ो

यदि तुम शाँति, सामर्थ्य और शक्ति चाहते हो तो अपनी अंतरात्मा का सहारा पकड़ो। तुम सारे संसार को धोखा दे सकते हो किंतु अपनी आत्मा को कौन धोखा दे सका है? यदि प्रत्येक कार्य में आप अंतरात्मा की सम्मति प्राप्त कर लिया करेंगे तो विवेक पथ नष्ट न होगा। दुनिया भर का विरोध करने पर भी यदि आप अपनी अंतरात्मा का पालन कर सके तो कोई आपको सफलता प्राप्त करने से नहीं रोक सकता।

जब कोई मनुष्य अपने आपको अद्वितीय व्यक्ति समझने लगता है और अपने आपको चरित्र में सबसे श्रेष्ठ मानने लगता है, तब उसका आध्यात्मिक पतन होता है।

पृष्ठ 62 का शेष भाग...

नारी का हृदय भावुक अधिक होता है। सुकुमार भावनाओं पर व्यंग्य और ताना कसी का अधिक प्रभाव होता है। उसके जीवन में सौंदर्य के प्रति अनुराग के कारण शृंगारिक वस्तुओं की अधिक आवश्यकता होती है, जिनकी पूर्ति न होने पर जीवन मृगतृष्णा ही बनकर रह जाता है। मनुष्य में वंशानुक्रम से अर्जित पैतृक गुण मनुष्य में आते हैं। प्रणय सूत्र बंधन के लिए वंश, परिवार और आसपास के परिवेश की जाँच की जानी चाहिए। निर्धन परिवार के पुरुष का सम्पन्न परिवार की नारी से सामंजस्य नहीं बैठ पाता है।

अज्ञानता से भी मनुष्य का हृदय अंधकार से भरा रहता है। ज्ञान के दिव्य प्रकाश से मानव का मन आलौकित हो उठता है। जीवन मार्ग सुगम बन जाता है। व्यवहार में प्रेम का बीज प्रस्फुटित करने वाली हमारी अमृतमयी वाणी है। मृदुवाणी दूसरे के चित्त में पड़े घाव पर मरहम करने वाली अचूक दवा है। मूड का बनना और बिगड़ना रसना का चमत्कार है। यदि कोई वाणी में मिठास उत्पन्न कर शब्द सुमन की वर्षा करता है तो श्रवण करने वाले को शान्ति मिलती है। मन की शान्ति कर्म के मार्ग को प्रशस्त करती है। अतः समाज में सुख-शान्ति और समृद्धि के लिए संतुलित चित्तवृत्ति रहना आवश्यक है। मानव की मन पर विजय सर्वोपरि है जो मानव को स्थायी शान्ति और आनन्द की ओर ले जाती है।

सेवानिवृत्त व्याख्याता
घूमचक्कर, नवलगढ़, झुंझुनूँ (राज.)
मो: 9461661412

सुख-चैन से जीना हो तो ...

❐ दिनेश विजयवर्गीय

आज की इस भागम-भाग और भौतिक सुख-सुविधा वाली दुनिया में सीधे-साधे आदमी को भला कौन पूछता है? भले ही वह समाज में रामजी की गाय बना रहे पर कोई भी उसकी सीधी-साधी सहनशील छवि की तरफ झाँकता तक नहीं। सीधा व्यक्ति अपने भीतर छिपे गुणों का सही मूल्यांकन नहीं कर पाता। वह तो सीमित सुख में चुप-चाप जीना पसंद करता है। पर एक बात तो उसे सदा सालती रहती है कि लोग उसके सीधेपन का इतना फायदा उठाते हैं कि लोग उसकी ओर निगाह उठाकर भी कभी सम्मान भाव से नहीं देखते। वह अपनी उपेक्षा भाव के चलते अपने व्यक्तित्व की छाप समाज में नहीं छोड़ने के कारण दुखी बना रहता है।

मेरी उपलब्धियों के चलते अक्सर लोग आते और मेरी क्षमताओं को मुफ्त में भुनाकर चलते बनते। कभी कोई पड़ौसी कहता हमारा बच्चा वाद-विवाद में भाग ले रहा है, कुछ इस तरह से सारगर्भित लिख दें कि प्रथम पुरस्कार उसी के हिस्से में आए। प्रथम प्रतियोगी के स्थान के लिए मैं एकांत में बैठ चिंतन करता, फिर चंचल मन को कन्ट्रोल कर शुद्ध दूध की स्पेशल चाय पी घंटा भर गर्दन झुकाए लिखता। मेहनत व एकाग्रता से लिखा सब कुछ प्रथम पायदान पर आता पर विजेता या उसके परिजन धन्यवाद देने तक भी नहीं आते। भला कौन सीधे व फोकटिया आदमी का सम्मान करे।

पिछले दिनों एक संस्था के प्रधान का स्थानान्तरण हुआ। उस संस्था से दो व्यक्ति आए और अलग से हटकर आकर्षक अभिनन्दन पत्र बनाने का आग्रह किया। वे बोले जानकार लोग कहते हैं कि आपके लिए इसे निर्मित करना बाएँ हाथ का काम है। दो दिन की चिन्तन भरी मेहनत से मैं लिख पाया यह अभिनंदन पत्र। मन थक गया और कमर टूट कर मैथी पालक हो गई। तभी एक दिन वह बिना दरवाजा खटखटाए हँसते हुए आए और अधिकार जताते से उसे ले गए। जाते-जाते दरवाजे तक पहुँचकर धन्यवाद दे गए। मैं कुछ बोलता तब तक वह यह गए-वह गए।

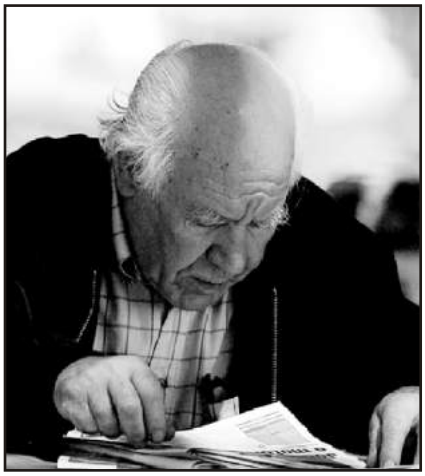

चुनाव के समय एक पार्टी के कार्यकर्त्ता आए और कहने लगे- सर आपकी रचना और लेख लोगों के दिलों में सीधे-सीधे उतर कर प्रभाव छोड़ते हैं। हम चाहते हैं कि आप बेहतरीन शब्दों का चयन कर हमारी पार्टी के नेता के लिए कुछ लोक-लुभावन विज्ञापन बना दो और कुछ चाकलेटी प्रभाव छोड़ने वाले नारे लिख दो। जिन्हें पढ़कर लोगों को लगे कि 'जीता तो अच्छे दिन आने वाले हैं।'

वे दो दिन बाद नेता की गाड़ी में बैठकर आए और तैयार माल ले गए। पैसे के लिए कुछ कहता तभी उन्होंने अपने नेता की मोबाइल पर बात करवा दी। वह बोले आश्वस्त रहें पैसा चुनाव के बाद पहुँच जाएगा।

मैं कई दिनों तक सोचता रहा कि कुछ ऐसा परिवर्तन स्वयं में ही किया जाए कि लोग अचंभित हों। मेरा नाम और अधिक चर्चित हो। लोग तो आज चर्चित होने के लिए क्या कुछ नहीं करते?

जंगल में सीधे पेड़ जल्दी कटते हैं। व्यावहारिक जीवन में भी जब सीधी अंगुली से काम न चले तो टेढ़ी करने में ही सार दिखलाई देने लगता है।

आखिर मैंने भी अपनी नई छवि बनाने और चर्चा का विषय बने रहने के लिए गर्वित बनने का विचार बनाया। गर्वित व्यक्ति को दूसरे लोग भले ही घमण्डी समझ कर बुरा-भला कहे पर उसका प्रभाव तो समाज में पूर्णिमा के चन्द्रमा की तरह नहीं तो गर्म लाल सुर्ख लोहे की तरह तो चमकने लगता ही है। उसे आत्म संतुष्टि मिलती है।

घमण्ड करने के भी कई फायदे हैं। इसे आत्मा में प्रवेश करा लेने के बाद आत्मविश्वास कभी कम नहीं होता। आप अपने तरल-सरल व सहज स्वभाव के विपरीत क्षमता स्थापित कर भीड़ से अलग नजर आएँगे। लोग आपके बदले व्यक्तित्व से अचंभित होंगे। आप सदा एक ही सदाबहार घमंड में रहकर अपने को गौरवान्वित महसूस करेंगे और सहज ही जीते रहने का सुख भोगते रहेंगे। धीरे-धीरे आपकी जीवनशैली में बहुत अधिक बदलाव आने लगता है।

आखिर मैंने गर्वित बनने की सोच बनाए रखने का महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया। सीधे-साधे बने रहने वाली छवि की पोटली बाँधकर मकान के पिछवाड़े खूँटी पर लटका दी और घमण्ड की भारी भरकम मणियों की माला को गले में डाल लिया।

सुबह नाश्ते से निवृत्त हो मैं नया कुछ लिखने ही लगा था कि बाहर की घंटी दनदनाई। पत्नी ने बाहर की ओर झाँका। फिर मुझसे दबी जुबान में कहा रामास्वामी आए है। रामास्वामी मेरा यदाकदा मिलने वाला मित्र था। पर मैंने अपने निश्चयानुसार घमण्डी व्यवहार के अन्तर्गत नहीं मिलने का निश्चय कर लिया। सो पत्नी से कहलवा दिया। अभी व्यस्त हैं। शाम को पाँच से सात के बीच मिलेंगे।

बेचारा! रामास्वामी इस नए अप्रत्याशित उत्तर को सुन दंग रह गया। उसे कुछ समझ नहीं पड़ा, मेरे इस बदले व्यवहार के बारे में। वह बड़बड़ाता हुआ पीठ मोड़कर घमण्डी होने लग गया क्या? सोचता हुआ चला गया।

मैं चुपचाप खिड़की के झूलते पर्दे की ओट से उसकी फेस रीडिंग कर रहा था। पर मैं अपना पहला तीर सही निशाने पर लगने से खुश था और मन ही मन संतुष्ट हो रहा था। अब देखो बच्चू, सबको अपना महत्त्व जता दूँगा। लोगों ने मुझे अब तक मिश्री बनकर बहुत ठगा। पर अब

किसी के झाँसे में आने वाला नहीं। अब नीम की निम्बोली की कड़वाहट का सामना करो।

पत्नी भी मेरे इस नये बदलाव पर चिंतन करने लगी। उसे समझ नहीं पड़ा कि सपाट ढलान वाली सड़क में यह एकाएक स्पीड ब्रेकर कैसे आ गया? कुछ दिनों पूर्व एक मिलने वाले अखबार के संपादक का पत्र आया कि शिक्षा पर 'विशेषांक' निकालने जा रहे हैं। जल्द ही कोई तेज धारवाला लेख भेज दें। मैंने उनके पत्र का जवाब लौटती डाक से न देकर मोबाइल पर उन्हें बता दिया-अब मैंने पूर्व के लेखकीय रिश्तों में बदलाव कर दिया है। अब सिर्फ पारिश्रमिक आधार पर ही लिखने की स्वस्थ परम्परा स्थापित कर ली है। उचित लगे तो सोचकर बता दें।

वो कहने लगे, अरे भैया! यह तुम्हें एकाएक लक्ष्मी का पहाड़ा कैसे याद आने लगा। क्या घर के खर्चे बढ़ गए? आपको सरकार घर बैठे पेंशन दे रही है वो ही क्या कम है?

पर मैं टस से मस नहीं हुआ। लोगों से कहता कि अब नए मापदण्ड स्थापित किए हैं। यदि लेख लिखवाना हो तो मेरी शर्त के अनुसार सम्मान करना होगा, नहीं तो टेलीफोन की घंटी किसी दूसरे के यहाँ बजाओ।

मैं पिछले दिनों तक प्रतिदिन मॉर्निंग वाक हेतु हँसते-खिलखिलाते तथा गपशप लड़ाने वालों के साथ जाया करता था। पर अब मैंने सबका साथ छोड़ दिया और अलग से ही सैर को जाने लगा। वो मेरे बदले व्यवहार पर चिंतन करने लगे। संयोग से एक दिन वे मिल गए उन्होंने कहा लगता है घमण्डी हो गए हो?

मैं खुश हूँ कि अब मैं समाज की अहम्वादी मुख्यधारा से जुड़ गया और खोई हुई प्रतिष्ठा का सच्चा हकदार बन गया। कुल मिलाकर गर्व के साथ जीना सीख गया। यदि आप ज्यादा सीधे हैं तो आप भी कोशिश करो।

किसी ने ठीक ही कहा है कि-

''भीड़ के साथ गलत दिशा में जाने के बजाय उचित दिशा में अकेले ही प्रस्थान करो।''

215, मार्ग-4 रजत कॉलोनी
बून्दी-323001 (राज.)
मो: 9413128514

ऐसा होना चाहिए,
ऐसा नहीं होना चाहिए
यह अशांति का मंत्र है।

गुरु एवं शिष्य, भुशुंडि और गरुड़

❐ **रमेश कुमार शर्मा**

भू-कण-कण की गंध मोहिनी
भर मादक रस जल कण-कण का
ज्वलन अग्नि का, सरण वायु का
भर मदमाया शब्द गगन का।

अतः जगा देहाभिमान या
संशय ही खगपति के मन में
'नागविद्ध कैसे नारायण,
लक्ष्मी कैसे असुर-भवन में?

मेरे चंचु-प्रहार मात्र से
यह अहिगण जो छिन्नभिन्न है
उनकी पाश बाँध दे जिसको
क्या सच में वह नारायण है?

श्रीमन्नारायण तो वे हैं
शेषनाग जिनकी शैया है
मधु, कैटभ जैसे असुरों का
श्रीहरि ने संहार किया है।

तो कैसे श्रीहरि बँध सकते
रावण-रचित नाग-बंधन में;
राम न हो सकते नारायण'
संशय जन्मा खग के मन में।

भ्रमराते त्रिलोक-विचरण कर
गर्वित गरुड नीलनग आये
रामकथावाचक भुशुंडि की
व्यासपीठ के दक्षिन पाये।

पावन रामकथा सुनते थे
विहगवृन्द अति तन्मयता से
कागभुशुंडि कथा गाते थे
निश्छलता से, निर्मलता से।

कथा-अंश कुछ सुना गरुड ने
कागप्रवर के वचन सुपावन
रसधारा, ज्यों हरिचरणों से
झरता गंगोदक मनभावन।

'सकल कार्य करते हैं श्रीहरि
मंगलकरण, अमंगलहर्ता
किंतु श्रेय देते भक्तों को
रहते स्वयं अलिप्त, अकर्ता।

सकल लोक, भुवनों पर अपना
वरद हस्त रखते जगदीश्वर
किंतु अदितिसुत सूर्यदेवता
ही कहलाते हैं भुवनेश्वर।

कालरात्रि बन निशाचरों की
लक्ष्मी कनककोट में आईं
लंकादहन, जानकी-सुधि की
कीर्ति अंजनासुत ने पाई।

शेष समेत शेषशायी हरि
नागपाश में बँध जाते हैं
नागपाश के विच्छेदन का
यश विनितानंदन पाते हैं।'

काग-वचन सुन विनितानन्दन
जान गये, हरि हैं रघुनन्दन
पंचभूत, मन पर आत्मा का
स्थापित सहज हो गया शासन।

सजल नेत्र, गतगर्व गरुड तब
नतशिर व्यासपीठ तक आये
'स्वागत, आसन लें विहंगेश्वर'
कागप्रवर के वचन सुहाये।

विनीत गरुड ने कहा 'भक्तवर!
मुझे न कृपया कहें खगेश्वर
मैं भूला-भटका पक्षी हूँ
अपनी शरण लीजिए गुरुवर।

हे गुरुदेव! कागकुलभूषण!
मैं अभिमानी भ्रमराया हूँ
मैं कलुषित, निज कल्मष धोने
रामकथा सुनने आया हूँ।'

6-134, मुक्ताप्रसाद नगर, बीकानेर (राजस्थान) 334003
मो: 9636291556

उड़ान

❐ विद्या टेलर

बालिका शिक्षा में आया एक नया अभियान।
उड़ान से होगी चाँद-तारों से दूर हमारी उड़ान।।
अपनी सखी-सहेलियों के संग,
मैं भी स्कूल जाऊँगी।
खैल-खिलौने गुड्डे-गुड़िया के,
अब मैं भूल जाऊँगी।।
सजा मेरे दिल में पढ़ने-लिखने का अरमान।
उड़ान से होगी चाँद-तारों से दूर हमारी उड़ान।।
रजत सी मैं भी चमकूँगी बनकर साक्षी मलिक।
लक्ष्य साधे बिना न रुकूँगी राह में भी तनिक।
हो लहरे विपरीत या विपरीत हो कोई तूफान।
उड़ान से होगी चाँद-तारों से दूर हमारी उड़ान।।
हर आँगन की हर कन्या अब भारती बन जाएगी
पढ़-लिखकर मानव मूल्यों की आरती बन जाएगी।
नवीन सभ्यता के सृजन में यह है
हर बेटी का फरमान
उड़ान से होगी चादँ तारों से दूर हमारी उड़ान।।
स्वच्छ भारत, सुन्दर भारत में,
सुन्दर मेरा सपना होगा
अब भारत माँ की रक्षा मैं,
इस बेटी का खून-पसीना होगा।
हिमालय से भी हैं ऊँची, मेरे हौंसलों की परवान।
'उड़ान' से होगी चाँद-तारों से दूर हमारी उड़ान।।
अब न ये मानवी अबला कहलाएगी।
बल में दुर्गा, त्याग में पन्ना बन जाएगी।
सतीत्व की रक्षा में थामेगी सावित्री की कमान।।
'उड़ान' से होगी चाँद-तारों से
दूर हमारी उड़ान।।

अध्यापिका
राउप्रावि. गणेशपुरा, पहुँना, जिला-चित्तौड़गढ़
मो: 9413628802

शौचालय की अलख

❐ सत्तार अली

शौचालय की जिद में लगे,
किशोर मेरे गाँव के।
अलख जगाने में लगे हैं,
लोग मेरे गाँव के।।
महिलाओं की लाज बचाने,
बेटियाँ अब निकल पड़ीं।
घर में शौचालय बनाने की,
जिद पे वो हैं अब अड़ी।।
बात समझने लगे अब,
भाई बहिन गाँव के।
अलख जगाने में लगे हैं,
लोग मेरे गाँव के।।
खुले में शौच लाती है,
कई कई बीमारियाँ।
दूर कितनी ही छोड़ो,
गंदगी लाती हैं मक्खियाँ।।
अब जरूरत को समझते,
लोग मेरे गाँव के।
अलख जगाने में लगे हैं,
लोग मेरे गाँव के।।
रोग में रहती हैं कितनी,
मुश्किलें सबको बड़ी।
वर्षा, अंधेरों में घटती,
जो विपदा की घड़ी।।
स्वच्छता लाने में लगे,
युवक मेरे गाँव के।
अलख जगाने में लगे हैं,
लोग मेरे गाँव के।।
दूर जाने में थी कितनी,
बूढ़ों को परेशानियाँ।
घर में शौचालय बना तो,
खिल उठीं नव रानियाँ।।
अब बूढ़ों का दुख समझते,
लोग मेरे गाँव के।
अलख जगाने में लगे हैं,
लोग मेरे गाँव के।।
गली-गली में जा रहीं,
कर्मचारी टोलियाँ।
स्वच्छ देश बनाने की,
गूँज रही हैं बोलियाँ।।
अब शौच खुले में ना करें,
लोग मेरे गाँव के।
अलख जगाने में लगे हैं,
लोग मेरे गाँव के।।

अध्यापक
वार्ड नं. 16, भवानीनगर, नैनवाँ,
तह. नैनवाँ, जिला-बूँदी 323801

बचा न सके बेटी को

❐ रतन लाल जाट

लाखों का खेड़ा, पोस्ट-भट्टों का बामनिया
तह. कपासन, जिला-चित्तौड़गढ़ 312202
मो: 9636961409

कौन रंगोली बनाएगा किसको हम झुलाएँगे
कौन मेंहदी रचायेगा किसको डोली में बिठाएँगे
बचा न सके बेटी को तो फिर दुःख बढ़ेगा न क्यों
दे न सके दुलार तो हृदय होगा फिर विशाल क्यों
कली न होगी फूल कैसे खिलेगा
नदी ना होगी सागर कैसे भरेगा
कौन पूजा-आरती करेगा किसे कन्या-भोजन खिलाएँगे
बेटा कुल दीपक है चाँद है बेटी
वो पराया हो जाये फिर भी बेटी है अपनी
अपने घर तक नहीं सीमित वो फैली है संसार में
हर दुःख सह ले एक वरदान समझ करके
कौन सेवा करेगा किसको हम पुकारेंगे।

जै गोमाता

❐ डॉ. कृष्णा आचार्य

भारत भूमि देव संस्कृति फिर
क्यूँ गो माँ रोती है
कोई नहीं उस बेजुबाँ का,
जो सबको जीवन देती है
कुचली जाती रोज सड़क पर
कहीं खून, कहीं पानी है
सरे आम गो माता यूँ,
रौंदी पीटी जाती है
कहते उसको गो माता
पर डरती-डरती जीती है
घासफूस खा अमृत जैसा
मधुमय दूध पिलाती है
दही मलाइ मक्खन मट्ठा
सुख से सदा खिलाती है
मानव अपने सुख की
खातिर बनता आज कसाई है
श्रुति देवों ने जिसे दिया था
कामधेनु-सा नाम प्रदान
महादेव भी जिस नंदी संग

सबको देते ये वरदान
महा विष्णु भी गोधन हेतु
कृष्ण का अवतारी है
जिसने दिया जगत को जीवन
ध्वंस उसी ने वंश किया
क्यूँ रहता चुप होकर भारत
जिसने अन्न और धन दिया
स्वास्थ्य संपत्ति समृद्धि सब
गो माँ की प्रसादी है
ज्ञानी भृगु ने सदा हितों को
सहस्त्रों गोधन दान किया
ऋषि वशिष्ठ का गौ रक्षा
हित कौशिक से संग्राम हुआ
गो सेवा ही सच्ची सेवा
वो जग कल्याणी है

सुनो! सुनो! हे! भारतवासी
मैया तुम्हें पुकारती
रक्षा करो उस जननी की
जो जीवन सदा सँवारती
गो सेवा बने राष्ट्र धर्म
हमने अब ये ठानी है
गो रक्षा से ही अपना
भारत देश महान बने
गोपालन से सारे बच्चे हृष्ट
पुष्ट बलवान बने
गो सेवा जो करे निरन्तर वो
सच्चा निरोगी है
भारत भूमि देव संस्कृति फिर
क्यूँ गो माँ रोती है
कोई नहीं उस बेजुबाँ का
जो सबका पालन करती है

उस्तों की बारी के अन्दर,
बीकानेर (राज.) 334001
मो: 9461036201

इंटरनेट बनाम अन्त:जाल

❐ सुमित्रा झंवर

मैं इंटरनेट अथवा अन्तःजाल के नाम से जाना जाता हूँ। मेरे बढ़ते प्रयोग को और मेरे उपयोग को ध्यान में रखते हुए लोग मुझे संचार क्रांति का जनक मानते हैं। मानव जीवन में मेरा उपयोग सूचना संप्रेषण तथा सूचनाओं के आदान-प्रदान में धड़ल्ले से कर रहे हैं। पिछली शताब्दी से लोग मुझे विशेष रूप से प्रयुक्त करने लगे हैं। आज तो पूरी दुनियाँ अपने आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक कार्यकलापों में मेरा पूरा सहयोग प्राप्त कर रहे हैं। मेरे स्वरूप को भी लोग अलग-अलग नाम देकर विभिन्न क्षेत्रों में लाभ उठा रहे हैं। वाणिज्य के क्षेत्र में ई-कॉमर्स, चिकित्सा में ई-मेडिकल, शिक्षा के क्षेत्र में ई-एजूकेशन आदि नामों के साथ ही ई-गवर्नेंस, ई-बैंकिंग, ई-शॉपिंग आदि विधाओं मेरा पूरा लाभ उठाने में तत्पर हैं।

मेरा परिवार बहुत बड़ा है। परिवार में छोटे-बड़े कई सदस्य समाज सेवा में संलग्न हैं। मोबाइल, कम्प्यूटर, लेपटॉप, टेबलेट्स इत्यादि मेरे अपने ही हैं। इतना अवश्य है कि सभी के कार्यक्षेत्र अलग होते हुए भी एक दूसरे के सहायक हैं। सभी सदस्यों पर मेरा पूरा भरोसा भी है यदि हमारे पूरे परिवार को एकत्र रूप में देखना चाहे तो आप गाँवों और शहरों में 'साइबर कैफे' के संबंध में पूछताछ कर लें। वहाँ हमारा मिलन सुविधा से हो जाएगा। सच मानिए, मैं आपका परम मित्र भी हूँ, अकेलेपन का साथी भी। आपका स्नेही स्वजन भी हूँ। लोग मुझे वफादार खबरी की संज्ञा भी देने लगे हैं। मैं आपको घर बैठे दुनियाँ के हर कोने की जानकारी देता हूँ। इन दिनों बच्चे तो मेरा पूरा उपयोग कर रहे हैं। उनका गृहकार्य, पढ़ाई, लिखाई, मेरे द्वारा ही हो जाती है साथ ही बड़े भी समाचार, संतों के प्रवचन, नेताओं के भाषण और अन्य सारी सूचनाएँ और जानकारी मेरे द्वारा प्राप्त कर लेते हैं। आज आपाधापी का युग है। भागदौड़ की जिन्दगी में व्यस्तता अधिक हो गई है। इसलिए भी मेरा प्रयोग अधिक लाभकारी हो गया है।

आज मैं किसान, मजदूर, व्यापारी, नौकरी पेशा व्यक्ति, कामकाजी महिला, गृहिणी आदि सभी के कार्य में सहयोग करने के साथ ही मनोरंजन हेतु भी प्रस्तुत हूँ। यदि आपको देश-विदेश में यात्रा करनी हो तो आप मेरा सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। रेल मार्ग, वायु मार्ग, जल मार्ग कहीं की भी यात्रा हो आप यात्रा टिकट के साथ ही गंतव्य स्थल की पूरी जानकारी घर बैठे मुझसे प्राप्त कर सकते हैं। छात्रों का तो मैं अभिन्न अंग ही बन गया। उनकी परीक्षा, विषय ज्ञान, प्रश्नपत्र, उत्तर कुंजी और विविध विषयों की जानकारी के साथ ही महाविद्यालयों में प्रवेश लेने का सारा काम मेरे द्वारा समय पर हो जाता हैं। यदि आप बेरोजगार हैं तो नौकरी की तलाश हेतु मैं आपकी सेवा में हाजिर हूँ। देश-विदेश में हो रही अन्तरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं का आँखों देखा हाल देख व सुन सकते हैं।

यदि आप अपने विचार तथा कोई सूचना देश-विदेश में पहुँचाना चाहें तो आँख झपकते ही पहुँचा सकते हैं। वेबसाइट के द्वारा दूसरों की सूचनाएँ और विचार भी तत्काल प्राप्त कर सकते हैं। आपको विद्यालय की फीस जमा करानी हो, बिजली का बिल भरना हो, जीवन बीमा की किश्त जमा करानी हो, होटल से मेहमानों के लिए खाना मंगाना हो, अपनी जमीन जायदाद की खातेदारी देखनी हो, कहीं पर भी उपहार आदि भेजना हो तो मैं आपका पूरा सहयोग करूँगा। महिलाओं के लिए भी मैं बड़े काम का

हूँ। यदि वे कभी भी कोई नई पुरानी फिल्म देखना चाहें, किसी भी देश के व्यंजन बनाने की विधि समझना चाहें, संगीत सुनना चाहें, अपनी सहेली से वार्तालाप करना चाहें, तीज, त्योहार, व्रत उपवास के बारे जानना हो तो मैं सदैव उनके साथ हूँ। अपने बच्चों के शादी विवाह के लिए योग्य पात्र ढूँढ़ना हो तो परेशान न हों आपको मेरा पूरा सहयोग मिलेगा।

मान लीजिए आप और आपके बच्चे विदेश में हैं और आपके दादा-दादी, नाना-नानी आपसे दूर अपने ही देश में हो तो उनसे बातचीत कर सकते हैं। उनसे साक्षात्कार भी मेरे द्वारा आसानी से कर सकते हैं। यदि आप किसी की जन्म कुंडली देखकर रिश्ते जोड़ने का निर्णय करते हैं तो मेरी पूरी मदद आपको मिलेगी। आप किसी प्रतियोगी परीक्षा में बैठ रहे हैं। संबंधित विषय की पुस्तकों व प्रश्न पत्रों की आवश्यकता हो तो आप मेरा उपयोग करते हुए यथा समय अपनी आवश्यकता की पूर्ति करने में सफल हो सकते हैं। वृद्धजन को तीर्थ यात्रा करानी हो, देव दर्शन की आवश्यकता हो, प्रसिद्ध मंदिरों में पहुँचना हो तथा पूजा अर्चना में सम्मिलित होना हो तो भी घर बैठे उन्हें यह सब कुछ मेरे द्वारा सुलभ हो सकता है।

मोबाइल का उपयोग बढ़ता जा रहा है। इसे में भी मेरा पूरा सहयोग है तभी तो 'वाट्सएप' एप्लीकेशन से मोबाइल पर ग्रुप का निर्माण कर अपनी गतिविधियों का परस्पर आदान-प्रदान करने लगे हैं। यह प्रचार-प्रसार का माध्यम भी बन गया है। इससे कई प्रकार की सूचनाओं का संग्रह तैयार हो जाता है। जो मनोरंजन के साथ-साथ जीवनोपयोगी विचारों का भी लाभ प्रदान करता है। इस संबंध में बस मेरा एक ही निवेदन है कि मेरे संसाधनों का उपयोग मर्यादित हो। कई लोग मोबाइल पर चिपके ही रहते हैं जो गलत है। आवश्यक जानकारी प्राप्त करने तक की मेरा उपयोग लाभकारी होगा।

प्रिय साथियो! आपसे मेरा विनम्र निवेदन है कि कभी भी मेरा उपयोग सांप्रदायिक हिंसा, दंगा और अफवाह फैलाने में मत करना। कई लोग सोशल साइट्स का गलत उपयोग कर मुझे कलंकित भी करते हैं तब मुझे अत्यधिक पीड़ा होती है। कई संवेदनशील क्षेत्रों में साम्प्रदायिक तनाव फैलाने की घटनाओं के कारण मेरा अपमान भी हुआ है। इस जघन्य अपराध के लिए अधिकांशतः युवा पीढ़ी विशेष जिम्मेदार है। मित्रो! वह दिन दूर नहीं जब भारत दुनियाँ का सबसे बड़ा फेसबुक उपयोगकर्ता बन जायेगा। इन दिनों ट्वीटर पर लोग अधिक सक्रिय होते जा रहे हैं। वर्तमान में सोशल मीडिया पर नियंत्रण अत्यावश्यक हो गया है। मेरे गलत उपयोग के कारण देश की आंतरिक सुरक्षा को भी खतरा पहुँचता है। मेरे देश के प्रबुद्ध नागरिकों से मेरी विनम्र सलाह है कि वे अपने बच्चों को नियंत्रित रखें। वे कम्प्यूटर पर खेलकूद, पिक्चर, फेसबुक और अवांछनीय साइट्स का उपयोग कर गुमराह हो रहे हैं। बच्चों की दिनचर्या का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। मेरा उपयोग संस्कार निर्माण तथा शिक्षण की सीमा तक ही रहे। मेरे द्वारा परोसे गए कचरे से बच्चे सदा दूर रहेंगे तो एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप में सफल हो सकेंगे और मालूम होना चाहिए कि दुनियाँ में लगभग दो अरब लोग मुझसे जुड़े हुए हैं और भविष्य में यह संख्या सात अरब तक पहुँचने वाली है। हमेशा संवेदनशील क्षेत्रों में मेरा दुरुपयोग ही होता है और वातावरण को अशांत करने का प्रयत्न किया जाता है। कुछ वर्षों में जब से सोशल नेटवर्किंग साइट्स की बढ़ोतरी हुई तभी से मेरा गलत उपयोग भी किया जाता रहा है। चुनाव प्रचार में मेरा जमकर प्रयोग सोशल साइट्स तथा मोबाइल के माध्यम से वोटरों को लुभाने के लिए से किया जाता है।

मेरे दुरुपयोग से संस्कृति भी प्रदूषित हुई हैं लोगों में भय पैदा हुआ है। आंतरिक अशांति की सदैव चिन्ता रहती है। बच्चों और युवाओं का झुकाव मेरी ओर निरन्तर बढ़ता जा रहा है। वे मेरे मक्कड़जाल मे ऐसे उलझे जा रहे हैं कि मुझसे छुटकारा पाना दुष्कर हो गया है। नित नई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। सरकार को मेरे गलत उपयोग करने वालों के लिए सख्त कानून बनाकर दोषियों को सजा देनी चाहिए तथा मेरे द्वारा राष्ट्र व समाज हित में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए तभी मैं अभिशाप न बनकर वरदान सिद्ध हो सकूँगा।

वरिष्ठ अध्यापिका (विज्ञान)
रामावि. तस्वारिया
तह. हुरड़ा, भीलवाड़ा, राजस्थान
मो: 9829925909

पगडण्डी

❒ डॉ. दयाराम

खेतों के बीच से गुजरती
टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डी
कभी पीसान का बोझा
कभी हरे-चारे की गठरी
कभी रोटी-पानी का बंदोबस्त किए
अनेक तरह के बोझे-लादे
ढोती हैं ये पगडण्डी।

शहर को जाते लोगों के
चेहरों की मुस्कान
गाँव को लौटते लोगों के
पैरों की थकान
कुछ खोने का दर्द
कुछ पाने की खुशी
बराबर पढ़ती हैं ये पगडण्डी।

दादी-सी खिली हुई
नानी-सी बिछी हुई
बरगद-सी बुढ्ढी
आँचल की ओट में
लपेटे ढेर सारी ऊष्मा
सुखों-दुःखों की धूप-छाया में
दिन-रात चलती हैं ये पगडण्डी।

जीवन की तरह लम्बी
युगों से बिछी पाँवों के नीचे
सब कुछ झेलती हुई
समय को पेलती हुई
उतार-चढाव के बीच
धीरे-धीरे बदलाव की ओर
कदम रखतीं है ये पगडण्डी।

व्याख्याता
रा.आ.उ.मा.वि., गोलूवाला,
जिला-हनुमानगढ़, (राज.)-335802
मो. 9462205441

जितने ज्यादा खेल के मैदान....

❒ डॉ. पी.डी. शर्मा

'जितने ज्यादा खेल के मैदान, उतने कम अस्पताल' (More number of play grounds and less number of hospital)। यह कथन कितना सरल तथा स्वाभाविक लगता है। यदि हम इस कथन की गहराई पर जाएँ तो यह अपने आप स्पष्ट हो जाता है कि खेल के मैदानों की संख्या तथा अस्पतालों की संख्या में सीधा सम्बन्ध है। खेल के मैदानों की संख्या बढ़ाने का अर्थ है कि सामान्य नागरिकों का स्वास्थ्य अच्छा रखना और इस प्रकार उनको अस्पतालों से दूर रखना। अस्वस्थ व्यक्तियों के लिए ही खास करके अस्पतालों की सुविधा की जाती है। यदि हम इससे एक कदम आगे जाएँ और नागरिकों के स्वास्थ्य को अस्वस्थ होने से रोक तो हमें चिकित्सा सुविधाओं की उतनी ही कम आवश्यकता पड़ेगी। इससे ही तो कहते हैं कि 'Prevention is better than care' अर्थात् 'चिकित्सा से ज्यादा महत्त्वपूर्ण तो रोग से बचाव करना है।'

खुले मैदान और स्वच्छ वातावरण :

अच्छा स्वास्थ्य रखने के लिए कितनी ही वस्तुओं की जरूरत पड़ती है, जैसे- संतुलित आहार, स्वच्छ वातावरण, योग्य प्रकार का व्यायाम आदि। खुला खेल का मैदान, स्वच्छ वातावरण व्यायाम करने का बहुत ही उत्तम साधन है। आजकल बड़े शहरों में खेलों के मैदान तो क्या खुले मैदानों का होना भी दुर्लभ होता जा रहा है तथा इस प्रकार वातावरण दूषित बनता जा रहा है। इसका सीधा असर नागरिकों के स्वास्थ्य पर पड़ता है। इस प्रकार खेल के मैदान केवल वातावरण स्वच्छ रखने में ही मदद नहीं करते बल्कि खेलों के कौशलों के विकास में भी महत्त्वपूर्ण भाग अदा करते हैं। 'खेलना' एक जन्मजात और प्राकृतिक प्रक्रिया है। बालकों को जन्म से ही खेलने में अत्यंत रुचि होती है। इस बात को ध्यान में रखकर ही आजकल 'खेलों द्वारा अध्ययन' कराने की पद्धतियों का अमल छोटे बच्चों की शिक्षा के लिए खास रूप से किया जाने लगा है।

व्यायाम के तरीके– व्यायाम करने के वैसे तो कितने ही तरीके हैं फिर भी 'खेलों द्वारा व्यायाम' को सर्वश्रेष्ठ तरीका माना जाता है, क्योंकि इससे शरीर के सभी अवयवों को केवल कसरत ही नहीं मिलती परन्तु कितनी ही

जीवनोपयोगी आदतें, जैसे- खेल भावना, समूह भावना, अनुशासन आदि का भी विकास होता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी खेलों का काफी महत्त्व है, क्योंकि खेलों के द्वारा मनुष्य अपनी कितनी ही प्राकृतिक इच्छाएँ, जैसे-दौड़ना, कूदना, फैंकना, अपने विरोधी को पराजित करना अथवा दूसरों को प्रभावित करना आदि पूरी कर सकता है। इतना ही नहीं, सामाजिक दृष्टि से भी 'अवकाश के समय' का सबसे अच्छा उपयोग अपनी रुचि के खेल खेलकर किया जा सकता है। इन सब चीजों के साथ-साथ खेलों के द्वारा जो मनोरंजन खेलने वालों तथा देखने वालों को प्राप्त होता है उसका तो कहना ही क्या! यही कारण है कि खेलों की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताएँ अथवा क्रिकेट के टेस्ट मैचों को देखकर लाखों लोग मनोरंजन प्राप्त करते हैं।

अन्य गुणों का विकास– खेलों के द्वारा देश प्रेम, चरित्र निर्माण जैसे गुणों का भी विकास होता है। आज के युवा वर्ग में इन गुणों का विकास खेलों द्वारा आसानी से किया जा सकता है। यदि हम इतिहास के पृष्ठ पलटकर देखें तो हमें मालूम पड़ेगा कि महान नेपोलियन बोनापार्ट को नेल्सन तथा वेलिंगडन ने वॉटर लू के मैदान में हराया था। इन वीर पुरुषों का विकास ब्रिटेन के हेरो तथा ईटन के मैदानों पर हुआ था। जीवन में खेलों का इतना महत्त्व होने के बावजूद भी आज शिक्षा प्रणाली में खेलों को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना कि दिया जाना चाहिए। ज्यादातर विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में खेल के मैदान तथा खेल की सुविधाएँ केवल नाम मात्र की ही होती हैं। इसका सीधा असर बालकों के स्वास्थ्य पर पड़ता है। इससे यह अत्यंत आवश्यक है कि भारतीय विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में खेलों की सुविधाएँ बढ़ाई जाएँ।

खेल के मैदानों का महत्त्व :

इस प्रकार इस बात में दो मत नहीं है कि, स्वस्थ शरीर रखने में खेल के मैदानों का बड़ा योगदान होता है। स्वस्थ शरीर के महत्व को समझकर के ही प्राचीन काल में 'पहला सुख निरोगी काया' को माना गया है। आज से हजारों वर्ष पहले यूनानी लोग भी 'साउण्ड माइण्ड इन साउण्ड बॉडी' अर्थात् 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क होता है' के सिद्धांत में पूर्ण विश्वास रखते थे और इस सिद्धांत को ध्यान में रखकर ही उन्होंने अपनी शिक्षा प्रणाली बनाई थी। हमारे शास्त्रों में भी 'शरीर माद्यम् खलु धर्म साधनम्' का उल्लेख किया गया है, अर्थात् 'धर्म की साधना करने के लिए शरीर एक माध्यम है।'

ज्यादा काम करने की क्षमता :

हम सब यह अच्छे प्रकार से जानते हैं कि अस्वस्थ मनुष्य की तुलना में स्वस्थ मनुष्य ज्यादा काम कर सकता है, चाहे वह काम किसी भी प्रकार का क्यों न हो। जीवन के हर एक क्षेत्र में प्रगति करने के लिए स्वस्थ शरीर का होना अत्यंत आवश्यक है। निरोगी व्यक्ति की प्रगति रोगी मनुष्य की तुलना में जल्दी होती है। देश के विकास के लिए अधिक उत्पादन होना आवश्यक है और अधिक उत्पादन के लिए देश के नागरिकों का स्वास्थ्य अच्छा होना अत्यंत आवश्यक है, खास करके भारत जैसे विकासशील देश के लिए।

खेलों का विकास :

अधिक 'खेलों के मैदान' केवल नागरिकों का स्वास्थ्य अच्छा रखने में ही मदद नहीं करते अपितु साथ-साथ खेलों के विकास में भी काफी योगदान देते हैं। आजकल अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर

जो देश खेलों में आगे हैं, उसका एक मुख्य कारण वहाँ पर अधिक खेलों के मैदान तथा खेल की अधिक सुविधाओं का होना भी है। उदाहरण के लिए मैंने अपने जर्मनी के अभ्यास के दरम्यान देखा था कि वह देश तो 'जितने ज्यादा खेल के मैदान, उतने कम अस्पताल' के सिद्धांत का पूर्ण रूप से पालन करता है और शायद इसी कारण आज जर्मनी खेलों में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका तथा एशिया की बराबरी कर रहा है।

आम जनता का स्वास्थ्य :

यदि 'खेल के मैदानों' की सुविधा विपुल मात्रा में हो तो आम जनता उनका उपयोग बड़ी आसानी से कर सकती है। कितने ही भारतीय खेल; जैसे-कबड्डी, खो-खो इत्यादि तो कम जगह में तथा बहुत ही कम साधनों की मदद से खेले जा सकते हैं। यदि मैदान का आकार बड़ा हो तो फुटबॉल जैसा खेल भी काफी कम साधनों की मदद से खेला जा सकता है। खेल के मैदानों का उपयोग तो नियमित रूप से दौड़ने के लिए भी किया जा सकता है। दौड़ना एक प्राकृतिक क्रिया होने के साथ-साथ अपने आपमें एक पूर्ण व्यायाम भी है। नियमित रूप से दौड़ने से अथवा अन्य प्रकार के व्यायाम करने से शरीर के सभी तंत्र सुचारू रूप से काम करते हैं-जैसे कि पाचनतंत्र, रक्तभ्रमण आदि। इस तरह हम किसी भी तरह से विचार क्यों न करें, आम जनता का स्वास्थ्य अच्छा रखने में खेलों के मैदानों का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण योगदान है।

इस तरह यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि अधिक खेलों के मैदानों का सीधा असर नागरिकों के स्वास्थ्य पर तथा खेलों के स्तर पर पड़ता है। अतः सरकार, सामाजिक संस्थाएँ तथा सामान्य जनता को खेलों के मैदानों के महत्त्व को समझना चाहिए, क्योंकि अस्वस्थ मनुष्यों को स्वस्थ करने के लिए जो धनराशि अस्पतालों तथा दवाइयों के पीछे खर्च की जाती है उसकी जगह पर खेलों के मैदान तथा खेलों की अन्य सुविधाओं को बढ़ाने के लिए की जाए तो सामान्य नागरिक के स्वास्थ्य को सुधारने में यह एक महत्त्वपूर्ण तथा ठोस कदम साबित हो सकता है।

बी-1, स्विस एवन्यु, पटेल कॉलोनी
माणक बाग हॉल के सामने,
अंबाबाड़ी, अहमदाबाद-380015
मो: 9898870840

हमारे वीरवर भामाशाह

❐ गोमाराम जीनगर

सर्वस्व स्वस्नेह सौ पूरित कर पातल को।
भामे प्रज्वलित कियो भारत के प्रदीप को।।
बलवन्तसिंह मेहता

भामाशाह ने प्रताप रूपी दीपक में स्नेह पूर्वक अपने सर्वस्व को डालकर उस दीपक को प्रज्वलित कर अमिट रखा, जिसके प्रकाश से समस्त भारत प्रकाशित हुआ है। सचमुच भामाशाह ने अपने पराक्रम, असाधारण राजनीतिक सुझबूझ, अनन्य स्वामी भक्ति और आत्मत्याग का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया जो भारतीय जनता के हृदय में आज उदाहरण स्वरूप धारण कर लोगों को प्रेरणा देता रहता है। भामाशाह कावेडिया गोत्र के ओसवाल जैन वैश्य थे। इनके पूर्वज दिल्ली के रहने वाले थे, कालान्तर में मेवाड़ के यशस्वी राजा साँगा द्वारा इनके पिता भारमल को रणथम्भौर का किलेदार नियुक्त किया। भारमल की कर्त्तव्यनिष्ठा, वफादारी, कूटनीतिज्ञता व प्रशासनिक कौशल्य से प्रभावित होकर महाराजा उदयसिंह ने भी इन्हें अपना सामन्त बनाया। भारमल की पत्नी कर्पूरदेवी की कोख से आषाढ शुक्ला 10 विक्रम संवत 1604 तदनुसार 28 जून 1547 को रणथम्भौर में भामाशाह का जन्म हुआ। 1554 ई. में महाराणा उदयसिंह ने भारमल को चितौड़ दुर्ग में रहने के लिए हवेली दी। भामाशाह का बाल्यकाल चितौड़ में बीता। ये प्रताप के 7 वर्ष छोटे बाल सखा थे। प्रताप के साथ ही इन्होंने घुड़सवारी,अस्त्र-शस्त्र संचालन में निपुणता प्राप्त की। भामाशाह का विवाह भोमा नाहटा की पुत्री से हुआ। इस विवाह के अवसर पर भोमा नाहटा को दक्षिणावर्त शंख व विपुल धनराशि भेंट की। 1567 में अकबर के चितौड़ आक्रमण के समय सामन्तों के परामर्श पर महाराणा उदयसिंह भामाशाह व उनका छोटा भाई ताराचन्द कावेडिया को साथ लेकर चितौड़ दुर्ग छोड़कर चले गए। भामाशाह के पिता भारमल चितौड़ दुर्ग की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

1572 ई. में महाराणा उदयसिंह की मृत्यु के बाद प्रताप को राजगद्दी पर बिठाने में भामाशाह की भी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। राजा मानसिंह के साथ वार्ता के समय भी भामाशाह ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 18 जून 1576 को अकबर और महाराणा प्रताप के बीच हुए हल्दीघाटी के ऐतिहासिक युद्ध में महाराणा प्रताप के निर्देशानुसार सैन्य व्यूहरचना में हरावल के दाहिने भाग की जिम्मेदारी ग्वालियर के रामशाह तंवर के साथ भामाशाह व उनके छोटे भाई ताराचंद कावेडिया को दी गई। युद्ध आरंभ होने पर ये महाराणा प्रताप के सहयोगार्थ सेना के मध्यभाग में प्रताप के पास चले आए और प्रताप के साथ रहते हुए अप्रतिम शौर्य का प्रदर्शन किया। डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने भी 'मेवाड मुगल सम्बन्ध' ग्रंथ में भामाशाह को केन्द्र में माना है। सर जदुनाथ सरकार ने भी हल्दीघाटी युद्ध में भामाशाह की भूमिका को रेखांकित किया है। युद्ध के प्रथम चरण में राणा की सेना को जो विजय मिली उसका श्रेय रामशाह तंवर के साथ भामाशाह व ताराचन्द कावेडिया को मिलता है, इसका उल्लेख फारसी इतिहासकार अल बदायुनी व अबुल फज़ल ने भी किया है। रक्ततलाई में जब युद्ध अपने चरमोत्कर्ष पर था तब भामाशाह व ताराचन्द कावेडिया राणाप्रताप के इर्दगिर्द रहे और उनकी रक्षा में सहायक बने। इस युद्ध में प्रताप को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने में भी इन दोनों भाइयों ने मदद की।

हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात महाराणा प्रताप

ने भामाशाह की योग्यता को पहचान-परखकर रामशाह महासहाणी को प्रधान पद से हटाया तथा भामाशाह को अपना प्रधान बनाया। इस सम्बन्ध में एक दोहा प्रसिद्ध है-

'भामो परधानो कर, रामो कीधो रद्द।
धरची बाहर करणनु, मिलियो आय मरद।।

हल्दीघाटी युद्ध के बाद भी प्रताप ने अकबर का प्रतिरोध जारी रखा। 1578 ई. शाहबाज खाँ के आक्रमण के समय प्रताप कुंभलगढ़ से निकलकर रणकपुर होते हुए चूलिया (ईडर) चले गए। भामाशाह कुंभलगढ की प्रजा को लेकर रामपुरा(मालवा) चले गए और वहाँ के राव दुर्गा चन्द्रावत के सानिध्य में उन्हें सुरक्षा प्रदान की। तत्पश्चात् भामाशाह व ताराचन्द कावेडिया ने मालवा अभियान के बाद चूलिया (ईडर) जाकर प्रताप को 20 हजार अशर्फिया और 25 लाख रुपए समर्पित किए। इस धन से 25000 सैनिकों का 12 वर्ष तक जीवन निर्वाह किया जा सकता था। भामाशाह व उनके अनुज ताराचन्द कावेडिया का स्वदेश के लिए इससे बड़ा समर्पण क्या हो सकता था? भामाशाह के इस समर्पण ने प्रताप को मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष जारी रखने को प्रेरित किया जिससे वे सेना का पुनर्गठन कर मुगलों से संघर्ष जारी रख पाए व स्वतत्रंता की ज्योति को जलाए रखा। सचमुच भामाशाह संकट की घड़ी में मेवाड़ के उद्धारक सिद्ध हुए। कवि लोचन प्रसाद पांड्या ने ठीक ही लिखा है-

पूजा के योग्य तू है वणिक सजीव
श्री शक्ति की मूर्ति तू है।।
है आह! धन्य तेरा, वह धन ,
जननी भक्ति की मूर्ति तू है।।

अक्टूबर 1580 में बैराम खां के पुत्र अब्दुल रहीम खानखाना को अकबर ने अजमेर के सुबेदार पद पर नियुक्त किया तथा भामाशाह को साम दाम दण्ड भेद पूर्वक अपने पक्ष में लाने की जिम्मेदारी दी। खानखाना ने भामाशाह व ताराचंद कावेडिया को कई प्रलोभन दिए पर भामाशाह व ताराचंद कावेडिया ने वैभवशाली जीवन के प्रलोभन को ठुकराकर परम देशभक्ति व स्वामीभक्ति का परिचय दिया। खानखाना भी भामाशाह-ताराचंद कावेडिया की इस अनुपम देशभक्ति से मन ही मन प्रभावित हो गया। विजयादशमी 1582 ई को दिवेर के युद्ध में प्रताप ने अपने पुत्र कुंवर अमर सिंह के साथ भामाशाह व ताराचंद को रखा। दिवेर के युद्ध में भामाशाह-ताराचंद ने अप्रतिम शौर्य का प्रदर्शन करते हुए अपने आपको तलवार का धनी सिद्ध किया। स्वयं प्रताप ने भामाशाह की वीरता को सराहा। भामाशाह की हिम्मत व प्रेरणा से कालान्तर में प्रताप ने चितौड़ व मांडलगढ़ को छोड़ कर शेष समूचे मेवाड़ पर पुनः अधिकार कर लिया। बाँसवाडा-डूंगरपूर के सैन्य अभियान में भी भामाशाह की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। महाराणा प्रताप द्वारा चावण्ड को राजधानी बनाकर भामाशाह के नेतृत्व में मेवाड़ को पुनर्गठित व पुनः व्यवस्थित किया। मेवाड़ की उजड़ी हुई बस्तियाँ पुनः बसाई गईं, खेती की व्यवस्था की गई, व्यापार को ठीक किया, मार्गों की सुरक्षा का प्रबंध किया। भामाशाह मुक्त हस्त से चारणों, कवियों व जरूरतमंदों को धन दिया करते थे। भामाशाह ने कई बार बावना (52 गाँव) व चौरासी (84 गाँव) जिमायी। ऐसे ही एक प्रीतिभोज में कवि शंकर बारहठ को अमूल्य नग भेंट किया

भोमे जग जिमाड़ियो नेवतरिया नवखण्ड।
सिर तपिया वासक तण, काजलियो ब्रह्माण्ड।।

लुंका गच्छ का अनुयायी होने पर भी भामाशाह धार्मिक उदार रहा, उसने अनेक वैष्णव, शक्ति, जैन मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया था जो मुस्लिम आक्रमणों के कारण विध्वंस हो गए थे। भामाशाह ने चितौड़ दुर्ग में भामाशाह की हवेली व हस्तीशाला बनवाई। जावर में 1593 ई. में देवी मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया।

19 फरवरी 1597 ई. को महाराणा प्रताप की मृत्यु के बाद अमरसिंह महाराणा बने। महाराणा अमर सिंह ने भी भामाशाह को प्रधान बनाए रखा व मुगलों का प्रतिरोध जारी रखा। महाराणा अमर सिंह के आदेश पर भामाशाह ने अहमदाबाद अभियान कर दो करोड़ रुपए व बहुत सा सामान महाराणा को भेंट किया। जैनमुनि दौलत विजय द्वारा रचित खुमाण रासो में इसका वर्णन किया गया है।

माघ शुक्ल 11 विक्रम संवत 1657 तदनुसार 11 जनवरी 1600 को उदयपुर में भामाशाह की मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय भामाशाह की आयु 53 वर्ष थी। कविराज श्यामलदास के अनुसार भामाशाह ने मरने से एक दिन पहले अपनी पत्नी को एक हस्तलिखित बही जिसमें मेवाड़ के कुल खजाने का हाल लिखा हुआ था, महाराणा को नज़र करने की बात कही जो भामाशाह के देशप्रेम व स्वामी भक्ति को दर्शाती है। इस बही के आधार पर प्राप्त धन से महाराणा अमरसिंह 1615 ई. तक मुगलों को प्रतिरोध कर पाए। भामाशाह ने व्यवहार में कम्मै सुरा सौ धम्मे सुरा (जो कर्म में वीर है, वही धर्म में वीर है) के आदर्श को चरितार्थ कर दिखाया। महाराणा अमरसिंह ने भी उनकी सेवाओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए आहड़ (उदयपुर) स्थित महासतियों में गंगोदभव कुण्ड के ठीक सामने भामाशाह की छत्री बनवाई तथा भामाशाह के पुत्र जीवाशाह को अपना प्रधान बनाया।

सचमुच भामाशाह स्वदेश प्रेम, त्याग और शौर्य के धनी थे। यदि वह जीवित रहते तो महाराणा अमरसिंह के काल में 1615 ई. संधि को नहीं होने देते। भामाशाह ने मेवाड़ के गौरव, प्रतिष्ठा व शान को अक्षुण्ण रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, जो अविस्मरणीय रहेगा। ऐसे श्रेष्ठ महाजन के लिए ही भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने लिखा है-

'जा धन के हित नारि तजै पति,
पूत तजै पितु शीलहि सोई।
भाई सो भाई लरै रिपु से पुनि,
मित्रता मित्र तजै दुःख जोई।
ता धन को बनिया ब्है गिन्यो नः
दियो दुख देश के आरत होई।
स्वास्थ अर्प्य तुम्हरोई है,
तुमरे सम और न या जग में कोई।।

सहायक निदेशक (शिविरा)
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9413658894

राणा के पास नहीं पैसा
पैसों के बिना नहीं सेना
तब भामाशाह बढ़ा आगे
लेकर अपना पैसा गहना
वह धन क्या अवसर
आने पर जो
त्याग भाव दिखला न सका।

यात्रा वृत्तान्त

लेह दर्शन

❒ डॉ. कृष्णा माहेश्वरी

भारत का जन्नत (स्वर्ग) काश्मीर है। जी हाँ, काश्मीर विश्वभर में जाना जाता है, परन्तु इसी राज्य का एक अंग लेह है। काश्मीर जितना प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है, लेह उतना ही अपरिचित, अनजाना, अप्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। सिन्धु दर्शन उत्सव के कारण बौद्ध धर्म और संस्कृति का प्रमुख केन्द्र लेह चर्चित हुआ है। लेह पर्यटकों के लिए स्वर्ग माना जाता है। लेह में बौद्ध मठ, बौद्ध पूजा स्थल है, इस कारण बौद्ध धर्मावलम्बियों की आस्था का केन्द्र है, धार्मिक व्यक्तियों के लिए आध्यात्मिक ऊर्जा का केन्द्र है। लेह सिन्धु नदी के किनारे बसा है।

लेह टाउन–35000 मीटर की ऊँचाई पर बसा है, इसलिए प्रत्येक पर्यटक को प्रथम दिन केवल विश्राम कर स्वयं को उस वातावरण से सामंजस्य बिठाने का परामर्श दिया जाता है, साथ ही उसे दो लीटर पानी पीने की सलाह भी दी जाती है।

शान्ति स्तूप–जापानी मुनियों द्वारा विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए या यूँ कहें कि चारों ओर शान्ति का साम्राज्य स्थापित करने की दृष्टि से ऊँचाई पर श्वेत अर्द्ध गोलाकार आकृति में अत्यंत चमकीले रंगों का प्रयोग करते हुए इसका निर्माण कराया है। जापानी मुनिवृन्द बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करने में अत्यधिक रुचि रखते थे। इन चटकीले रंगों से भक्तगण इस स्तूप के मध्य भाग में आराम अनुभव करते थे। यह स्थान धूम्रपान निषेध क्षेत्र है।

महल–यहाँ नाम्बियाल नरेशों के महल पर्यटकों के लिए आकर्षण के केन्द्र रहे।

शाही महल–15 वीं शताब्दी में लेह से 15 कि.मी. दक्षिण में लेह-मनाली रोड पर शाही परिवार के लिए एक समर महल प्राचीन गोम्पा और थिक्से ने पहाड़ के ऊँचे स्थान पर बनवाया था। इसको गोल्डन महल भी कहते है।

काला महल–शाही परिवार के लिए 19वीं शताब्दी में इस का निर्माण हुआ है। इस महल में लद्दाख राजाओं व उनके परिवारजनों के आभूषण, वस्त्र, ताज, कीमती पोशाकें पर्यटकों के आकर्षण हैं। पर्यटक उन वस्तुओं को देखकर आश्चर्य चकित हो जाते हैं।

पोटला महल–यह महल ल्हासा में स्थित है। 17 वीं शताब्दी में तिब्बती शिल्पियों ने इसे प्राचीन परम्पराओं के अनुरूप बनाया था। यह किला 5 मंजिल का है। इस महल में नीचे पत्थर और लकड़ी से नींव भरी गई है। जैसे-जैसे यह महल ऊँचाई पकड़ता गया अर्थात् शिल्पियों ने इसकी मंजिलें बनाते समय पकी हुई मिट्टी का प्रयोग किया था। इस महल की 5 वीं मंजिल पर शाही परिवार का मंदिर है। इस किले या महल की महत्त्वपूर्ण विशेषता कोटवा किले का प्रेरणा स्रोत होना है। इसको जोरावर किला भी कहते हैं। आज भारतीय नौसेना के अधिकार में यह किला है। इन महलों के अतिरिक्त दो महल और भी हैं जो शिल्प की दृष्टि से अधिक लोकप्रिय नहीं हैं।

निम्मू घाटी–यह दो नदियों का संगम स्थल है। सिन्धु नदी आगे निम्मू घाटी में जाकर नदी में मिल जाती है। दो नदियों का मिलन जादुई संगम जैसा प्रतीत होता है। दो भिन्न स्रोतों से आया हुआ एवं बर्फ से पिघला हुआ जल बड़ी गहराई तक समाया हुआ है। यह बड़ा आश्चर्यजनक एवं आनन्ददायक दृश्य प्रस्तुत करता है। यह लेह के निकट है। यहाँ के व्यक्ति डोरमा कहलाते हैं। विभिन्न प्रकार के फूलों के कारण यह फूलों की घाटी भी कहलाती है। यहाँ मैंगनेट भी पाया जाता है जिसे पर्यटक भी अनुभव करते हैं।

खरडूगला–साहसी पर्यटकों के लिए यह महत्त्वपूर्ण पर्वतीय स्थल है। यहाँ अठारह हजार तीन सौ अस्सी फुट ऊँची पाँच हजार छह सौ मीटर चौड़ी सड़क दुनिया की सबसे ऊँची सड़क है। इस सड़क पर मोटर कार भी सुविधा से दौड़ती है। इस सड़क पर चलते वाहन एक अलग प्रकार का रोमांच उत्पन्न करते है। यहाँ हमें करकुरम रंग उत्तर दिशा से और जनसरवर दक्षिण दिशा से देखने को मिलते हैं। दोपहर में मौसमी बाजार से हस्त उद्योग, स्थानीय बाजार में विभिन्न प्रकार के आभूषण, मोती के आकर्षक आभूषण भी पर्यटकों द्वारा खरीदे जाते हैं।

पैगांगश झील–लेह से लगभग 150 कि.मी. की दूरी पर दुनिया की सर्वश्रेष्ठ झीलों में से एक झील है। यह झील वर्ष के 9-10 माह तो जमी रहती है। यह झील 140 कि.मी. लम्बी, 3-10 कि.मी. चौड़ी दुनिया की सबसे बड़ी झील है। इतनी ही गहरी है। रंग विहीन पानी इस झील का नीले रंग का दिखाई देता है, जो आकर्षक व अनुसंधान का विषय है। यह क्षेत्र अत्यंत ठंडा है पर प्रत्येक दृष्टि से अत्यंत मनोहारी एवं आकर्षण युक्त, बिना पलक झपकाए देखने योग्य है।

एलची–यह इन्डस नदी के किनारे स्थित है। यह मठ हजार वर्ष प्राचीन दीवाल चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध है। सभी चित्र अंधेरे कमरे में बने हुए हैं। इन सभी चित्रों को टॉर्च की रोशनी से ही देखा जा सकता है। यहाँ पाँच मंदिर एक साथ बने हैं। इन आसपास बने मंदिरों को मंदिरों का संग्रह स्थल कहा जाता है।

लिकर मठ–यह मठ दानव मूर्ति, शहीद बुद्ध और अनेकों प्राचीन थंकास के लिए प्रसिद्ध है। यह फोटोग्राफी के लिए उत्तम स्थान है। यहाँ प्रकृति ने अपने दोनों हाथों से सुन्दरता को दिल खोलकर लुटाया है। पर्यटक फोटो खींचता थक जाता है पर मनोरम दृश्यों को देखते-देखते आँखें नहीं थकती।

सेना संग्रहालय–विभिन्न युद्धों में प्रयोग किए गए प्राचीन व नवीन हथियारों का संग्रह है। कारगिल युद्ध में प्रयोग किए हथियार भी हैं साथ ही साथ जवानों का जीवन परिचय, जीने की शैली, उनका व्यक्तित्व, उनके विचारों का अनूठा संग्रह, देशवासियों के लिए यह एक बेमिसाल धरोहर है।

गुरुद्वारा–लेह से 25 कि.मी. दूर गुरुनानक की स्मृति में निर्मित गुरुद्वारा है। यहाँ अन्य गुरुद्वारों की भाँति चाय, नाश्ता व लंगर से अतिथियों का सस्नेह स्वागत किया जाता है।

अस्पताल–यह अस्पताल, अस्पताल जैसा प्रतीत नहीं होता। चिकित्सक हो या कम्पाउण्डर सभी बड़े धैर्य से मरीज की व्यथा-कथा सुनते हैं, उपचार करते हैं, बहुत कम खर्चे में इसी अच्छी विचारधारा से घर से दूर मरीजों को आत्मीयता का सुखद अनुभव होता है।

यहाँ के तंबुओं में रहने का आनंद भिन्न प्रकार का है। यह आनंद पर्यटकों को बार-बार आने के लिए प्रेरित करता है। समूह में पर्यटक दल इनके बनाए भोजन, नाश्ता का, स्वागत का, आत्मीयता का आनंद तो लेता है, रात्रि में कैम्प फायर का आनंद लेना भी नहीं भूलता।

'प्रज्ञा' बी-186
आर.के.कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)
मो: 9950853292

एकांकी

सब पढ़ें, सब बढ़ें

❐ बिन्दू

पात्र–परिचय

हरि – मजदूर
कमला – मजदूर की पत्नी
सेठ – गाँव का पढ़ा लिखा अधेड़
डाकिया – बाबूजी–हरि के पिता
राहगीर, डॉक्टर, अन्य

दृश्य–एक

हरि : ओ कमला !(अपने किराए के कमरे में प्रवेश करते हुए)

कमला : जी अभी आयी। आज आपने फिर देर कर दी? कहाँ थे इतनी देर।

हरि : तुम्हें तो पुलिस में होना था, आते ही सवाल– जवाब।

कमला : क्या बताऊँ, बचपन में ही माँ नहीं मरी होती तो शायद स्कूल भेज देती।

हरि : अब बहस बंद कर, बीस रुपए दे दे, कुछ जरूरी सामान ले आऊँ।

कमला : (नोट थमाते हुए) ये लो।

हरि : अरे पगली, ये तो तू पचास का नोट ले आयी।

कमला : मुझे क्या पता बीस और पचास का, स्कूल तो में गयी भी नहीं।

हरि : बहस छोड़, क्या करती रही दिनभर।

कमला : जी, वह डाकिया आया था। एक कागज दे गया था।

हरि : क्या लिखा है कागज में।

कमला : फिर वही बकरी की तीन टाँग–मैं तो ठहरी अँगूठा छाप । मैं क्या जाणूँ?

हरि : खैर, ला मुझे दे, सेठजी से ही पढ़ा लूँगा।

(हरि का प्रस्थान)

(सेठ की दुकान पर)

हरि : सेठजी, जरा यह कागज तो पढ़ना; पता नहीं किसका है।

सेठजी : अरे! आजा, पहले कुछ ग्राहकी तो करा दे; बेगार बाद में करा लेना। ला, ला इधर दे।

हरि : क्या लिखा है इसमें!

सेठ : तेरे गाँव से खत है–तेरे पिताजी आ रहे हैं चौबीस तारीख को। स्टेशन पर लेने जाना।

हरि : अरे, अरे चौबीस तारीख तो आज ही है। मैं तो गया काम से कहीं बाबूजी भटक गए तो!

(हरि घर पर लौटता है बाबूजी को कराहते हुए देखकर)

हरि : अरे! अरे! आप आ गए बाबूजी! पाय लागूँ।

बाबूजी : (कराहते हुए)– रहने दे! रहने दे! कितना भटका इधर–उधर तब कहीं घर पहुँचा हूँ। किसी को भी पूछो, पर बताने को कोई तैयार नहीं।

हरि : अरे बाबूजी! ये शहर है, यहाँ कौन किसको जानता है। बड़ी तकलीफ हुई आपको।

बाबूजी : बेटा! एक पखवाड़ा हो गया, मुझे दम ने अधमरा कर दिया। किसी बड़े डॉक्टर को दिखाने शहर चला आया।

हरि : ठीक किया बाबूजी मुझे तो काम पर जाना होगा। आप कमला के साथ चले जाना।

दृश्य–दो

(बड़े अस्पताल के बरामदे में दो एक को पूछती हुई)

कमला : जी, ये दम के डॉक्टर जी कहाँ पर बैठते हैं।

राहगीर : पता नहीं काउंटर पर पूछ लो।

कमला : काउंटर? ये काउंटर क्या होता है। (मन ही मन सोचती है)

(दूसरे राहगीर से)

कमला : जी, दम के डॉक्टर जी का कमरा कौनसा है।

राहगीर : ऊपर, शायद ऊपर चली जाओ। बाबूजी थक कर बैठ जाते हैं। श्वास अधिक परेशान करने लगता है खाँसते हैं।

(पास वाल कमरे में जाकर)

कमला : जी, दम वाले डॉक्टर जी यहीं मिलेंगे

नर्स : पागल है क्या, ये तो डिलीवरी रूम हैं–नीचे कमरा नम्बर तीन में।

कमला : हे राम! हे राम! अगर पढ़–लिख गयी होती, तो ये हाल नहीं होता।

दृश्य–तीन

(डॉक्टर का कमरा, डॉक्टर बाबूजी को देखकर दवाइयाँ लिखता है)

डॉक्टर : ये गोली दिन में तीन बार और ये दिन में दो बार। पीने–की दवाई दो–दो घंटे से! जाओ!

(कमला और बाबूजी दवा लेकर घर पहुचते हैं।)

कमला : बाबूजी आप आराम करें। मैं आपके लिए कुछ खाना ले आती हूँ।

बाबूजी : रहने दे बेटी, पहले मुझे दवाई तो दे दे, कुछ आराम तो मिले।

कमला– जी बाबूजी।

(हड़बड़ाहट में दो एक जैसी शीशियों में से गलत शीशी लेती हुई)

कमला : ये लो बाबूजी।

बाबूजी : ला दे दे।

(कमला खाने के लिए जाती है– तभी बाबूजी कराहना–छटपटाना शुरू कर देते हैं)

कमला : क्या हुआ बाबूजी, क्या हो गया?

बाबूजी : अरे! तूने ये कैसी दवाई दे दी। मेरे तो प्राण गले में आने लगे हैं। हाय! मैं मर जाऊँगा।

कमला : मैं क्या जानूँ? दवाई की शीशियाँ पास–पास पड़ी थी। एक में से आपको थोड़ी दवाई पिला दी।

बाबूजी : अरे! हरि को बुलाओ, मुझे डॉक्टर के पास ले चलो, मेरे प्राण निकल जाएँगे।

(कमला दौड़कर बाहर जाती हैं)

(हरि प्रवेश करता हैं)

हरि : क्या हुआ बाबूजी, आप इतने बैचेन क्यों हैं?

बाबूजी : अरे! डॉक्टर के पास जल्दी चलो, मुझे बचा लो।

हरि : ये तूने क्या ध्यान रखा कमला?

कमला : तो मैं क्या करती, पढ़ना तो मुझे

आता नहीं। दो शीशी एक जैसी दिखी थी, एक में से दवा पिला दी।

दृश्य–चार

(सभी डॉक्टर के कमरे में)

डॉक्टर : (दवाई की शीशियाँ देखकर)– अरे! पगली तूने ये क्या पिलादी! ये तो मालिश तेल था। अब इसका असर खत्म करना होगा। कैसे–कैसे गँवार लोग हैं। चलो हटो।

(डॉक्टर बाबूजी को संभालता है)

कमला : मैं न कहती थी कि मुझे पढ़ने दो, मुझे पढ़ने दो। आस पड़ोस की औरतें प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में पढ़ने जाती हैं, पर तुम नहीं माने। शक्की कहीं के, अब भुगतो।

हरि : नहीं, नहीं अब नहीं भुगतूँगा। मेरी आँखें खुल गयीं। बाबूजी को ठीक होने दे। कल ही पाटी– पोथी लाता हूँ और तुम्हें पढ़ने भेजता हूँ।

(बाबूजी–डॉक्टर के कमरे के भीतर से– ठीक होते हुए)– नहीं–नहीं बेटा–एक नहीं दो–दो पाटी–पोथी लाना, मैं भी पढ़ना सीखूँगा। अगली बार कोई गलत दवाई पेट में नहीं ले लूँ। अभी तो मुझे पहले पढ़ना है और तेरी अम्मा को भी पढ़ाना है।

(हरि और कमला एक साथ)–हाँ–हाँः ठीक कहा आपने।

रा.बा.उ.प्रा.वि. जसोल, बालोतरा, बाड़मेर (राज.)
मो: 9468544768

बाल विवाह : बालकों के साथ गुनाह

❐ हजारी लाल सैनी

पहला दृश्य

यह दीनानाथ का घर है। घर में उसकी पत्नी विमला और पन्द्रह साल का एक लड़का महेश है। विमला सिर में दर्द होने के कारण घर के आँगन में माथा पकड़कर बैठी हुई है, तभी दीनानाथ प्रवेश करता है–

दीनानाथ : अरे भाई, क्या बात हो गई, क्यों माथा पकड़ कर बैठी हुई हो।

विमला : अजी, क्या बताऊँ मेरा तो माथा ही माथा दुखता है।

दीनानाथ : कोई दवाई–गोली नहीं ली क्या?

विमला : अजी ली थी लेकिन कोई फायदा ही नहीं हो रहा है।

दीनानाथ : चलो डॉक्टर के पास, दिखा लाऊँ।

विमला : डॉक्टरों की गोली खाते–खाते तो पेट ही भर गया है।

दीनानाथ : तो भाई कोई सौंठ या अजवायन की फाकी ले लो।

विमला : अजी, मैं एक बात कहूँ।

(दीनानाथ पास ही चारपाई पर बैठ जाता है)

दीनानाथ : कहो क्या बात है?

विमला : अजी, अपने महेश की शादी कर दो तो मुझे को काम का सहारा हो जाएगा। मेरी तो अब काम करने की बस की ही नहीं है।

दीनानाथ : अरे! यह बात तो मेरे दिमाग में ही नहीं आयी। तुमने तो आज बहुत अच्छी बात कही। मैं आज ही महेश की शादी की बात शुरू करता हूँ।

विमला : महेश से भी इस बारे में बात कर लेते।

दीनानाथ : बच्चों से इस बारे में बात थोड़े ही की जाती है। वह क्या जाने इनके बारे में, ये सब बड़ों के काम होते हैं।

विमला : फिर भी पूछ लेते, अपना एक ही तो लड़का है।

दीनानाथ : चलो तुम कहती हो तो पूछ लेते हैं।

(महेश को आवाज लगाते हैं महेश दौड़ा–दौड़ा आता है।)

महेश : जी पापा, कहो क्या बात है?

दीनानाथ : बेटा! तुम तो देखते ही हो कि तुम्हारी माँ की तबीयत ठीक नहीं रहती है और यह सारे दिन सुस्त पड़ी रहती है। घर का सारा काम भी अब इनसे नहीं हो पाता है, हम चाहते हैं कि तुम्हारी शादी कर दें।

महेश : नहीं पापा, मैं अभी शादी नहीं करूँगा, मैं अभी पढ़ना चाहता हूँ।

दीनानाथ : अरे बेटा, इसमें हम तुम्हारी पढ़ाई थोड़े ही छुड़वा रहे हैं, तुम पढ़ना आराम से।

महेश : नहीं पापा, मैं अभी शादी नहीं करूँगा। गुरु जी कहते हैं कि छोटी उम्र में शादी करना बाल–विवाह कहलाता है और बाल–विवाह करने पर पुलिस पकड़ लेती है।

दीनानाथ : ऐसा कुछ नहीं है। ये सब कहने की बातें हैं। देखो हम तो छोटे से थे तभी हमारी शादी हो गई थी। हमको तो किसी ने नहीं पकड़ा।

महेश : पापा! आप अभी मेरी शादी मत करो, मैं अभी पढ़ना चाहता हूँ।

(दीनानाथ गुस्से में हो जाता है)

दीनानाथ : (गुस्से में) अरे! चुप कर, मैं अभी शादी नहीं करूँगा। मैं अभी शादी नहीं करूँगा। एक ही रट लगा ली। तुझे पढ़ना है पढ़, पैसे चाहिए पैसे ले। तू दो अक्षर क्या पढ़ा, बड़ों के सामने जुबान चलाने लग गया। हम छोटे थे, तो पिताजी के सामने चारपाई तक पर नहीं बैठते थे और तू जुबान लड़ा रहा है, अरे विमला, मैंने कहा था ना यह सब बड़ों की बातें हैं, बच्चे क्या जानें इनके बारे में, तेरा काम है पढ़ना तो पढ़, गुरु जी से मैं बात कर लूँगा।

(दीनानाथ बाहर निकल जाता है और महेश के गुरुजी के पास पहुँच जाता है गुरुजी के पास पहुँचकर)

दीनानाथ : मास्टर जी! राम राम! हमारा महेश कैसा है पढ़ाई में।

मास्टर जी: अरे दीनानाथ जी, राम राम! आपका महेश पढ़ाई में बहुत अच्छा लड़का है। देखना एक दिन वह आपका नाम रोशन करेगा।

दीनानाथ : यह सब आपकी मेहरबानी है गुरुजी।

मास्टरजी: अरे भाई दया तो सब ऊपर वाले की है। कहो कैसे आना हुआ?

दीनानाथः मास्टर जी मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूँ?

मास्टर जी: कहो क्या बात है?

दीनानाथ : मास्टर जी हम महेश की शादी करना चाहते हैं। पर वह बार-बार मना करता है, तो आप उसे समझाओ।

मास्टरजी: अरे दीनानाथ जी, आप यह क्या कह रहे हैं, अभी वह छोटा बच्चा है, अभी शादी लायक थोड़े ही हुआ है। अभी उसे पढ़ने दो। जब बड़ा हो जाए तब करना उसकी शादी।

दीनानाथ : मास्टर जी, पन्द्रह साल का हो गया है, इससे बड़ा क्या होगा हम तो जब छोटे थे तभी हमारी शादी हो गई थी।

मास्टर जी: अरे दीनानाथ जी! आप का जमाना दूसरा था अब जमाना बदल गया है। अब इक्कीस साल से छोटा लड़का और अट्ठारह साल से छोटी लड़की की शादी करने पर बाल विवाह कहलाता है और इस स्थिति में पुलिस पकड़ लेती है। महेश पढ़ाई में बहुत अच्छा लड़का है; आप उसे पढ़ने दो।

दीनानाथः मास्टरजी! हम उसे पढ़ने से थोड़े ही रोक रहे हैं। आप उसे पढ़ाओ। शादी करने से हमारे घर में बहु आएगी और महेश की माँ को काम का सहारा हो जाएगा। पुलिस की टेंशन मत करो मेरी बहुत आगे तक पहुँच है कोई नहीं पकड़ेगा। बस आप तो उसकी पढ़ाई में कमी मत आने दो। इतना कहकर दीनानाथ वहाँ से चल देता है। अच्छा गुरुजी राम-राम चलता हूँ। मास्टर जी अवाक् खड़े देखते रह जाते हैं।

दूसरा दृश्य

महेश की शादी हो जाती है। घर में खुशी का माहौल रहता है। घर में बधाई देने वालों का तांता लगा रहता है। कुछ दिनों बाद डाकिया एक डाक पार्सल लेकर आता है। महेश डाक लेकर अन्दर आता है। (दीनानाथ डाक देखकर)

दीनानाथः बेटा महेश! यह किसका कागज है।

(महेश लिफाफे में से एक कागज निकालकर पढ़ता है उसका चेहरा खुशी से खिल उठता है)

महेश : पापा मैंने इंडियन नेवी का टेस्ट दिया था। मैं उसमें पास हो गया हूँ अब मुझे साक्षात्कार के लिए बुलाया है।

दीनानाथ : (विमला को आवाज लगाता है) अरे! सुनती हो देखो अपने महेश की नौकरी का कागज आया है।

विमला : अजी, यह तो बहुत अच्छी बात है।

दीनानाथ : देखो, अपने तो बहू भी बहुत भाग्यशाली आयी है। बहू के आते ही महेश की नौकरी लग गयी है।

विमला : हाँ!

दीनानाथः तो महेश वहाँ कब जाएगा।

महेश : कल दोपहर दो बजे दिल्ली बुलाया है।

दीनानाथः अब तो समय भी बहुत कम है, तुम कब जाओगे वहाँ?

महेश : मैं कल सुबह दिल्ली के लिए निकल जाऊँगा।

(दूसरे दिन सुबह जल्दी महेश साक्षात्कार देने दिल्ली चला जाता है। इधर महेश की बहू के पेट में दर्द की शिकायत होने पर विमला और दीनानाथ उसको अस्पताल ले जाते हैं। रास्ते में पेट दर्द ज्यादा बढ़ जाता है। अस्पताल तक पहुँचते-पहुँचते उसकी तबीयत बहुत खराब हो जाती है। उसको अस्पताल में भर्ती कर लिया जाता है। थोड़ी देर बाद डॉक्टर जब बाहर आता है तो विमला और दीनानाथ दौड़कर उसके पास जाते हैं।)

विमला : डॉक्टर साहब! कैसी है हमारी बहू?

देश हमें देता है सब कुछ
हम भी तो कुछ देना सीखें।

डॉक्टर : देखिए, आपकी बहू गर्भवती थी। अभी उसका शरीर माँ बनने लायक नहीं था। जिसके कारण उसके शरीर में पल रहा बच्चा गर्भ में ही खत्म हो गया। अस्पताल तक पहुँचने में देरी होने के कारण बच्चे का जहर उसके शरीर में फैल गया। जिसके कारण उसकी भी मौत हो गयी। हमने बहुत कोशिश की आपकी बहू को बचाने की लेकिन अफसोस! हम उसको बचा नहीं पाए। अब आप उसको घर ले जाओ।

(विमला और दीनानाथ बहू के मृत शरीर को लेकर रोते-बिलखते घर आ जाते हैं। घर में मातम छा जाता है। उधर महेश को भी बाल विवाहित होने के कारण साक्षात्कार से निकाल दिया जाता है। महेश उदास मन से घर आता है घर आते ही दीनानाथ पूछता है, बेटा तेरी नौकरी का क्या हुआ?)

महेश : आपने अपने स्वार्थों की खातिर मेरे सपनों को आग लगा दी। (वह फूट-फूट कर रोने लग जाता है)

दीनानाथः मुझे माफ कर देना बेटा, मैं तेरा गुनहगार हूँ। (महेश से लिपटकर रोने लग जाता है)

तभी नेपथ्य से गीत सुनाई देता है-

अरे! कच्चे घड़े में पानी भरोगे ओ.....2
घड़ा तो फूटेगा
छोटी उमर में शादी करोगे, जीवन रूठेगा
इक्कीस बरस का छोरा होगा
अट्ठारह बरस की छोरी होगी
तभी ब्याह की डोरी होगी
अरे सही उमर का जोड़ा होगा ओ.....2
जीवन खिलेगा
छोटी उमर.....
छोरा भी पढ़ाओ और छोरी भी पढ़ाओ
दिन में नहीं तो रात को पढ़ाओ
अरे पढ़ी-लिखी जब जोड़ी होगी ओ.....2
तो जीवन सँवरेगा
छोटी उमर.....
धीरे-धीरे पर्दा गिरता है।

वरिष्ठ अध्यापक (गणित)
रा.आ.मा.वि., गढ़ी, थानागाजी,
अलवर, (राज.)
मो: 8104346722

कहानी

सुख की नींद

❐ हिम्मतराज शर्मा

किंवाड़ के खटकने की आवाज सुन मोडसिंह के निढ़ाल पड़े शरीर में कुछ हरकत हुई। ताव से तपते, काँपते, झुर्रियों भरे हाथों से आर्मी के छेद-छेद हो चुके पुराने राखिया कम्बल में से मुँह बाहर निकाल उसने किंवाड़ की तरफ देखा। साँझ के धुंधलके में लगा दो लोग अन्दर आ रहे हैं। मोटे, घिसे काँच वाले, टूटे, पुराने चश्मे की एक डंडी को बाएँ कान के ऊपर अटका कर पहचानने की अकारथ कोशिश करने लगा। इकहत्तर की लड़ाई में जो आँखें बिना चूके दुश्मन पर चुन-चुन कर निशाना लगा सकती थीं उनके आगे अब जैसे मकड़ी का जाला जैसा तन गया था।

''संध्या बेला कभी उसके घर कोई आता तो नहीं है। इस कुबेला आज कौन आया है?'' वह सोचने लगा। पनियाई आँखों पर जोर लगाया तो जान पड़ा कि एक लड़का और उसके पीछे-पीछे चलती एक औरत उसी की ओर आ रहे हैं। 'कुण सा?' कमजोर काँपती आवाज में उसने पूछा। 'दाता, ओ तो म्हे हूँ जब्बरसिंह,' बालक ने उत्तर दिया। 'जबरू?' मोडसिंह की आवाज में संशय और अविश्वास भरा था। 'हाँ, दाता। हुकुम। खम्माघणी।' जब्बर सिंह ने मोड सिंह के पाँवों को छूकर कहा-'जीवतो रे।' मोडसिंह ने कहा।

तब तक महिला भी पास आ गई थी। दोनों हथेलियों के बीच अपनी ओढ़नी के आँचल को दबाकर वह मोडसिंह के सामने सर झुका कर बैठ गई। 'कुण है रे, जबरू?' 'मम्मी है दाता।' 'मम्मी?' मोडसिंह ने अचरज से पूछा। 'हाँ दाता।' 'कठई आगे जारिया हो?' 'नहीं दाता। मैं और मम्मी अब यहीं रहेंगे। आपके पास।'

'पर...?' इस छोटे से शब्द में जाने कितने ही सवाल छिपे थे।

''जबरू, दाता ने अरज कर, कि मैं इण घर ने छोड़कर घणी गलती करी।'' धीमी लेकिन पश्चाताप भरी ऐसी आवाज में, जिसे दाता स्पष्ट रूप से सुन सके, कुसुम कँवर ने कहा, ''म्हारी गलती रो कोई पार नहीं है। म्हारी गलती छिमा

जोग नहीं है। पण आप मोटा हो। मायत हो। मने माफ करो। मने आपरे चरणों में शरण दिराओ।'' बात खतम होते-होते कुसुम ने मोडसिंह के पाँव पकड़ लिए। सिसकियों से उसका बदन पत्तेसा थरथरा रहा था।

भावना की नदी जब सब्र का बाँध तोड़ कर बहने लगती है तो रास्ते के सारे अवरोध, अटकाव बहा ले जाती है। मन की पीड़ा, आक्रोश, कलुष-सब तिरोहित हो जाते हैं।

मोडसिंह ने बहू के शब्दों में छिपी वेदना, आर्तता एवं पश्चाताप की भावना को अनुभव किया। कहते हैं आँसू भी संक्रामक होते हैं। बहू को रोते देख उसके आँसूओं से अनजान आँखें भी छलक पड़ी।

बहादुर सिपाही को कभी रोना नहीं आता। मोडसिंह रोया तो तब भी नहीं था, जब उसका इकलौता बेटा कश्मीर में आतंकवादियों से लड़ते हुए शहीद हो गया था। अचलसिंह का तिरंगे में लिपटा शव जब शमशान की ओर ले जाया जा रहा था, तब उसने भी अपनी सेना की पुरानी वर्दी पहन कर बेटे की अरथी को कन्धा दिया था। लोग रो रहे थे। पर उसका सीना गर्व से तना हुआ था। उसके बेटे ने मात-भोम का कर्जा चुका दिया था। राजपूत कुल की आन रख ली थी। गोली का घाव उसके सीने पर था। दिल में एक अजानी हूक सी उठ रही थी पर उसने अपनी छाती वज्र सी बना ली थी। लोग 'अचलसिंह जिंदाबाद, भारत माता की जय' के नारे लगा रहे थे। कलेक्टर, एस.पी. और भी कई बड़े-बड़े लोग अचलसिंह के शव पर पुष्पाहार चढ़ा रहे थे। पर वह निश्चलसा, खामोश, सूनी आँखों से सब कुछ देखता रहा। बिगुल बजाने वालों ने जब बिगुल पर लास्ट पोस्ट की धुन बजाई और बंदूकों से सलामी दी तब भी वह पथराई आँखों से सब कुछ देखता रहा। जब जवानों ने सावधान होकर अचलसिंह को सेल्यूट दिया तो उसने भी 'ठक' से सेल्यूट दागा था। पत्रकारों ने बाद में उसका इंटरव्यू लेते समय उसके पोते के बारे में पूछा तो उसने गर्व से कहा था कि वह उसे भी एक सैनिक ही बनाएगा।

अचलसिंह के जाने के बाद घर में बस तीन प्राणी ही रह गए। उसकी स्वयं की पेंशन आती थी। गाँव में एक छोटासा खेत था, जो उसने बाँटे पर दे दिया था। इसी से इनका गुजारा चल रहा था। अचलसिंह की मौत के बाद जो कुछ भी उपदान के रूप में धनराशि मिली थी उसे मोडसिंह ने जब्बरसिंह के नाम चार-पाँच टुकड़ों में फिक्स-डिपॉजिट के रूप में जमा करवा दी थी। अचलसिंह की फैमिली पेंशन कुसुम कँवर के खाते में जमा होती रही। आराम से तो नहीं, पर हाँ, उनका जीवन मान-सम्मान के साथ गुजर रहा था और तभी वह आँधी आई जिसने मोडसिंह के घरोंदे को तिनका-तिनका कर दिया। जो सिपाही कभी युद्ध के मैदान में नहीं हारा वह जिंदगी के मैदान में पराजित हो गया।

अचलसिंह की मौत के बाद कुसुम की माँ और भाई बार-बार कुसुम से मिलने आते रहते थे। वह सोचता था कि वे दुःख बाँटने आते हैं लेकिन उनका इरादा कुछ और था। एक बार वे कुसुम को अपने साथ ले गए।

''हुकुम, आपकी इजाजत हो तो कुसुम जीजा को अपने साथ थोड़े दिनों के लिए ले जावें? छोटी उमर में ही बेवा होने का दुःख आसानी से नहीं भुला पा रही है। कुछ हवा-पानी बदलेंगे तो चित्त संभलेगा।'' कुसुम के भाई मनोहर सिंह ने कहा था।

''जरूर, जरूर, जैसी आपकी मर्जी'' मोडसिंह ने सहर्ष अनुमति दे दी थी। पर तब की गई कुसुम वापिस लौटकर नहीं आई। उसकी माँ ने पता नहीं क्या-क्या पट्टी पढ़ानी शुरू कर दी।

''अपने बेटे की सोच। इसे खूब पढ़ा-लिखा कर अफसर बनाना है। तेरे ससुर तो इसको भी फौजी बनाना चाहते हैं। उनकी क्या कमाई है? जमाईराजा का जमा-जत्था सब खतम हो जाएगा। जबरू के नाम भी जो पैसा जमा है, वह भी डोकरा (वृद्ध आदमी) खा-पी के उड़ा देगा। फिर क्या करेगी? अपनी औलाद का सोच। अब यहीं रह। मनोहर को कह के जबरू को अच्छी स्कूल में भरती करवा देंगे। तुझे भी अपने कलेजे से लगा कर रखूँगी। कल को डोकरा मर गया तो वहाँ तुझे कौन सहारा देगा?''

माँ की सीख ने उसे कभी वापिस ससुराल लौटने ही नहीं दिया। मोड सिंह ने कई संदेशें भेजे। लेने को आदमी भेजा लेकिन कुसुम लौट कर नहीं आयी। मोडसिंह ने भी अपनी विवशता, एकाकीपन एवं सूनेपन से समझौता कर लिया। जब जैसा मिल जाता खा लेता जैसे ईश्वर रखता, रह लेता। सुनसान रातों में पत्नी और पुत्र की यादों को रजाई की तरह ओढ़े रहता।

शुरू-शुरू में तो अपने पीहर में कुसुम की बड़ी आव भगत हुई। भाभी भी-''बाई सा-बाई सा'' कहते उस पर जान छिड़कती रहती। मनोहर पूछता रहता ''जीजा, आपके लिए क्या लाऊँ'' संकोच मत करना। आपके लिए जान हाजिर है'' लेकिन ये हालात अधिक दिन नहीं रहे। एक दिन भाभी अपनी पड़ोसन से कह रही थी-''क्या करूँ भाभीसा, जान आफत में है। आपके देवर का धंधा चल नहीं रहा है और इधर दो-दो जनों का बोझ और बढ़ गया है। भाबू सा ने तो अपनी बेटी को बुला लिया पर आफत तो हमारी बढ़ गयी।'' उसी दिन कुसुम ने अपना ए.टी.एम. कार्ड मनोहर को सौंप दिया।

''मैं जानती हूँ बीरा, तू मुझे बहुत चाहता है पर तेरी भी गिरस्ती है। बाल-बच्चों की जिम्मेदारी है। आइन्दा मेरे और जबरु के खर्चे के लिए तेरे जिजोसा की पिनसन हर महीने तू उठा लेना।''

कुछ देर ना-नुकूर करने के बाद मनोहर ने ए.टी.एम. कार्ड ले लिया।

कुसुम को जानकारी थी कि मनोहर जम कर कोई काम-धंधा नहीं करता। गाँव के कुछ लोफर टाइप के लड़कों के साथ उसका उठना-बैठना है। कभी-कभी शराब भी पीता है। वह माँ से उसके बारे में बात करती तो माँ भी उसका पक्ष ले लेती-''अरे नहीं रे, वह तो कभी-कभी होली-दीवाली ही थोड़ी बहुत लेता है। लोग तो यूँ ही उड़ाते हैं।''

पर ए.टी.एम. कार्ड मिलने के बाद मनोहर रोज ही होली-दीवाली मनाने लगा। कार्ड देने के बाद कुसुम भी पाई-पाई को मोहताज हो गई। भाभी अपने बच्चों को चुपके-चुपके खिलौने, चॉकलेट, कुल्फी आदि दिला देती। जबरू उनका मुँह देखता रहता। एक दिन कुसुम ने मनोहर से कुछ पैसे माँगे तो उसने साफ मना कर दिया- ''जीजा अभी तो हाथ बिल्कुल तंग है। जिजोसा की पेंशन तो दस दिन भी नहीं चलती।'' सुनकर कुसुम अवाक् रह गई।

जबरू को अच्छी स्कूल में पढ़ाने का सपना भी उस समय टूट गया जब उसे गाँव की एक छोटी सी स्कूल में भर्ती करवा दिया गया। जब-तब मनोहर के दोस्तों की बातें कुसुम के कानों में पड़ती-'' मनोहर बन्ना की तो हालत पतली हो गई। बेचारे मुसीबत में फँस गए। अपनी गिरस्ती चलती नहीं और दो-दो लोगों की आफत और गले पड़ गई।'' पर कुसुम इन बातों की ओर ध्यान नहीं देती। लोगों का क्या? लोग तो कहते रहते हैं। गनीमत है उसके भाई के मन में ऐसी कोई बात नहीं। बहन का उस पर क्या बोझ? वह हर महीने अपनी पैनसन भी तो दे रही है।

पर उसका यह भरम भी एक दिन टूट गया। एक दिन मनोहर गोरधन काकोसा से बात कर रहा था। गोरधन काकोसा उसे कह रहे थे, ''धन है मनोहर तने धन है। भाई हो तो तेरे जैसा। बहन का पूरा भार अपने सर पर ले लिया। वैसे कुसुम भी कुछ दे रही है या नहीं?'' मनोहर ने कहा था, ''अरे नहीं काकोसा, उससे एक भी पैसा लेना हराम है। माँ-भाई और बहन से क्या लेना? मैं तो जो भी कर रहा हूँ अपना फरज समझकर रहा हूँ।'' सुन कर कुसुम सन्न रह गई। पर कुछ कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाई।

कुछ दिन बाद मनोहर ने कुसुम से कुछ रुपये माँगे। उसे कोई नया धंधा शुरू करना था। पर कुसुम कहाँ से देती? बचत खाते में जितनी भी जमा-पूँजी थी उसे तो वह पहले ही मनोहर को दे चुकी थी। मनोहर ने उससे आग्रह किया, ''जीजा, एक बहुत अच्छा धंधा हाथ लग रहा है। कुछ-न-कुछ तो करना पड़ेगा। दो-दो गिरस्ती का बोझ है। कैसे उठाऊँ? आप ऐसा करो- वो जबरू के नाम की जो एफ.डी. है उसे तुड़वा दो। धंधा चलते सारी रकम चुका दूँगा।

कुसुम ने एफ.डी. तुड़वा कर दो लाख रुपये मनोहर को दे दिए। पर न तो उसे कोई धंधा करना था न उसने किया। कुसुम के रुपयों से कुछ रुपये जिनसे उधार लिया था उन्हें चुका दिया और बाकी के शराब में उड़ा दिए। कुछ महीने बीते और मनोहर ने फिर कुछ रुपये माँगे। इस बार कुसुम ने साफ मना कर दिया-''बीरा, ये पैसे तो आड़ी-बखत के लिए रखे हैं। जबरू के लिए कुछ तो बचा कर रखना होगा।''

इस पर भाभी ने सारा घर सर पर उठा लिया। ''जामण-जाए भाई के लिए बाई सा के मन में कोई कसक नहीं है। भाई दिन-रात पच-पच कर चार पैसे कमाता है। खुद की औलाद चाहे जैसी रहे, बहन और भाणेज के लिए जीव सूखता है और बहन को देखो?''

माँ ने भी समझाया, ''मनोहर की गिरह-दशा अभी खराब चल रही है। दिन फिरेंगे तो सब कुछ ठीक हो जाएगा। तेरी एक-एक पाई चुका देगा। तू जबरू की चिंता मत कर। हम हैं ना?'' और जबरू की एक और एफ.डी. मामोसा की बोतल में समा गई। जब तीसरी बार फिर मनोहर ने पैसे माँगे तो कुसुम का धीरज जवाब दे गया। अभी दो साल भी नहीं हुए थे और पेंशन के अलावा चार-पाँच लाख रुपये खर्च हो गए थे। अभी तो सारी जिन्दगी बाकी पड़ी थी। जबरू के पापा कहते थे, ''मैं इसे राजकुमार की तरह रखूँगा। मैं तो नहीं बन सकता पर इसे कैप्टन बनाऊँगा। ''उन्हें क्या पता था कि उनका यह राजकुमार कभी ननिहाल की गलियों में धूल फाँकता घूमेगा। इसे सर का बोझ और जान की आफत समझा जाएगा। कुसुम को याद आया कि अपने खुद के गाँव में इसका कितना सम्मान था। शहीद का यह बेटा पूरे गाँव के लोगों के हिवड़े का हार था। दाता हुकुम भी इसकी छोटी से छोटी इच्छा पर अपनी जान छिड़कते थे। कभी भी उन्होंने इसके पापा की पेंशन को हाथ नहीं लगाया। कहते थे- ''बीनणी सा, मेरी पेंशन से जैसे-तैसे काम चला लेंगे। रूखी-सूखी खा कर गुजारा कर लेंगे। पर अचलू की पेंशन को हाथ भी नहीं लगायेंगे। जबरू को मेजर बनाना है। इसके बाप का सपना पूरा करना है।'' और कुसुम

ने घर, अपने घर लौटने का फैसला कर लिया।

मनोहर ने कहा, ''क्यों जीजा, यहाँ क्या तकलीफ है? यों चली गईं तो लोग क्या कहेंगे? लोग कहेंगे कि मनोहर एक बहन को नहीं रख सका। हमारी नाक कट जाएगी।''

भाभी ने कहा, ''बाई सा, जल्दबाजी में फैसला मत करो। आ नी व्हे की पाछे पछतावो करनो पड़े। ''माँ ने कहा, ''कुसुम तू भूल कर रही है। यहाँ हम सब तेरा ध्यान रखने वाले हैं। वहाँ कौन है? कल को डोकरा गुड़क गया तो तेरी देखरेख कौन करेगा?'' पर कुसुम ने एक ही जवाब दिया-'' भाबूसा, लड़की की शादी के बाद ससुराल ही उसका घर होता है। मैंने अपना घर छोड़कर गलती की। औरत को अपने घर में ही सच्चा मान-सम्मान मिलता है। देवरे (देवालय) में रखी भगवान की मूरत को कहीं दूसरी जगह रख दो तो उसका भी मान कम हो जाता है।''

माँ ने फिर समझाने की कोशिश की पर कुसुम का एक ही कहना था, ''नहीं भाबूसा, अब मत रोको। घर छोड़ते समय मैंने दाता का ध्यान नहीं रखा। उनका एकाएक बेटा चला गया। बहू और पोता भी उन्हें अकेला छोड़ गए। हमारे बिना उनकी आत्मा कितनी किलपती होगी? जबरू के पापा स्वर्ग से मुझे धिक्कार रहे होंगे। मुझे बहुत पाप लगेगा। और वह लौट आयी।

कुसुम की देह पत्ते-सी काँप रही थी। वह ससुर के पाँवों में सर रखे सिसक रही थी। सावन की सीली-सीली रातों में झिरमिर-झिरमिर, निःशब्द बरसती बरसात की बूँदों की तरह उसकी आँखों से झरते आँसुओं के साथ ही उसके दिल की पीड़ा भी झर-झर बहने लगी। प्रायश्चित के आँसुओं से मोडसिंह के पाँव भीग-भीग गए। कठोर से कठोर चट्टान भी पानी से कट जाती है। बेटे की मौत पर नहीं रोने वाला कठोर फौजी आज पिघल गया। उसके मुँह से बोल नहीं निकल पाए। बस अपना थरथराता हाथ उसने कुसुम के सर पर रख दिया।

न जाने कब मोडसिंह की आँख लग गयी। बेटे की मौत के बाद पहली बार उसने रात भरपूर नींद ली थी। सुख की नींद।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
पंचवटी कॉलोनी, सोजत रोड, पाली
मो: 9929602057

जीवन का कड़वा अनुभव

❐ **खेतु खान शेख**

बात करीब तीस वर्ष पुरानी है। मैं राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, गोदन (जालोर) में अध्यापक के पद पर कार्यरत था। उस समय कक्षा चतुर्थ में एक बालक भी पढ़ता था। वह बालक पढ़ाई में कमजोर, संकोची स्वभाव का और कक्षा में पीछे बैठने वाला था। कक्षा कार्य व गृहकार्य भी बहुत कम ही करता था। अध्यापकों के दिमाग में वह बालक कामचोर व निट्ठला जैसी छवि का था।

एक दिन की बात हैं, मध्याह्न का समय था। मध्याह्न समाप्त होने की स्कूल की घंटी बज चुकी थी। मैं शारीरिक शिक्षक के रूप में एक छोटा डंडा लेकर छात्रों को कक्षाओं में जाने का निर्देश (PTI का पद रिक्त होने के कारण) दे रहा था, सभी बच्चे दौड़ते हुए अपनी-अपनी कक्षाओं में पहुँच रहे थे।

लगभग स्कूल के मध्याह्न की घंटी बजने के 5-7 मिनट बाद एक लड़का दौड़ता हुआ, विद्यालय में पहुँचा। मैंने उससे बिना कारण पूछे, उसे मेरे पास बुलाया और उसको विद्यालय के मैदान के चार चक्कर लगाने का आदेश दिया। छात्र ने मेरे आदेश की पालना करते हुए चार चक्कर पूरे किए, फिर मैंने उसको कक्षा में बैठने का आदेश दिया। बच्चा अभी कक्षा में पहुँचा ही नहीं था और उसका पेट दुखने लगा। छात्र रोने लगा, मैं उसके पास गया, उसको स्टाफ रूम में ले जाकर पंखे के नीचे सुलाया। फिर 10-15 मिनट बाद उसका पेट ठीक हुआ, उसको पानी पिलाया व लाड़-प्यार से सांत्वना दी। सांत्वना देने के पश्चात् उससे लेट आने का कारण पूछा- तो मैं उसका कारण सुनकर दंग रह गया। मैंने उसे बिना कारण पूछे दण्ड दिया, जिसका मुझे आज तक पश्चाताप है।

उस छात्र ने लेट आने का कारण बताया कि मैं सुबह घर से बिना खाना खाए स्कूल आ गया था, क्योंकि मेरे घर पर खाद्य सामग्री नहीं थी। मेरी माताजी लकड़ियों की भारी (गठ्र) जंगल से लाकर, उसको बेचकर, उससे जो रुपये प्राप्त हुए, उन रुपयों से आटा चक्की से आटा लाकर, रोटी बनाकर हम सभी भाई-बहिनों को रोटी बनाकर खिलाई। तब मैं रोटी खाकर, अब स्कूल आया हूँ।

मैं हतप्रभ था। इसमें बच्चे की कोई गलती नहीं थी। अध्यापकों को चाहिए कि बिना कारण जाने किसी छात्र/छात्रा को किसी भी प्रकार का मानसिक, शारीरिक दण्ड आदि नहीं देवे। शिक्षक को संवेदनशील होकर, समर्पण एवं निष्काम भाव से आत्मीयता पूर्वक शिक्षा देनी चाहिए। शिक्षित व्यक्ति के व्यक्तित्व में विनम्रता होनी चाहिए न कि दण्डात्मकता उस दिन के बाद दण्डात्मक आदेश देना मैंने बन्द कर दिया।

अब में सेवानिवृत्त भी हो चुका हूँ परन्तु बिना कारण पूछे बालक को सजा देने की बात आज भी मेरे जहन में तीर की तरह चुभती है। हालाँकि वही बालक आज वर्तमान में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

हालाँकि शिक्षण कार्य के दौरान छात्र को शारीरिक दण्ड या मानसिक प्रताड़ना देना सरकार द्वारा प्रतिषेध है।

प्रधानाध्यापक (से.नि.)
लालपोल के अन्दर, जालोर
(राज.)-343001

ग़ज़ल

❐ **पुरुषोत्तम प्रसाद ढोडरिया**

अध्यापक
कृषि उपज मण्डी के पास,
अकलेरा रोड, छीपा बड़ोद,
जिला-बांरा (राज.) 325221
मो. 9928426490

क्यूँ ऐसा अकसर लगता है
घर में भी इक घर लगता है।
दुनिया मेरी, मैं दुनिया का
मुझको ये क्यूँकर लगता है।

सब कुछ पाकर भी क्यूँ मुझको
कुछ खोने का डर लगता है।
कैद हुए हैं अपने घर में
अब अपनो से डर लगता है।

प्यास गहनतम यदि हो जाये
कतरा भी सागर लगता है।
सच तो ये है 'पुरु' गुर्बत में
चिथड़ा भी चादर लगता है।

हीरा मिल गया

❐ अरनी राबर्ट्स

चेन्नई एक्सप्रेस ट्रेन जयपुर स्टेशन से ठीक सायं सात बजे रवाना हुई। राजेन्द्र शर्मा अगर पाँच मिनिट भी देर कर देता तो यह ट्रेन नहीं पकड़ पाता। जब वह प्लेटफार्म में एंटर हुआ था तभी ट्रेन के इंजिन ने विसिल दे दी थी। यह तो अच्छा हुआ सेकेण्ड ए.सी. कोच जिसमें उसे चढ़ना था वह प्लेटफार्म के प्रवेश द्वार के ठीक सामने था। उसके ट्रेन में चढ़ते ही वह चल पड़ी। उसकी इनसाइड लोअर की सीट थी। एक परिवार वहाँ मौजूद था और उसकी बर्थ वाली पर बड़े आराम से एक युवती लेटी हुई थी। उसने कहा, ''यह बर्थ मेरी है, कृपया आप सीधे होकर बैठ जाइए।''

युवती ने बगैर उसकी ओर देखे हुए कहा ''मैंने कब कहा मेरी है, आप भी बैठ जाइए अभी तो सात ही बजे हैं।

''आप पाँव समेटेंगी तभी तो बैठ पाऊँगा।'' राजेन्द्र ने खिसिया कर कहा। सामने बर्थ पर बैठी मोटी-सी प्रौढ़ा जो शायद उसकी माँ होगी उसे ठीक से बैठने के लिए कहा।

सूटकेस बर्थ के नीचे चेनअप करने के बाद उसने सामने बैठे परिवार पर ध्यान दिया। प्रौढ़ दम्पत्ति व उनकी दो बेटियाँ सीट पर बैठे थे और दस वर्षीय बेटा ऊपरवाली बर्थ पर लेटा था। ऊपर लेटा बच्चा नीचे उतर आया और बड़ी बहन के पास खिड़की में बैठने की जिद करने लगा, पर वह गुस्सा होकर कहने लगी अब रात को क्या देखेगा बाहर अंधेरे के सिवाय कुछ नहीं है।

राजेन्द्र ने कहा, ''बैठने दीजिए न.. बच्चा है.. बच्चों को खिड़की के पास बैठने का मन होता ही है।

''आपसे पूछा किसी ने?''

''पूछा तो नहीं, पर क्या मैंने गलत कहा?''

''पम्मी बैठने दे न बबलू को यह लड़की भी बस..। माँ ने आँखें तरेरते हुए कहा।

''थैंक्यू भइया...'' लड़के ने राजेन्द्र से शेक हैंड करते हुए कहा। पम्मी नाम की उस युवती ने बुरा-सा मुँह बनाया।

प्रायः जैसा सफर में होता है, सहयात्री आपस में एक दूसरे का परिचय प्राप्त करते हैं। राजेन्द्र ने अपना नाम बताया और उस परिवार का परिचय भी प्राप्त किया।

वह अग्निहोत्री परिवार था। दम्पत्ति का नाम श्री ओम अग्निहोत्री और अलका थे। बड़ी वाली बेटी पायल थी जिसे पम्मी कह कर बुला रहे थे। दूसरी सोलह वर्षीया पुत्री सोनल थी जो मोबाइल में खोई हुई थी। तीसरा बबलू था। अलका अग्निहोत्री ने बताया पम्मी एम.एस.सी. है और वे लोग उसके रिश्ते की बात करने भोपाल जा रहे हैं।

''वैसे भोपाल कैसा शहर है?'' श्री ओम ने पूछा।

''बहुत बड़ा और अच्छा शहर है।''

देखो बिटिया का रिश्ता वहाँ हो जाए तो अच्छा हो। इतनी पढ़ी-लिखी, गुणी और संस्कारित लड़की है.. पर रिश्ते के लिए बात तो बन जाती है पर मामला दहेज पर आकर अटक जाता है।

हर कोई मुँह फाड़ता है... लड़की वालों की भी अपनी सीमाएँ होती हैं, उन्हें भी तो नजरअंदाज मत करो... बिटिया भी अब अड़ गई है, रोज-रोज के देखने-दिखाने से और कह दिया है कि यह आखरी बार है। अलका अग्निहोत्री बोली।

''होता है आंटी जी... दहेज हमारे समाज को घुन की तरह खा रहा है। भगवान करे इस बार इनका रिश्ता हो ही जाए।

साढ़े आठ बजे सबका खाना पीना हुआ। राजेन्द्र ने भी अपना टिफिन निकाला और खाना खा के बुजुर्ग दम्पति की अवस्था को देखते हुए नीचे की अपनी बर्थ उनके लिए छोड़ दी और ऊपर की बर्थ पर चला गया। सामने की ऊपर बर्थ पर पम्मी थी। कई बार न चाहते हुए भी दोनों की निगाहें आपस में मिल जाती थीं। राजेन्द्र ने गौर से उस तुनक मिजाज लड़की को देखा। वह वास्तव में सुंदर और आकर्षक थी। छरहरा शरीर, खूब घने काले स्याह बाल और तीखे नैन नक्श।

कोटा स्टेशन पर ट्रेन रुकी। बबलू पानी पीने के लिए माँग रहा था। उन लोगों के पास पानी शायद खतम हो गया था। माँ ने पम्मी को बाहर जाकर दो बॉटल्स पानी खरीद लाने को कहा। ''अरे आप कहाँ जाएँगी.. मैं ले आता हूँ।'' पम्मी की माँ से पैसे लेकर वह प्लेटफॉर्म पर उतर गया। कुछ ही देर में पानी लेकर आ गया।'' अरे मैं आपको मिरण्डा की एक बॉटल लाने को कहना तो भूल ही गई, खैर मैं जाती हूँ। माँ-बाबूजी के रोकते-रोकते भी वह उतरकर प्लेटफार्म पर चली गई। कोटा में दस मिनिट का ठहराव था। अचानक ट्रेन चल पड़ी। अग्निहोत्री परिवार घबरा गया। राजेन्द्र भागकर दरवाजे पर पहुँचा। देखा पम्मी भागते हुए ट्रेन में चढ़ने का असफल प्रयास कर रही थी। हाथ में कोल्ड ड्रिंक की बॉटल होने के कारण वह कम्पार्टमेंट के दरवाजे का हेंडल पकड़ नहीं पा रही थी।

'आप पहले यह बॉटल मुझे पकड़ाओ... घबराओ मत ट्रेन ने गति नहीं पकड़ी है... हाँ अब हेंडल पकड़कर फुटबोर्ड पर पाँव रखो और ईश्वर का स्मरण करते हुए ऊपर चढ़ जाओ। आखिर पम्मी राजेन्द्र की मदद से ट्रेन के अन्दर सकुशल आ गई। वह घबराहट से हाँफ रही थी। कुछ देर साँसों पर काबू पाकर उसने कहा

''थैंक्यू वैरी मच''

''इट्स ऑल राइट पर यह एडवेंचर करने की जरूरत कहाँ आ रही थी। कुछ हो जाता तो?

''अब लेक्चर मत दीजिए चलिए!'' बेटी को सुरक्षित आया देख अग्निहोत्री दम्पति की जान में जान आई।

''बेटा तुम कहाँ रहते हो भोपाल में या जयपुर में? पम्मी की माँ ने राजेन्द्र से पूछा।

''मैं सीकर का रहने वाला हूँ। भोपाल में काम करता हूँ। अभी माँ पिताजी से मिलकर आ रहा हूँ। फूफाजी ने एक विशेष काम के लिए बुला लिया भोपाल; वरना दो-चार दिन और रुकता सीकर में।''

''अब इनकी तबीयत खराब रहती है बी.पी.हाई हो जाता है पर अब बेटी के रिश्ते की बात है सो इनके भैया-भाभी के पास जा रहे हैं,

देखा है उन्होंने कोई लड़का।''

''माँजी बेटी आपकी सुंदर है, सुशील है, पढ़ी-लिखी है इनका रिश्ता जरूर पक्का हो जाएगा।

''तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर..चलो अब सो जाते हैं..।

रात कोई दो बजे नीचे सो रहे अग्निहोत्री परिवार में हचचल मच गई। पम्मी नीचे पहुँच गई थी। राजेन्द्र की नींद भी झटके से खुल गई हलचल के कारण। उसने देखा श्रीओम जी बुरी तरह हाँफ रहे थे और उनकी पत्नी और पम्मी उनकी पीठ व पाँव के तलुवे मल रहे थे।

''क्या हुआ?''

''पापा को बड़ी घबराहट हो रही है। सीने पर बोझ भी लग रहा है।'' पम्मी ने कहा।

राजेन्द्र झटपट नीचे उतरा, उनकी पल्स चेक की।

पम्मी ने झुँझलाकर कहा, चेक तो ऐसा ही कर रहे हैं जैसे डॉक्टर हो।'

बगैर कुछ कहे राजेन्द्र ने सीट के नीचे से अपना सूटकेस निकाला और खोलकर दवाइयों का एक पैकेट निकाला और दो टेबलेट्स पम्मी की माँ को देते हुए कहा,''एक टेबलेट अभी दे दो, एक सुबह कुछ खिलाकर दे देना..। सुबह हॉस्पिटल में इनको दिखा देना।' अविश्वसनीय भाव से पम्मी ने कहा, कहीं पापा की हालत इन गोलियों से और बिगड़ न जाए।

'चुप कर!' उसकी मम्मी ने उसे डाँट दिया और एक टेबलेट पानी के साथ पति को खिला दी।

राजेन्द्र ने जो टेबलेट दी थी उसने जादू का सा असर किया और वे कुछ ही देर में आराम से सो गए। पम्मी बर्थ पर लेटे हुए राजेन्द्र के बारे में सोच रही थी कि यह कौन है।

सुबह 7:30 बजे ट्रेन भोपाल पहुँची। राजेन्द्र ने उस परिवार से विदा ली। जाने से पहले राजेन्द्र पम्मी से बोला ''विश यू ए गुडलक.. आप बहुत सुंदर है, मेरा हृदय कहता है आपका रिश्ता जरूर पक्का हो जाएगा। पम्मी ने अपना मोबाइल नम्बर उसे दिया और एक बार पुनः हेल्प करने के लिए उसे थैंक्स कहा।

अग्निहोत्री परिवार के भोपाल पहुँचने के तीसरे दिन श्री ओम अग्निहोत्री के बड़े भाई रामनिरख के घर खासी चहल-पहल थी। पम्मी को सजाया सँवारा जा रहा था। पम्मी को देखने लड़का और उसके घर वाले आ रहे थे पर पम्मी का कतई मन नहीं था यह सब करने का। वह थक चुकी थी। कितने ही लड़के देखकर चले गए थे। उसे सबने पसंद तो किया था पर स्वीकृति के साथ दहेज का टैग भी होता था जो उसके परिवार की सामर्थ के बाहर था। माँ, पिताजी और ताऊजी के बहुत समझाने के बाद आखिर वह तैयार हो गई थी एक और साक्षात्कार के लिए। नियत समय पर वे लोग आ गए। ताऊ-ताई ने उनका स्वागत किया। उन्हें ड्राइंग रूम में बिठाया। सहसा पम्मी के पापा की दृष्टि लड़के पर पड़ी और वे बुरी तरह चौंक गए। अरे बेटा तुम? तुम भी इनके साथ आए हो? सबने आश्चर्य से उनकी ओर देखा। वह युवक जो राजेन्द्र था बोला, ''आप यहाँ इस घर में कैसे?''

''अरे भई यह तो मेरे बड़े भाई रामनिरख का घर है... वह अपना सरनेम शर्मा लगाता है।''

इतने में अलका अग्निहोत्री अपनी बेटी पम्मी को वहाँ लेकर आ गई। राजेन्द्र को देखते ही वे भी चौंक उठे। पम्मी के मुँह से निकला। अरे आप मिस्टर राजेन्द्र शर्मा।''

राजेन्द्र के फूफा जी ने कहा, ''बिटिया यह हैं डॉ. राजेन्द्र शर्मा.. न्यूरोलॉजिस्ट।''

राजेन्द्र ने कहा, ''पम्मी जी शायद आप ही वह लड़की हैं, जिन्हें दिखाने के लिए फूफा-बुआजी यहाँ लाए हैं रामनिरख अंकल के यहाँ।

''अरे तुम लोगों की तो शायद पहले ही मुलाकात हो चुकी है। बुआजी ने कहा।

पम्मी के पापा बोले हाँ- ट्रेन में हमने साथ सफर किया था जयपुर से भोपाल तक और इन्हीं की दवा से मेरी तबियत बिल्कुल ठीक हो गई थी। हम नहीं जानते थे कि एक डॉक्टर हमारे साथ सफर कर रहा है। पम्मी जो डॉ. राजेन्द्र के एकदम सामने बैठी थी बुदबुदाई, ''पम्मी तू तो गई काम से.. डॉक्टर साहब तो तुझे रिजेक्ट करेंगे हंडरेड परसेंट।

''क्या कहा आपने पम्मी जी?''

पम्मी ने कहा ''पता नहीं मुझ जैसी बदनसीब को आप जीवनसाथी बनाना पसंद करेंगे या नहीं?''

राजेन्द्र बोला 'ठहरिए आगे बढ़ने से पहले मेरा डिसिजन भी सुन लीजिए।'

ड्राइंग रूम में सन्नाटा छा गया। मुझे पम्मी से रिश्ता शत-प्रतिशत स्वीकार है। हीरा नहीं जानता कि वह हीरा है लेकिन हीरे को परखने वाली आँखें चाहिए.. मैं तो यही कहूँगा कि मुझे हीरा मिल गया।

पम्मी ने खुशी के आँसू पोंछते हुए कहा और मुझे वो सब कुछ मिल गया जो मैंने चाहा.. ट्रेन के सफर के दौरान ही इन्होंने मेरा दिल जीत लिया था। कमरा तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

पोस्ट ऑफिस रोड, भीमगंज मण्डी
कोटा (राज.)-324002
मो: 9414939850

शिक्षक जागो

❐ **सत्यनारायण नागौरी**

ओ समाज के शिक्षक जागो,
संस्कार उजाला लाओ।
सीख दर्शन राधाकृष्णन् ,
हर बालक आदर्श बनाओ।
गुटखा-तम्बाकू नशा लत,
बुराइयाँ दूर भगाओ।
नैतिक शिक्षा ज्ञान देकर,
संस्कृति मान बढ़ाओ।।
फैशन आँधी विदेशी चाल,
स्वदेशी महिमा जगाओ।
अनुशासन की पकड़ जरूरी,
सादगी पाठ पढ़ाओ।।
मात-पिता तीरथ बड़ा,
सेवा फर्ज सिखाओ।
प्रेम भाव और मानवता का,
जगमग दीप जलाओ।।
मजहब चाहे कोई हो,
सबको गले लगाओ।
ऊँच-नीच नफरत ना रहे,
प्रतिभा को चमकाओ।।
परिश्रम की हर पल आदत,
जीवन कौशल बताओ।
सीख दर्शन राधाकृष्णन्,
हर बालक आदर्श बनाओ।।

व्याख्याता,
राउमावि. केलवाड़ा-313325
जिला-राजसमंद
मो: 9610334431

विरासत

❐ गोपेश शरण शर्मा 'आतुर'

''य ह लो ! आज इस दूसरे बड़े नगर में मेट्रो की खुदाई से भवन गिर गया,'' समाचार पत्र पढ़ते-पढ़ते सुधा ने कहा। सुधाकर लेखन कार्य में व्यस्त थे। उन्होंने कार्य रोक कर कहा ''कभी गिरती थी बिजली इत्तफ़ाकन् आशियाने पर, मगर अब तो चमन में यह तमाशा रोज़ होता है।''

क्या मतलब ? सुधा ने पूछा।

''मतलब तो यही है कि मेट्रो नगरों की मेट्रो की समस्याएँ हैं'', सुधाकर ने कहा। '' तो खुदाई की आवश्यकता क्या है ? इन सुरंगों की आवश्यकता क्या है?'' सुधा ने पूछा

सुधाकर बोले, ''यह तो जनसंख्या बढ़ाने वालों से पूछो। जनसंख्या बढ़ेगी तो नगरों का विकास होगा। स्थान दूर-दूर होंगे। रोजगार की तलाश में लोग बड़े शहरों की ओर भागेंगे। जाम लगेंगे। सड़कों के जामों ने ही समस्या खड़ी कर रखी है, ये सड़कों के जाम तो यातायात को और कष्ट पूर्ण बना देंगे। तब लोगों की सुविधा के लिए भूमि ही खोदी जाएगी या ऊपर पुल बनाए जाएँगे और मार्ग सीधे किए जाएँगे। हर व्यक्ति हवा में तो उड़ नहीं सकता।''

''किन्तु खुदाई के समय इस बात का तो ध्यान रखना चाहिए कि विरासत को कोई हानि न हो,'' सुधा ने कहा।

''निश्चित रूप से रखना चाहिए सुधा। वैसे तो योजना आरम्भ करने से पूर्व ही सब समस्याओं तथा मार्ग में आने वाले भवनों तथा मंदिरों आदि पर विस्तार से विचार कर लेना चाहिए तथा सम्बन्धित विभाग तथा जनता से समुचित परामर्श कर उनके सुझावों पर भी विचार किया जाना चाहिए, जिससे बाद में विरोध न हो तथा कार्य हो जाने के बाद त्रुटियों का आकलन न हो'' सुधाकर ने कहा।

सुधा ने कहा, ''लोग विरासत को हानि होने से चिंतित है। पुराने भवनों में दरारें आ रही है। कई गिर तथा धँस रहे हैं।''

''इस समस्या का तो साथ-साथ समाधान किया जा रहा है किन्तु विरासत की समस्या, क्या केवल मेट्रो की है, सुधाकर ने पूछा?

''तो'', सुधा ने पूछा?

''विरासत तो सर्वत्र उपलब्ध है। उत्तराधिकार में मिलने वाला माल ही विरासत नहीं है। इस भूभाग पर अनेक ऐतिहासिक भवन, दुर्ग, मंदिर तथा गढ़ आदि बने हुए हैं, जो विरासत ही तो है। कई दुर्गों की प्राचीरों के पत्थर उनकी खाइयों में गिर-गिर कर सँभालने की आवश्यकता की ओर इंगित करते हैं। विरासत मात्र की सुरक्षा आवश्यक है केवल मेट्रो निर्माण मात्र से धवस्त होती विरासत की नहीं'', सुधाकर ने कहा।

सहसा द्वार पर घंटी बजती है। सुधाकर उठकर किवाड़ खोलते हैं।

''आइए-आइए दिवाकर जी,'' सुधाकर बोले।

''क्या हो रहा है?'' दिवाकर ने पूछा। ''बैठिए-बैठिए। हो क्या रहा है, हमारी और पत्नी की बातें हो रही है। इनका कार्य समाचार पत्र पढ़ना और हमारे लेखन कार्य में व्यवधान उपस्थित करना,'' सुधाकर ने कहा।

''कैसे'' ?, दिवाकर ने पूछा।

''मेट्रो की खुदाई से कई स्थानों पर विरासत को हानि हो रही है। अतः चिन्तित है। मैं कह रहा हूँ कि विरासत तो विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई है सभी की सुरक्षा के प्रति पूर्णतः सजग रहना चाहिए। अनेक मन्दिर, इमारतें, दुर्ग, गढ़ आदि-आदि सभी सँभाल चाहते हैं,'' सुधाकर ने कहा।

दिवाकर बोले, ''बात आप दोनों की ही ठीक है किन्तु विरासत का अर्थ आप दोनों एक सीमित परिवेश में ले रहे हैं। विरासत का आयाम विस्तृत है, जिसमें कई बातें आती हैं किन्तु मैं तो एक विशेष क्षेत्र की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ। किसी देश की चिरकालिक तथा महत्त्वपूर्ण मानी गई परम्पराएँ, विशेषताएँ और संस्कृति भी हेरिटेज (विरासत) है। हमारी संस्कृति में पराई स्त्री को माता के समान तथा पराए धन को मिट्टी के ढेले के समान समझने का उपदेश है किन्तु जब हम समाचार पत्र में बलात्कार के समाचार देखते हैं तो हृदय विदीर्ण हो जाता है। अपराधी पकड़े भी जा रहे हैं, उन्हें कानून के अनुसार दण्ड भी मिल रहा है। फिर भी समाचार मिलते रहते हैं। इस प्रकार के प्राणी मानव तो क्या पशु कहलाने के अधिकारी भी नहीं हैं, अन्यथा वे पशुता को भी लज्जित करेंगे। लूट-पाट के समाचार तो आप नित्य पढ़ते हैं। क्या हम अपनी संस्कृति के, विरासत में मिले, सिद्धान्तों को पूर्णतः हृदयंगम कराने में सफल रहे हैं? क्या हम इसके कारणों को मिटाने में पूरी तरह प्रयासरत हैं, जिससे ये कार्य न हों?

सुधाकर जी, क्या आपने बचपन में कभी वृद्धाश्रम का नाम सुना था? माता, पिता, दादा, दादी, पोते, पोती आदि सभी साथ-साथ मिलकर रहते थे तथा बच्चों को बुजुर्गों की सेवा करने का पाठ पढ़ाया जाता था। आज क्या सभी यह शिक्षा दे रहे हैं?

अभिवादन शीलस्य
नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चतुर्थस्तस्य वर्धन्ते।
आयुर्विद्या यशोबलम्।।

अर्थात् ''विद्वान, पूज्य, संत तथा आयु व विद्या में बड़े संबंध में पूज्य पुरुषों का अभिवादन करने का सदाचार पालन करने से तथा वृद्ध पुरुषों की सेवा करने से मनुष्य की आयु, विद्या, यश तथा बल की वृद्धि होती है।''

आज सदाचार के सिद्धान्त कितने हृदयंगम कराए जा रहे हैं? यह हमारी विरासत है। और भी बहुत सी बातें है। भौतिक विरासत तो निर्मित भी हो जाएगी किन्तु यदि यह विरासत ध्वस्त हो गई तो मानवता का भवन जर्जरित हो जाएगा।

आज इंटरनेट के मंच पर विश्व-मेला लगा है। मेला देखने जाते हैं तब अपने बच्चों तथा परिजन को सँभाल कर साथ रखते हैं कि कहीं मेले में खो न जाएँ। इसी प्रकार हमको अपनी-अपनी संस्कृति रूपी बालकों को इस मेले में सँभाल कर रखना है। मेले की सैर करें,

अच्छी-अच्छी और अनुकूल बातों को ग्रहण करें तथा अपना-अस्तित्व बनाए रखें। कहीं हमारा संस्कृति रूपी बालक इस मेले में बिछुड़ न जाए।''

''वाह ! दिवाकर जी आपने हमें दिशा दी है। अब मैं अपनी लेखनी इसी ओर चलाऊँगा,'' सुधाकर बोले।

''आप अपनी लेखनी चलाएँ, कोई उसकी उपज को अपने पैसे से प्रकाश में लादे तथा लोगों द्वारा उसको आत्मसात् कर लिया जाए तो क्या बात है,'' ''अच्छा चलें''।

''बैठिए-बैठिए। सुधा इनको चाय तो पिलाओ'', सुधाकर ने कहा।

सुधा चाय बनाने चली गई तथा दिवाकर बैठकर सुधाकर से बातें करने लगे।

'वल्लभीय', A-20, जानकी विहार,
हीरापुरा पॉवर हाउस के पीछे, अजमेर रोड,
जयपुर (राज.) 302021
फोन : 0141-2225961

गाँवों में भारत

❐ विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'

बसता है गाँवों में भारत।
हँसता है गाँवों में भारत।।
गाँवों के सुन्दर नर नारी
रामसिया के सब अवतारी
तन जिनका केशर की क्यारी
मन गंगाजल की सी झारी
खिलता है गाँवों में भारत।
मिलता है गाँवों में भारत।।
गाँवों के घर सुघड़-सलौने
जहाँ गूँजते रई-बिलौने
रम्हाती आँगन में गैया
प्यार लुटाती धरती मैया
बोल रहा गाँवों में भारत।
डोल रहा गाँवों में भारत।।
आमों पर गाती कोयलिया
फुलवारी में भौंरा छलिया
जंगल में गाते चरवाहे
खेतों में हँसते हलवाहे
गाता है गाँवों में भारत।
मुस्काता गाँवों में भारत।।

कर्मचारी कॉलोनी, गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर (राज.)
मो. 9549165579

अस्तित्व का संघर्ष

❐ मुरारी लाल कटारिया

''सुनती हो?''

''सुनाओ जी,'' मधुर स्वर लहरी ने दिल को झंकृत कर दिया। वह लम्बे समय से अस्वस्थ थी। निरन्तर घर पर लेटे रहना ही उसकी नियति बन गयी थी। कभी अस्पताल के बेड़ पर तो कभी घर के डबल-बेड के बायीं तरफ लेटी रहती। बड़ी मुश्किल से उसे बैठाने का प्रयास किया जाता। कभी तकिए पर तकिए रखकर सहारा देने की कोशिश की जाती, तो कभी बाँहों की पकड़ में रखकर उसे बैठाने का प्रयास किया जाता। वह कुछ पल ही बैठ पाती और कराहने लगती। 'मुझे लिटाओ, मेरी कमर जा रही है। गर्दन एक तरफ लटकी जा रही है।' बस, फिर से लिटा दिया जाता। बड़ी मुश्किल से चाय, नाश्ता, दलिया आदि का सेवन कराया जाता था। बहुएँ, पुत्र उसकी सेवा में तत्पर रहते थे। वे देखते थे कि वृद्ध होने पर भी पिताजी उसकी सेवा में लगे रहते थे।

जब भी बात करनी हो ''सुनती हो?'', सुनाओ जी। ''से शुरू होती। किसी का मोबाइल आए, तो कान पर रख देते और कहते, बात नहीं कर सकती हो तो जो बात कर रहा है, उसे सुन लो। मन खुश हो जाएगा। तुम्हारा भी और उसका भी, जिसका मोबाइल आया है।' 'उसकी जीभ कभी-कभी सूखकर ऐंठने लगती थी। वह बोल नहीं पाती थी। कभी कभी अस्पष्ट बोल पाती थी। मोबाइल पर बात सुनकर मुख पर प्रसन्नता प्रकट करती, तो वह भी खुश हो उठता था। उम्मीद बँध जाती थी उसके स्वस्थ होने की। लम्बे समय से मधुमेह की बीमारी ने उसके अन्य आंतरिक अंगों पर भी प्रभाव डालना शुरू कर दिया था। एक के बाद एक अनेक चिकित्सकों की चिकित्सा करवाने के बाद भी उसके शरीर में स्फूर्ति नहीं आ रही थी।

उसके पास कुर्सी पर बैठा रहता। थक जाने पर बगल में लेट जाता। वह कहने लगती ''मुझे आपकी सेवा करनी चाहिए परन्तु मैं आपकी सेवाएँ ले रही हूँ।'' वह उसके मुँह पर हाथ रखकर कहता,''तुमने बहुत सेवा की है, मेरी व पूरे परिवार की भी। अब जब तुम अस्वस्थ हो तो हमारा भी कर्तव्य हो जाता है कि तुम्हें सुख पहुचाएँ।'' यह सुनकर वह उसके चेहरे को निहारती, फिर मुस्कुराते हुए आँखें मूंद लेती। उसके पूरे मुख-मंडल पर मुस्कान फैल जाती।

उस दिन जब उसकी पलके भीगी-भीगी थीं, तो वह पूछ बैठा, ''क्यों,? किस बात पर पलके भीग गई?'' बस, ऐसे ही ''कहकर सीधे लेटे हुए मुँह एक और फेर लिया। बार बार आग्रह करने पर उसे बताया कि जब वे प्रशिक्षण में थे, तो आर्थिक तंगी के होते हुए भी शादी की वर्ष गाँठ पर अनूठा उपहार दिया था, जिसे याद कर आँखें नम हो गई।

उसे याद है कि उसने कभी भी अपने आप कुछ भी नही माँगा था। वह जो भी कुछ लेकर देता उसमें ही वह प्रसन्न हो उठती और मन-मन्दिर में बसा लेती थी। वह सम्पन्न परिवार से थी। विवाह के समय उसके परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ने पर स्वजनों ने उसके पिता को आगाह किया था कि लड़के के पिता निर्धन हो गए हैं। उसके पिताजी ने यह कहकर स्वजन को हतोत्साहित किया था कि उन्होंने लड़के के खानदान को देखा था न कि उनकी सम्पत्ति! शायद उनके आशीर्वचन ने उसकी पग-पग पर आई विफलता को दूर कर उसे ऐसा संवारा था कि वह बढ़ता ही चला गया। उसकी राह में धर्म-पत्नी सहभागिनी बनकर रही। सुख में, तो दुःख में भी, उसने कभी भी कुछ नहीं माँगा। वह भी उसके व्यवहार से सदैव प्रभावित होकर, अनेक कष्ट झेलकर उसकी खुशी में खुश हो जाता। वह सपने में भी उनके कष्टमय जीवन की कल्पना नहीं करती थी। वह भी उसके शीघ्र स्वस्थ होने का अनवरत प्रयत्न करता था। पोतियों को साथ लेकर भारत के विभिन्न नगरों, धार्मिक व प्राकृतिक स्थानों का भ्रमण करके उसे स्वास्थ्य लाभ पहुँचाने का प्रयास करता रहा।

समय गुजरता गया। वह और रुग्ण होती चली गई। अनेक व्याधियों ने उसे जकड़ लिया। वह कभी भी अपनी रुग्णता को प्रकट होने नहीं देती। उसे चिन्ता थी,तो बस एक ही, उसकी बीमारी से वह कभी भी उन्हें व्यथित नहीं देखना चाहती थी। अनेक दुःख कष्ट सहकर उसने जीवन की युवा देहरी पार कर ली थी,तो अब क्यों वह पीड़ा देकर उनके जीवन को पतझड़ में बदल दें! उसने भी उसके स्वस्थ होने में किसी भी तरह की कोर कसर नहीं छोड़ी। किसी भी तरह वह स्वास्थ्य लाभ कर ले,यह उसका लक्ष्य

था परन्तु बीमारियों ने उसे झकझोर दिया। दिनों दिन उसका गिरता स्वास्थ्य उसके जहन पर हथोड़े सा प्रहार करता, वह टूटने लगता। अपने आपको कोसने लगता कि उसकी रुग्णता को दूर नहीं कर पा रहा था। मन-मंदिर में बसे अनेक मधुर व सुन्दर पल उसे कहाँ से कहाँ ले जाते। वह भी आजाद पंछी की तरह और ऊँचा उड़ता चला जाता परन्तु उसे क्या मालूम था कि यह सब कुछ दीपक की बाती की तरह था।

आज वह अधिक बेचैन थी। नींद नहीं ले पा रही थी। रह-रह कर लम्बी साँसें ले रही थी। कभी शांत, तो कभी अस्थिर। वह उसे अस्पताल में भर्ती कराने की बात कहता तो वह मुँह मोड़ लेती। स्पष्ट था कि घर के वातावरण से दूर नहीं जाना चाहती थी, जैसे-तैसे रात काटी। सूर्य निकला, दिन वेग से गतिमान हो उठा वैसे ही उसकी साँसें भी। उसने बड़े बेटे की बहू को बुलाया। सब उसके चारों ओर एकत्रित हो गए। एक पोती ने बस इतना कहा कि मुख पर मुस्कान ले आओ। गम्भीर अवस्था व वेदना के बावजूद वह मुस्कुरा उठी। सभी के चेहरे खिल उठे। प्रत्येक के मन में एक आस जगी कि वह पूर्ण स्वस्थ हो गई है अथवा शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएगी। दिन का तापमान बढ़ने लगा। अपनी निगाहें कमरे में चारों घुमाई फिर उसे ढूँढ़ने लगी। वह उसकी अव्यक्त भावनाओं से अनभिज्ञ रहा। वह कमरे से बाहर चला आया कि पीछे से सभी के रोने-चिल्लाने की आवाजों ने चौंका दिया। वह ठिठक गया। पीछे मुड़ कर वापस कमरे में आया। कोई गीता पढ़ रहा था, कोई गंगाजल पिला रहा था, कोई उसके गालों को थपथपा कर जगाने का प्रयास कर रहा था परन्तु पंछी पिंजरा छोड़ कर उड़ गया था। चारों बेटों ने उसकी अर्थी को कंधा दिया। वह अनमना सा बैठा रहा। स्वजनों ने उसे ढाँढ़स बंधाया।

दाह-संस्कार,पगड़ी-रश्म, बारहवाँ भी सम्पन्न हो गए। रिश्तेदारों के बीच रहकर अपने आप को शून्यता से दूर पा रहा था। एक एक कर स्वजन जाते रहे और वह अकेला रह गया। भरापूरा परिवार उसका ध्यान रख रहा था परन्तु अव्यक्त रिक्तता उसे घेरती जा रही थी। वह चौंक पड़ा। उसने स्वयं को उसकी मूर्ति के सामने बैठा पाया।

से. नि. व्याख्याता
534, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी,
कोटा (राज.)-324009
मो: 9772504488

एक सुखद अहसास

❐ शकुंतला सोनी

चिराग विचारमग्न होकर स्कूल के मैदान में एक पेड़ के नीचे बैठा था। उसके सभी दोस्त उसे ढूँढ़ते हुए वहाँ आ पहुँचे, अरे चिराग! आज खाना नहीं खाया क्या? एक साथ मिले-जुले स्वर पर वह चौंका। पलाश बोला, 'अरे चिराग आज यहाँ, गुमसुम बैठे क्या सोच रहे हो, भूख नहीं लगी क्या?' 'मुझे भूख नहीं' रूखा-सा जवाब सुनकर पलाश समझ गया, जरूर कोई बात है, वरना इतना चुलबुला लड़का ऐसा उदास नहीं हो सकता। बहुत पूछने पर उसने कहा, 'तीन दिन बाद मेरा जन्मदिन है,' इतना सुनते ही सब एक साथ चिल्ला उठे हिप...हिप...हूर्रे तब तो आएगा मजा... पर सौरभ बोला, 'अरे यार! इसमें उदास होने वाली कौनसी बात है?' नहीं बात यह है.. है कि.. कहते-कहते वह पुनः रूका, विपुल ने प्यार से उसके कन्धे पर हाथ रखकर पूछा क्या बात है, यार हमसे क्या छुपाना, बता?

विपुल के प्यार भरे स्पर्श से ही चिराग बोला, बात यह है कि मेरी मम्मी मेरे जन्मदिन में शामिल नहीं होतीं। क्या...? सभी एक साथ चौंककर बोले-क्या तुम्हारी माँ तुमसे प्यार नहीं करतीं? नहीं... नहीं माँ तो मुझे बहुत प्यार करती है लेकिन.. लेकिन क्या चिराग? पलाश आश्चर्य से बोला। चिराग की बातें सभी ध्यान से सुनने लगे। 'मेरे जन्मदिन पर केक कटे, मोमबत्ती बुझे, डिस्को की धूम हो, ये सब मेरी मम्मी को पसन्द नहीं। यहाँ तक कि मेरा मम्मी, कहना भी उन्हें पसन्द नहीं। माँ कहलाती हैं।' सभी आश्चर्य से उसकी बातें सुन रहे थे कि सौरभ ने पूछा, 'तुम्हारी माँ को ये पसन्द नहीं है, तो भी तुम्हें ये सब करने देती हैं।' 'हाँ माँ, मेरी खुशी के कारण ये सब करने देती हैं? वे कहती हैं यह सब हमारी संस्कृति नहीं है, हमारी संस्कृति काटने, बुझाने की नहीं है, ऐसे मौकों पर तो दीप प्रज्वलन, दानपुण्य, पूजा पाठ होना चाहिए।'

हे..हे, रोनक हँसकर बोला, 'तुम्हारी मम्मी इतनी पढ़ी-लिखी होकर ऐसी बातें करती हैं पर सौरभ कुछ सोचते हुए बोला, पर बात तो सही है-हमने तो कभी इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया। तुम्हारी माँ तुम्हें ये सब करने क्यों देती हैं, जबकि उन्हें पसन्द नहीं है। चिराग बोला- ''मेरी माँ का कहना है, सभी को अपने ढंग से जीने की स्वतंत्रता है। मेरा मन नहीं दुःखी हो इसलिए मुझे सब करने देती हैं।'' सौरभ ने पूछा, 'तुम्हारे पापा।' सवाल के पहले ही चिराग बोल उठा- 'पापा तो मेरा पूरा साथ देते हैं, परन्तु माँ बिना कुछ भी अच्छा नहीं लगता।' चिराग की बातें कुछ को समझ आयीं और कुछ को एक पहेली सी लगीं, सभी उसकी समस्या का समाधान खोजना चाहते थे। टन...टन...टन की आवाज से सभी की तन्द्रा टूटी.... सभी के टिफिन भरे के भरे रह गए, सौरभ ने शाम को सभी को अपने घर आने को कह दिया।

सभी कक्षा में चले गए, चिराग का मन कक्षा में भी नहीं लग रहा था, वह इसी साल इस शहर में आया था, नए दोस्त, नई जगह, ऐसे में कुछ क्या हो जाए कि माँ भी खुश हो जाए। शाम को सभी सौरभ के घर पहुँचे, सभी अपनी-अपनी राय देने लगे, किन्तु कुछ निर्णय नहीं कर पाए। सौरभ ने सुझाव दिया चलो मेरी मम्मी से सलाह लेते हैं। सभी खुश हो गए 'नमस्ते आंटी जी!' ''नमस्ते बच्चों! आओ-आओ बैठो।'' सभी के चेहरे पर एक से भाव देखकर सुनीता कुछ बोलने को हुई कि सौरभ ने कहा ''मम्मी ये मेरा दोस्त चिराग है। इसकी समस्या है कि.. सौरभ ने हमारी बातें विस्तार से समझा दी।''

बस.. इतनी सी बात... इसका हल तो चुटकियों में हो सकता है? क्या... सभी एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। जो निर्णय वह इतनी देर में नहीं कर पा रहे थे वह इतनी जल्दी...? सुनीता ने चिराग को कहा-''देखो बेटा! हम सभी आज पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण करने लगे हैं, हमारे खान-पान, रहन-सहन, पहनावे, यहाँ तक कि विचारों में भी पश्चिमी सभ्यता की छाप पड़ चुकी है। हम अपने को अधिक आधुनिक दिखाने की दौड़ में अंधाधुंध पश्चिमी देशों की नकल कर रहे हैं। मुझे तुम्हारी माँ के विचार जानकर बहुत खुशी हुई। कब मिलवा रहे हो उनसे...? तुम्हें अपनी माँ पर गर्व होना

चाहिए।'' आण्टी शुभकार्य में देरी क्या? तीन दिन बाद ही।

अब तो सबके चेहरे खिल गए थे, सभी ध्यान से सुनीता की बातें सुन रहे थे, योजना तैयार होते ही सब चहकने लगे, अब इंतजार था जन्मदिन का।

चिराग आज बहुत खुश था। आज सवेरे ही सभी दोस्त आ गए, सभी ने भाग-भागकर तैयारी की। संध्या ने चिराग को टोका, 'बेटा जन्मदिन तो शाम को मनाओगे, अभी से नहीं।' माँ छुट्टी है। सुबह से ही संध्या काम में लग गयी। वह जानती थी, चिराग सभी तैयारियाँ स्वयं करता है। नौ बजे चिराग माँ के पास जाकर बोला, ''माँ तुम भी तैयार हो जाओ।'' ''नहीं बेटा तुम तो...'' उसकी बात पूरी भी नहीं हो पाई कि चिराग बोला... ''माँ मेरे दोस्त के मम्मी-पापा भी आ रहे हैं'', संध्या को आश्चर्य हुआ, वह गुस्से से बोली-''क्या चिराग तुझे क्या हो गया? अब क्या करूँ..? पहले बताना तो था।'' वह और कुछ कहती कि चिराग बोला-''मम्मी प्लीज...प्लीज मम्मी माफ कर दो।'' तभी पापा को देखकर चिराग मुस्कुराकर वहाँ से खिसक लिया।

संध्या ने एक नजर विवेक पर डाली उसकी आँखों में बहुत से प्रश्न नजर आ रहे थे। विवेक ने मौका दिए बिना ही हँसकर कहा - ''संध्या चिन्ता मत करो, तैयार हो जाओ।'' संध्या कुछ भी समझ नहीं पा रही थी, पर बहस करना भी उचित नहीं लगा। मेहमानों की खातिरदारी कैसे करेगी, सोचते-सोचते तैयार होने लगी।

घंटी बजी, दरवाजा विवेक ने खोला, एक साथ बहुत लोग आए थे, संध्या तो जैसे बौखला गयी, किन्तु विवेक को देखा, वह इतनी सहजता से सभी से मिल रहा था जैसे सब कुछ तय था, परिचय की औपचारिकता हो रही थी कि सौरभ आ गया, सभी को हॉल की तरफ ले गया। हॉल की सजावट देखकर तो सभी दंग रह गये, गुब्बारे और पन्नियों की जगह फूल और आम्र पत्तों की बन्दनवारे सजी थीं, एक ऊँचे आसन पर भगवान की झाँकी सजी थी, सामने ही छोटा-सा हवन कुण्ड बना था, पण्डित जी विराजमान थे, पूजन सामग्री व्यवस्थित पड़ी थी। सभी सुखद आश्चर्य में डूबे थे और सबसे ज्यादा आश्चर्य संध्या के चेहरे पर दिख रहा था। ऐसा पारम्परिक माहौल देख वह खुशी से खिल उठी, उसका उत्साह बढ़ गया। अपने पति और नन्हें चिराग पर एक गर्व भरी नजर डाली जैसे आँखों ही आँखों में खुशी का इजहार कर कृतज्ञ हो रही हो। थोड़ी ही देर में हवन की भीनी-भीनी खुशबू से वातावरण महक उठा, पण्डित जी ने संध्या और विवेक को जोड़े से बैठाया, पास ही चिराग को बैठाकर विधिवत् पूजन व हवन करवाया, मंत्रोच्चार से घर गूँज उठा, संध्या अभी तक इस गुत्थी को सुलझा नहीं पा रही थी, उसे सब स्वप्न-सा लग रहा था।

हवन के समाप्त होते ही संगीता ने ढोलक संभाल ली और शुरू हुआ भजन और लोकगीतों का सिलसिला। पुरुष व बच्चों ने भी आनन्द लिया। बच्चे तो इस नई अनुभूति से सराबोर हो गये। चिराग को लगा माँ कितना सच कहती थी कि अपनी संस्कृति का कोई सानी नहीं। चिराग अपने जज्बात रोक नहीं पाया और माँ से लिपट गया। माँ तुम कितनी अच्छी हो। माँ आज मैं बहुत खुश हूँ। माँ आप आज पहली बार मेरे जन्मदिन में शामिल हुई। माँ कितना मजा आया... माँ... थैंक्स... संध्या की आँखें भर आयीं थैंक्स, बेटा धन्यवाद।

चिराग एक बार फिर माँ के गले लग गया।

संध्या खुश थी.. उसे लगा आज मेरा बेटा संस्कृति के एक सुखद पहलू से परिचित हुआ है। पर ये सब हुआ कैसे..? उसे ज्यादा सोचना नहीं पड़ा, चिराग ही बताने लगा मम्मी आज की खुशी का श्रेय सुनीता आण्टी को जाता है.... संध्या देखने लगी। सुनीता इधर ही देखकर मुस्करा रही थी। संध्या ने कृतज्ञ भाव से सुनीता को देखा, उसे कुछ कहने को बढ़ी ही थी कि चिराग ने सुनीता का हाथ पकड़ा और बोला आण्टी प्लीज बाहर चलकर अपने हाथ से एक पौधा लगा दें जो आज के दिन को हमेशा याद दिलाता रहेगा, हमारे मैडम ने बताया था ऐसे मौकों पर पौधे लगाने चाहिए।

तालियों की गड़गड़ाहट से सुनीता ने पौधा लगाया। तभी सौरभ बोला भई... अब इस भूख.. का भी तो कोई ख्याल करो... सुनते ही संध्या घबरा गई अब... क्या होगा? इस खुशी में वह तो जैसे भूल की गयी थी तभी, हलवाई के यहाँ से खाना आया, संध्या की जान में जान आ गई और उस दिन का एक सुखद अहसास हमेशा के लिए मन में बस गया।

15, न्यू त्रिमूर्ति कॉम्पलेक्स, हिरणमगरी,
सेक्टर-4, वैशाली अपार्टमेन्ट के आगे,
मनवाखेड़ा रोड, उदयपुर (राज.)-313002
मो: 9983300220

दुःख-सुख

❐ राजकुमार बुनकर 'इन्द्रेश'

एक उजली-सी साँझ वो ढ़लती हुई।
तीमिरों की ओढ़नी तन पर लपेटे हुई।
सनसनाहट संग लिए हुई
लगी मुझे दानवी-सी तभी मन में
कुछ झनझनाहट हुई।
श्वानों का सुन विलाप भय-आहट तेज हुई।
इसी घबराहट में न जाने कब वक्त गया गुजर
और तभी परिन्दों की चहचाहट हुई।
व्योम-तम पुंज हुआ
लोक में आलोक हुआ
दुःख दूर सुख राज हुआ
मन को कुछ सांत्वना हुई
नव भावनाएँ फिर जाग्रत हुईं।

प्रधानाचार्य
14, तिरुपति नगर, चरणनदी-।।,
नाडी का फाटक, मुरलीपुरा, जयपुर-302040
मो. 9001311561

ग़ज़ल

❐ रहीम खां हसनिया 'सांचोटी'

अपनों को आगाह कर दो कि लोग लेकर फंदा बैठे हैं,
उनसे ईमान की उम्मीद क्या, जो लेकर गोरख धंधा बैठे हैं।।

करने के नाम पर उन्होंने, कुछ भी नहीं किया।
जो लोगों से हजारो का लेकर चन्दा बैठे हैं।।

देने की नियत नहीं उनकी तो लोगे कैसे?
माँगने वालों को अपना व्यापार बता मंदा बैठे हैं।।

उनसे शान्ति की उम्मीद करना व्यर्थ हैं।
जो हाथ में लिए फसाद का झण्डा बैठे हैं।।

'सांचोटी' नियत उनकी साफ कैसे होगी?
जो मन की जाह्नवी को किये गंदा बैठे हैं।।

अध्यापक
आदर्श रा.उ.मा.वि. सेवड़ी
वाया-जुजाणी, तह.-बागोड़ा,
जिला-जालोर, राज.-343030

व्यंग्य

आप तो पढ़े-लिखे हैं.....

❐ कृष्णा कुमारी

अरे भाई साहब! पढ़े-लिखे होकर भी आप कतार तोड़ रहे हैं ..... कोई अनपढ़ ऐसा करे तो मानने भी आता है.....। इन भाई साहब के कहने का भावार्थ शायद ये ही है कि कोई अनपढ़ व्यक्ति ऐसा करे तो चलता है .. तो मगर .....।.....अक्सर ऐसा देखने व सुनने में ....आता रहा है। यानी जो पढ़े-लिखे नहीं होते वो जाहिल , गँवार होते हैं, तहजीब से कोसों दूर होते हैं? वो ऐसी हरकतें कर सकते हैं।

निःसन्देह, शिक्षा-दीक्षा से जीवन को नई दिशा, नए विचार, नई दृष्टि, नए आयाम मिलते हैं। अच्छे बुरे का अंतर समझ में आता है। पढ़ाई की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। मगर इस का ये अर्थ कदापि नहीं कि जो अनपढ़ है, साक्षर नहीं हो पाए किसी वजह से तो वो बेवकूफ हैं, या समझदारी से उनका कोई वास्ता नहीं है, जी नहीं ..... समझदारी और बुद्धिमता जन्म से मिलती है, ईश्वर प्रदत्त होती है जो उम्र के साथ-साथ बढ़ती है, अनुभव इस में चार चाँद लगा देता है और शिक्षा सोने में सुहागा का काम करती है। बहुत सारे ऐसे व्यक्तित्व हैं जो कम पढ़े-लिखे हैं या निरक्षर हैं, बावजूद इस के, उन के कारनामों को सारी दुनिया सलाम करती है, लोहा मानती है .....जैसे धीरू भाई अम्बानी ..जो अधिक पढ़े लिखे नहीं हैं, सचिन तेंदुलकर स्कूल में फेल, मगर जिंदगी की पाठशाला में नम्बर एक पर महान वैज्ञानिक आइन्सटाइन के स्कूल में उनके शिक्षक ने तो यहाँ तक कह दिया था कि तुम पढ़ने के सिवाय सब कर सकते हो और ये ही हुआ। उनके आविष्कारों की सूची काफी लम्बी है। एडिसन की भी ऐसी ही कहानी है।

ऐसे अनेकानेक महान व्यक्तित्व हैं। अकबर भी निरक्षर थे। कई वैज्ञानिक हुए जो कम पढ़े हुए थे। संत कबीर ने तो मसि को छुआ तक नहीं था, उन पर न जाने कितने शोध हो चुके हैं। उन के ही शब्दों में ...'मसि कागद छुयो नहीं, कलम गहि नहीं हाथ....'। अतः कम पढ़े-लिखे लोगों को नजर अंदाज करना अनुचित है। उन का उपहास करना एक दम गलत है। वैसे भी शिक्षा का अर्थ है सतत् सीखते रहना। .....चाहे किताबों से या फिर अनुभवों से। इसी संदर्भ में शिविरा पत्रिका, सितम्बर 2015 में सुप्रसिद्ध साहित्यकार भगवती प्रसाद गौतम के निबंध 'विश्व का विलक्षण विद्यालय-समरहिल' के अनुसार.....'महामनीषी चाणक्य ने लिखा है -'अनुभवहीन व्यक्ति के लिए तो उत्तम शास्त्र भी केवल एक जहर के समान है।' संत कबीर ने भी कहा था- 'अनभो साँचा'... अनुभव ही सब कुछ है। वही शिक्षक भी वही शिक्षा भी।'

स्कूली शिक्षा तो अनौपचारिक है, हाँ, इससे डिग्री व नौकरी मिल सकती है जो जीवनयापन का आधार है। वास्तविक पाठशाला तो अनुभव की ही मानी जाती है। ये सच्ची शिक्षा है और फिर समझदारी या विवेकी होने का मापदंड केवल शिक्षा नहीं हो सकती। मेरी दादी भी एकदम निरक्षर थी, मगर ज्ञान, समझ, बुद्धिमानी और अनुभव का खजाना थी। उन्होंने बहुत कुछ श्रवण से ग्रहण किया था। मुझे सुसंस्कृत बनाने में उनका सर्वाधिक योगदान रहा है। हमारे यहाँ भक्ति परम्परा में श्रवण-भक्ति को सर्वश्रेष्ठ माना है। तनिक गौर कर के देखिए, जन्म के डेढ़-दो साल तक बालक केवल सुनता है, और वह सुन-सुनकर ही बोलना सीखता है। जैन-धर्म में श्रवनोपासना शब्द बहुतायत से प्रचलित है यानी सुनना भी एक बहुत बड़ी उपासना है, साधना है, सुनकर तो बहुत बड़ा ज्ञानी बना जा सकता है, अभिमन्यु ने माँ के गर्भ में ही चक्रव्यूह के बारे में बहुत कुछ जान लिया था, मगर जब तोड़ने की बात आई तब उन की माता को नींद आ गई और इस वजह से अभिमन्यु नहीं सुन पाए और.....? इस उपासना से मोक्ष तक प्राप्त किया जा सकता है।

अमूमन, ये भी देखने में आता है कि

साक्षात्कार सम्पन्न पुरुष न तो दूसरों को दोष लगाता है और न अपने को अधिक शक्तिमान वस्तुओं से आच्छादित होने के कारण स्थितियों की अवहेलना करता है। अहंकार से उतना ही सावधान रहो जितना एक पागल कुत्ते से।

कितने ही पढ़े-लिखे लोग भी बेवकूफियाँ करते हैं, हीन-भावना से ग्रसित देखे हैं, अनपढ़ लोगों को अपमानित करने में भी पीछे नहीं रहते। गलतियाँ करते हुए भी देखे हैं, ज्ञान के अहंकार से बोझिल भी ....तरस आता है ऐसे लोगों पर अकसर पढ़े-लिखे लोग बेकार की बातों पर व्यर्थ ही समय गंवाया करते हैं, कुतर्क भी करते हैं, दिल की नहीं सुनकर के दिमाग की ही बात मानते हैं।

जबकि बिना या कम पढ़े-लिखे अधिक सरल व भोले होते हैं ,दिल की सुनते हैं, प्यार भी बहुत करते हैं। कितने ही ऐसे लोग हैं जो चाह कर भी स्कूल नहीं जा पाते ....जाने कितनी विवशताएँ आड़े आ जाती हैं। कितने ही पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वाह में रह जाते हैं और खुद की तरफ ध्यान नहीं दे पाते, अपनों के लिए त्याग करते-करते .....उनकी उम्र निकल जाती है, यहाँ तक कि शादी से भी वंचित रह जाते हैं। मगर संघर्षों की आग में तपकर खरा सोना जरूर बन जाते हैं। जीवन की पथरीली पगडंडियों पर नंगें पाँवों चलते-चलते, ठोकरें खाते-खाते, इतने कड़वे-मीठे अनुभवों से गुजरते हैं। कहने का तात्पर्य इतना ही है कि ऐसे व्यक्तियों को कम करके नहीं आँकना चाहिए। जो किसी परिस्थितिवश पढ़ नहीं पाए, मगर दूसरे क्षेत्रों में बड़े-बड़े काम करके नाम कमा लेते हैं।

ईश्वर सब को अलग-अलग हुनर से नवाज़ता है, कोई भी दो मनुष्य एक जैसे नहीं है, इस पृथ्वी पर। क्योंकि .....

''हरेक शख्स बेमिसाल होता है 'कमसिन'
कि कोई किसी और जैसा नहीं है''

मैं अपने स्कूल की चतुर्थ श्रेणी की महिला को साल भर से साक्षर बनाने में जुटी हुई हूँ। मेरा ही एक शेर....

'ज्ञान बिन है व्यर्थ जीवन
कम से कम ये ज्ञान रखना

ज्ञान की महिमा अनंत है। ज्ञान से पवित्र कुछ भी नहीं है।

सी-368, तलवंडी
कोटा (राज.)-324005

लघुकथा

सुई बेचने वाला

❐ सुखदेव शर्मा

दरवाजे पर बीस वर्षीय युवक ने दस्तक दी। मैं बाहर आया। ''क्या बेचते हो?'' युवक सहमा-सा बोला-''सुई का पैकेट है। बाबूजी, तीन प्रकार की सुइयाँ हैं, मात्र दस रुपये में, एक पैकेट ले लो, घर में काम आएँगी।'' सुई बेचने वाले को दरवाजे पर देखकर आश्चर्य हुआ क्योंकि बहुत कुछ बेचने वालों को दरवाजे पर देखा है परन्तु सुई बेचने वाला जीवन में पहली बार आया था। मैंने सोचा, काम तो क्या आएगी, आजकल घरों में कौन उधड़े हुए को सिलता है, सभी उधेड़ने में ही तो लगे रहते हैं। सुई पकड़ने वाले हाथ कम ही रह गये हैं। सुइयाँ बेचारी बाट जोहती ही रह जाती हैं और समय के साथ उनमें जंग लग जाती है। ''क्या सोच रहे हो, बाबूजी!'' युवक बोला। मैं गहरी साँस छोड़ते हुए कुछ छिपाते हुए बोला-''नहीं-नहीं, कुछ नहीं, बस ऐसे ही सोच रहा था कि इतनी सुइयों का क्या करूँगा।'' चलो एक पैकेट दे दो। मैंने उसके धन्धे की कद्र करने के लिए सुई का एक पैकेट ले लिया। ''दस रुपये दे दो बाबूजी, धन्धे का समय है।''

युवक की आवाज से झेंपते हुए मैंने पलटवार किया-''क्या सुइयाँ बेचते हो यार, सुई की कद्र ही क्या रह गई है इस जमाने में, बेचना ही है तो तलवार बेचो ना। धन्धे की कद्र हो जाएगी और तुम्हारी भी, कि कोई कुछ बेचने के लिए आया है। लोग तलवार की धार भी देखेंगे और तुम्हारी शक्ल भी। सुई बेचने वाले की तरफ कौन देखता है?''

युवक गम्भीर होकर शालीनता से बोला-''साहब तलवारें तो बहुत बिक चुकी हैं और बहुत कुछ काट चुकी हैं। तलवारों से बने घावों को सुई ही जोड़ सकती है। इस उम्मीद में, कि जो कुछ शेष रहा है उसे जोड़ सकूँ, सुइयाँ ही बेचना चाहता हूँ, आप चाहे कुछ भी समझें।'' मैं निरुत्तर-सा जाते हुए युवक के कदमों की आहट सुनता रहा।

व्याख्याता
S/o श्री रामप्रताप शर्मा
ग्राम-भारती, पो. बरना, तह. डेगाना,
जिला-नागौर-341503
मो. 9828244247

रोज़गार

❐ बनवारी लाल पारीक 'नवल'

आयुष को अनमना देखकर उसके ताऊजी ने पूछा- 'क्या हुआ बेटा, इंटरव्यू देने नहीं गया?' नहीं बड़े पापा, क्या जाता, पता चला कि उस कंपनी में तो सिर्फ दो ही आदमी लेने हैं।' यह तुमने गलत किया बेटा। अरे, दो ही लेने तो क्या हुआ, तुम्हें तो बस एक ही जगह चाहिए न! मत भूलो, तुमने श्रेष्ठ संस्थान से एम.बी.ए. किया है।'

तनिक संभला आयुष, पुनः शिथिल न पड़ जाए, इस विचार से ताऊजी फिर कहने लगे-'हमारे परिवार में गोपाल चाचा रूस देश से इंजीनियरिंग करके लौटे, महिना भर हो गया, नौकरी नहीं लगी। जबकि उस समय विदेश में पढ़े हुए की बात ही क्या, देश के शिक्षित व्यक्तियों के लिए भी रोजगार की कमी नहीं थी। सो गोपाल चाचा बहुत परेशान हो गए। वे नित्य अखबार देखते, किन्तु हर हफ्ते अपने स्तर के मात्र एक ही पद की रिक्ती (वेकेंसी) पर सीधी नियुक्ति की खबर पढ़कर निराश हो जाते। आखिर एक दिन उनको तार (टेलीग्राम) मिला कि समाचार पत्र में यह खबर बार-बार सिर्फ आपके लिए ही छप रही है, अविलंब दिल्ली आकर पदभार संभालो। फिर क्या था, अगले ही दिन गोपाल चाचा का पदस्थापन हो गया।'

ये सुनते ही जामवन्त की सुनकर जागे हनुमंत की भाँति चेता आयुष स्वाभिमान व समझ से लबरेज हो गया और अगले ही रोज दिए साक्षात्कार में चुने गए लोगों में वह पहले स्थान पर शोभायमान रहा।

व्याख्याता
राउमावि., फतहनगर, उदयपुर (राज.)
मो: 0602329966

यश की चाह

❐ छगनलाल व्यास

उसके पास जब भी कुछ रुपया इकट्ठा होता, कुछ सामग्री सम्मिलित होती, वह गरीबों के समूह में पहुँच कर अपने हाथों से उन में बाँटता, फोटो खिंचवाता, समाचार पत्रों में समाचार देकर यश कमाता।

उसी की माँ जो दिन-रात कपड़ों हेतु तरसती, भोजन हेतु हाथ फैलाती लेकिन वह उसे कुछ नहीं देता। यही नहीं, वह अपने गरीब नाते-रिश्तेदारों से भी दूरी रखता क्योंकि उसे मालूम था ये न तो यश देंगे... न प्रशंसा करेंगे...।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. बड़ी चारणवास
खाडप (बाड़मेर) राज.
मो: 9462083320

सभ्य आदमी

❐ भारत दोसी

मैं फ्रूट बाजार में बैठा था। अचानक गौ माता आई और दो-तीन किलो सेब, अनार खा गई। दुकानदार का ध्यान गया, उसने भगाया।

मुझसे बोला आप ने क्यूँ नहीं भगाया?

मैंने कहा ''मैं सभ्य आदमी हूँ, दूसरों के मामले में नहीं बोलता।''

वह अवाक मुझे देख रहा था।

58/5, मोहन कॉलोनी,
बाँसवाड़ा (राज.)
मो: 9799467007

उच्चारण और वर्तनी : भाषा का प्राण तत्त्व

❐ प्रकाश वया

भाषा मनुष्य के लिए परमात्मा का नायाब तोहफा है, व्यक्ति के अन्तस् में उत्पन्न अद्भुत विचारों और भावों को दूसरों तक सम्प्रेषित करने का सशक्त माध्यम है। सच्चाई तो यह है कि वाणी मनुष्य का शृंगार है, सलीके और तरीके से जीने का मूलाधार है इस अपेक्षा से ''जिसको बोलना आ गया उसको असल में जीना आ गया।'' मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहना उसकी नियति है, पारस्परिक सहयोग और समरसता के लिए विचारों और भावों का विनिमय नितान्त आवश्यक है, इस नाते भाषा सामाजिक सरोकार का अहम विषय है और उसे समाज से जुड़ने का अवसर प्रदान करती है। परिवार, समाज और सम्पर्कित परिवेश व्यक्ति के मुँह में शब्द और भाषा डालने का कार्य करते हैं। विद्यालय तक पहुँचता-पहुँचता बालक बहुत कुछ बोलने लग जाता है और विद्यालय आकर वह अपनी जबान संभालने का कार्य करता है, सम्यक रूप से बोलना सीखता है, उसकी भाषा का परिमार्जन और परिष्कार होता है।

हिन्दी भाषा इस महान राष्ट्र का प्राण तत्त्व है, जन-जन की भाषा है, उसका संरक्षण और संवर्धन हमारा धर्म है। विडंबना यह है कि आजादी के 70 वर्षों बाद भी हमारी राष्ट्रभाषा का जिस रूप में विकास होना चाहिए था, उस रूप में हम कर पाने में सफल नहीं हुए हैं, भाषा का सम्यक्-ज्ञान जो एक हिन्दी भाषी को होना चाहिए, नहीं है, इसलिए वक्त का तकाज़ा है कि हमें इस विषय पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। वस्तुतः भाषा रूपी रथ की लगाम (बल्गा) व्याकरण रूपी सारथि के हाथों में है, व्याकरणाधारित भाषा का प्रांजल स्वरूप हमारे लिए जानना आवश्यक है, परन्तु हकीकत यह भी है कि हिन्दी भाषा का उच्चारण और वर्तनी आँचलिक भाषाओं और बोलियों से बुरी तरह प्रभावित हो रही है। हिन्दी जैसी सरस और वैज्ञानिक भाषा वर्तनी और उच्चारण दोष का शिकार होकर कभी-कभी अनर्थ करती हुई लगती है। 'चार कोस पर बदले पानी आठ कोस पर वाणी' इस सच्चाई के सापेक्ष भाषा के मानक स्वरूप को समझकर ही हम इसका भला कर सकते हैं। सम्प्रति जो दुर्दशा हिन्दी भाषा की हो रही है, उस पर भाषाविदों को चिन्तन और चिन्ता करनी पड़ेगी। भाषा का विद्यार्थी होने के नाते अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि आज हमारे बालक को भाषा का बुनियादी ज्ञान भी नहीं है।

कक्षा 9 से 12 तक की कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से भाषा शिक्षक पहला प्रश्न यह करे कि आँग्लभाषा में कितने अक्षर होते हैं? बालक तपाक से बोल पड़ता है A to Z 26, परन्तु दूसरा प्रश्न यह पूछा जाय कि हिन्दी भाषा की मानक वर्णमाला में कितने अक्षर हैं, बालक बगलें झाँकने लगते हैं, बालकों के अलग-अलग उत्तर आते हैं जबकि असल में हिन्दी भाषा में 44 वर्ण हैं, जिनमें 33 व्यंजन और 11 स्वर हैं।

स्वर

ह्रस्व (4) दीर्घ (7)

ह्रस्व स्वर 4 हैं, जिनको मूल स्वर भी कहा है, दीर्घ स्वर जो कि 7 हैं। ह्रस्व स्वर है- अ, इ, उ, ऋ और दीर्घ स्वर है- आ, ई, ऊ, ए, ऐ ओ, औ। ऋ केवल संस्कृत भाषा के तत्सम शब्दों में प्रयुक्त होता है। सभी दीर्घ स्वर तीन मूल स्वरों अ, इ और उ से बने है।

हिन्दी वर्णमाला में 33 व्यंजन हैं। इनमें क्, च्, ट्, त्, प् पाँच वर्ग हैं, प्रत्येक में वर्ग में पाँच वर्ण है।

स्वर व व्यंजनों के उच्चारण स्थल निम्न प्रकार हैं-

अ, आ, विसर्ग, ह, क्, ख्, ग्, घ्	कण्ठ
य, श, इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्,	तालु
ष, ऋ, र, ट्, ठ्, ड्, ढ्,	मूर्धा
ल, ष, त्, थ्, द्, ध्	दंत
उ, ऊ, व्, प्, फ्, ब्, भ्	ओष्ठ
अं, ङ्, ञ्, ण्, न्, म्,	नासिक
ए, ऐ,	कण्ठ तालु
ओ, औ	कण्ठ औष्ठ

साथ ही बालकों को उच्चारण और वर्तनी दोष से बचाने के लिए ध्वनियों का ज्ञान उच्चारण से कराना चाहिए। छोटी इ, बड़ी ई, छोटा उ बड़ा ऊ या फिर घोड़े वाला घ, गणेशवाला ग से नहीं, इसके लिए भाषा शिक्षक को अपनी जबान संभालनी पड़ेगी।

इसके अलावा चार संयुक्तवर्ण भी हैं- क्ष-क्+ष्+अ, त्र-त्+र्+अ, ज्ञ-ज्+ञ्+अ, श्+र्+अ। इन्हें वर्णमाला की गिनती में नहीं लेना चाहिए इसके अलावा अं अनुस्वार, अः विसर्ग और अँनुनासिक है। इसलिए इनका भी वर्णमाला में शुमार नहीं माना गया है।

इसके अलावा स्वर तन्त्रियों के कम्पन के आधार पर ध्वनियाँ घोष और अघोष कहलाती हैं। मुख विवर से निकलने वाली वायु की मात्रा के आधार पर ध्वनियों को अल्पप्राण और महाप्राण कहा गया है।

शब्द संरचना में स्वरों को मात्राओं के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, एक और ध्यान देने योग्य बात है-स्वर स्वयं मात्राएँ हैं। अनुनासिक व्यंजनों ञ्, ङ्, को छोड़कर शेष 31 व्यंजन के लिए मात्राएँ लगानी चाहिए।

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
-, ा, ि, ी, ु, ू, े, ै, ो, ौ

भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने के साथ ही राजभाषा का दर्जा दिया गया है तथा लिपि के रूप में देवनागरी लिपि को अपनाया गया है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तहत संचालित केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के तत्वावधान में भाषाविदों ने हिन्दी वर्तनी और देवनागरी लिपि का मानक रूप तय किया है, इसलिए भाषा शिक्षण इसी आधार पर कराया जाना चाहिए, तभी हम हमारी भाषा का सम्यक् ज्ञान आने वाली पीढ़ी को करा सकेंगे।

वर्ण, शब्द और वाक्य भाषा के मूलाधार हैं। उपसर्ग, प्रत्यय, समास और संधि इन चार संक्रियाओं से हिन्दी भाषा में शब्द संरचना होती है। सच्चाई तो यह है कि ये चारों संक्रियाएँ वर्तनी का मूलाधार हैं। इसके साथ ही शब्द समुच्चय के माध्यम से ही विचारों और भावों का व्यवस्थित

संप्रेषण संभव है, परन्तु वाक्य विन्यास सम्यक् होना अर्थ की बोध गम्यता के लिए आवश्यक है। वाक्य में शब्दों की क्रमबद्धता तथा विरामादि चिह्नों की यथास्थान प्रयुक्ति की भी अहम भूमिका है, क्योंकि इनके स्थान बदलने से अर्थ परिवर्तन भी संभावित है, इसलिए इनकी प्रयुक्ति में सावधानी बरतना आवश्यक है।

आज सबसे बड़ा संकट वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को लेकर है, क्योंकि ह्रस्व और दीर्घ मात्राओं, अनुस्वार और अनुनासिक वर्णों की गलत प्रयुक्ति से शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं, इसलिए आमतौर पर वर्तनी में होने वाली अशुद्धियाँ जो कि हमारी भाषा को जन-जन की भाषा बनाने में बाधक है, पर ध्यान देकर इस हेतु जन-जागरण करना चाहिए। भाषा के बुनियादी तत्वों को जन-जन तक संप्रेषित करके हम हिन्दी भाषा का भला कर सकते हैं।

(1) सबसे पहल हम उन शब्दों की वर्तनी पर चर्चा करेंगे, जिनकी आमतौर पर अशुद्ध वर्तनी प्रचलन में लाई जा रही है।

अशुद्ध		**शुद्ध**
सांविधानिक	–	संवैधानिक
श्रृंगार	–	शृंगार
दवाईयां	–	दवाइयाँ
सौहार्द्रता	–	सौहार्द्र (ता प्रत्यय लगाना भी दोषपूर्ण है)
ग्रहिणी	–	गृहिणी
जाग्रति	–	जागृति
सन्यासी	–	सन्न्यासी
अनुग्रहीत	–	अनुगृहीत
सुस्वागत	–	स्वागत
उपरोक्त	–	उपर्युक्त
कैलाश	–	कैलास
पुरुस्कार	–	पुरस्कार
मिष्ठान	–	मिष्टान्न
आव्हान	–	आह्वान
संग्रहीत	–	संगृहीत
सहस्त्र	–	सहस्र
उज्जवल	–	उज्ज्वल
निरोग	–	नीरोग
चाहिये	–	चाहिए
लिखिये	–	लिखिए
कीजिये	–	कीजिए
पीजिये	–	पीजिए

(2) वर्तनी में मात्राओं की प्रयुक्ति में अतिशय सजगता की आवश्यकता है, अनावश्यक स्वरों की प्रयुक्ति से वर्तनी अशुद्ध हो जाती है, शब्दों की शुद्ध वर्तनी कोष्ठक में दी गई है।
आधीन (अधीन), अनाधिकार (अनधिकार), अत्याधिक (अत्यधिक), अहिल्या (अहल्या), गत्यावरोध (गत्यवरोध), शमशान (श्मशान), भागीरथ (भगीरथ), द्वारिका (द्वारका), दुरावस्था (दुरवस्था) उचित स्वर के विलोपन के कारण-
अष्टवक्र (अष्टावक्र), स्वस्थ्य (स्वास्थ्य), आखरी (आखिरी), बदाम (बादाम), युधिष्टर (युधिष्ठिर), विरहणी (विरहिणी), जलूस (जुलूस)

(3) अनावश्यक व्यंजन की प्रयुक्त से-
सदृश्य (सदृश), केन्द्रीयकरण (केन्द्रीकरण), निश्च्छल (निश्छल), प्रज्ज्वलित (प्रज्वलित), गोवर्द्धन (गोवर्धन), संवर्द्धन (संवर्धन), पूज्यनीय (पूजनीय), कृत्य-कृत्य (कृत-कृत्य), अन्तर्ध्यान (अन्तर्धान), श्राप (शाप),

(4) किसी शब्द में व्यंजन को नहीं लिखा जावे तो वर्तनी दोष-
महत्व (महत्त्व), उपलक्ष (उपलक्ष्य), इन्द्रा (इन्दिरा), तदन्तर (तदनन्तर), उत्पन (उत्पन्न), तत्वाधान (तत्वावधान), सामर्थ (सामर्थ्य)

(5) शब्द की वर्तनी में किसी वर्ण का क्रम बदल जाने पर-
मध्यान्ह (मध्याह्न), आल्हाद (आह्लाद), आव्हान (आह्वान), जिव्हा (जिह्वा), प्रसंशा (प्रशंसा), चिन्ह (चिह्न)

(6) शब्द में वर्ण बदल जाने पर-
बतक (बतख), संघटन (संगठन), यथेष्ठ (यथेष्ट), मिष्ठान (मिष्टान्न), पुन्य (पुण्य), विध्यालय (विद्यालय), शुश्रूषा (सुश्रूषा), कनिष्ट (कनिष्ठ)

(7) शब्द में पञ्चम वर्ण अनुस्वार व अनुनासिक (चन्द्र बिन्दु) के गलत वर्ण के ऊपर प्रयुक्ति होने तथा किसी वर्ग के अन्तिम नासिक्य वर्ण के स्थान पर अन्य वर्ग के पंचम वर्ण की प्रयुक्ति से भी वर्तनी एवं उच्चारण दोषपूर्ण हो जाता हैं।

(अ) जिस शब्द (तद्भव) के प्रथम वर्ण में अ, आ, उ, ऊ की मात्रा होती है तो चन्द्र बिन्दु ही लगाया जाना चाहिए।
आँख, जाँच, माँ, आँच, दाँत, साँझ, पाँख, आँसू, आँत, अँगूठा, ऊँट, ऊँचा, हँस।

(ब) बहुवचन होने पर ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द दीर्घ ई की मात्रा ह्रस्व 'इ' होकर चन्द्र बिन्दु ही प्रयुक्त होगा।
खिड़की (खिड़कियाँ), दवाई (दवाइयाँ), बकरी (बकरियाँ), कुर्सी (कुर्सियाँ), मिठाई (मिठाइयाँ), नारी (नारियाँ)

(स) ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन में बदलने पर 'ऊ' की दीर्घ मात्रा 'उ' ह्रस्व में बदल जाती है और अन्त में चन्द्र बिन्दु लगाना अपेक्षित है तथा अनुस्वार युक्त 'ओं' भी लगता है।
बहू-बहुएँ, वधू-वधुएँ, हिन्दू-हिन्दुओं, अपवाद स्वरूप बहुवचन होने पर उस शब्द की प्रयुक्ति सम्बोधन के लिए की जा रही है तो अनुस्वार नहीं लगेगा जैसेः- भाइयों! (भाइयो), बहिनों! (बहनो), महानुभावों! (महानुभावो) पुण्यात्माओं! (पुण्यात्माओ)।

(द) वर्तमान काल में क्रिया के ''है'' पर अनुस्वार नहीं लगता जबकि बहुवचन होने पर अनुस्वार लगेगा।
वह जाता है। वे जाते हैं। खा रहा है। खा रहे हैं। मेरी पुस्तक है। मेरी पुस्तकें हैं। आ रहा है। आ रहे हैं।

(य) जिन भविष्यत् काल की क्रियाओं में 'गे' प्रयुक्त होता है तो उनमें सबसे पहले वाले वर्ण पर अनुस्वार लगेगा।
पहुँचेंगे, कहेंगे, खायेंगे, सोयेंगे, करेंगे, सकेंगे, बनेंगे, दौड़ेंगे
'गे' नहीं होने पर भी भविष्यत् काल होने पर अन्तिम वर्ण पर अनुस्वार लगेगा।
बनें, हों, करें, सकें, दौड़ें, कहें, पढ़ें, हँसें, मरें।

(र) शब्दों के बहुवचन पर भी अनुस्वार लगेगा।
पुस्तक-पुस्तकें, सड़क-सड़कें, देश-

देशों

(ल) कुछ शब्द ऐसे भी है अनुस्वार नहीं लगाने पर अर्थहीन हो जाते हैं और अर्थ भी बदल जाता है

मा–माँ, नही–नहीं, उन्ही–उन्हीं

(व) इ, ई, उ, ऊ की प्रयुक्ति से भी अर्थान्तर होता है

लूट–लुट, सुख–सूख, सुर–सूर, सुत–सूत

मैंने उसे लूट लिया।
मैं लुट गया।
मैं तुम्हें कार सिखा दूँगा।
मुझे कार सीखना है।
मैं कार चलाना सीख रहा हूँ।

(ब) परिवार और समाज अपने आपमें बहुवचन हैं, फिर इनके आगे समस्त शब्द लगाना उचित नहीं है।

(स) तत्सम शब्दों के अंतिम वर्ण पर लगा अनुस्वार 'म' की ध्वनि देता है।

(ह) किसी शब्द के पीछे करण जुड़ने से इ की मात्रा दीर्घ हो जाती है तथा करण जुड़ने से शब्द के अंतिम वर्ण में ई की मात्रा लगती है।

शुद्धि + करण	= शुद्धीकरण
तुष्टि + करण	= तुष्टीकरण
प्रस्तुति + करण	= प्रस्तुतीकरण
सरल + करण	= सरलीकरण
केन्द्र + करण	= केन्द्रीकरण
उदार + करण	= उदारीकरण
समाज + करण	= समाजीकरण

प्राध्यापक
रामपोल बस स्टेण्ड, नृसिंह वाटिका के सामने,
भीण्डर, उदयपुर–313603
मो: 9413208719

निर्माण करें

❐ रामेश्वर लाल

भारत देश के वीर सपूतों,
नव भारत का निर्माण करें।
भीम के मार्ग को अपनाकर,
नव युग का प्रारम्भ करें।
जन जन में शिक्षा का दीप जलाकर,
शिक्षा का श्रीगणेश करें।
भेद–भाव को भुलाकर,
सर्वजन को प्यार करें।
न्याय, समता और बंधुता से,
नव भारत का निर्माण करें।
नारी चेतना, स्वच्छ अभियान अपनाकर,
जन–जन में अभियान सफल करें।
जन–जन में बालिका शिक्षा का दीप जलाकर,
नव भारत का निर्माण करें।
बेटी बचाओ अभियान सफल बनाकर,
नव युग का प्रारम्भ करें।
हे मनुज! प्रेरक पथ–प्रदर्शक बनकर,
नव भारत का निर्माण करें।

प्रधानाचार्य (से.नि.)
पुराना किला, सांभरलेक–303604
जयपुर (राज.)
मो: 9929187985

अक्षर

❐ डॉ. विमलेश कुमार पारीक

यदि होते नहीं ये अक्षर तो
शायद हम
आज ऐसे नहीं होते।
ना हम सभ्य होते
ना ही होती हमारी सभ्यता।
ना होती किताबें
ना होती शिक्षा
ना होते शिक्षक
और ना ही होते स्कूल।
ना होते हवाईजहाज
ना होती पटरी पर दौड़ती रेलगाड़ियाँ
ना ही चल पाते ये समंदरी जहाज
और न ही बन पाती मोटरगाड़ियाँ।
यानी
बस होते तो जंगल ही जंगल
और चारों तरफ जंगली जानवर।
यदि बढ़ना है,
जमाने के साथ चलना है,
सभ्यता को ले जाना है आगे तो
हमें समझना है
महत्त्व
अक्षर का! अक्षर का!! अक्षर का!!!

'चरन छाया'
58,सूरज नगर, सांगानेर, जयपुर
मो. 9829517035

ग़ज़ल

❐ सैयद अहमद शाह अली

इल्जाम देने से तो बेहतर यही है
कि अपना हम रुझान बदल डालें...
अगर जीने में होने लगे कोताही,
तो जीने का अरमान बदल डालें...
जीने की राहें हैं बड़ी पुरख़त रहे यारों,
तो फिर रास्तों की पहचान बदल डालें...
कानून की हद में कहाँ रहता है आदमी,
अपनी फ़ितरत से तो संविधान बदल डाले....

शेखो–ब्राह्मन की कौन सुनता है यहाँ अब,
शैताँ की दख़ल ने लोगों के ईमान बदल डाले...
मकरो–फरेब से जीते हैं वतन के राहबर,
आज करते हैं जो, कल ऐलान बदल डाले...
ऐशो–आराम बढ़ गया हद से ज्यादा,
रहने–सहने के हर सामान बदल डाले...

जुबाँ की लज्जत के तो क्या कहने यारों,
दिल की तमन्ना ने पकवान बदल डाले...
इतना होते हुए भी सुकूँ नहीं मिलता दिल को
जन्नत की चाह में कुदरत के निशाँ बदल डाले...
बहुत गुमराह किया है साइंस की इजादों ने इंसाँ को,
फैला के नफरत का जहर 'शाह'
मंदिरों–मस्जिद के दीवान बदल डाले...

अध्यापक (से.नि.) गोपेश्वर बस्ती, गंगाशहर,
बीकानेर–334401, **मो. 9024931012**

यह न पूछो

❐ भीम सिंह मीणा

मुस्कानों को क्या गम है
यह न पूछो,
दिल जानों को क्या गम है
यह न पूछो।।1।।
दाँत दिखाऊँ तुमको कैसे
पहले वाले,
इन पर किसकी कालिख है
यह न पूछो।।2।।
तेज कदम हैं उठते
सारी राहों में,
इनको किनका भय लगता है
यह न पूछो।।3।।
हक माँगू तो लगता है
पाप किया है,
लोगों को कैसे समझाऊँ
यह न पूछो।।4।।
मौन खड़ा है दरख़त
पत्तों फूलों वाला,
किस दीमक ने जड़ें जमायी
यह न पूछो।।5।।
आँसू बन बह जाऊँगा
सारी रातें,
इनकी कितनी कीमत है
यह न पूछो।।6।।
सूरज दीपक तारे चाँद
करते रहते उजियारा,
फिर भी तम क्यों छाया रहता
यह न पूछो।।7।।

प्रधानाध्यापक
ग्राम-कुन्दलाऊ, पोस्ट-बाटडानाऊ,
तह.-लक्ष्मणगढ़, जिला-सीकर (राज.)
मो: 9413857125

कर्म-धर्म

चैनराम शर्मा

जो गतिमान
रहा है जग बस
उस विजयी का।
जीवन तो इक
महा समर है
कालजयी का।
हँस-हँस जीना
या फिर रो-रो
है तो जीना।
तो फिर क्यो न
तानकर चलते
हो तुम सीनां
बुला रहा सत्
कर्म दिलाने
गौरव प्रतिपल।
सतत् परिश्रम
ही हर एक
समस्या का हल।
साधन, साध्य
नहीं हो तुम, हो
सचमुच साधक।
दृढ़ता से हर
बाधा के बन-
जाओ बाधक।
आहुतियाँ दो
कर्म-यज्ञ में
श्रम-सीकर की।
यही धर्म-
वाणी गीता में
नट-नागर की।।

प्रधानाध्यापक
गॉव पोस्ट-चन्देसरा, वाया-खेमली,
जिला-उदयपुर (राज.) 313201

नारी

❐ पूनम शर्मा

नारी का सम्मान करो
मत उसका अपमान करो
नारी है अपराजिता।
नारी है अपराजिता।।
जब आती है, इसके सुहाग पर बात,
सीता सावित्री बन जाती है।
जब होती इसकी मर्यादा भंग
दुर्गा काली बन जाती है।
मत इसकी ताकत का अवसान करो
नारी है.....
बड़े-बड़े पद पाए इसने अपनी
काबिलियत का ध्वज फहराया है।
शिक्षा चिकित्सा, कोर्ट, अदालत सबमें
देश का नाम बढ़ाया है।
पर हार गई अपनों से जब
अपनों ने ही दुत्कारा है,
इस पर मत हृदयाघात करो
नारी है.....
पति गृह में नारी ने मान कहाँ पाया है।
एक चुप्पी भरी हँसी में, आँसुओं को दबाया है।
देशधर्म व समाज ने उसको ही हलकाया है
क्यों नहीं पुरुष जगत के माफिक
कोई धर्म बनाया है।
अब भी चेतो संत समाज,
नारी को दो उसका स्थान।
एक चक्र से चले न गाड़ी,
नर-नारी से बना जहान।
कौन अग्र और कौन पश्चात्,
दोनों ही है एक समान।।
नारी है अपराजिता, नारी है अपराजिता

धीमर मौहल्ला,गोवर्धन गेट,
डीग, भरतपुर (राज.)-321203
मो.नं.- 9461644587

विदाई

❐ रामलता विजय

अध्यापिका
44, महावीरनगर, रंजके वाले बाबा की गली,
टोंक (राज.) 304001
मो: 9214391800

एक रीत है, प्रीत है, एक गीत है,
संगीत है, विदाई।
विरह की वेदना है, आँखों का अश्क है,
पल भर की तन्हाई है, एक दूजे से
जुदाई है, विदाई।
यादों का लश्कर है, नये युग का आगाज है,
क्षणिक विश्रांति हैं, संक्रमण काल की
क्रांति है, विदाई।
रिश्तों की गहराई है, बीते पल की परछाई है,
विदाई एक वादा हैं, नयी भोर का
इरादा है, विदाई।
वंदन है, अभिनंदन है, चिंतन है, मनन है,
हमारे लिए गौरव, आपके लिए
आशीर्वचन है, विदाई।

गुरु-शिष्य का नाता

❐ सुषमा भाकर

गुरु-शिष्य का कैसा नाता,
बालक माँ की अंगुली पकड़,
जब विद्यालय में है आता।
देख गुरु को माँ के पीछे, वह दुबक जाता।
गुरु हाथ में उसके टॉफी देकर,
स्नेहिल हाथ उसकी ओर बढ़ाता,
वह कोमल हृदय गुरु का हो जाता।
गुरु-शिष्य का कैसा नाता।
नाजुक कलियों सी अंगुलियों में,
जब वह कलम पकड़ने लग जाता।
हाथ की सहज थपकी से गुरु उसे,
घड़ने है लग जाता।
आहिस्ता-आहिस्ता उसे
सुन्दर कलश बनाता,
सुन्दर-शीतल कलश बना ऐसा,
जो प्यासों की प्यास बुझाता।
गुरु-शिष्य का कैसा नाता।
गुरु अपने शिष्य को
मदारी की भाँति है नाच नचाता।
कम नहीं शिष्य भी, वह अपने करतब दिखाता।
बरस भर की मेहनत को वह,
कॉपी पर अंकित कर जाता।
परखने वाला उसे, हैरत में आ जाता।
गुरु-शिष्य का कैसा नाता।
कितने काटू अंक उसके,
वह परेशानी में पड़ जाता।
दे दो अस्सी में से उन्नयासी,
उसका ज़मीर कह जाता।
लम्बे इंतजार के बाद उसका जब नतीजा आता
देख खुशी शिष्य के चेहरे पर,
गुरु गद्गद् हो जाता।
ऐसा है शिष्य मेरा सीना गर्व से तन जाता।
ऐसा शालीन है, चेला,
जो गुरु के चरणों में धोक लगाता।
गुरु-शिष्य का है, जन्म-जन्मांतर का नाता।

वरिष्ठ अध्यापक
रा.आ.उ.मा.वि.भगतपुरा
संगरिया, जिला-हनुमानगढ़ (राज.) 335063
मो. 9461079671

शिक्षक

❐ उत्सव जैन

समाज में शिक्षक की, अलग पहचान है।
शिक्षक को देख शिष्य, करता नमन है।।
शिष्य के भविष्य की चिन्ता करता,
शिक्षक इसलिए महान है।
नैतिक शिक्षा लौकिक शिक्षा के साथ,
बनाता शिष्य को संस्कारवान है।।
नींव का पत्थर बनता शिक्षक,
शिष्य के लिए न्यौछावार करता जीवन है।
खुश हो जाता शिक्षक जब शिष्य
करता नाम रोशन है।।
इसलिए शिक्षक को कहते है गुरु,
क्योंकि यही देते हमको ज्ञान है।
सिर झुक जाता जब दिखते गुरु,
तब मानो यहाँ से अपना शुरू जीवन है।।
बिना गुरु के ज्ञान नहीं मिलता,
मर्यादा में रहकर सिखाते अनुशासन।
शिक्षकों में होती सेवा की भावना,
आदर-सत्कार और अलग होता चिन्तन
सरल-सत्य-व्यवहार ,यही उनकी पहचान है।
इसलिये 'उत्सव जैन' कहता प्यारे,
शिक्षकों का सभी जगह करते सम्मान हैं।।

-कनिष्ठ लिपिक
कार्या.ब्लॉक प्रारं. शिक्षा अधिकारी
बागीदौरा, जिला-बाँसवाड़ा (राज.)327603
मो. 9460021783

एक प्रश्न मेरा भी

❐ विनीता बाड़मेरा

मेरी भारत माँ, तुझको अंतिम
बार नमन करने से पहले मन
की बात कहना चाहती हूँ।
साँसों के उखड़ने से पहले,
एक प्रश्न पूछना चाहती हूँ।
''तेरी सीमा की रक्षा का भार
मैंने सहर्ष उठाया है।''
हजारों गोलियाँ झेलकर भी
मन तनिक नहीं घबराया है।
पर जो आतंकवाद का चोला
पहन खुद की जीत पर इठलाते हैं।
मेरे जैसे हाड़-माँस के बने पुतले
दूसरों के इशारे पर बंदूक चलाते हैं।
क्यों अमन चैन की बात नहीं करते हैं?
मेरे न रहने पर मेरा परिवार सौ-सौ
आँसू बहाएगा।
पर उनका परिवार भी उनके न होने
से जीते जी मर जाएगा।
क्यों कोई इनको प्रेम का पाठ नहीं
पढ़ाता? मैं साँस उखड़ने से पहले
यही प्रश्न पूछना चाहती हूँ।

अध्यापिका
बाड़मेरा कम्पाउण्ड
कमल मेडिकल स्टोर के सामने
नगरा, अजमेर (राज.)
मो: 9680571640

प्रतिरोध

❐ बी.एल. 'पारस'

नागिन-सा फन उठाए
जब गर्मी देती है दस्तक,
रेत के धोरे दहकते हैं।
अंगारों की मानिन्द
आँधियाँ बदल देती हैं दिन को
अमावस की रात में,
लू के थपेड़े एहसास दिलाते हैं।
सीमेन्ट की भट्टी-सा,
तपता सूरज करता है बौछार
अग्नि बाणों की,
तब काँधे पर हल लिए
झुकी कमर और पसीने से तर बदन लिए
सैनिक-सा सीना ताने
कृषक ही तो करता है प्रतिरोध,
गर्मी के इस भीषण प्रहार का
भोली-सी जीवन संगिनी भी रहती है संग,
दीये की बाती-सी बन, न हाथ रुकते हैं।
किसी मेहनतकस मजदूर के, न कंधे थकते हैं।
दिनभर चारा ढोने वाली औरत के सचमुच!
कितनी जीवटता है।
कितनी संघर्षशीलता है।
कितना जुझारूपन है।
इस रेतीले धोरे वाले राजस्थान के लोगों में।

व्याख्याता, रा.उ.मा. विद्यालय
चाडी-चौतीना, जिला-जोधपुर, **मो: 9413175877**

महाराणा प्रताप

❐ सरोज जैन

लौ लगी है चारों तरफ।
सचेत होना ही काफी नहीं
आग लगने से पहले कुआं खोदें
पहले भाई-भाई के भेद पाटें
मिलेगा समतल, सपाट
जीने का आनन्द बढ़ जायेगा
कोई जयचंद अब नहीं ठग पाएगा
होता अहसास बाद में सबको
पहले सोच, कि बाद में पछतायेगा।
ये कर्मयोगी शूलधारी
पहना बख्तर हाथ में दुधारी
दहलीज छू न पाया कोई
ऐसे छुड़ा दिए छक्के
दुश्मन तो देख ताकता रहा
हो रहे थे सब हक्के-बक्के
घोर-संग्राम की याद ताजा
कर देता है पुण्य-पावन प्रसंग
नमन करें, करें ध्वनि करतल
आज है पल्लवित यह भूतल
नरश्रेष्ठों को, प्रणाम उन्हें जो गँवा गए जान,
भूलकर प्राण तन-मन औ धन। क्या झाला,
क्या भामाशाह सबसे ऊँची रखी पगड़ी मेवाड़ की,
इस पगड़ी पर कलंगी की बानगी
शोभा देख इन्द्र हुआ इर्ष्यालु, इसने बहादी
मूसलाधार भी। सिंहासन जब उसका डोलता
है वह झाँकता है धरती पर। बादलों की ओर
से ऐसे वीरों पर न्यौछावर करता, स्वेद मिटाने
जलधार भी धार-धार होती है। अगाध सागर
में ज्यों पतवार होती है ऐसे कर्मयोगियों की,
जीवन-नैया भवसागर पार होती है

फ्लेट नं. 604,ओर्बिट अपार्टमेन्ट-1
न्यू भूपालपुरा, उदयपुर
मो. 9929045563

हे युगपुरुष! पुण्यपुरुष! कर्मयोगी!
तुम करो सभी को सावधान
बात तुम्हारी मानेंगे सभी
त्याग, समर्पण भाव तुमसे लेकर
जब देश ये आगे बढ़ेगा तो,
दुनिया वालों की नजरें झुक जाएँगी
रह-रह याद दिलाता जमाना
फिर भी अल्पज्ञ मनुज कहाँ जानता
अपना फर्ज़ जो निभा गए
वे विदा हुए संसार से
दुनिया बात जरूर कर लेती है
तनिक देर के लिए फिर वही
ढर्रा चलता जाता है।
अनुकरण बस अनुकरण या अंधानुकरण
देश इसी में आँखें बंद कर घूम रहा है
काली नजर वाले को कैसे देखें
आँखें जिसकी बंद है, समय अब नहीं
हाथ पर हाथ धर बैठे रहने का

शिक्षा का मूल

❐ अनुराधा जीनगर

शिक्षा का तुम समझो मूल।
बाकी सब चाहे जाओ भूल।।
जोत जगती अंतस में हमारे
तमस दूर कर जाती सारे
भेद-अभेद का ज्ञान कराती
भ्रम जाल मिटाती ये सारे
उठो झड़काओ सारी धूल।।
ज्ञान ज्योति से होता भान
क्या सम्मान, क्या अपमान
क्या होती है लाभ व हानि
बिगड़े बनते कैसे काम
काँटों संग क्यूँ होते फूल।।
धर्म-अधर्म के बीच लड़ाई
किसने पाटी, किसने बढ़ाई
देशधर्म हित निजहित त्यागे
जिसने हँस कर जान गँवाई
राष्ट्रभक्ति का हो केन्द्र स्कूल।।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि., जयमलसर, तह. जिला, बीकानेर
मो. 8239728052

बूँद-बूँद की कीमत!

❐ विष्णु शर्मा 'विष्णु'

बूँद-बूँद की कीमत, जीवन सबका पानी।
सोच-समझते प्राणी, मत कर तू नादानी।।
पानी नहीं बचा तो, कुछ भी नहीं बचेगा।
खाना-पीना सोना, बिस्तर नहीं मिलेगा।।
पानी है तो बादल, झूमे-वर्षा रानी।
बूँद-बूँद की कीमत .....।।1।।
पंखे-कूलर-टी.वी. घर वीरान लगेगा।
सूरज शोले उगले, हा-हाकार मचेगा।।
बिन पानी जग सूना, सन्तों की यह वाणी।
बूँद-बूँद की कीमत .....।।2।।
मोटरगाड़ी रेलें करनी बन्द पड़ेगी।
तपती बंजर धरती, रोटी नहीं मिलेगी।।
बहता पानी रोको, बन्द करो मनमानी।
बूँद बूँद की कीमत.....।।3।।
नदियाँ, नहरें-झरने, गंदा इनको मत कर।
शीतल पानी पीकर, खुशहाली से घर भर।।
दूषित पानी पीना, जल्दी मौत बुलानी।
बूँद-बूँद की कीमत.....।।4।।

145-बी, विनोबा भावे नगर, कोटा
मो. 9466641928

शिक्षक

❐ कृष्णानन्द सोनी

शिक्षक होता कुम्भकार, ऐसा मान लीजिए।
भावी राष्ट्र के निर्माण में,
सहयोग करता है शिक्षक।
आधुनिक युग की चुनौतियों में,
संघर्ष करता है शिक्षक।
वर्तमान, भविष्य की उज्ज्वलता का,
आधार होता है शिक्षक।
आने वाली भव्यता का,
वास्तुकार होता है शिक्षक।
गोविन्द प्राप्ती मार्ग का,
पथ प्रदर्शक होता है शिक्षक।
इसलिए तो प्यारे बच्चो!
सम्मानजनक होता है शिक्षक।
आने वाली पीढ़ी का शिक्षक को,
शिल्पकार मान लीजिए।।
शिक्षक होता कुम्भकार, ऐसा मान लीजिए।।

वार्ड सं.-5, इन्द्रगढ़, जिला-बून्दी-323613
मो: 9252006655

स्वास्थ्य बत्तीसी

❐ सतीश चन्द गोयल

ब्रह्म मुहूर्त में जागकर, करे मातृ-भू प्रणाम।
फिर पग अपना धरा धरे, लेकर प्रभु का नाम।।1।।

बिन कुल्ला जल भरपूर पी, घूमे पग सौ-पचास।
फिर शौचादि कर्म करे तो, दिन बीते उल्लास।।2।।

दंत भींचकर मूत्र त्याग, ठुड्डी पर ऊपर दाब।
दाँत, जबाड़ा स्वस्थ बने रहें, चाहे उमर हो साठ के पार।।3।।

मल-मूत्र को न रोकें कभी, करें विसर्जन तत्काल।
गैस रोग न सताएँगे और रहें नीरोग हर हाल।।4।।

दातुन, मंजन, ब्रश करो, नहीं करो जल्दी यह काम।
नमक-तेल मालिश करो तो, चमके मोती सम दाँत।।5।।

आसन-प्राणायाम जो करे, करे योग नित प्रभात।
यौवन चिर उसका रहे, जरा दूर टल जात।।6।।

कोस, दो कोस पैदल चले, जो कर सकते नहीं योग।
मोटापा कभी छाए नहीं और रहें स्वस्थ, नीरोग।।7।।

गहरी लम्बी श्वास ले, करे नित्य प्राणायाम।
मन-बुद्धि ना चंचल बने और वाणी पर रहे लगाम।।8।।

गलत कोई ना काम हो, रहे विवेक का साथ।
प्राणायाम का महत्त्व यह, दे लम्बी उमर और स्वास्थ्य।।9।।

सर्दी, गर्मी ऋतु अनुसार ही, रोज करो स्नान।
स्वच्छ वस्त्र फिर धारण करो, यही स्वास्थ्य का ज्ञान।।10।।

तिल-सरसों के तेल की, मालिश कर स्नान।
सुंदर त्वचा बनी रहे और तन में आए जान।।11।।

तलवे, नाभि, नासिका, सरसों तेल का लेप।
ओठ कभी भी फटे नहीं, ठंड न करे प्रवेश।।12।।

हल्का सा आहार लें, और ताजा दूध या छाछ।
वय अनुसार जो माफिक लगे, यह आयुर्वेद उवाच।।13।।

खेले-कूदे योग करे, करे नित्य व्यायाम।
नव पीढ़ी हो हष्ट-पुष्ट, तन मन से बलवान।।14।।

सद्-साहित्य का पाठन-पठन, महापुरुषों का संग।
प्रेरक जीवन बने योग से, फैले यश की सुगंध।।15।।

तन की ताकत भोजन है तो, मन की शक्ति सत्संग।
तन-मन का स्वास्थ्य बने योग से, किस्मत भी हमारे संग।।16।।

भूख से भोजन कम करें तो आलस कभी ना आए।
तन में चुस्ती बनी रहे और कब्ज ना कभी सताए।।17।।

हस्त-पाद प्रक्षालन करें, फिर बैठें भोजन पास।
मौन रह और प्रसन्न मन से, पाएँ प्रभु का प्रसाद।।18।।

भोजन संग जल ना पीएँ, ना पीएँ भोजन बाद।
इतना ही सेवन करें जल, जो हो जाए मुँह साफ।।19।।

फिर साफ हाथ दोनों रगड़, रक्खें नेत्रों पर हाथ।
नेत्र ज्योति उत्तम रहे, यह करके देखो प्रयास।।20।।

घंटे भर या तीस-चालीस मिनट, भोजन पाछे जल।
पाचन उत्तम बना रहे और गैस कब्ज जाए टल।।21।।

धीरे-धीरे कुछ सौ कदम, भोजन पाछे टहल।
या कुछ क्षण वज्रासन बैठ लो, यह स्वास्थ्य की गैल।।22।।

देर रात ना भोजन करें, करें भजन-सत्संग।
राष्ट्र-समाज हित चर्चा करें, यह उत्तम जीवन ढंग।।23।।

जल का सेवन भरपूर करे, पीए घूँट-घूँट कर त्यों।
ज्ञानी जन यह कह रहे, भोजन करते ज्यों।।24।।

खड़े-खड़े जल ना पीएँ, करें बैठ कर पान।
संधि रोगों से बचे रहें, यह कहते वैद्य सुजान।।25।।

पानी खाओ, भोजन पिओ, यह उत्तम स्वास्थ्य निशानी।
हर घूँट, ग्रास फिर अंग लगे, यह कहते अनुभवी ज्ञानी।।26।।

उमर चालीस जब पार हो, हो जाएँ सभी सतर्क।
रहन-सहन और खान-पान पर, लग जाती हैं शर्त।।27।।

पचास पार जीवन जिएँ, वानप्रस्थी बन सब।
अनुभव से सबको सिंचित करें, हो जीवन जिससे धन्य।।28।।

नूतन पीढ़ी का नेतृत्व कर, दें प्रेरक संस्कृति का ज्ञान।
नदी वृक्ष सम जीवन जिएँ, जिससे भारत बने महान।।29।।

हफ्ता-सप्ताह एक दिन, सत्संग, योग को निकाल।
समाज-सेवा, प्रभु कर्म कर, हो जीवन जिससे निहाल।।30।।

आबाल-वृद्ध सब संग ले, करें हास-परिहास।
करें स्वस्थ चिंतन मनन, रिश्तों में रहे मिठास।।31।।

योग करो, आसन करो, करो नित सभी प्राणायाम।
स्वस्थ सुखी जीवन रहेगा, ऋषि पतंजलि वरदान।।32।।

स्वास्थ्य बत्तीसी पढ़ समझकर, विधि-पूर्वक करें आचार।
तन मन से सब स्वस्थ रहें, सुखी बने संसार।।

सी-119, तहसील रोड़, मोहन नगर,
हिण्डौन सिटी, जिला-करौली
मो: 9413817979

अनुभूतिपरक दोहे

❐ ज्ञान प्रकाश पीयूष

ईश्वर ने धारण किया, माँ का दिव्य शरीर,
बरसाती वह रात-दिन, सदा मेह-सा नीर।

बच्चे का विज्ञान है, सहज-सरल अनुकूल,
सत्य, प्रेम के पथ चले, नहीं चले प्रतिकूल।

राजमार्ग से श्रेष्ठ है, कई गुणा फुटपाथ,
जो अनाथ-असहाय हैं, उनका देता साथ।

धरती प्यासी देख कर, पर्वत हुआ अधीर,
करुणा का झरना बहा, प्यास बुझाता पीर।

दर्पण एक विचित्र है, अद्भुत और अनूप,
दिखता जिसमें मनुज का, अन्दर वाला रूप।

दर्पण अपना साफ रख, मत चढ़ने दे धूल,
जीवन में आनंद के, नित्य खिलेंगे फूल।

पीड़ित जन की पीर हर, देता है सम्मान,
ऐसा नर संसार में, है भगवान समान।

कविता धारा प्रेम की, सबको रखती जोड़,
भाव शुद्ध मन का करे, अहंकार को तोड़।

धरा प्रदूषित हो रही, पॉलीथिन से रोज,
बिना मौत ही मर रहे, खा कर पशु हर रोज।

वायु प्रदूषित हो रही, बढ़ रहे हैं रोग,
मानव चिंताग्रस्त हुए, कैसे रहें निरोग।

गंगा जैसा नीर भी, हुआ प्रदूषित आज,
मैला डाल प्रवाह को, रोक दिया है आज।

सतत् प्रवाहित सुरसरी, सलिल सुवासित धार,
नाली सी गंदी हुई, किसकी हुई शिकार।

प्रिंसिपल (से.नि.)
1/258, मस्जिद वाली गली,
तेलियांवाला मौहल्ला,
सिरसा (हरियाणा) पिन-125055
मो. 9414537902

पीसा जाता जब इक्षुदण्ड,
बहती रस की धारा अखण्ड।
मेंहदी जब सहती है प्रहार,
बनती ललनाओं का शृंगार।।

कहाँ गए वो पैमाने

❐ डॉ. बंशीधर तातेड़

शिक्षक अपनी गरिमा जाने,
अपनी क्षमता को पहिचाने।
भावी-पीढ़ी के निर्माता,
निज दायित्व खुद जाने।।

ज्ञान रश्मियाँ बाँट रहा जो,
सदियों से इस धरती पर।
अज्ञानता के तम को हरता,
महल, झोंपड़ी, कुटिया, घर।।
सरस्वती माँ के ओ सपूत,
दुनिया तेरा लोहा माने।।1।।

कच्ची मिट्टी को गढ़ता जो,
थपकी देता और सहलाता।
अपने ज्ञान से तपा, पक्का कर
सुघड़, सलौना उसे बनाता।।
हर प्रतिभा को निखारता वो,
क्या अपने, क्या बैगाने।।2।।

नाम गुरु का सबसे ऊँचा,
और ऊँचा स्थान है।
इस धरती पर मात-पिता,
गुरु तीनों ही भगवान हैं।।
युगों-युगों तक ये सब देते,
कोई माने या ना माने।।3।।

गुरु का आदर कहाँ गया,
ये देख के नयना रो गये!
नैतिकता, संस्कार, मूल्य सब,
आज कहाँ पर खो गये।।
चिन्तन करना होगा सबको,
कहाँ गये वो पैमाने।।4।।

शिष्य, गुरु, परिवार, समाज,
गिरेबांन में झाँके अब।
शिक्षा नीति की परख हों,
जिम्मेवारी बाँटे सब।।
चूक कहाँ पर हुई है हमसे,
सोचें, समझें और जानें।।5।।

आज गुरु को नमन हमारा,
शुभ आशीष मिले हमको।
रहे कहीं ना अंधियारा अब,
मिले रोशनी जन-जन को।।
गुरु-शिष्य पुरातन नाते,
टूटते ना ताने-बाने।।6।।

वरिष्ठ व्याख्याता (से.नि.)
पी.जी. कॉलेज, केशर-कुंज,
स्कूल नं. 4 के पास, बाड़मेर-344001 (राज.)
मो: 9413526640

सुलझती उलझनें

❐ गौरव कुमार शर्मा

क्या करूँ?
क्या न करूँ?
चक्रव्यूह में उलझा रहता था,
करूँ तो क्या होगा?
निरन्तर सोचता रहता था...
हृदय कुछ कहता,
मस्तिष्क कुछ कहता,
समझ नहीं पाता,
करूँ तो क्या करूँ?

एक दिन गीता की याद आयी,
कृष्ण ने जो अर्जुन से कहा,
बात ध्यान में आयी,
कर्म करते रहो,
फल की चिन्ता मत करो,
बात मन मस्तिष्क में बैठ गई...
अब मस्तिष्क से सोचता हूँ,
मन से पूछता हूँ,
विवेक से काम लेता हूँ,

हृदय की सुनता हूँ,
कर्म करता रहता हूँ,
चक्रव्यूह में नहीं उलझता हूँ,
चिन्ता मुक्त सोता हूँ,
खुल कर जीता हूँ...

व्याख्याता
पुराने पोस्ट ऑफिस के सामने,
जैन गली बयाना, जिला-भरतपुर
मो: 9460181270

आह्वान गीत

❐ पवन प्रकाश शर्मा

कर रहा स्वागत तुम्हारा आज मुँह से बोलकर।
विद्वज्जन का साथ पाकर नई राहें खोलकर।।
राजकीय विद्यालय हूँ मैं जड़ से चेतन हो गया।
स्पर्श पा विद्यार्थियों का धन्य प्रांगण हो गया।।
नया सत्र, नया जोश, नये शिक्षक आ रहे।
मेरे पुरातन अनुभवों से नई दृष्टि ला रहे।।
देखता हूँ मैं स्वयं को गर्व सिंचित आन से।
कण-कण मेरा ही बना है पवित्र पुण्य ज्ञान से।।
भेद बतलाता हूँ अपने आज परतें खोलकर।
कर रहा स्वागत तुम्हारा.....।।
बीते लम्हों को पंखों-सा वजूद में समेट कर।
प्रस्तुत हुआ हूँ आपके समक्ष किसी से भेंट कर।।
आपसे कुछ बात कर सौभाग्य की चर्चा करूँ।
सोचा कि संचित अनुभवों को मैं कभी खर्च करूँ।।
अपने गौरव की कथा मैं कह रहा दिल खोल कर।
कर रहा स्वागत तुम्हारा.....।।
अनुभव सहित जो योग्यता है निखारती प्रतिभा वही।
उपयुक्त वातावरण में ही फूल खिलता है सही।।
नई तकनीक और अनुभवों का मेल मिलता है यहाँ।
ऐसा उन्मुक्त ज्ञानमय संदेश मिल सकता कहाँ।।
बालकों की सफलता को कहता मैं ताल ठोककर।
कर रहा स्वागत तुम्हारा.....।।
प्रोत्साहन सतत् उत्साह से गार्गी बन दिखला रही।
'आपकी बेटी' 'क्लिक योजना'
की सहभागिता को पा रही।
यात्रा का भी खर्च अब तो राज्य सरकार उठा रही।।
मध्याह्न भोजन ममतामयी सी छाँव नजर आ रही।
परिणाम परीक्षाओं की कहानी कह रहा जयघोष कर।
कर रहा स्वागत तुम्हारा.....।।
संसार सागर है ये बच्चों इसमें तुम ये ध्यान रखना।
तैरना एकाग्रता से पार होकर मान रखना।।
प्रतियोगिता युग चल रहा आराम ना साथी बनाना।
चलते जाना इष्ट पथ पर सफलता को खींच लाना।।
सामने खड़ी भयानक बेरोजगारी मुँह खोलकर।
कर रहा स्वागत तुम्हारा.....।।
बीता समय नहीं लौट आता सत्य इतना जान लो।
मार्ग निश्चित कर लो अपना लक्ष्य को पहचान लो।।
मैं तराशूँ तुमको ऐसा अवसर दे दो आज से।
कीमती हीरा बना दूँ दुनिया नवाजे ताज से।।
गौर से सुनना मुझे मैं कह रहा दम ठोक कर।
कर रहा स्वागत तुम्हारा.....।।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. निनाण,
हनुमानगढ़
मो. 9799083513

बढ़ता ही चल

❐ सीताराम सोनी

झंझावातों में फंसकर
क्यों खड़ा रह गया मौन।
प्रवाहित झोंकों से ऊपर
जीवन नैया मंडराती है....।
तू पकड़ नाव, आ ले ऊपर
खोल मृत्यु की पोल!
जीवन कोरा नहीं हुआ करता,
कुछ रंगीनी पल ही क्यों?
सुख-दुःख, रोना-हँसना,
अहर्निश निराशा-आशा
आतप, तूफाँ, मेहा, बिजली
भावाभाव, वियोगायोगा।
गिरना, उठना और मचलना
उठकर चलना खेल निराला,
जीवन सब द्वन्द्वों की संज्ञा।
मनवा नहीं अकेला तू है
मुझ पर वार हजारी कुदरत
मुझमें तुमकों, तुममें मुझको

चलता चल, लख-
अविरल गतिमय।
माया के चौराहे अगणित-
आएँगे अर जाएँगे,
अनचाहे गह्वर, काँटे भी
खड़े रहेंगे सीना तान।
क्षणभर मत रुक, बढ़ता ही
चल,
राहें हैं दुस्वार, मान मत
छाती ले सँवार, झेल ले
दुःख को कर सुख, सनमान
सुआगत करता जा-
जीवन है अनमोल समझ
पल-पल का कर ले इंतजाम।

चल अकेला राह बना
औरों को भी बतलादे-
तू अपने बलबूते .....
पा ले प्यार सदा काँटों का
वरना तो डरने वालों पर
काँटे होते भार सदा।
श्रमशीलों पर वरदहस्त विधि-
नौका पार लगाता है,
अटल आश, विश्वास प्यार से
सबका मन हर्षाता है।
सीख सिखा दे अपने जैसी
वितरित कर मुस्कान, हँसी,
अपनाकर फैला ले कर में
लेकर साथ सदा चलता चल।
सबका मान, मानले सबका
नित हरिताभ जमीं, मंजिल....
खुश हो जीना, जीवन सबका
ईश्वर का एहसास करें सब।

व्याख्याता (से.नि.), रेल्वे स्टेशन के पास, लाडनूं, जिला-नागौर-341306

ग़ज़ल

❐ राजेन्द्र कुमार टेलर

अहसान फिर से यहाँ चुकाया जाये
उन्हें जरा-सा कभी तो पढ़ाया जाये।

रहते हैं बुनियाद जो यहाँ तरक्की वास्ते
सारे के सारे ये हर्फों को सिखाया जाये।

जिनकी ये दुनिया उजालों से महरुम ठहरी
कागज की तालीम से यूँ सजाया जाये।

उसके चेहरे पे खुशी को देखना है गर
कागज पे उससे कभी नाम लिखाया जाये।

जो दाग सदियों से काबिज रहा माथे पे
मिलजुल के हमेशा के वास्ते मिटाया जाये।

उलझा रहा है सदा घर के कामों में वो
अब यूँ चलो भी कि घर उसके जाया जाये।

प्रधानाचार्य
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय
रायपुर पाटन, जिला-सीकर 332718
मो: 9680183886

बन्द करो आतिशबाजी

❐ भवानी शंकर 'तोसिक'

भूखा मैं सोया, खूब रोया,
किसी ने नहीं पूछा।
आज मेरी तस्वीर पर मिष्टान्न
चढ़ाया जा रहा है।
गीत जिन्दगी का गाया जा रहा है।
किसलिए? नाम के लिए!
बन्द करो ये आतिशबाजी-बन्द करो।।
दो घूँट पानी के लिए मैं तड़पता रहा,
किसी ने नहीं पूछा, जब तक मैं जिन्दा रहा।
आज मेरे मरने पर छबील लगाए जा रहे हैं
लोग गाये जा रहे हैं
किसलिए? नाम के लिए!
बन्द करो ये आतिशबाजी-बन्द करो।।
जिन्दगी तरसती रही एक मुट्ठी धान के लिए,
तन ढकने को फटे पुराने परिधान के लिए,
जिन्दगी चुक गई जब,
रजाई और कम्बल अब बाँटे जा रहे हैं
किसलिए? नाम के लिए!
बन्द करो ये आतिशबाजी, बन्द करो।।
रहने न दिया पल भर, अपने मकान में,
मर गये तो ला पटका शमसान में
अब उजड़ गई है जिन्दगी तो मकबरा बनाया
जा रहा है।
किसलिए? नाम के लिए!
बन्द करो ये आतिशबाजी-बन्द करो।।
आवाज को मेरी सदा अनसुना किया,
जोर-जोर से चिल्लाया पर
कोई नहीं आया।
अब बिन बुलाए अर्थी को कन्धे दिये जा रहे हैं
रामनाम सत्य है, लोग गाए जा रहे हैं।
किस लिए? नाम के लिए!
बन्द करो ये आतिशबाजी-बन्द करो।।
साँसें टूटी-दुनिया छूटी,
अन्तिम विदाई-संस्कार।
नये जन्म का अब तो बस इंतजार
मजबूरी है, रस्मों रिवाज निभाए जा रहे हैं।
किसलिए? नाम के लिए!
बन्द करो ये आतिशबाजी-बन्द करो।।

आदर्श कॉलोनी, गोविन्दगढ़ रोड़ चौराहा
पीसांगन, जिला-अजमेर (राज.) 305204
मो. 9414746591

नदियाँ सागर के द्वार चलीं

❐ महेन्द्र सिंह महलान

पत्थर के सीने से फूटी
बूँदें सुंदर छोटी-छोटी
उमड़-घुमड़ कर सब आपस में
मिलकर एक जलधार बनीं,
नदियाँ सागर के द्वार चलीं।

भूल गईं ये बाबुल का घर
इनको प्यारा लागे नैहर
प्रियतम की बैयां पर सजने
कर सोलह सिंगार चलीं,
नदियाँ सागर के द्वार चलीं।

कंकर-पत्थर छोड़ राह में
सब-कुछ भूली मिलन-चाह में
छोड़ दिए सब कूल-किनारे
संगी-साथी और सहारे
जैसे अपना घरबार छोड़कर
भाग चले कोई पगली,
नदियाँ सागर के द्वार चलीं।

सागर की चाहत को देखो
उफन-उफन कर इन्हें बुलाए
बढ़कर आलिंगन में भर ले
दोनों हाथों को फैलाए
मिलने अपने मनभावन से
ले खुशियों की बौछार चलीं,
नदियाँ सागर के द्वार चलीं।

जीवन नदियाँ जीवन सागर
जीवन है एक प्रेम की गागर
इस गागर का रस छलकाकर
अपना सब कुछ वार चलीं,
नदियाँ सागर के द्वार चलीं।

प्रधानाचार्य (से.नि.)
राजकीय पशु चिकित्सालय के सामने,
तिजारा-301411 (अलवर) राज.
मो. 9783187400

विद्यालय

❐ महेश चन्द्र श्रीमाली

राष्ट्र निर्माता, बनाता है विद्यालय।
देश का भविष्य, हमारा विद्यालय।।
पौधों को वटवृक्ष बनाता विद्यालय।
शिक्षा की सरिता, बहाता विद्यालय।।
जीवनोपयोगी ज्ञान दिलाता विद्यालय।
गुरु-शिष्य परम्परा, सिखाता विद्यालय।।
भावी राह जीवन की, दिखाता विद्यालय।
महान् व्यक्तित्व बनाता विद्यालय।।
शैक्षणिक प्रतिभा बढ़ाता विद्यालय।
बौद्रिक विकास कराता विद्यालय।।
क्रियाशील, गतिशील बनाता विद्यालय।
अपनी मंजिल दिखाता विद्यालय।
जयन्तियाँ, पर्व उत्सव से भरा विद्यालय।
प्रवेशोत्सव, पोषाहार, सदाचार का केन्द्र
विद्यालय।।
शिक्षक-शिष्य का कर्म भूमि विद्यालय।
जीवन-मूल्यों की खान विद्यालय।।
शिक्षा का महत्व समझाता विद्यालय।
अधिकार, कर्तव्यों से परिचय कराता
विद्यालय।।
साक्षरता, नामांकन, ठहराव में समन्वय बनाता
विद्यालय।
क्रीडा, सांस्कृतिक, ज्ञानवर्धन कराता
विद्यालय।।
गाँव-गाँव ढाणी की सर्च लाइट विद्यालय।
नन्हें-नन्हें फूलों की रंगबिरंगी छटा
विद्यालय।।
प्रबन्धन, अभिभावकों, बालकों का सेतु
विद्यालय।
शैक्षिक ऊर्जा का आलय विद्यालय।।
संस्था प्रधान का प्रबन्धन विद्यालय।
शैक्षिक माहौल का उपवन विद्यालय।।
अध्ययन, अध्यापन का संस्थान विद्यालय।
शिक्षा का आलय हमारा विद्यालय।।

3-थ-8, हिरणमगरी, सेक्टर-5,
प्रभातनगर, उदयपुर-313002
मो. 9414851013

आद्या शक्ति : कन्या

❐ डॉ. विद्या रजनीकांत पालीवाल

वह जानती है
वह लड़की है
लड़की
नियति
गति
प्रकृति
सृष्टि की प्रतिकृति
सृष्टि का धर्म निभाना है।
वह ओजस्विनी
स्वाभिमानिनी
अनुरागिनी
कर्म-पथ-अनुगामिनी
'जीवट' का मार्ग बनाना है
वह
देखती है
सुनती है
पढ़ती है
लिखती है
सीढ़ी दर सीढ़ी
उम्र की पदचाप पर
अनवरत चढ़ती जाती है।
देखा
मुड़कर उसने
अतीत
सर्द, रुग्ण
सदियों से बोझिल
रूढ़ि ग्रस्त, पदाक्रान्त
भय व्याप्त, व्यथित
युग-युग से
अबला उसे बनाता है
वह
शक्ति-पुंज
सृष्टि-निर्मात्री
जग-धात्री
शिव शक्ति
नारायणी
मुद मंगल दात्री
उसे इस जग को स्वर्ग बनाना है
वह
बढ़ रही निरन्तर
बन कर्म प्रवर
चित्रित करती
वेणु-निनाद-लहरी से
रस सिक्त
जीवन स्वर भरती
क्रम समझाती
उद्‌बोधित करती
वह
ऊर्जा
क्षमा
मेधाविनी
जग की सुंदर से सुंदरतम रचना है

22, बृज विहार पुलाँ, (धाय भाईजी की बाड़ी) उदयपुर (राज.)
मो: 9351549041

स्कूल चलें हम

❐ मगन लाल दायमा

स्कूल चले हम-स्कूल चले हम
अब ना होगा लड़का कम,
अब ना होगी लड़की कम।
स्कूल चले हम
मैं लड़की हूँ नहीं है इसका कोई गम,
आर.टी.ई. का साथ रहेगा मेरे साथ हर दम।
स्कूल चले हम
शिक्षक ज्ञान की नई-नई सरगम,
पढ़ने का हमें, अब करना होगा श्रम।
स्कूल चले हम
हमें बस आना है कक्षा में प्रथम,
कुछ कर दिखाने का हममें अब बढ़ा है दम।
स्कूल चले हम
पढ़ने में लगाना है अब हम सबको मन,
अच्छे अधिकारी बन के देश को होंगे अर्पण।
स्कूल चले हम
स्कूल है हमारे ज्ञान का एक सच्चा दर्पण,
शिक्षा है समाज की सबसे बड़ी मरहम।
स्कूल चलें हम-स्कूल चलें हम

अध्यापक, प्लॉट नं. 221, रुकमणी नगर-ए,
आगरा रोड, जयपुर, **मो. 9983988650**

माँ प्रकृति की महिमा

❐ भंवरलाल इन्दौरिया

माँ प्रकृति की
अनूठी है महिमा
प्राणियों के
उद्‌भव से
विकास की
सीढ़ी है
माँ प्रकृति
पालती-पोषती
है सबको
पार लगाती
है खेवा
खिलाती है मेवा
करती है
जीव मात्र की
सेवा
अन्त में
प्रकृति ही
दिग्दर्शन
कराती है
प्रत्यक्ष ब्रह्म का
बोध कराती है
दिव्यत्व का
तभी जीव
पा लेता है
अपने गन्तव्य को
विलय हो दिव्य
ब्रह्म में
एकाकार
हो कर
स्वयं वही
प्राप्त करता
है पूर्णता को।

विदुरजी मन्दिर के पास,
रतनगढ़, चूरू (राज.) 331022

राजस्थानी विविधा

संस्करति संरक्षण - परकरति परवरधन

❐ नरसिंह सोढ़ा

आज रो बखत विग्यान रो जुग मानीजै जिण मांय मिनख फकत आपरी सुख-सुविधावाँ, अेसो-आराम, अर मरण-मारण रा नित नुवा आविसकारां रा अम्बार लगाण सारु रात-दिन खप रैयो अर लगोलग नासतो-दौड़तो इ दीसै, पळ भर री वीं नै भळी सोचण री ठावस कनै कर नी नीकळे। दूजी कानी इणरै अलादो घण महताऊ परसंग सांगोपांग बिसारतो इ जा रैयो छै, बो है मिनखाचारो (मानवता)

सरुपोत समाज मांय मिनखपणै रा ताना बाना इण भांत कसयोड़ा हा कै, बां रै बिचाळै कदेई नफरत नै मौको नी मिळतौ। मिनख-मिनख नै मिळणै रा सांसा पड़ता, अेक दूजै री गरजां राखता। आपस री भेळप, अपणात हेत सूं काम आवणौ इ मिनख जमारै रो मोळ मानता। इण भांत री जगचावी परम्परावां रा दाखळा इतिहास रा आइना मांय सैरूप मिळै।

जद सूं मानखै रै माथै मांय विकास इ विकास रौ ओघड़ भूत सवार होयो उण दिन सूं इ मिनखापणै रो माजनो पाड़णै मांय कोई किणी भांत री कसर नी छोडण लाग रैयो। नित अेकान्तरे केई सइकड़ा दाखळा सामी आवै जिका मिनखाचारै (मानवता) री मोत्या महंगी मान्यतावां ने तार-तार करता दीसै। अेड़ी घड़ी मांय आज रो मिनख ठूठं ज्यां ऊभो-ऊभो, बहरो गूंगो बण र रह रैयो, पण मांय-मांय घुटीजै, पसीजै, डरपीजै जिण रौ कीं अरथ नी निकळै। इण रौ कारण मिनख खुद इज है जिको परसंस्करतीकरण रै चक्कर मांय आय मानवता रौ हत्यारौ बणतो जा रैयो है। मिनख खुदोखुद तबाही रा गैळा घड़या इण सूं बचणै री फकत अेक इ ज डांडी है बा है स्वसंस्करति रौ संरक्षण''

पर संस्करतीकरण सागै-सागै अेक घण नामी आफत मानखै नै आज चारोमेर घेरण लाग री है जिका छठ बारोमास मिनख रै सोवण नी देवै बा है 'परयावरण परदूसण'। मूळ रूप सूं मिनख कुदरत री कारीगरी रा कसीदा वांचतौ परकरति सूं प्रीत करतो रैयो पण कई क बरसा सूं पतो नी कुण कामण करग्यो कै जिको, मिनख जुगा जुगा सूं परकरति रो पाळणहार रैयो वो कुदरत रो कसाई बण बैठयो, दिन दूणी रात चौगुणी परकरति सूं खिलवाड़ करणै कांई कसर नी छोड़ै। ज्यां पेड़ पौधा ने काटणौ अर जड़ा मांय जहर घोळणो, पाणी रो अपव्यय अर मैळौ करणौ, हवा मांय धुंओ रळाणौ, नदी नाळा डाटणा, अतिकरमण करणौ, गंदगी सूं भरणा डूँगर-धोरा रो खनन करणौ अर बां री वनस्पति नै मिटाणौ अेड़ा अणगिणत तरीका अपणा अर मनमोवणी प्राण पाळणहार परकरति नै नरक बणा दी। जिण सूं परयावरण परदूसित होय दुनिया महामारी री विभिसिका रै मूडै मांय जाय रैयी है इण जहर सूं बचणै रो अेक इज ओखत है बो है परकरति रो संरक्षण अर उण रौ लगोलग परवरधण। इण रै अलावा सगळी बातां फकत छळावौ है, आइज संजीवणी है जिकी परयावरण मायं चेतो ला सकै।

संस्करति अर परकरति अेक सिक्का रा दो पाखा है। मिनखपणै अर परयावरण नै संजीवण देवण आळा अे इ घटक है जिकां रो अजब गजब मेळ है इतिहास रै झरोखा मांय सूं जद अतीत नै निरखां, जद सगळा संसार री सभ्यातावां, संस्करति अर परकरति मांय बेजोड़ मेळ बणार चाळी है, पुरातन सभ्यातावां री धुरी मिनखपणौ इ हो। मिनख इ संस्करति रो सिरजण करै तो परकरति परयावरण की परवरिस करै इण कारण मिनख आपरी संस्करति नै परकरति सूं अटूट संबंधा सूं संभाळ कर राखी ही। आखै जगत मांय भारत री संस्करति रो तो परकरति रै सागै सरीर आतमा, चोळी दामण रो साथ रैयो है। इण पुरातन संस्करति रा सिरजणहार, रिसीआं, तपस्वीयां आप रै ग्यान, तप अर अनुभव सूं सिरमौर संस्करति री नींव नै सीचीं ही बां जगह-जगह आवण आळी पीढ़ियां नै चेताया है कै संस्करति रो संरक्षण करोला तो परकरति रो परवरधण, विस्तार होवेला अर परकरति सू प्रीत राखोला तो संस्करति रो संरक्षण मतै ई होवतो रेवैला।

भारतबरस रै समाज मांय इ सो कोई उच्छव, परव, तीज-त्योहार, जलसो, मेळो

आद नहीं होवेला जिण मांय किणी न किणी रूप मांय पेड़ पौधां, जळ, अगन, पृथ्वी, पशु, पंखेरू, ग्रह नखतर री पूजा-अरचना नी करीजै। परकरति रा दियोड़ा सगळा तत्वां री किणी न किणी, कठै न कठै महता नै स्वीकारीगी हैं जिणसूं मिनख पग-पग माथै जतन करै कै परकरति ही परमात्मा रो रूप है। उण रौ सनमान करणौ मिनख रो धरम है कर्तव्य है, करम है।

दूजी कानि परकरति मांय इसो कोई जड़ चेतन तत्व ने बढ़ेरां लारै नी छोड़यौ जिण रौ आपांरी संस्करति सूं सरोकार नी हुवै। राज सूं ले अर पहाड़ तांई, घास सूं ले र वट बिरख तांई किणी नै ले लेया बा किणी नं किणी सांस्करतिक रूप सूं सरोकार राखै। बा नै देखतां ई बां रै प्रति आदर बणै अर स्मृति नै जी सूं सम्बंधित वार त्यौर सूं जुड़ाव करावैं, सजग करै तो आखड़तो मिनख चेत र चालण लागै। अेड़ी अबखी वेळा मांय आ मंत्र-'संस्करति संरक्षण-परकरति परवरधन' रामबाण सिद्ध हो सकेळा। वरतमान मायं परयावरण रै नाम माथै घणा विग्यापन दिरीजै अर घणा तो बजट खरचीजै पण मनचावा नतीजा नी मिळै। मानखै मांय परयावरण नै सुद राखणै री सीख नी सुळगै, अर नी परकरति नै पाळणै री। प्रण पळै जद कै पुरखां री बणायोड़ी व्यवस्थां सूं ओरण, गोचर, पायतान, पीपळ, तुलसी, बड़, खेजड़ी गऊ रै संरक्षण री जिम्मेवारी खुद समाज माथै इ ज दिरायौड़ी ही, जिण री आखो समाज अघोषित सपथ पालना करता थकां परयावरण रो रक्षण करता, पाळण करता, कांई किणी माथै थोपा-थोपी नी करता। घणकारा पहळू लोक देवी देवतावां सूं जोड़ देवता। उणसूं बड़ी सरधा सूं पालना होवती। क्यांकि लोक देवतां मांय मिनख री अटूट-अनन्य सरधा रैवती ही, इण रो साखसात उदाहरण हजारों बीघा मांय फैलयोड़ा पसरयोड़ा ओळा अर गोचर है जठै आजूं संवई कोई भूल भी पेड़-पौधां रै पत्ते तिनके तांई रो नुकसान नहीं कर सक्या। कई सैकड़ा बरसां सूं अनवरत अखण्ड आ परम्परा चाल रैयी है। अण भांत री सपथ नै सगळा वर्ग, जाति-धरम रा मिनख पाळणा करता रैया है आ है संस्करति रौ सम्बळ जिका सतत परकरति रो परवरधन करै। परकरति फळसी फूलसी तो संस्करति रो सिणगार होसी अर संस्करति सूरंगी रैसी वठै मिनखाचारौ (मानवता) घूमर घालसी। जठै मानवता री रमत हुवै बठै सावरियो जरूर फूल बरसावैला अरपात ईश किरपा बणसी। औइतो मिनख रौ ध्येय होवणो चावै।

ऊपर जणावैळ दाखला मुजब म्हारी सोच सूं मिनखचारो तद अखण्ड रैह सकेळा जद समाज मांय स्व संस्करति संरक्षण हुवै अर परकरति रो परवरधन हुवै। आ सीख- संस्कार मिनख आपो आप सू सरू करै अर समाज मांय सतत राखण रो मिशन चलाइजै तद समाज सहज रूप सूं इण संस्कारा रो पीढ़ी दर पीढ़ी संवहन कर सकैळा। इण लेखा रै मारफत संस्करति संरक्षण-परकरति परवरधन ने जन-जन रो अभियान बणावण खातर मूरत रूप री कल्पना आगळ काव्य रूप मांय समझावण रो परयास करीज्यौ है कै जै मिनख आप रै आंगण सूं ले अर गळी गुआड़, मोहल्ला, गाँव अर अठै तक कै रोही, खेत ताई संस्करति संरक्षण संकल्प राखै अर परकरति पाळण रो प्रण पाळै तो विश्व मंगळ री अभिलासा पूरण पूरण हो सकेळा। इण रै अलादौ दूजौ मानवता अर परयावरण रो हितैसी दूर-दूर तांई दीसे कोनी। ओ संस्करति संरक्षण परकरति परवरधन रो मंतर इ आसा री किरण है, भोर रो तारो अर दीवै री जोत है जिण संदेस नै काव्य रूप मांय इण भांत समझ्यो जा सके। यथा-

गांव-गांव बड़ळो गुआड़ गुआड़ पीपळी
खेड़े खेड़े खेजड़ो आंगण आंगण तुळसी
नाडा बणाओ। नाडिया पाळ बंधावो तळाई
आगोर बणाओ कुण्डिया जग मांय जळ घणाई
ओरण बचाओ। मरुधरा सिर साटै रूंख
राखणिया प्रीत पाळो सांसण रा रूंख राखौ इळा
रहणीया गोचर बुवाओ सेवणीया, खातिर धेनु माँ
धेनु इ जग खेवणीया जाहिर जग मांय पेळड़ी
पंकतियां री फेर सूं व्याख्या-

बड़ पूजा कामना तणौ कमाल,
गांव, गोतर बणै वट री मिसाल
दुआ मिळै सलामत रहे हजारों साल,
साल में साल हो हजारों साल
पीपळ पसरै गुवाड़ गैलै,
नर सीचौ जळ हमेश
पीपल पूज्या हरि मिळै,
ब्रह्मा विष्णु महेश
खेड़ै राखौ खेजड़ी लड़ी-लड़ी
आ मरुधर री जीव जड़ी
सुख दुःख सुमरां घड़ी-घड़ी सदा,
अकाळां संग खड़ी
घर-घर खीवो दीवळो तळै तुळसां माई
घर-घर हुवै चानणौ मिळै साळग सांई

ओ लेख अेक जन जागरण रै मिशन रौ दृष्टांत है, जिण रौ मकसद स्व संस्करति री मान्यतावां, परम्परावां नै परकरति सूं जोड़ली अर परकरति रै परयावरण नै संस्करति रे सरोकारां सूं सांधणी जिण सूं परकरति रो सतत प्रसार अर संस्करति रो अक्षुण्ण रअण हो सकैळा। इण हेतु अळा प्रयास है जिका पढारा ने जचै बां नै इण मिशन सूं जुड़ र कीं न की, कठै न कठै, कदै न कदै मंगळ मुहूर्त कर देणौ चावै। ओ इज इण लेण रो संदेशो रे वैला।

व्याख्याता
रा.आ.उ.मा.वि. बज्जू
तह. कोलायत, बीकानेर
मो: 9799634344

उजड़ मारग भेणौ नीं

❐ **उम्मेद सिंह भाटी 'सूरज'**

उजड़ मारग भेणौ नीं
उड़तो तीर लेणौ नीं।
सब सूं मीठौ बोलणौ
कड़वौ बोळ केणौ नीं।।
घर को भैद देणौ नीं
अन्याव कदै ई सेणौ नीं।
साँच नै आँच नी आवै
झूठ कदै ई केणौ नीं।।
उंदी संगत रहणौ नीं
लेणौ माथे लेणौ नीं।
सीदै गेलै चालणौ
उजड़ मारग भेणौ नी।।
औसर चुक्याँ चौरासी, भई!
कदै ई लारै रहणौ नीं।
मात-पिता रा बोळ इमरत
कदै ई टालणौ केणौ नीं।।
सीदै गेलै चालणौ भई!
उजड़ मारग भेणौ नीं।।

व्याख्याता
माली मोहल्ला, पो. मेड़ता रोड
जिला-नागौर-341511
मो: 9414673660

अेकांकी

होजू अैंय हाजू

❐ भोगीलाल पाटीदार

पात्र : जमना, कडगी, हुरज, रमीला, मीरा।

देसी नरीय वारं बे घोरं पाहै पाहै हैं। बे घोरं ने वेंच मअें गाडू नेंकरे अैटली गरी है। बे घोर मौरै गांम नी वाट है घोरं वाहे छुटी जमीं है। बे ने जमीं ने सोमरै धुवोर नी वाड़ कंटीली है। हवार मअें उठीनै कडगी घोर मअें थकी कचरो काड़ी ने बायणे कचरो वारतै वधारै कचरो देखी गई। अैनै रीस आवी गई तौ जमना ने गारे दे है।

जमना : **(घोर थकी बायणे आवीनै)** हवार मअें केंम हराप दो हौ?

कडगी : आ जौई ले। कचरो म्हारै बायणा आड़े केंम वार्‌यौ है?

जमना : तमारै बायणा मअें न्हें वार्‌यौ है। फणगा ना झापोटा थकी आवी ग्यौ औगा।

कडगी : अेकतरे ने चौथे दाड़े तू वेली उठी ने आम'ज करे है।

जमना : **(नरमाई थकी)** म्हूं वेली उठू हूँ तौ तमनै केंम मरचू लागे है?

कडगी : म्हारै आड़ै ही आखी रातर जाग। पण म्हारै आड़ै कचरौ तौ नकै नाख।

जमना : **(हाथ थकी अेसारो करीनै)** म्हारै कचरो तौ खोणा मअें अेटको करी मल्यौ है।

कडगी : **(फणगे थकी वताड़ीनै)** लेमड़ा नं पानं कैय थकी आव्यं?

जमना : तमारै सामे घोर है अैंण ना लेमड़ा नं पानं आवै है।

कडगी : ई तौ हुकाईलं आवै। आतौ लीलं हैं।

जमना : काले हांझ ना भईजी आव्या अता। मुंडा मअें मोळवा आवी ग्यौ है अैम करीनै बे डोरा भागी लईनै तमारै घोर आड़ै आव्या अता।

कडगी : तारै भईजी बे दांतण हुं लाव्या तनै दासको लागी ग्यौ। बीजं मनक लई जयं ई कोई न्हें। जीव बरतो होय तौ लेमड़ो कापी नाक। घोर मौरै लेमड़ो नै आसापालो उसार्‌यो है। कचरो पारकं घोरं मअें थाय है।

जमना : **(चिढ़ाई ने)** केंम कापु? मनक तौ रूखड़ं ऊसारै हैं। लेमड़ो तौ अक्सीर दवा है। ऊंनारा मअें छाहिलो आले। मनक झड़ो नाखवा डोरा लई जयं हैं। रूखड़ा ने ऊसारवु पुन्नु नुं काम है।

कडगी : तू तौ ढेटी है। कैटली फैरा केयु के रूखड़ं रोपवा नो धाधरवो होय तो वाड़िया मअें रोप। म्हारै बायणा मांय गुबरातो न्हें थवो जूवै।

जमना : केंम तमैं देखतं न्हें हो? वाड़िया मांय भी घणं हैं। गांम वारे अेको कर्‌यो है के जनम नै लगन वखते अेक रूखडू रोपी ने ऊसारो।

कडगी : **(वताड़ती थकी)** र्‌हैवा दे तारी डायपण। आ पॉलीथीन नी थैलिये कैणे नाखी हैं?

जमना : अड़काया कुतरा वजु हुं करो हौ? म्हूं तौ दुकाने सामान लेवा जऊं तौ साथै छेतरा नी थैली लई जऊं हूं।

कडगी : **(करोध करीनै)** जौई ले आ च्यार नं तखलं नै हुकलु है के न्हें।

जमना : वायरे थकी उड़ीनै आव्यु, कै पछै तमारै गाय ने च्यार नाखते वैराई गई औगा। तमैं वकील वजू पूछौ हो, तै म्हूं हुं जाणू?

कडगी : **(आँखें काड़ीनै)** म्हूं गाय राखूँ हूं तौ तू केंम कारजु बारे है?

जमना : तमैं अवरू नकै बौलो। कारजु बारती नती पण हवार मांय गाय नं दरसन करीनै कारजु टाडु करूं हूं। रोज हवार मांय बाण्णा सांमी आवीनै वाहे। जार सुधी रोटलो न्हें आलु तार तक बाण्णा सांमी आंटा मारै।

कडगी : **(माथु अलावीनै)** हं! अवै खबर पड़ी। अटलै गाय कारैक दूध आलते वहुगी जाय है।

जमना : हांझ-हवार दूध काड़ीनै छुटी छोड़ी दौ हौ। भूख लागे तौ कागद नै पॉलीथिन नी थैलिये वैणी खाय। पछै दूध हरतै आले। किए मादी पड़ी जाहै। च्यार खवाड़ो।

कडगी : तू तौ घणं घाटं नी घड़ीली है। तारै आई अे हुं खाई ने जणी है।

जमना : आडू केंम बौलो हौ? जाणी ने राहड़ो करो हो। केनैक थकी तौ असल राको।

कडगी : **(रीस करीनै)** होव! म्हूं बागोरी नै तू डाई। तारू हुं वगाड़ी नाख्यु? (केसव काका ने आवतै देखीनै बै आपड़े-आपड़े घोर मांय पैही गई।)

(परदो पड़ी जाय)

(बीजौ दरसाव)

कडगी नुं घोर। भेंत ने अड़ीनै खाटलो ढारीलो है। खाटला माथै गुदड़ी पाथरीली है नै ओढ़वानो धुसो पड़्यो है। कडगी खाटला नेंचै भेंत ने धके लांबा पोग करीनै बैठी है। माथा ना वार छुटा हैं। बे बईरं अैंने पागती मअें बैठं हैं। भगत लेंमड़ा नो डोरो लईनै झाड़ो नाके है। झाड़ो नाखते मुंड़ा मअें बबड़ावतो थको बगाहं खाय है।

हुरज : भगतजी ने अवे बगाहं आवै हैं। काठो वायरो लागी ग्यौ है।

कडगी : **(धीरे थकी)** काल नुं हेतु डिल टूटी र्‌यु है। जराअे बेहवातु न्हें है पण झाड़ो नाकै है अैटले काठी थईनै बैठी हूं।

हुरज : वेला-मोड़ी बाण्णे नेंकरवा मअें आब्बा थकी खराब पवन नो झापुटो लागी ग्यौ है।

कडगी : (कुंहका करीनै) पैली जमना तौ परूड़िया नी उठै है। अैंने लाकड़ अे न्हें उठतं हैं। म्हारै सारू पवन केयं हंताई र्‌यौ अतौ। अेक दाड़ा मांय हाथ-पोग गरी ग्या।
लगारे टेको न्हें है।

हुरज : बस! वधारै नकै बौलो। भगतजी नो हाथ फोरो है। घणं मनकं ने झाड़ो नाकी ने बैठ करी दीधं हैं। थोड़ोक विसवास राखो।

(रमीला आवे है)

रमीला : **(झाड़ते देखीनै)** आई! तमनै हुं थ्यु है? **(पाहे जाय है)**

हुरज : **(वेच मअें)** पवन ना झापोटा मअें आवी ग्यं है। अैंम लागे है के पाणी ना उतारा ना कुंडारा मांय पोग पड़ी ग्यौ है।

रमीला : कैवी वात करो हो काकी? आंदरो विसवास छोड़ो। वायरो नै वंतरी खोवाई ग्यं।

हुरज : हाची वात करूं हूं। मनकं झाड़ो नाखतं मांय होजे थई जअं हैं।

रमीला : **(जमना ने गाल नै डिले अड़ीनै)** आतौ ताव आव्यौ है। झाड़वा थकी न्हें उतरे। दवा लेवी पड़े।

हुरज : म्हनै भी आम'ज थ्यु अतु। दवाखाना नी बे दाड़ा दवा खाधी तोय फरक न्हें पड्यो। पछै आणा भगतजी थकी झाड़ाव्यु तारै ठीक थ्यु।

रमीला : काकी झाड़वा थकी ताव न्हें उतर्यो। तमैं बे दन दवा खाधी अैटले उतर्यो। दवा खातं मअें तरत न्हें उतरे। बे दन पुठे फरक पड़े।

हुरज : **(ठाबु मुंडू राखीनै)** वधारै काम करवा मअें आवे तायें ताव चढ़ी जाय।

रमीला : अैंने थाकेलो कयं। ताव तरै-तरै ना आवै। बे रता नौ, मलेरिया, चिकनगुया आद। ज्हेरी ताव अेनिफिलीया मसरू केड़वा थकी थाय। ई गुबराटा नै पाणी मअें पनपै।

हुरज : घोर मअें तौ होजु-हट है। मसरं केंय थकी आवै।

रमीला : घोर मअें साफ-सुप साथै आंगणा मअें नै आहे-पाहे भी साफ राखवु पड़े। खाड़ा मअें पाणी औय तौ मसरं थयेंगा। वाड़िया महें अे उकीड़ा नो गुबराटो है।

कडगी : **(रीस करीनै)** छानी मर। बे चौपड़िये भणी गई, अैटले डागटर बणी गई के हुं?

रमीला : म्हूं झाड़वा नुं केयं ना कयुं हूं पण दवाखाना नी दवा अे करवी पड़े। ज्हैरी ताव वगर दवा अे न्हें मटे। मनक ने तुजवी नाखै।

हुरज : रमीला नी वात हाची है। हेंगजी भाई दवाखाने भणीयु भरीनै रुपिया आली आव्या।

कडगी : **(धीरै थकी)** म्हूं ओसन चुकी गई। नावली नो रस न्हें पीवणौ।

हुरज : नावली नै लेमड़ा नो रस तौ जमना हरसाल आठ दन पीये है। नख मअें रोग न्हें है। कारैये मादी नती पड़ती।

कडगी : अैंनी खोड़िली नुं नाम नकें लो। म्हनै तौ अैंम लागे है के अैंनी नजर लागी है।

हुरज : खौटो व्हैम न्हें राखवो। मनखादई है, कुंण मादु न्हें पड़तु है? तमनै झाड़ा थई ग्या अता, तारै अैंने सौचालय मअें फरागत जतं अतं। पाणी अे हेडपंप थकी लावती अती। तोय तमनै फरागत जवा देती अती।

(नर्स मीरा आवे है। भगत झाड़वु बंद करै।)

हुरज : **(आबोकार दईनै)** पधारो नर्स बाई।

मीरा : होव, म्हूं तमारै घेरै गई अती। तमैं आयं हो अैंम वात सांभरी तौ आयं आवी। अवे तमनै हरतै है।

हुरज : अवे तौ असल है। वरीनै पासो ताव नती आव्यौ। कडगी काकी मादं थई ग्यं हैं तौ साता पूछवा आवी हूं।

मीरा : **(हाथ थकी डिल जौईनै)** काकी नुं डिल तवा वजू तपे है। ताव आव्यो है। झाड़वा थकी न्हें उतरे। दवा लोगा तारै उतरेगा।

रमीला : **(कडगी ने उठाड़ीनै खाटला माथै हुवाड़नै)** तमारै कनै दवा औय तौ करो। नेकै पछै दवाखाने जई जअं।

मीरा : **(माथु अलावानै)** दवा तौ है पण पैल खून नी जाँच करवी पड़े।

रमीला : जैये करवु पड़े ई करो।

मीरा : (अंगरी थकी खून काड़ीनै स्ट्रीप माथै लईनै जौवे है। सब छानछप बैठं हैं) काकी ने ज्हेरी मलेरियो है। वधारै दाड़ा रई जाय तो पीरियो थई जाय। पाली कुरी हई मोग खाई जाय। होंजु अैंय हाजु। मसरं औयं तौ हांझ नो लेमड़ा नो धुंवाड़ो करो।

हुरज : **(हुंकारो भरती थकी)** हाची वात है। (बीजं बईरे भी माथु अलाव्यु।)

मीरा : **(घोर ना कोठा आड़े मुंडू करीनै हुंगती थकी)** सोपं नुं मुतर केंम पमरे है।

कडगी : घोर ना वांहला भाग मअें गाय बांध हैं। आज वाहिदु अे पड्यु है। ई पमरे है।

मीरा : सोपं नी कोड़ घोर मअें है अैटले मसरं वधारै थयं। गाय ने बांधवा नुं जुदू राको।

रमीला : **(वेच मअें)** तमारी वात हांची है। आणा मलेरिया ताव नी दवा है के?

मीरा : होवै है। **(मीरा अे पैल टीको लगाव्यो पछै गोरी गरवाड़ी)** काकी ने थोडूक खवाड़ो। म्हूं हांझे फैर आवै। बे दन नी दवा आली जअं। **(मीरा जती रई)**

हुरज : होंजू राखो तौ मदवाड़ न्हें थाय। **(भगत नै बईरं जातं र्‌यं। कडगी ने आँखें भारी थवा लागी।)**

(धीरै धीरै परदो पड़ी जाय)

प्रधानाचार्य (से.नि.)
किशनपुरा रोड, सीमलवाड़ा
डूंगरपुर (राज.)-314403
मो : 9783371267

संकळप

❒ मईनुदीन कोहरी

आओ आपां सगळा संकळप लेवां।
आदमी सूं आपां अबै इंसान बणां।।
जात-पांत रो खेल भी खत्म करां।
आओ आपां सगळा इंसान बणां।।
मिन्दर-मसीत सूं भी सीख लेवां।
एकता पैदा करणियों बीज बणां।।
हिन्दु-मुस्लिम सिक्ख ईसाई सूं।
भारत मां रा सच्चा लाल बणां।।
दुखियांरा रो दुख दूर करण सारू।
आपां भारत मां रा सेवादार बणा।।
चमन में चमकते सितारां देंई।
अमन रै दीप री जळती लो बणा।।

कोरियों का मोहल्ला,
पुरानी गिन्नाणी, बीकानेर (राज.)
मो. 9680868028

राजस्थानी कहावताँ अर वांरो बरताव

❐ उर्मिला नागर

कहावताँ राजस्थानीं लोक साहित्य री खास विधा है। इणां रौ अरथ कह्यौड़ी बाताँ सूँ है। ऐड़ा अनुभव जिणनैं, समाज रा ज्यादातर लोग मानता दैय देवै, कहावताँ बणं जावै।

जीवणं रै सर्वांगीण विकास ताँई, साक्षरता जरूरी है। आ ऐड़ी खुराक है, जिणं सूँ वंचित रेणैं रै कारण, जीवणं बेकार हौय जावै।

'अणपढ़ रै वास्ते काळौ आखर, भैंस बरोबर है'-

(अणपढ़ सारूं पढ़ाई रौ कोई मोल कोनि)

पढ़ियोड़ी पढ़ाई नैं जीवण मांय उतारणीं भी जरूरी है। नहीं तो, कोई कैय देवै-

'पढ़िया पण, गुणियां कोनि?'

कैई अणपढ़ साक्षर नीं होणैं पर भी अनुभवी हौया करै।

'अणपढ़िया घोड़ा चढ़ै, पढ़िया माँगै भीख।'

निष्कर्षतः राजस्थानी कहावताँ मांय, साक्षरता रौ महत्त्व देखण नैं मिलै। आपाणां पुरखा पढ़ाई माथै घणौं जोर देवता। इणांनै जीवण री खुराक समझता थका इणरौ मौल जाणणैं री सीख देवता।

ठैठ सूँ पर्यावरण री मानता रैई है। आ बात इण सूँ सम्बन्धित कहावतां सूँ स्पष्ट हौय जावै-

'लकड़ाकट री कणैंई नी बावड़ै?'

(हरियाली नैं नष्ट करणैं वाला-सुखी नीं रेवै।')

आज ऐड़ा लेखणं री जरूरत है जो जाति/समुदाय अर् वर्ग रा बिचाराँ नैं समाप्त कर सकै।

एक आदर्शवादी ही विश्व बँधुत्व, मानव कल्याण, सर्वे भवन्तु सुखिनः रा भाव जगाय सकै।

सगळा धरम आळा एक ई मूँग री दो फाड़ है। ज्यूँ एक बापरां दो बेटा माँय, कोई फरक नीं हौया करै, आपाणे देस में रैवणियाँ सगळा मिनख भी बरोबर है। सब एक होयनैं रैसी तो, कोई नीं तोड़ सकै। एकठ मांय ताकत है। मिल-जुल'र् काम करणैं सूँ ई, सपनां साकार हौया करै।

जिण परिवेश मांय पूरी तरैं सूँ घुळिया-मिलिया हाँ, बठै रा लौगां रै साथ, धोखो किंकर कर सकाँ? इणं वास्तै गली-बाड़ रा सतरा झगड़ा, भूलाय'र्, सबनैं एक रैवणौं चाइजै।

परिवेस ठैठ सूँई आपाँणी पिछांण है। अठै रा नदी, तालाब, झीलाँ, झरणाँ-सूँ हरैक मिनख रौ जुड़ाव है। याँ माथै किणीं एक री बापौती नीं है।

ऐड़ी सारी सँवेदनावां, सारा सौच, अठैरा मिनखाँ माँय हौवणां जरूरी है। खाता खांण अर् पीता पाणीं, क्यूँ कोई नैं परेशान करणौं? काल रै आँख नीं हौया करै। काचा सूत सूँ बँधियोड़ौं मिनख हमेसा सुखी रेवै।

अठै केई सँस्कृति अर् सँस्काराँ री धारावाँ है। आपाँ इणं माटी सूँ किंकर न्यारा हौय सकाँ?

किंकर खाणैं रा अर दिखाँणैं रा दाँत, न्यारा-न्यारा राख सकाँ? क्यूँ मौकौ पड़ियाँ, किणीं माथै, कँवाड़ियौ बावा? लड़ाई माँयै लाडू नीं बंटै। आज दिन ताँई रीसरौ, नेपावौ नीं बणियो/रीसे रै आँख नीं हौया करै। बड़ैरा कैयग्या- 'बात कौ विचार सार।' (हरेक बात माथै सोच-बिचार करणीं।) ताव देयनैं तैजरौ मौल लैवणियौं, कणैंई सुखी नहीं रवै? यूँ सब जाणैं के- 'चीकटा माथै माखी बैठिया करै।'

'सब आप-आप रो सुवारथ साधै।' पण ऐड़ौ मिनख भी काँई कामरौ, जौ आपरी करतूताँ सूँ खुद भी दुखी रेवै अर दुजानैं भी दुखी करै। जिंण मांयै रैवतां-थका जिंदगी री दिसावा मिली।

जिण सिखायो, ऐड़ा देसनैं ऐड़ी भौम ने किंकर कोई भूलाय सकै? यूँ खोटी आँख हमेशा, खोटौई देखसी। गरब गैला नैं आकास टीपरियो अर, सूरज चमक रींगणौ दीखै। बातनैं सीधी करी अर् सीधी हुई। साँची बाताँ सबाँ नैं खारी लागै। गई तिथ नैं कोई नीं बाँचै, क्यूँकै चिड़िया सूँ खेत, छानौ नीं है। साथ बैठनैं कुवा नीं गिणींजै। लड़ाई-टँटा माँयैं मरै जौ, के तो माँरा अर् कै राणीं रा जाया करै। झूँठ रा पग आकासाँ माँयैं भी नहीं टिकै। इण सारूँ पापां रा भारा नीं बाँधणां। घर नैं घरई खावै, जेड़ा काम नई करणां। अठै रा रैवासी घणकरीं संस्कृतियाँ माँय रैवता थका सगला रौ सम्मान करैं। जन विरोधि भावनावाँ सूँ हमेसा दूर रेवै। यूँ सब जाणैं कै, सलिया धान माँयै भी थोड़ा-घणां काँकरा हौया करै। पणं हुँसियारी सूँ काम करण वाळा, कठैई नीं ठगावै।

सदियां सू औ देस विद्वानां, दार्शनिकां ने आकर्षित करतौ रह्यो है। इणी कारण इण री (किणी दूजा सूं) तुलना नीं कर सकां। इण माथै सबनै गर्व करणौ चायजै। जो मिनख बैकार री बातां फैलावें, वे किणीं रा सगा नीं है। पाड़ा-पाड़ा रै आवसणैं सूं जाला रौ खोखाल हौया करै। इणं कारण नींद बैचने औजको मौल नीं लैवणों। जिण हांडी मायैं खावां, वणं मांयै छेद क्यूं करां? ऐड़ा काम करणियां, तीन तैरी घर बिखैरी कह्या जावे। खावां नीं तौ ढोलौई, जैड़ा काम नहीं करणां। अठेरो हरैक राज्य अपणैं आप मैं न्यारी-न्यारी ओळखाण राखै है। अठै मिनखं री राष्ट्रीयता रा भाव, गर्व करण लायक है। बिस्वास सूं खैती पाकै। भरौसो अमर धन है। कोई आ सोचै कै मैं तो मोटो हूं, म्हनैं किणीं रै सायरै री दरकार नीं है, तौ मोटौ तौ भाकर हौया करै।

यूं तो जीव नै जंजाल धणां, पणं एड़ौ काम नीं करणों, जिणं सूं बाबौ, बूढ़ी लावैं तांई मजबूर हौय जावैं अर विचार जरूर करणौं कै, 'कड़वौ बोलसी मावड़ा नै, मीठौ बोलसी लोगड़ा।'

किणी रै करमां आगै, ज्यादा दिनां तांई पाटौ बंधियोड़ौ नीं रैवे। पावणां तो डीळा छीजै अर घर धणी रौ खरच बढ़ै। जैडी चाल नीं चालणी। डूंमाआडी डोकरी अर बळदां आडी भैंस, जैड़ा काम नीं करणा। कांटा तौले बात लाणैं री कोसिस करणी। टोपौं-टोपौं घड़ो भरिया करै। टेम आयां सांड रौ टाडू को भी काम करियां करै/तो गऊ रा पौटा री कीमत भी हौया करै। कणैंई-कणैई पाणतियां रौ मौल भी पढ़िया लिखिया रै बरौबर होवै। सब जागा कागला कालाई है। आप-आप रा कपड़ा मांय सब उघाड़ा है। काळ बरस में हुंसियारी रांखण वाला मिनखरी जीत हौया करें।

इणी तरै न्याव-अन्याव सूं मैळ खाती कहावतां भी मिळै। खूद रौ ढाकणौं दूजा माथै नीं

फौड़णौं/(खुद री बुराई छिपाणै/सारूं, साँच झूंठ नीं करणी।)

सूरज नै कोई नीं छिपा सकै।
(असलियत कणैंई नी छिपै।)

साँच रै सामी झूंठ रौ जरूर भांडो फूटै। सूरज नै काँच दिखाणै सूं वणरौ कांई नी बिगड़ै ? लौहा रै काट आवै, सोना रै नीं आया करै। साँच नै काँई आंच। झूंठा आदमी सब जागा आपरौ मान घटावै। ईमानदार हमेसा रामने साथै राखै। मन माँय कुदाला हाला कपटी अर धूर्त है। दुनिया मांय, पाँचू आंगलिया सरिसी कोनि। थोड़ौ घणौं फरक सब जांगा मिळै।

इण तरैं राजस्थानी कहावतां रौ भंडार भरपूर है। अै राष्ट्रीय भावां सूं औत-प्रोत, व्यावहारिक अनुभवां वाली, सरस अर ज्ञान रौ अगाध भंडार है। जरूरत है-खौज करणियां, शोध करणियां टाबरां नै सही मागर दिखाणें री।

अध्यापक
रा.उ.मा.वि. केसरपुरा
अजमेर (राज.)

ऊभौ हूँ

❐ संदीप पारीक 'निर्भय'

ऊकळती मरुधर माथै
कद पण अेकलौ ऊभौ हूँ
बूढ़े-बढ़ेरा मायतां री
ओळडी आशीसां
अर अणूतै हेत री
ऊंडी-ऊंडी
घणी ऊंडी
पसर्‌यौड़ी है जड़ां।
थै, पण भलांई मारौ
बूक्यां रो समूळौ ताण
उखाड़ नीं पावौला
जड़ां रै समचै,
हाल तांई-
पग रोपियां ऊभौ हूँ
आं भतूळिया साम्हीं
धोरां री धरती माथै
हरियल/रूपाळै खेजड़ै ज्यूँ।

बालाजी मंदिर, पूनरासर (श्री डूंगरगढ़)
जिला-बीकानेर
मो : 7792062071

आपणो राज्य पक्षी 'गोडावण'

❐ भावना

धोरा धरती आथूणा राजस्थान रा मिनख मानवी तो रूपाळा है ई अठारा जीव जिनावरां रौ फूटरापणौ ई सरावण जोग। राजस्थानी साहित्य में परदेसी पंछी कुरजां रौ काव्य सिरजण विरहण रे संदेसा सारू घणो मनमोवणो हुयो तो मरुधरा री इण धरती पे इस्यो ई एक रूपाळो पंखी गोडावण भी घणे मान सराईजियो है। राजस्थान सरकार इण पांखी नै 'राज्य पक्षी' रौ सम्मान ही पण दियौ है। जैसलमेर री धोरा धरती में डीगी सेवण रै अलै गलै औ गोडावण आपरा जोड़ा में अठी उठी सरमीजतो सरमीजतो आपरा भर्‌याकण्ठ सूं हूम हूमरी बोली बोलतो जाणै म्हानै जतावतो हुवे- ''हूँ अठै हूँ'' पण इणनै जोय लेवणो उतरो ही अबखो भर्‌याकण्ठ सूं हूम हूम री बोली रै कारण इणनै हूकणौ पंखी ई कैवता आया है। आथूणा राजस्थान री धोरा धरती इणरौ मझ ठिकाणौ। पण महाराष्ट्र रौ शोलापुर अर गुजरात रौ नलिया इलाका मैं ई इणरौ रैवास देखीजियो है। देश विभाजन सागे सिंध प्रान्त में ही, इणरौ बसेरो घणो लूंठो बतावै। यूं आज इणनै अजमेर जिला में कठै पाय सकौ हौ।

तो अने राजस्थान रै गौरव पंक्षी री आपनै पूरी अर सरावळ ओळखाण पिछांण कराय दूं। राजस्थान रौ राज्यपक्षी गोडावण मिलै तो अब छड्‌यौ बीछड़यो, पण आज इणनै डीगी सेवण रै अळै गळै गरदन ऊँची नीची करतां ठुमक ठुमक पगल्या भरता इण तर्‌यां पिछांण सको के दूजा पंखी पंखेरवां सूं न्यारौ औ धरती रौ पांखी कोई एकमीटर डीगो ऊँचो। इणरी सोनल चोंच पीला रंगरी तो गर्दन अर पेट पण धोला सफेद। माथा पे कुदरत इणनै काली टोपी सूं सिणगार्‌यो है तो छाती पे मोटी काली पट्‌टी खोटी नजर सूं जाणै बचावै। गोडावण री कानीं इरकाई देखो के इणरा पंख काला भूर अर बिंदियां सजियोड़ा। राज्यपक्षी गोडावण रा पग पंजा पण पीला अर सपाट चवड़ा। धोरा धरती रा इण लाजीला पक्षी रौ भार वजन पन्द्रह किलो रै लगैटगै। मादा गोडावण नर पंखी सूं थोड़ी खटरी अर हळकी हुवै।

गोडावण रो अमर ठिकाणो जैसाण री सेवण घास री मैदानी धोराळी धरती, जिणनै राज्य सरकार इणरा संरक्षण रूखाळी अर हिफाजत सारू राष्ट्रीयमरू उद्यान में निमत कर दी है। सेवण घास री डीगत में रैवणियो ओ कीड़ा, पतंगा, बिच्छू, मकड़ियां, गिरगिट, छिपकलियां अर छोटा साँप घणा चाव सूं खावै। सागे ई ज्वार, बाजरी, मूंगफली अर चणा गेगराई गोडावण रौ मनपसंद भोजन। इणभातं थलवट रौ औ जीव मांसाहारी अर शाकाहारी दौन्यूं। इणरी घणी बड़ाई के औ केई दिनतांई तिरसौ प्यासो ई पण रैवण रै रचभाव वालौ। जिसी धरती बिसौ खान-पान। हर पंछी री आपरी रुत हुवै। बसन्त री बयार कोयल री कुहकरी तो, बिरखारी झड़ रुत गोडावण री। बरसात में मादा गोडावण नरपंखी रै 'हूम हूम' वाला हुलास भर्‌या हेतरा हेलो सुण तुरत दौड़ती आवै। हूम हूम री कण्ठध्वनि करतां गोडावण रौ गलौ आपे फूल जावै।

स्वभाव सूं गोडावण सरमीलो लाजीलौ तो है। पण आलसी कोनी। औ आपरा रैवास सारूं घर खुदोखुद बणावै! कोयल ज्यूँ पराये भरोसे नहीं। घोंसला री जग्यां औ जोड़ौ आपरौ आवास डीगी सुरक्षित ठौड़ में ई बणावतो देखीजियो है अर इदकाई आ के मादा गोडावण एक बार में फकत एक अण्डो ई दैवै। साँप अर बिलाव सूं रूखाली करणी नर गोडावण रै जिम्मे।

राज्यपक्षी गोडावण री दूखती रग आ के निर्मोही मिनख इण दुर्लभ पक्षी रौ शिकार करण नी चूकै। इण कारण इण पक्षी री संख्या घटती अर कमती पड़ती जायरी। पण राज्यपक्षी नै अबै थोड़ो धीजो थावस राज्य सरकार अर वन्य जीव प्रेमी मिनखां सूं मिल्यौ है के इणरौ शिकार वर्जित ई नहीं दण्डभागी भी है। राजस्थान रा प्रिय पक्षी गोडावण कीटनाशी धान खाय नै ही कमती पड़तो जाय र्‌यो है। डरप्यो बिदक्यो करै तो ई कांई! पण माखण अजे डूब्यो कोनी। केन्द्र सरकार डाक टिकटां में ई गोडावण रौ सम्मान बचायो है। अब आपां रौ जिम्मो के आपां इण री रूखाळी जीव सूं वत्ती करां जदेई गोडावण री प्रजाति देखण में आय सकैला। भणौ अर गुणौ!

गायत्री विद्यापीठ, भीनमाल,
जिला जालोर (राज.) **मो : 9414673899**

जोमतो बा

❐ दीपिका दवे

स्कूल चालतां दोय बरस बीत गया। अबै तो टाबरां री संख्या इतरी हौयगी, कै उण छोटे से मकान रै मायने मावै ई कौनी। दूसरी जाग्यां स्कूल सारू जाग्यां ढूँढता-ढूँढता आख्याँ थाकगी पण कोई जाग्यां नीजर नी आई। आखिरकार थाक'र घर रै नैडे पडी जमीन माथै स्कूल बणावण रौ तय हुयौ। भला मानखां कह्यौ भी है- आखिर तो वो ईज हुवै जिकौ भगवान नै मंजुर हुवै।

नुंवी स्कूल बणावण सारू बारै मोटा-मोटा बौरट लागण लागा। बौरट लगावण सारू एक छौरो आयौ हो जिको आपरो नावं खेतो बतायौ हो। खेतो बौरट लगावतो-लगावतो इज बोल्यौ ''बेहनजी भलो तो जद हुतौ कि थां म्हारै समाज भवन मांयने आपरी स्कूल लै जावता।'' आंदो तो आंख्याँ इज जौवतो। उण रा शबद मन सूं छू गया। खेते नै हाथ रै ईशारे सू नीचे उतरण रौ कह्यौ। नैक काम रै मायनै दैरी किण बात री। खेते नै लैय'र बीर हौयग्या समाज रै अध्यक्ष साब सूं मिलण सारू।

अध्यक्ष साब घणा चोखा मिनख। बात करता ई राजी होय'र हूंकारौ भर दियौ अर चाबी समाज भवन रा चौकीदार जोमतो बा सूं लैवण रौ कैय दियौ। घणी हूँस रै साथै खेते नै साथ लैय'र जोमतो बा सूं चाबी लैवण सारू समाज भवन माय आया तो देख्यौ कैय जाग्यां तो इसी पड़ी हैय कै जाणै भूत जागै। रेत रा धौरा इस्या पड्या कै पग देवतां इ पग डूब जावै। अठिनै-उठिनै नजर राखीं तो अेक सत्तर-अस्सी बरस रौ आदमी एक मांचा माथै बैठयौड़ौ दिख्यौ। जोमतो बा रै नैडै जाय'र कहयौ-आपां अबै अठै स्कूल चलावां ला। अबै तो आ जाग्यां दिनभर चैहल-पहल रैवेला। मन मांय ओ सोच'र आ बात जोमतो बा सू कैयी कै अेकलो रैयोड़ो आदमी है। इणनै खुशी हौवेला, आ बात जाणर।

पण जैड़ो सोच्यौ बिसौ तो कांई नी हुयौ। जोमतो बा तो बात रौ हुंकारौ ई कोनी दियौ। कनै बैठ्या कुत्ते रै उपरै हाथ फैरता रैया पण म्हां सामी कौनी देख्यौ। म्है ओ देख ने मन मायनै ने सौचण लागी कै अे बासा तो अनपढ़ है अर पढ़ाई-लिखाई सूं इणाने कांई सरोकार कौनी, शायद इण कारण सूं इज डोकरो राजी कौनी हुयौ। ब्हीर हुयग्या बठा सूं ओ सोच'र कै इणारो बस चालै तो सगळा नै अनपढ़ इज राख दैवे। दोय-तीन दिनां रै मायनै इज स्कूल सरू होयगी। टाबरियाँ री चैहल-पैहल दिन भर रैवण लागी।

जोमतो बा टाबरियां अर मास्टरां नै आवता-जावता दैखता पण मुंडा सूं कदैइ कौनी बोलता, जाणै अे सगला जोमतो बा रा दुश्मन है। खास कर बैहनजियां सूं नाराजगी जोमतो बा रै व्यवहार सूं साफ झलकती। म्है आवती-जावती जद जोमतो बा कैवता सुणिजता कै छौरियाँ नै पढ़ाय कांई करणौ है। अे छौरियां तो रसौड़े री शोभा है। उण नै क्यूं बिगाड़ण सारू जुट्यौड़ा हौ। अे शबद जद म्हारा काना मायनै पड़ता तद मन मायनै जोमतो बा रै प्रति गुस्सौ भर जावतौ। सोचती भगवान ईं जेड़ा मिनख संसार रै मायनै मत बणाइजै अे तो धरती माथै भार जिसा है। समय बिततौ गयौ अबै म्हां सगळा री आदत रौ भाग बण ग्यौ हौ जोमतो बा अर बीं री बातां। अबै म्हांनै व्है बातां अखरती कोनी।

अेक दिन स्कूल आवण मायनै कीं देरी होयगी। उतावला-उतावला पगा सूं स्कूल रै मायनै बडण लागी तो देख्यौ कै जोमतो बा मांचा माथै पड्या गहरी-गहरी सांसा भर रह्या है। ओ देख नै पग उठै इज थमग्या। झट सूं जोमतो बा रै मांचा कानी दौड़ी अर डोकरै नै संभाल्यौ। पाणी पीलायौ अर पग दबाया। थोडीक वैला रै मायनै डोकरौ ठीक हुयग्यो। ठीक हुया पछे म्है देख्यौ डोकरै री आँख्याँ आँसूआँ सूं भरयौड़ी ही। ओ देख'र म्है पूछयौ, कांई हुयौ। जोमतो बा पडूतर दियौ कैय ''आज तांई म्है गलत हो, म्है मानतो हौ कैय पढ़यौड़ी लुगायां कीणी काम री कौनी हुवै। ब्है घर नै आंछी तर्यां कौनी संभाल सकै अर बड़ा बडैरा री सेवा भी ब्है कौनी कर सकै। पण आज म्हारी आंख्याँ खुलगी।'' म्है पूछ्यौ ''ईसौ कांई हुयौ।'' जोमतो बा बोलण लाग्या ''कैय म्है अेकलो कोनी, म्हारौ भर्यो पूरो परवार हुतो। म्हारी घरआली म्हारी छौरियाँ ने पढ़ावण री जिद्द पकड़ ली ही अर म्है इण मांयनै राजी कौनी हुतौ। म्हारी घरआली म्हारै मना करण रै बावजूद छौरियाँ नै स्कूल रै मायने भरती कराय दीवी इण बात सूं म्है नाराज हौयग्यौ अर घर बार छौड'र उणासूं दूर आय बसग्यौ।'' म्हारौ गलो भर्ग्यौ। भर्यौड़ा गला सूं पूछ्यौ ''अबै व्है सगळा कठै है।'' जोमतो बा कैह्यौ ''कांई नी पतो है। हौय सकै गाँव रै मायनै ई रैवता होवैला।''

अगले दिन ई जोमतो बा अध्यक्ष साहब नै साथै लैय'र ब्हीर हुयगा आपरै गाँव सारू। गाँव सूं आपरी लुगाई नै राजी कर 'र साथै लैर आयग्या। म्है घणी हुंस रै साथ तैयार हुयगी स्कूल सारू। आज म्हनै जोमतो बा रै परवार सूं मिलणो। स्कूल जाय'र जोमतो बा री लुगाई सूं मिल'र छौरियां रौ पूछ्यो, तो जोमतो बा घणा राजी होवता-होवता बौल्या, ''कै ब्है तो हासरै रै है अर सरकारी नौकरी करै है जद सरकार की छुट्टियाँ हुसी तद ब्है मासूं मिलण सारू आवैला।'' जामतो बा नै परवार साथै दैख'र आज म्हारौ मन घणो खुश हो।

जग जननी ईं भारत माँ रो,
कुरब निराळो रे।
ओ तिरलोकी रो नाथ अठै,
खुद बण्यो गवाळो रे।।
गंगा रे पावन जळ सूँ माँ,
आठूँ पहरां न्हावै रे।
चाँद सूरज तो करे आरती,
सागर अर्घ चढावै रे।।
दीपै है दुनिया में ईं रो
मुकुट हिमाळो रे।
गूँजी सुरलहरी गीता री
जग में पैली पोत अठै।
चौसठ कळा फळी फूली ही
जग में दूजो देश कठै।।
भारत सूँ ही गयो जगत में
ज्ञान उजाळो रे।।

प्रधानाध्यापिका
टैगोर पब्लिक स्कूल, बालोतरा
(बाड़मेर)

सँकळप

❐ जगदीश चन्द्र नागर

पाणीं री लहरां माथै पड़ती रोसणीं री किरणां, अर खेतां मांयै खड़ी फसल, वातावरण में चार चान्द लगाय री ही। हरीस कह्यौ–''दादी माँ री जिन्दगी आपरै आस–पास रा खेतां में बढ़िया फसल देखती आ री ही।'' आँसुआं नैं रोकती थकी दादी कह्यौ–''बेटा! थारा दादा भी आई सोचता के, आपणां खेतां में कद बेरौ बणंसी?''

आज एक नई सुबह ही, जिणनै दादी माँ आपरा अरमानां री रोसणी सूँ भळ–भळाट करणीं चावती। वणनै अहसास होयौ–मानौं बरसां–पेली गुमियौड़ी कोई चीज मिल़गी? केवणं लागी– ''आपां पेली सूँई करजदार हाँ। करज लैयनै काम करणौ, ठीक कोनि?'' दादी माँ री बात पूरी–होवतेई, पागती ऊभा पाड़ोसी सूँ हरीस कह्यो–''म्हारै खेतां ने भी थे आछी फसल दैवणियाँ बणांऔ!'' पाड़ौसी कह्यौ– ''इणं बाबत, थारा बापू सूँ बात करस्यूँ।'' सिंझ्या री टैम हरीस आपरा बापू नैं, घरांई रोक लियौ। वणरां मन मांयै पाणीं री लहरा ज्यूँ विचारां री लैरां हबौला लेवणीं सरू हुई। घरां रा धुँआकसां सूँ, निकलतौ धुँआं रौ गुब्बार, गहरा कालूंस मांयै बदलतौ जाय रह्यौ हो। पाड़ौसी हमल़ास वणरा बापू नैं, वण रही खुसहाली आणैं री बातां बतावणीं सरू करी।

''छोगा भाई! थारै पागती दस बीघा जमीन रौ जाव है। मेंणत करणैं सूँ थारी जमीन माथै, बैरौ बणं सकै?'' वणरै दिमाग मांयै पाड़ौसी री बातां, घूमणी सरू हुई। ''म्हारा बडैरा भी खेत री जमीन माथै बैरौ बणाणैं री सोचता–सोचता.....। पण बैरौ नीं बणियौ। म्हारी माँ भी रोज केवै, छोगा ने कद आराम आसी?'' पाड़ौसी री बातां सूँ वणनैं लागियो के वणंरी किस्मत चमकणैं रौ टैम आयग्यो है। एक रै बाद एक सँघर्षां सूँ जूँझता थका वणनै, आपरै पिरवार री सुख–सुविधा रा सुपना पूरा हौवता निजर आया। पाड़ौसी रा दिया थका फारम माथै अँगूठो लगाय'र वो फारम वणनै दैय दियौ। मंजूरी मिलताई बैरा रौ काम सरू होयग्यौ।

छोगा नैं आपरी जीवण धारा रौ वैग आगै बढ़तो निजर आयो। वणरी आँखियाँ माँय अजीब सी चमक ही। नुंवा जोस रै सागै मन में नाचणौं सरू करियौ–अब म्हारी जमीन माथै बैरौ बणसी/खूब धान होसी। हँसी–खुसी रौ जीवणं होसी। इंणी तरैं रा सुपना देखता–देखता, नींद आयगी। सुबै री टैम हरीस आपरी लुगाई अर मजूरां सागै, बेरौ खोदणैं रौ काम सरू करियौ। सारी बातां ठीक–ठाक होवता थकां भी उणंनैं, फैरूँ आपरी किस्मत में निरासा रा बादल निजर आया। जिन्दगी में इतरा मोड़ आसी, आ कुँणनैं मालूम ही। वौ एक बार फेरूँ आपरा सँकळप नै मजबूत करणैं री कोसिस करी। विचारां रा उतार चढ़ाव मांयै, टैम निकलतैं दैर नीं लागी। वणरी भागदौड़ सूँ खुदाई रौ काम, फैरूँ सरू होयौ। हरीस री मैणत रंग ल्याई। बैरा मांयै अटूट पाणीं आयग्यौ। बैरो बँधीजग्यौ। मजूरां नैं मेणत रौ भुगतान मिलग्यौ। टैमसर फसल री बुवाई होयगी। थोड़ा टैम पछै, पाड़ोसी रा खेतां ज्यूँ, वणंरा खेता में भी, रेसम जैड़ी बालियाँ, झौलांखावती निजर आयी। हरीस अर् दादी री आँखियाँ आँसुआँ सूँ भीजगी ही।

अध्यापक (से.नि.)
ईदगाह रोड, वैशाली नगर के पास,
पो. रीजनल कॉलेज, अजमेर (राज.)–305001

म्हारो पियारो राजस्थान

❐ ओमदत्त जोशी

म्हारो पियारो राजस्थान, म्हारो पियारो राजस्थान,
निरवाळी इण री सान, इण रौ जगत करै सनमान,
म्हारो पियारो राजस्थान, म्हारो पियारो राजस्थान।।

कुंभल, नाग, अचल अरावली, गुरु सिखर री चोटी मतवाली,
बनास, माही, चंबल भाळी, कोई सूकी, कोई आळी।
राणा–प्रताप, गाँधी, जवाहर बाँध है महान। म्हारा पियारो राजस्थान–2

मीरा, करमा, पन्ना, पदमणी, हाडी राणी री सैनाणी,
जगमल, फत्ता री कुरबानी, हठी हमीर री सुणी कहाणी।
कियां भूळां महाराणा रो बखान। म्हारो पियारो राजस्थान–2

अमर होयगी अमरीता बाई, आरां सूं कटी रूंखां ताई,
कमाल कर गयी काळी बाई, घिन–घिन वा माँ की जाई।
गुरु खातिर देदी अपणी जान। म्हारो पियारो राजस्थान–2

होळी, दिवाळी, तीज–त्यूंहारा, उपरतली री मीठी मनुहांरां,
मेळा–खेळा, हेळा–हळकारा, झांझर, झालर बाजै इकतारा।
औपती लागै अळगोजा री तान। म्हारो पियारो राजस्थान–2

सूफी संत री समाधि पियारी, सकल जगत रो है उपकारी,
पुस्कर री महीमा भी भारी, लोक देवता चमतकारी।
रामा, तेजा, पाबू, गोगाजी चौहान। म्हारो पियारो राजस्थान–2

व्याख्याता, 'साहित्य सदन', वर्धमान कॉलेज के पास, ब्यावर, अजमेर–305901, मो: 9309353637

'हर्षित' के 'हैप्पी'

❐ कल्पना गिरि

यूं तो उण-बाळ रौ नाम हर्षित हौ पण इंगलिश मीडियम स्कूल में दाखिलौ करावण री मंशा में घर वाला उणनै 'हैप्पी' कैवणो शुरू कर दियौ। सुबह-सुबह गूलर नींद री वेला वो नैनौ बाळकियौ टाई बैल्ट सूं बंधनै पीपाड़ करती स्कूल बस में धकेलीजग्यौ। अर आराम तलब मम्मी एसी. री ठांडोल में पाछी आडी हुयगी। गयी छह सात घंटा री।

सूरज आभै रै आधेट पूग्यां पछै वा ईज स्कूल बस टींगर नै कॉलोनी री सड़क पे छोड़ दियौ। थक्यौ थकायौ हैप्पी खांधे पे भारी बस्तौ, एक हाथ में टिफण अर दूजा हाथ में वाटर बोतल लिया दोय पावड़िया चढ़तांई हाँफ सो गयौ। हैप्पी! आयग्यौ बेटा। चाल, फुर्ती सूं हाथ मूंडो धोय ले। खाणौ लाग्योड़ो है डाइनिंग टेबल पे। जल्दी जीम लै। अर बता, आज कांई पढ़ायौ टीचर, होमवर्क कांई मिल्यौ-ला बता। फुर्तीली मम्मी दड़ीछंट बोलती ई गयी।

अर हैप्पी आपरी उतावली मम्मी री बात रोबोट ज्यूं मानतौ थाकळ हाथां सूं मोजाबूट खोल्या वो दोय मिनट इ नीं बैठ्यौ हौ के मम्मी चीखती सी बोली-अरे बैठ्यो कांई है, फटके सूँ भावै जैड़ी रोटी जीम लै, पछै पढण नै कोनी बैठनो कांई? हैप्पी रो कीं भी खावण रौ मन कोनी हौ वो तो बस सोवणो चावै हो। स्कूल, पढ़ाई, होमवर्क नै थोड़ो बिसराय टेंशन फ्री फील करणो चावै हो। पण वो जाणै हौ के हैप्पी री आ मंशा कियां ई पूरी नी हुय सकै।

''यो कांई, खायलियौ खाणौ? इण टींगर सारू की भी बणाय ल्यौ कदेई मनां परवाण नी जीमै। तो औरूं कांई पकावणौ रयौ, बताओ। (झल्लावती सी मम्मी आगे बोली) चाल फटाफट फिनिश कर, पछै होमवर्क बता म्हनै।'' थकान भर्या चेहरा सूं मासूम री आवाज अणसुणी हुयगी। वो केवतौ र्‌यो-''मम्मी प्लीज, थोड़ी ताळ तो आडो हुवण द्‌यौ। अणूती ऊंग आवै है। ''नहीं नहीं सोवण सूं काम कोनी चालै। सिंझ्या तांई होमवर्क ई पूरौ नी हुवै। पछे चेप्टर कद याद करैला, बता! प्रोम्प्ट मम्मी उणरी किताबां निकालती बोली। अर पछै घड़ी कानी देखतां नसीहत देवतां कहयौ-ठीक है आधौ घण्टो सुस्ताय लै पण एक आवाज सूं उठ जाजे।''

थक्या थक्यौ हैप्पी नै की नेहछो हुयो तो चालीस मिनट पछै वाई आवाज ''अरे उठ जा पछै पढ़ाई कद करैला?'' ''सोवण द्‌योनी मम्मी अबार तो आँख लगी है''-हैप्पी रै केवतां पण मम्मी री एक थप्पड़ उणनै चेतन कर दियौ। मम्मी बोलती जाय रयी ही- ''इतरौ होमवर्क करणौ है, चेप्टर याद करणौ है अर इणनै कोई फिकर नही; सगळौ टेंशन म्हैंई पाळूं।''

मम्मी रै हाथ री थप्पड़ खाय, अचकचाय नै आँसू पीवतौ हैप्पी पलंग पर सूं ऊतर नै मूंडो धोय ज्यूं त्यूं आपटर नून दूध गळा नीचै उतार्‌यौ अर होमवर्क करण बैठग्यौ। इंगलिश, मैथ्स, ज्योग्राफी, हिस्ट्री-होमवर्क करतां करतां नैनै बालरी आंगळियां ई दर्द करणो शुरू कर दियौ पण अजे याद करणौ तो लारे ईज हौ। निबन्ध माय 'मदर वो सोवणो चावै' पण इंगलिश मीडियम री हिमायती मम्मी उणनै आडो हुवण दे तो!

अर हैप्पी रट रट नै याद करै- द नेम ऑफ माई मदर इज शालिनी। शी मैक्स मैनी थिंग्स फोरमी। शी इज वैरी काइंड। शी लव्ज मी वैरी मच। वो याद करे अर फेरू भूलै- द नेम आफ माय मदर इज.... शी मेक्स... ''अरे आगे बोलैनी, आगे काई है?'' मम्मी झुंझलावती बोल पड़े-''दिमाग में भूसा भर्‌यौ है के? एक मिसेज स्वामी रौ बेटो है हरमेस सतानवे परसेंट नंबर लावै अर एक औ म्हारै डफर। ठा कोनी क्यूँ? म्हारी ई तकदीर में इसी औलाद क्यूं लिखि भगवान!''

मुनि दधीचि-सा बलिदानी
हरिशचन्द जिसा सतवादी रे।
राम जिसा मर्यादा पालक
जोड़ कठै नीं लाधी रे।।
बुद्ध अर महावीर बहायो
प्रेम पनाळो रे।।

समझदार माईत आपरै टाबरां नै इण भांत बेमेल नसीहतां सूं और ज्यादा ई नरवस कर हाकै। हैप्पी फेरू कोशिश करै पण नींद सूं उनींदी आँख्याँ उणनै फेरू उचकाय दै। दोयतीन वेला फेरूनी बोलण सूं-''शी लव्ज मी वैरी...।'' अर मम्मी रा दोय थप्पड़ हैप्पी रा उणी मासूम गाल पे पड़ जावै.. तड़ाक जिण गाल पे उणरी मैथ्स वाली मिस क्लासवर्क सावल नहीं उतारण पाण एक तमाचौ पैलांई जड़ दियौ हौ स्कूल में।

नाजुक गाल पे आंगळिया रा निशान नींद अर डबडबायी आँख्याँ, हिचकियाँ बिचाळै डरप्यो सो माँ कानी देखतो फेरूं बोल सुणावै-''शी लव्ज मी वेरी मच..।'' छेवट सांझ हुयां रात पड़ै। रमण ही हँसण री इण उमर में दस बजतां बजतां हैप्पी सुपना में भी वाई गत देखै-एकै कानी टीचर स्केल लियाँ ऊभी है तो दूजी कानी मम्मी थप्पड़ उगरामती डांटै। वो बाल दोन्यां सूं छूटणो चावै पण भाग कोनी पावै। अर पाछी वाई सवेरे होता मम्मी उणनै झंझोड़ती उठावती बोलै-''जल्दी उठ, छह बजग्या है, लेट हुयग्यौ तो टीचर पनिशमेन्ट दैवैला।''

घबराइज नै हैप्पी उठ्यौ। मिठी नींदनै आगी बगाय बाथरूम री सोय करी।

लारलै दिनां नैनौ हैप्पी, गोलमटोल हैप्पी, अचपळौ हैप्पी अबे दूबलो सो सहभीजत सो जाणे परतंत्र जूण वालौ जीव बनतो जाय रह्यो है। हैप्पी किड्स हैवन स्कूल रा, थर्ड स्टेण्डर्ड में आवतां आवतां हैप्पी री नींद, खेलणी, भागणो उणरौ बेफ्रिक बालपणो-सब कुछ जाणे खोइज ग्यौ। ''कांई करै हैप्पी, कठै जावै हैप्पी!!'' स्कूल में पढ़ाई अर घर में होमवर्क री जिनगाणी री इण चकरी बचपन नै कंपीटीशनरी जेवड़ी सू बांध गेर दिया है अर इण बालपणै पर बोझ बस्ता रौ ई नहीं, माँ-बाप री लाद्‌योड़ी उम्मीदां अर अपेक्षावां रौ भी है। है कोई पडूतर बाल हिमायती शिक्षाविदां कनै, के सोनल भविष्य रा सपना बतावती सरकार कनै!। जोवो आपो आप अर सेवो आपो आप।

70, मरुधर केसरी नगर,
शोभावतों की ढाणी, जोधपुर
मो: 8696042491

जूना मारसाब

❑ परमानन्द शर्मा 'प्रमोद'

'मारसाब आग्या, मारसाब आग्या' यूँ हल्लो मचाता तका फौरा मोटा टाबर टेंगरियाँ भाग्या जा रिया हा। वाँ न देख'र म्हने चाळीस बरस पैली रा दिन याद आग्या। अतीत रा परदा पे जीवन रो पैलो दरसाव दीखबा लाग ग्यो।

पाठशाला रे बारणे धूळा म खेलता थकां न कोई बोल्यो क जूना मारसाब आग्या। या बात सुणतांई सगळा छोरा-छोरी काम-धाम, खेलण्यां छोड़'र खमार्‌या बड़ तईं पौन रै परवाणे भागबा लाग्या। कोई गिरतो-पड़तो कोई ऊठ'र भागतो। सगळां रे मनड़े होड़ ही क जूना मारसाब रे पैली कुण धोक लगावे। सगळा छोरा-छोरी अेक-अेक कर'र जूना मारसाब री साइकल रा पेडल रे धोक लगाता अर साइकल रे धक्को लगाबा लाग जाता। जूना मारसाब पेडल लगाता रुक जाता अर मुळकता हेण्डल मोडता थका पाठशाला मांय पूंग जाता हा। इण भांत जूना मारसाब रो रोजीना स्वागत सतकार होतो रैवतो हो।

जूना मारसाब कुण हा? ईं रो पडूतर वणी समै अेक ही हो क वे म्हांका भगवान हा। वाँ री जुबान सूं नीसरी हर बात म्हांके लिए प्रमाण ही अर वां रो हर शबद आप्त वचन हो। वे कैता क दिन तो म्हांके दिन हो अर वे कैता क रात तो म्हांके रात ही।

जूना मारसाब रो असली नाँव काईं हो या बात ना तो जांणता हा अर ना ही जाण बारी बगत आई। घणां बरसां पछे पतो चाल्यो क वां रो असली नाँव हरि प्रसाद जी हो। वाँ रो जूना मारसाब नामकरण कुण कर्‌यो या तो पूरी ठा नी है, पण थोड़ी भोत सुमरण है क म्हाने पाठशाला रो गैलो बतावण्या पैला मिनख वे ही हा। सगळा छोरा-छोरी वणा ने मारसाब नाँव सूं सम्बोधित करता हा। बरस दो बरस पछै पाठशाला मांय अेक मारसाब और आग्या तो छोरा-छोर्‌याँ रे दिक्कत हो गी क मारसाब नाँव अेक अर मिनख दो। कुण ने मारसाब कैवे अर कुण ने नी कैवे। अेक ने मारसाब कैवे तो दूसरां ने काईं कैवे। आवश्यकता आविष्कार री जननी होवे। तुरताईं नामकरण हुयो क जो पैली हा वे जूना मारसाब अर जो पछै आया वे नुवा मारसाब।

हरि प्रसाद जी बनाम जूना मारसाब ठिंगण कद काठी रा धणी हा। ना घणां सांवळा ना घणां मोटा हा। वाँ रा जितरा छोटा नैण उतरो सांवटो नेह बरसाता हा। मेहनत रा परम पूजारी हा। ना छोटा काम सूँ परहेज अर ना मोटा काम सूँ आळस। मनड़े घणी फळ री अभिलाषा भी नी राखता। श्रीमद्‌भगवद्‌गीता रा सिद्धांता पे वाँ री जीवनधारा बैती ही। हानि-लाभ जीवन-मरण जस-अपजस विधि हाथ दे दियो हो।

हिन्दी भासा पे जूना मारसाब रो पूरो अधिकार हो पण छोरा-छोर्‌याँ अर गाँव हाळां सूँ मायड़ भासा में हीज बोल-बतळावण करता हा। हर अेक बात में कैणात वणा री आदत ही। वणा री अनूठी कैणातां न सुण'र गाँव रा बड़ा बुजरग घणां राजी हवैता। कोई छोरो-छोरी अपराध कर देता अर वणा ने करोध आ जातो तो वे वणा न फटकारता तका गाळी देता, गाळी म्हाँके तो समझ मे कोनी आती पण आता-आता बड़ा बुजरग सुण'र हँसता तो म्हें सरमा जाता। गाठी रीस आती तो गाळी भी नीसर जाती। अर ईं गाळी सूँ सगळा छोरा-छोरी डरपता हा।

देश रा दूसरा प्रधानमन्तरी श्री लाल बहादुर शास्त्री जी जेड़ा जूना मारसाब जतना नाटा कद रा इन्सान हा उतरी ही ऊँची वाँ री सोच ही। वणी समै छुआ-छूत रो चलन माथे चढ़ बोलतो हो। ऊँच-नीच री बेतरणी सगळा घरां माय बैती ही। वणी समै जूना मारसाब पाकी जनेऊ वाळा ब्रामण हवेता तका भी गंगाजळ रे माफिक निरमल हा अर ई कुरीति रो पुरजोर विरोध करता हा।

अेक सांचो शिक्षक युग निर्माता हुया करे। संस्कृतियाँ रो उत्थान अर पतन कर्मनिष्ठ शिक्षक री भ्रू भंगिमा सूँ ही हो जाया करे। शिक्षक री अंगुळी रा इसारा पे कितरा ही राजवंशां ने उदै अर अस्त होता देख्या। इतिहास ईं रो साक्षी है। शिक्षक री क्रान्ति बड़वानल है जीं रे भभक्याँ पछै कोई नी बुझा सके। समाज में शिक्षक री क्रिया कम अर परिणति सांवटी दीखे। जूना मारसाब रे मनड़े धधकती आग ही तो जुबान सूँ टपकती मिसरी री मीठास, शीश पे हिमखण्ड रो धीरज तो पगाँ माँय ब्रह्माण्ड नापबा री शगती। गाँव रो कस्यो ही घर वणां सूँ छानो नी हो। हर मिनख रो दुख दरद वणां रो दुख दरद हो। सामाजिक समरसता री साकार मूरत हा।

रूँखड़ा दरखड़ाँ सूँ वाँ ने चोखो लगाव हो। अेक बार चौमासा में पाठशाला रा मैदान मांय पौधा लगाती बैळ्‌याँ कीचड़ सूँ वणां रा कपड़ा मैला हवेग्या हा। या देख'र सगळा छोरा-छोरी चिल्लाया-''मारसाब थांका गाभा मैला हवेग्या।'' या सुण'र जूना मारसाब मनड़े मुळकता बोल्या ''बेटा गाभां रो मैल धोबा सूँ उतर जासी थोड़ो पाणी अर साबुण लागेलो। पण मन रो मैल किसी साबुण अर पाणी सूँ कदै हीज नी उतरे।'' वणी समै या बात समझ म कोनी आई।

अेक हाथ री पाँचों आँगळ्‌यां बरोबर नी हुया करे। गाँव में भी सगळा मिनख अेक ही विचारधारा रा होवे या जरूरी कोनी। कुछेक गाँवाळा जूना मारसाब ही मितव्ययी आदत ने देख'र वाँ ने मक्खी चूंस कंजूस कैता हा। ईं रो कारण अेक और भी हो क जूना मारसाब रोजीना गाँव सू घास रो भारो साइकल रे पाछै बाँध'र ठेठ बिजयनगर ताईं ल्याता हा, वो भी गाँवाळां सूँ मांग'र। गाँवाळा सोचता क मारसाब स्हैर मांय गायां पाळ राखी अर वणां रे वास्ते अठा सूँ फोगट रो चारो ले जावे। पण वणां ने ठा कोनी ही क वे स्हैर म भटकबा हाळी सूनी गायां रे वास्ते चारे मांग'र ले जाता हा।

जूना मारसाब री निन्दा म्हारा सूँ सहन नी हवैती, पण म्हूँ गाँव रा बड़ा लोगाँ रो कछु बिगाड़ भी तो नी सकतो। ईं वास्ते भाग्यो-भाग्यो वाँ री चुगली जूना मारसाब ने जा परोसतो। जूना मारसाब हँसता तका बोलता- ''बेटा जद थूँ म्हने दस पईसा देणो चावे अर म्हूँ नी ल्यूँ तो वे दस पईसा कुण रे कने रैसी?'' ''म्हारे कने रैसी'' म्हूँ बोल्यो तो मारसाब मुळकता तका बोल्या ''ठीक बिंया ही वणां रही गाळ्‌याँ अर निन्दा ने म्हूँ स्वीकार नी करूँ तो वा वणां रै कनै ही रैसी।'' या सुणतांई सगळा छोरा-छोरी राजी हवै जाता। आज वणी बात न याद करूँ तो सोचूँ क जूना मारसाब कितरा सकारात्मक विचाराँ रा धनी हा।

बरस बीतग्या। म्हारी कॉलेज री भणाई चाल री ही। अेक दिन सुण्यों क जूना मारसाब रो सुरगवास ह्वेग्यो। ट्रक री टक्कर लागबा रे कारण साइकल समेत पड़ग्या अर ईं दुनिया न हमेशा रे वास्ते छोड़ग्या। या बात सुण'र म्हारे काळजे में जोरदार धक्को लाग्यो। वणा री हँसती मुळकती सूरत म्हारी आँख्याँ माँय घूमबा लागगी जो आज तईं निकळबा रो नाँव नी लेवे।

प्रधानाचार्य
श्री मथुराधीश जी का मंदिर,
चमना बावड़ी, शाहपुरा,
जिला-भीलवाड़ा (राज.) 311404
मो: 09413704555

बहना पढ़ल्यो भाई पढ़ल्यो

❐ टीकम बोहरा 'अनजाना'

बहना पढ़ल्यो भाई पढ़ल्यो
सगळा लोग लुगाई पढ़ल्यो।
पढ़्या लिख्या म्ह आवै ग्यान
पढ़्या लिख्या जाणे विग्यान
पढ़ लिखकर थै भी
चाँद रै माथै चढ़ल्यो
बहना पढ़ल्यो भाई पढ़ल्यो
सगळा लोग लुगाई पढ़ल्यो।।
पढ़्या लिख्या रा सुधरे काज
पढ़्या लिख्या कर्‌ह है राज
पढ़-लिखकर भायां
थै भी आगा बढ़ल्यो
बहना पढ़ल्यो भाई पढ़ल्यो
सगळा लोग लुगाई पढ़ल्यो।।
पढ़्या लिख्या ही पढ़सी वेद पुराण
पढ़्या लिख्या ही बांचेला कुरान
पढ़-लिखकर थै भी
बातां आछी गढ़ल्यो।
बहना पढ़ल्यो भाई पढ़ल्यो
सगळा लोग लुगाई पढ़ल्यो।।
राज थानै बता रह्यो बजा-बजाकर ढोल
पढ़्या-लिख्या मिनखां रो बढ़ ज्यावे है मोल
पढ़ाई रो अनमोल रतन
थै जीवन में जड़ल्यो।
बहना पढ़ल्यो भाई पढ़ल्यो
सगळा लोग लुगाई पढ़ल्यो।।

RAS., मुख्य कार्यकारी अधिकारी
राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण, जयपुर
मो: 0141-2609894

चूड़ी री खातर

❐ सुशीला शर्मा

''मीरा न कन्हैया की चूड़ी पैराद्या कांई भाभी?'' सुणता ही कमली को काळजो धूज उठ्यो। एक दफा तो वा कांई बोल ही कोन सकी, पण फेर अपण-आप नै संभाळर बोली ''लालजी मैं ई बात की हामी कोन भरूँ।''

''क्यूँ इमे कांई गलत छै, तू भी तो म्हारै सागै रहरी छै बीनणी बणर।'' देवर का तीर सा बोल सुंणता ही कमली का काळजा माळै साँप लोटबा लागगा। ''हाँ हाँ, भाभी थांकी लुगाई बणर रह री छै, पण जाणै छै म्हारो जीवन, कैयां रह री छूँ, मैं तो इतरा बरसा सूँ म्हारा होठा कै ताळो जड़ मेल्यो छो, पण अब म्हारी बेटी को ही सांवरो रुसगो तो मनै म्हारी जीभ खोळणी पडैली ज्यो म्हारै साथ हुयो वा मै म्हारी बेटी क साथ कोनै हो बा द्यूँ।''

कमली न याद आगो वा बुरो बखत जद ऊँकों सावरो रुस्यो छो। नई-नई परण्योडी छी कमली हाल तो एक बरस ही हुयो छो ब्याव नै। कमली तो जापा म ही छी मीरा बगल मै सूती छी, बारा नै सूं बार-कूकतो सुणता ही वा भी बारां न भागर आई, देखी तो धणी की अरथी गाडी मं सूं उतार रया छा सास-ससूरा बल बलार्‌या छा।

आकास फाटर कमली मालै पड़ गो, धणी का बारवां न जद कमली सूं पूछया, ''पीहर जावैली की सासरा म रहवैली।'' कमली न तो होस ही कोनै छो, वा तो बाफड़ी बारै मेलती अर बेहोस होर पड़ जाती, बेहोस न ही बींका काका-बाबा देवर की चूड़ी पैरार चल दिया। होस आया पाछै पत्तो पड़्यो की वा अतरा सा ही दना में दो कसमा की लुगाई बणगी। बिचारो देवर भी हाँ मं हाँ मिलार भाटो बणगो। जद सूं लेर वा अब तक कैंया रही छै यातो वा जाणै छै या ऊँको भगवान जाणै छै।

आज बेटी क लैर भी वाही बात... नहीं...नहीं। कमली आपका आँसू पूंछ्या अर देवर नै हाथ जोडर बोली ''नहीं लाल जी थांकै पगा पडू म्हारी मीरा न घरा लियावो म्हारी मीरा थोड़ी-घणी पढ़ी लिखी छै कोडी न नौकरी लाग जावैली, नहीं तो आपा उंनै और पढ़ाद्या ला। फेर भी न पगा माळै खड़ी होली तो समाज म घणा ही छोरा कँवारा फिर रह्या छै, चोखा-चोखा न छोर्‌या कोनी। म्हारी मीरा न दूसरा छोर्‌या न ही परणाज्यो देवर की चूड़ी मत पैराज्यो।''

''भरी सेजा मनै पटक दिया, थे ही सोचो म्हारी थांकी अर दोराणी तीना की जिन्दगानी कतरी नरक छै, मीरा की मत बणाओ जिंदगानी नरक।'' खैता खैता मीरा देवर कै पगा मै ही पड़गी।

देवर का मन मै भी राम बैठ्यो, फैंटो बान्ध्यो अर, पैर मोचड़ी चल दियो मीरा न लेबै। ''भाभी साँची खैरी छै, मैं भी तो यां दो लुगायां मै पिसगो। अब मैं दूसरा की जिन्दगानी कौनै बिगड़बा द्यूँ। अर फेर मीरा म्हारी भी तो बेटी छै सासरा आळा कुण होवै छै ऊँका भाग को फैसलो करबाळा, बीनै देवर की चूड़ी पैराबाळा?''

72, शिवनगर-।।, मुरलीपुरा स्कीम रोड़ नं. 2, विश्वकर्मा, जयपुर (राज.)-302029
मो: 9413337163

मायड़ भासा अर मायड़ भौम रो मान बढ़ाणो मरुधरा रे सगळे बेटाँ अर बेटियाँ रो महताऊ अर पैलड़ो काम है। इणमें कोताइ बरतणियाँ साची औलाद नीं हुया करै।

रळकियौ

❒ आर.आर. नामा

वै छुट्टियाँ रा दिन आपरै गाँव मांय बिताय री ही। शहरी आदत अर छात्रावास जीवन री आदत पड़ीगी, अर्चना अपनी दादी सूं बातां कर टैम काटती। दादी अर्चना ने झमकू नाम सूं पुकारती। यूं दादी झमकू री उमदा मित्र अर मार्गदर्शक ही। जद वां स्कूल पढ़ती दादी परीक्षा तैयारी मांय रात भर जागती रैवती, उणरो होसलो बढ़ावती, जिण रौ परिणाम, बीं रो आई.आई.टी. बम्बई में चयन हुवो।

ऐ छुट्टियाँ उणनें भारी लागे री ही, घणकरी टैम वा लेपटॉप, मोबाइल एप्प माथै रैवती, आपरी पढ़ाई करती रैवती पण दादी कांई जाणैं नुवी तकनीक नै वां कैवती 'ऐ झमकूडी कांई मशीन रैं माथे देखै है, यूं सुण अर अर्चना नै हंसी आवती अर कैवती ''दादी आ मशीन म्हनें पढ़ाई करावै।'' दादी अचरज सूं कैवती ''कांई बात करै।'' ''हाँ दादी वखत बदल गियो है।'' अर्चना आपरी बात पूरी कीनी।

आज वा बातां करती दादी नै उण रळकियौ रो रहस्य हिम्मत कर पूछ लीनों। दादी पैहला झमकू ने देखी अगर गैहरी सांस छोड़ती कैवण लागी ''बेटा थे म्हारै मन माथे चोट कर दीनी, पर कोई बात नी, अबै थूं मोटी होयगी है। थारी ऊमर घणी होयगी है म्हारे टैम मोटी छौरियां इण ऊमर मांय री मां होयती। तो सुण आ रळकियौ, जिण नै गूदड़ी कैवां, मांय म्हारी मोटियारपणै री अर थारै दादे री यादां हैं वा दिन म्हनै घणा याद आवै के कितरो मोटो अर भेळो परवार, काम रौ भार पण मैलमिलाप जबरो हो। उण वगत पाणी ऊँट माथे उतरलाई नाडी सूं रात मांय लाणौं पड़तो।''

गहरी सांस छोड़ी थोड़ी ठहर कर आगे कैवण लागी ''थारा दादा रो परवार मोटो मोकळो हो। जवानी अर मोटियारपणै म्हानै लाज मरजाद राखणी पड़ती दिन मांय बातां नी करता, म्हैं कांणै घूंघट जोवती मुळकती। जरै वै पाणी री पखाल भरण प्रभाते ऊँट ले अर रवाना होंवता, दो चार बीघा आगा जाय अर हेलो करता ऐ झमकूडी री मां रळकियौ लाजे' ऊँट री पखाल रो रळकियौ।'' म्हैं समझ जावती उण बात नै, झट

सूं भीत माथै सूं रळकियौ ले उभारणै पगै दौड़ती, आगे थांरौ दादो ऊँट नै कूंमठ सूं अटकाय आच्छी औकळी रैत माथे म्हारी उडीक करता। म्है दोनूं उण बगत थोड़ी बंतल करता हर हंसी ठिठैली कर हूं म्है घरा आय घरटी फैरती पछे बिलाणौ करती अर थारै दादे रै माखण लुकाय न राखती। जद पखाल लै झारौ करता उण वगत ठाडी रोटी राबड़ी अर माखण। म्हनै वै चोरी सूं देख मुळकता माखण दिखावता अर आंगळी सूं इशारौ धनवाद रौ करता। बखत जातां बैला नी लागै, म्हारो पग भारी अर मायकै जायै सास लेवण आया। लाड कोड गोद भराई करा माई कै पूगी वां बिला मायकै मन कौनी लागतों पण संसारी मरजादा निभाणी पड़ती। थोड़ा दिनां म्हारै गीगो थारे पापा रौ जलम होयगौ। म्हारी मां गीगै रै कोड सारू कपड़ा कडला, टौपी रमतियां लीना। इणीज साथे मां आपरी कारीगरी सूं आ रळकियौ जो गूदड़ी है बणायो टीका, भरत भर फूटरो कौडीलो दिखतो, उणीज रळकियै मांय म्हनै पलैट थारै दादा ने गीगो दीनौ अर संभाळ मांय वणा पाँच रिपिया दीना हा चाँदी रा। वै पाँच रिपिया आज इण रळकियै मांय सीड़ियोडा है अर म्हने पाछी कपड़ा लता देय अर सासरै पूगती कीनी री, उण वगत सूं आ रळकियौ अमर अमानत है। घणी बरसों पछै थारौ दादो चालता रिया, जद सूं आ रळकियौ यादास्त है थारै दादै री।'' इतरौं कैंवता दादी आँखा मांय पाणी आयगौ हो। सिसकी भर दादी कैवती ''बेटा केडा दिन हां, थारौं पिता पछे थारो काको आयो, थारी भुआ मोटी हुई अर आ रळकियौ बड़भागी, शुभ सैनाणी है।''

अर्चना आगे बात नी सूण अर उण रळकियै रो रहस्य प्रेम री सैनाणी मान लीनी ही। झमकू दादी नै ढाढस बंधायौ अर बात फोरण लागी जिण सूं दादी रा विचार दिमाग सूं आगा हौवे।

छुट्टियाँ पूरी होय अर जावतै बगत अर्चना आपरी दादी रौ आशीर्वाद लीनो। दादी केवण लागी ''बेटा आप लुगाई मिनख हो, इज्जत रो ध्यान राखणौ परदेश मांय, पढ़ाई पूरी होवंता ही थारा पीला हाथ करण री मन मांय है ईश्वर भली करैं।''

आई.आई.टी. री परीक्षा आज पूरी होवण वाळी है। परीक्षा पछै अर्चना गाँव ढूंढता बान्दरा जावैला, विण आपरो रिजर्वेशन कराय लीनों हो। परीक्षा खतम पछै मोबाइल माथे संदेश आयो 'दादी सीरियस कम सून', 'दादी ज्यादा बीमार वैगी आवणे'। वा समझगी ही दादी म्हारी बाट जोवती होसी। बूढ़ा मिनख कितराक दिन। अर्चना गाडी मांय बैठी फोन करती पण बात नी होवती। इजे दिन वा आपरे गाँव पूग गी ही। घरै पूगता माजरौ देख्यो पड़ौसी, रिश्तेदार माथे अंगौछा बाँध लिया है अर दादी रो अन्तिम संस्कार कर घरे आया है अबार ही। लुगायाँ बिलखती देख झमकू समझी दादी रा दर्शन दुर्लभ हुआ, वा भगवान थारी मरजी। उणरी आँखां रिम झिम करे पण करै तो कोई कांई करै।

एक दो दिन बीतां पछै उदास बैठी झमकू नै रामी काकी बतायो कै ''बेटा दादी घणा दिन थारौ नाम नी छोड्यौ, आपरी भुलावण देवतां म्हनै आ रळकियो दीनो अर कयो आ रळकियो झमकूडी नै दीजे।'' आँखां मांय आँसू पौंछ काकी कैवे, ''झमकू रो विवाह म्हारे खर्च लारै करजो अर छोरो पढ़ियो होवणो चाईजे, जदै आशीर्वाद इण रळकियां मांय है।'' अर्चना दादी री सोच अर आगम इच्छा जाण रौण लागी दादी रो रळकियौ छाती सूं चिपकाय। काकी धीरज बधायो ''बेटा मायत अर मिश्री सौ बरस कठै कौनी रह्वै।''

जिप्सम हाल्ट, वाया-कवास
बाड़मेर (राज.)-344035
मो: 9414532949

धणी कुण?

❐ हेमा

मिनख रै मन री सांयत संतोष रा उण जमाना में जद ऐ घर तोड़ावती टी.वी. सीरियल नीं हुवता–टाबरियां नै बूढ़ा बडेरा नींद आवण सूं पैली इण भांत बातां सुणाय मनोरंजन अर मठोठ वाली जिनगानी रौ समचो देवती इण बात शैली रो सहारौ आपरा झूंपां, चौपालां, चौंतरां अर होका–हथाई री वेला संस्कारवान जीवट सूं जोड़ता। टी.वी. जुग सूं पै'ला री वात शैली री एक विगत–

चवदस रौ चंदरमा आंभैरै आंधेरे आया पूग्यो हौ। पण नितरी टेव पांण चकवारी आँख्यां नींद कठै? यूंभी चकवा चकवी रो जमारौ रात मिलण रो अर दिन विछौहरौ। सो वातवंतळ सारू चकवै कोई वात सुणावण री तजवीज विचारी। ''तो सुणरे चकवी। जागै के सोवे?'' सायधण पडूतर दियौ–''एक तो रात री टेम तो हैई आपारै सागे रैवणरी।'' अर चकवै रात रा सून्यापै में इण भांत वातवंतळ शुरू करी। तो फौज में नगाड़ौ अर वात में हूंकारौ। सुणजे चकवी। जुगां जूनी वाता। किणी नगरी में दोय मिंतर (मित्र) रैवता। एक हौ राजा रो कुंवर अर दूजो नगर सेठ रौ लाडेसर। दोन्यां में एकै दाँत रोटी तूटै। टेम जातां कांई जेज लागै। सयाना हुयां नगर सेठ आपरा लाडेसर ने बुलाय बीनणी रो मुकलावौ कर ल्यावण री बात राखी। सेठां रौ बेटो आपरा भायला नैई भेळो लियो। पण मन में एक शंका जागी। राजा रौ राजकंवर म्हारे सासरे म्हारै भेळो। जे म्हारै सासरिया राजकंवर री उणजोग सरवरा नीं करी तो म्हारा हेतरा तो कांकरा हो जावैला। मनाग्यानां इणी विचारां में दोन्यूं साथीड़ा एक देवल री साळ में रातवासौ लियो। पण सेठ रौ बेटो देवळरी पूतली आगे हाथ जोड़ मन्था मानली। हे देवी माँ! म्हारा मिंतर री सावळ सरवरा हुयगी तो म्हैं पाछो वळतां म्हारौ सीस थनै अरपण कर दूंला। समाजोगा री बातां सेठां रै सपूत रा सासरिया राजकंवर री सरवरा सांगोपांग अर उणी मठोठ वाली नी करी। दोन्यूं साथी नुवी बीनणी सागे पाछा उणी साळ में आ पूग्या। सेठां रो लाडेसर मन में दुखी होयर देवळरे सामी जा'अर मंथा रे पालना में आपरो माथो देवळ ने चढ़ा दियो।

अठी राजकंवर पौरावतां पौरावतां उणमणो होयग्यौ। नवोढ़ा बीनणी भी किणी अनहोणी री आशंका में मूंडो उतार बैठी। सेवट राजकंवर मिंतर री सोय में देवळ नैड़ो कियौ। चन्दरमा री चांदणी में जाय दैखे तो ओ कांई कुजोग हुयग्यौ। नवी परणेतर कीं कैय दियो सो रीस खाय आपनी इहलीता पूरी करली के कोई धोखा सूं वार करग्यौ? राजकंवर री जीभ जाणै ताळवै चैंटगी। करैं तो कांई करै।

हळफळाय आपरी तलवार म्यान सूं निकाल खुदरौ माथौ सूंत न्हाख्यौ। हे परमेश्वर! घड़ी छिन में दोय जीवती जूणां रौ पोख्याळौ कर न्हाख्यौ।

अठी नुवादी बीनणी पौरावै तो कितरी क जेज? एक एक छिण उणनै अणूंतो लांबौ लागण लागौ सेवट शंको छोड़ ऊभी हुयी। अर देवळ री सोय करी। दोन्यूं मिंत इसड़ी किण वंतळ में लागग्या कै म्हनै ही बिसार दी। अर देवळ री पेढ़ी पगळ्या मंडतां पाण नवोढ़ा रा तो जाणै देवरूठ न्हाठा। हे जगदम्बा! म्हारा भाग में ओ अभाग? दोन्यूं साथी किणी तकरार में तो नीं थुड़ पड्या? अबे म्हारो जीवणो बिरथा। अर आ चीत नुवी परणेतर उठै पड़ी तलवार सूं खुदनै देवी नै अरपण करण नै त्यार हुयगी।

चकवी कंपकंपी जती बीच में बोल पड़ी–अरे प्रीतम! इसड़ी विजोगी बात मत मांड्या करौ। म्हारो काळजो कम्पै। पण चकवै कह्यो–बावळी जिनगाणी में इसी अजोगी बातां री जाण भी तो हुणी चाही जै। तो मनकाठो कर धकै सुण। अठीनै नुवी बीनणी तरवार रो वार उठायौ अर उठी देवी सांप्रत प्रकट हुय उणरौ हाथ झाळ लियौ। ठम बेटी ठम दोन्यूं आप आपरी मित्रता निभायी। म्हानै किया कौलवाचा पूरा किया। इणमें थारा अभाग रो कोई तल्लो बल्लोनीं। औ ले म्हारा कुण्ड सूं जल अर दोन्यूं रा माथा पाछा धड़ सूं चिपकाय दे। दोन्यूं अजेज ऊभा हुय जासी।

हळफळायी बिनणी देवी री बात सुणतां पाण दोन्यूं रा माथा धड़ सूं चेप दिया। पण एक अजोगी हुयगी। नर चीती होवे नहीं हरि चीती तत्काल। राजकंवर रो माथौ सेठां रे लाडेसर री धड़ सूं अर सेठां रै बेटा रौ माथौ राजकंवर री लोथ सूं चेपीज ग्यौ।

हे विधना! आ किसी अजोगी कोगत हुयगी। म्हारी आ किसड़ी परीक्षा? सीता री अग्नि परीक्षा सूंई अबखी। अठी दोन्यूं मित्र जीवित जीवित ऊभा होय मुळकता बीनणी सामी आवण लागा। बीनणी झट के बोली– ढबो, ढबो। म्हनै क्यूं गताधम में पटकौ। अखीर म्हारौ धणी कुण? हे देवी माँ! थेई कोई सुलझाड़ै री सुमत दिखावौ। बात बात में हुंकारौ देवती चकवी सूं चकवै पूछई लियो–अबे थूंई बता बड़भागण, के नवोढ़ा किणनै आपरौ पति परमेश्वर मानै? कुणसो मोट्यार उणरौ सुहाग जाणीजै–सेठां रा बेटा रा धड़ ऊपरलो राजकंवर के राजकंवर रा डील पे सेठां रा बेटा रा उणियारा वालो मानवी? चकवी ई गजब अळूझगी। कैवै तो कांई? आतो जबरी हुई। चकवी रो मन फिरकी ज्यूं फिरण लाग्यो। बात पूरती बोल पड़ी–सेठां रा बेटा रे धड़ ऊपरलो मोट्यार बीनणी रो सुहाग। बावळी तो नीं हुयगी म्हारी परणेतर! कदे तो अक्कल री बात किया कर। मिनख ने की कर ओळखीजे! नाम सूं के काम सूं? चकवी री सोच तो जाणे हेम हुयगी। फटकारे चकवा सूं बोल दियौ–अबे थेई ऊथलो दैवो। म्हारी अक्कल रा तो काकरा हुयग्या। कीं ठानीं पड़े। अर चकवो बोल ई दियो–मिनखांओळख नाम सूं के ओलख उणियार। 'सीसलड़े धड़कट पड़ै वे बाजै जूंझार,' हाँ, बात तो थारी सोलाआना साची। किणी मिनख री बात चालू हुबतां ई उणरो उणियारो पैला मना री आँख्यां में ऊतरै। हर कोई आपरा नाम अर नाकनक्श सूं जाणीजे। समझी? हाँ, अबे कीं समझी। चकवी टेर में टेर मिलायी। औ रूं आगे सुण– चकवौ आपरी चकवी नै समझावतां बात सुलझायी। थूं पतिव्रता हुयोड़ी करवा चौथ रा व्रत में चाँद देखण सूं पैला छेरणी मांय सूं किणनै दैखनै व्रत खोलै? 'अबे क्यूं शरमां मारौ'– थां रौ उणियारो देखनै

ही तो म्हैं करवा चौथ पालणो करूं। अर चकवै वात ने यूं पूरी करी के उणियारा सूं ओळख्यां मुजब राजकंवर री धड़ पेलाग्योड़ो सेठां रै टाबर रौ उणियारा वाळो मिनख ही बीनणी रौ धणी हुयौ। इतरी बात, नीं सुणी तो डावा पसवाड़ै लात। आई तो ही आजरी बात री बात, कुलापात ही कुलापात।

शारीरिक शिक्षक
आदर्श विद्या मन्दिर माध्यमिक (बा.)
जालौर
मो: 9460174152

बदळाव

❐ मुहम्मद कुरैशी 'निर्मल'

घर बदल्यो बदल्यो लागे है,
जणो जणो बदलतो लागे है।

बदलती दीख रही हर चीज ।।स्थाई।।

पूरा घर में है लाय बळी,
तप ऊठी घर री थोथी थली।
मणक्ये मणक्ये पोई माळा,
सुवारथ नफरत रा परनाळा।

नीं रह्या इक दूजा न पतीज।।

ए! मारग बतावणिया लोग,
पूठे भाटा भावणिया लोग।
घर आ बिराजी नवी सभ्यता,
मर गई सगळी माया ममता।

देखो पनप रही नवी तमीज।।

मायड़ रे मूण्डे सळ उतरगा,
कड़ियां कूबड़ दुःखड़ा उभरगा।
करड़ो सियाळो है ठरठरतो,
ठांठरतां बापू फाटो कुरतो।

किणी रो मन नीं रह्यो पसीज।।

बटण टूट गिया है छाती रा,
नीं लाया लत्ता बेटी रा।
नागम माँ री झांका झांके है,
व्हा धेगल्यां बीसूं टांके है।

सवासिणी सींवे फाटी कमीज।।

30-31 अलीनगर नून्द्री (मे.)
ब्यावर (अजमेर) राज.-305901

सिंघ शावक

❐ डॉ. कमला तंवर

वकूंटी मारवाड़ री सूरा पूरा धरती जग चावी। रणबंका राठौड़ कीरत रा कमठाण। त्रिकुट भाखरी ऊपरां जबरो गढ़ जोधाण। इणी जोधपुर रियासत रा महाराजा जसवन्त सिंह रै टेम री ख्यात। दिल्ली री सल्तनत बादशाह औरंगजेब रै है ठै। बादशाह रौ दरबार केई रणबंका उमरावां, सामन्त सरदारां सूं खचाखच भर्‌यो थको। जोधपुर राजदरबार जसवन्त सिंह जी भी इण मजलिस में बिराज्या थका। राजसिंघासन पे बैठियो बादशाह औरंगजेब राव उमरावां नै मिजाज री नजरां घूरतो बोल्यो-''अबे देखो यो खिलकौ'' अर बादशाह रा इशारा पाण राजदरबार रै से बीच एक जंगी सिंघ पींजरा में बंद दहाड़तो लाई जियौ। सगळा अचाणचक इण रम्मत नै देख हाक बाक हुयग्या। यूं पींजरा में बन्द शेर नै दरबार में मंगवाय बादशाह कांई जतावणी चावै? इणी टेम बादशाह मिजाज री मीट सूं सगळा दरबारियां नै देखतां बोल्यौ-

''आज सगळै हिंदोस्तान में म्हारी बादशाहत रौ औ ठरको के जंगल रौ राजा कहावणियौ सिंघ भी म्हारा सूं डरपै अर बीकण घोरका करै। राजा महाराजावां री तो कांई बिसात!'' इतरौ सुणतां पाण जोधपुर नरेश जसवन्त सिंह जी रै जेज कठै। फटकारै बादशाह सूं निजरां मिलावतां मूंछां पे ताव देय पडूतर देय ही दियौ-''बादशाह! इणमें जंगल रा राजा रौ कांई कसूर? औ तो लाचार है अर पींजरा में बन्द है। म्हारी धोराळी धरती रा टाबर तो इसड़ा सिंघा सूं खुले में खेलै अर रमता रमता इणांरा दाँत तकात गिण छौड़े।'' बादशाह नै जोधपुर दरबार रौ मोसौ अणूतौ अखर्‌यौ। अजेज आंख्यां तरेर बोल पड्यौ-''महाराजा जसवन्त! यूं शेखी बघारणी नीं ओपै। सांप्रत निजरां खुला शेर सूं थांरा बालकांरी बहादुरी बताय बातनै साबित करौ।'' महाराजा जसवन्त ठीमर सुर में जवाब दियौ-''गाल थाप कांई छोटी। काले इणी टेम म्हारा शेर नै दरबार में ल्याय पिंजरा में बन्द इणी शेर सूं खुलै में बाथोरा खवाय दिखाऊं।'' अर आ कैय वे वहीर हुयग्या। अगले दिन उणी टेम महाराजा जसवन्त दरबार में हाजिर हुया। आपरा राजकुंवर री आंगळी पकड़यां आपरी ठौड़ ऊभा होय बादशाह नै वकारता बोल्या-''बादशाह! म्हैं क्षत्राणी रौ जायौ वादा मुजबशेर सागे ल्यायौ।'' ''कठै है शेर? महाराजा मजाक बन्द करौ।'' बादशाह धकै बोल्यो-''कैतो भिड़ावौ थारै बालशेर नै इण शेर सूं अर के हार कबूल करौ।'' केवता पांण महाराजा आपरा राजकंवर पृथ्वीसिंह नै आगे कर बोल्या-''औ रह्यौ म्हारी थली रौ सिंघ।'' अर सगळा दरबारी उण कंवली कूंपळ नै देख अचूंभे में पड़ गिया। महाराजा या कांई कालाई करदी। बादशाह री बदनीयत नै अणदेखी कर आपरा फूल सा राजकुंवर नै जंगली शेर सूं लडावण ल्याय ऊभो कर दियौ। ''हे चामुण्डा यूं सत दीजे।'' बादशाह री कुटलाई नै वकारतां महाराजा जसवन्त आपरा लाडेसर नै जंगली शेर सामी उतार दियौ। इदकाई आ, के महाराजा राजकुंवर रै हाथ में झेल्योड़ी कटार भी खोसतां बोल्या-''पृथ्वीसिंह! वीरां री पिछाण के निहत्था प्राणी पे कटार सूं वार नीं करै।'' अर वीरक्षत्राणी रौ जायौ दुयणी रौ धायौ शेर शावक पृथ्वी सिंह निहत्थौ जंगली शेर पे टूट पड्यौ। दोन्यूं लत्थौ बत्थी हुयग्या। दरबारी बाका फाड़ आ अजोगी अणूताई देखै। लोही झाण हुय आखीर में जंगळी शेर नै पटकणी देय ढेर कर ई दियौ। पूरौ दरबार राजकुंवर री वाहवाही कर बळाइयां ली। बादशाह री निजरां नीची हुयगी। मारवाड़ री धरती इसड़ा नरसिंघ शावक! तौबा! तौबा! या अल्लाह करमकर' पण बादशाह री कुटलाई नहीं गयी। जगदिखावै में बादशाह राजकुंवर नै शाही पोशाक तो नजर करी पण वाइ जहर डूबी पोशाक ही। दिनां लाग्यां जहर आपरौ असर दिखायौ। बालवीर तो सुरंगा री सोय करी। पण मायण भोम रा सिंघ स्वभाव नै इतिहास री मिसाल बणाय दी-

म्हैं जाण्यौ धवलो मुवो, सूनो हुयग्यो बग्ग।
बाड़ै उणीज बाछड़ा फेर तडुक्कण लग्ग।

प्रधानाचार्य (से.नि.)
सनराइज अकादमी, समदड़ी, (बाड़मेर)
मो: 9414754546

जैसाण री काण

❐ आशुतोष

पात्र परिचय

रतनसेन : जैसलमेर रा महारावल
रत्नावती : राजकुमारी
मलिक काफूर : यवन फौज रौ सेनापति
गढ़ जैसाण रा सैनिक : चार
गढ़ जैसाण रा सिपाही : दोय चार
साईनी साथणियां : राजकुमारी सागे सैनिक भेष मांय।

यवन सेना रो भेदियो-
ढाढी : गढ़ जैसाण रो जसगावणियो
समय : महारावल रतनसेन री वार दिल्ली पतशाह अलाउद्दीन रौ जैसलमेर पे साकौ अर लंबे टेम री घेराबंदी

दरसाव पहलो

मंच रो परदो उठता पाण पृष्ठभूमि में सोनारगढ़ रौ छाया चित्र देखीजे मंच पे ढाढ़ी रौ प्रवेश-

ढाढ़ी- (माड़ धरती जैसाण रौ जस उगेरतो रागां करै) ''भड़ किवाड़ां भाटियां आथूणे मरुदेस। मही झरौखा औळखे पाल गढ़ीसर जेस।''

(ढाढ़ी रौ जावणौ-राजकुमारी रत्नावती अर महारावल रतनसैन रौ प्रवेश- दोन्यूं सैनिक वैश में देखीजे)

राजकुमारी- घणी खम्मा, पिताजी! दुर्ग री चिन्ता छोड़ो। आपतो त्राटक सारू सिधावो। अलाउद्दीन! कितरो ई अपरबली है पण माड़धरारी वीरांगनावां सूं उणरो भेटको नीं हुयो।

महारावल- हाँ धीवड़! थारी लायकी पे म्हनै पूरो भरोसौ है... पण मुगल बादशाह अपरबली ई नहीं, धूर्त अर दगाबाज भी है।

राजकुमारी-(आडी निजरां महारावल नै देखती थकी)- आप तो निरभै पधारो महारावल! सौनार दुर्ग रौ बाल ई बाँको नीं हुवण द्यूँ।

महारावल- तो ठीक है बेटी, माँ आवड़ आपणी सहाय करै। (महारावल रौ सिधावणो छाया चित्रां में सेना रौ जावणौ घोड़ा हाथियाँ री आवाजां अर रण भेरी सुणीजै)

दरसाव पलटीजे

(यवन सेनापति अर दोय सिपाहियां रौ आवणो)

एक सिपाही-सिपहसालार! यूँ कितरा दिन पौरावणो पड़ैला? पड़्यां रौ तो डील ई अकड़ग्यो है।

सेनापति-धीजो राखो म्हारा सिपाहियाँ! दुर्ग जैसाण में भेळो कियौड़ो राशन पाणी नीठतांई यांने बाहर तो आवणो ई पड़सी।

दूजो सैनिक- आपणी तोपां तो गोळा दाग दाग थकगी पण सौनार दुर्ग री भीतां तो जाणे लोखण री बण्योड़ी। गोलां रा छर्रां टकराय नै पाछा आवै अर छर्रां सूं आपणा सिपाही ईज घायल हुवै।

सेनापति- बकरा री मां कदलग खैर मनावैला? राशनपाणी खतम हुयोनी, अर दुर्गवासियाँ किला रा दरवाजा खोल्यानी।

(प्रस्थान)

(मंच पे राजकुमारी रत्नावती रो साथणियाँ सागे आवणो।) सगळी साथणियाँ वीर वेश में चौकसी करती थकी।

राजकुमारी- (सानी करती थकी)- वो देख डावड़ी-दुर्ग री बुर्ज कानी कोई चढ़ता दीसै।

सैनिक सहेली- वांरो काम तो तमाम हुयो समझो। (म्हारी साथणियाँ) गुड़काओ दग्गड़ अर गेरो तातो कळकळतो तेल पाणी।

(साथे आयी साथणियाँ औ अभिनय करै पृष्ठभूमि में भाठा गुड़कण अर पाणी पड़ण री ध्वनि सुणीजै)

(मंच पे दोय तीन मुगल सिपाही कुरलावता आवै)

एक सैनिक- या अल्लाह! ये कैसी कयामत! बचके चलो, सिर फुटव्वल से खुद को बचाओ।

दूजो सैनिक- तौबा, तौबा! गर्म-गर्म तेल से मेरा पूरा जिस्म ही जल गया। बचाओ खुद को। किले की हिफाजत करने वाली इन औरतों ने तो बला की मुसीबत खड़ी कर दी है।

(भागतां थका जावणौ)

(दरसाव पलटीजे)

(पृष्ठभूमि में सौनार दुर्ग रौ दरसाव देखीजे! राजकुमारी रत्नावती एक बुर्ज सूँ दूजी बुर्ज आवती जावती साईनी साथणियाँ सूँ बात वंतल करै। चेहरा पे चिंता रा भाव दीसै)

राजकुमारी- महारावल नै समर में सिधायां आज चार दिन होवण आया पणनीं कोई समचो अरनीं आयो हरकारो। इसी कांई बात हुयगी।

सैनिक वेश में एक साथण-क्यूं! चिंता करौ राजकुमारी जी। महारावल अपर बली है अर् उतराई चातुर वांरा सामंत सिरदार!

राजकुमारी- हाँ, आ बात तो है।

दूजी साथण- अरे, अरे राजकुमारी जी उठी तो देखो। सामै कानी बुरज रा सहारे-सहारे कोई काली छाया टळवळती दीसै। कदास मुगल फौज रा भेदिया तो नीं है।

राजकुमारी- (बुर्ज कानी खरी मीट सूं देखता) हाँ भाखर री सांकड़ी चढ़ाई सूं कोई ऊपर आवण री तजवीज में है पण महारावल रौ समचौ लावणियो हुय सके।

पहली साथण- पण, राजकुमारी जी! वो अकेलो तो कोनी लागे। जाणै उणरी पीठ पे फेर कोई बैठ्यो हुवै।

राजकुमारी- तो म्हैं अजेज पतोलगाऊँ। (बुर्ज कानी चढ़ती छाया ने वकारती थकी)-ऐ! कुण होई रे उठै?

जीव व्हालो हुवै तो सुभट बात दरसाय दे। अर नहीं तो आया म्हारा विष बाण, थारौ काम तमाम करण नै।

(बुर्ज कनै लुकती मलापती छाया बोलै)

भेदियो- अरे, राजकुमारी जी, औ तो म्हैं महारावल सै हरकारौ। अणूतो जरूरी समचो है वांरौ।

राजकुमारी- (तीर ताण्यां मुद्रा में)- तो झट बोल।

भेदियो- समचो गुप्त है, ठेट आयां ई केवण सारू है।

राजकुमारी- थारी-घणी हुशीयारी म्हारा आगे कोनी चालै। कोई कागद- चीठी हुवै, ऊपराँ बगाय दे।

भेदियो- राजकुमारी जी, बात ने समझो। महारावल रौ समचो गुप्तरूप सूं ई कैवणो जरूरी।

राजकुमारी- तो, थूं थारी जाणै। ले झेल झाट म्हारा अचूक तीरां री।

(तीर चलाय देवे)

राजकुमारी– है कोई अठै?

(गढरा दोय सैनिक आय हाजिर हुवै।)

राजकुमारी– बुर्ज री भींत रै कनै रस्सी रे सहारे नीचा उतरे। अर्‌वा गांठड़ी ऊपर लेय आवौ।

(जैसाण रा सैनिक पर्दा लारे आवाजां देवतां सुणावे)

दोन्यूं सैनिक– राजकुमारी जी, ओतो यवन सेना रो भेदियो ई निकळ्यौ।

राजकुमारी– देखी आपणी चौकसी! माँ आवड़ सहाय रही।

साथणियाँ– हाँ राजकुमारी जी

(दरसाव तीजो)

(राजकुमारी रत्नावती सौनारदुर्ग री चौकसी करती गढ़री प्रोलपे आय ऊभी हुवै)

राजकुमारी– (हाक-बाक हुवती)- अरे, औ कांई खेलो! कुण है पौरायती अठै? प्रोल सफा सूनी! हे माँ आवड़!!

(अणाचक एक बूढ़ा सामन्त रो आवणो)

सामन्त– सौई गुनाह माफ राजकुमारी! अे म्हैं ही हूँ। पौहरा माथै। मुगल सेनापति सरदार मलिक काफूर म्हनै बख्शीशरी मंशा दरसाई है।

राजकुमारी– झट बोलो सामन्तां! कठै आपई भेदिया सू जाय नीं मिल्या?

सामन्त– करै रूखाळी माँ आवड़। म्है गढ़ जैसाण रौ लूण खायौ है। आ कोगत करूं तो मर्‌यां ई मुसोतर नहीं जाऊँ। (हाथ जौड़ै)

राजकुमारी– तो पछे, कांई तजवीज है थांरी?

सामन्त– राजकुमारी जी। आवण तो द्‌यो यवन नै प्रोल मायं अर् पछे तेल देखो अर तेल री धार देखो।

प्रोल मांय आवणियां सगळा मुगल सैनिकां ने सोनारगढ़ रा भूल- भुलैया इस्या फंसाय देऊं के वे माथो भांग भांग भटकता ई रै वेला।

राजकुमारी- रंग सामन्तां थांरी इण सौचनै।

(प्रस्थान)

(दरसाव चौथो)

(भूल भूलैया में भटकता दोय यवन सैनिकां रौ मंच पे आवणो)

एक मुगल सैनिक– तौबा, मेरे मालिक तौबा! यह कैसा भूल भूलैया है- रास्ता नहीं मिला तो भटक-भटककर ही मर जाएँगे।

दूसरा मुगल सैनिक– अरे खुदा, रहम करो। गहरे पानी के वाशिंदों की चाल, यहाँ के पानी से भी ज्यादा गहरी है।

(प्रस्थान)

(राजकुमारी रत्नावती रो आवणो। सागे दोय सामन्त सिरदार ई निगे आवै)

राजकुमारी– तो सामन्तां! मुगल सेना रा टणका सिपाही तो आपणी कैद मैं मिलग्यां पण यांनै अंजल पाणी तो करावणो आपणी मिजमानी है।

एक सामन्त– हाँ, राजकुमारी जी! घरे आयो अर मां जायो बरोबर। बादशाही फौज उडीकती हार खाय जावै जेड़ै आपणा आदमियाँ रा राशन पाणी सूं आपणौ भोजन पाणी यां यवनां ने भी देवणो आपणी धरती री मोटी मरजाद है।

घर ने सुधारे कामणी

❐ जय प्रकाश राणा

शशि बिना सूनी रेण, ज्ञान बिना सूनो हिरदै
कुळ सूना बिना पूत, पात बिना तरवर सूना
गज सूना बिना दन्त, नीर बिना सागर सूना
घटा सूनी बिन दामिणी, केवे बेताळ विक्रम ने
घर सूना बिना कामणी....

शशि ने खायगी रेण, ज्ञान ने हिरदो खायग्यो
कुळ ने खाग्या पूत, पात ने तरवर खायग्यो
गज ने खायग्यो दन्त, नीर सागर ने खायग्यो
घटा ने खायगी दामिणी, केवे बेताल विक्रम ने
घर ने खायगी कामणी....

शशि ने सुधारे रेण, ज्ञान ने हिरदो सुधारे
कुळ ने सुधारे पूत, पात ने तरवर सुधारे
गज ने सुधारे दन्त, नीर ने सागर सुधारे
घटा ने सुधारे दामिणी, केवे बेताळ विक्रम ने
घर ने सुधारे कामणी....

सूचना सहायक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9461245972

राजकुमारी– तो आज सूं किला राहवासियां में औ ऐलना करीजे के साकौ करणियाँ मुगल सैनिक, जिका आपणा किला में मिल्योड़ा है, बन्दी है, बारै अंजल रोटी सारूं गढ़ मांयला सगळा वाशिंदा एक टंक भोजन करैला।

दूजो सामन्त– जुगां जीवो राजकुमारी रत्नावती। उतराद रा भड़ किवाड़ भाटियां री आई मरजाद के त्राटक में सूरापूरा अर मिजमानी में ई सदा सवाया। आपरी जय हो। (प्रस्थान)

(मुगल सेनापति मलिक काफूर रौ आवणौ। सागे दोय दूजा सिपाही भी लारै-लारै प्रवेश करै)

मलिक काफूर– तो सोनारगढ़ में गया आपणा आदमियां रा कांई समाचार है?

एक मुगल सिपाही– हुजूर! वे सगळा तो अबखी मैं पड़ग्या है पण वांरी चाकरी मिजमानी पूरी।

दूजो सिपाही– जनाब! सोनारगढ़ की हिफाजत करने वाली महारावल की लड़की ने इस मौके चतुराई से किले में राशन-पानी का पूरा इंतजाम कर लिया है।

मलिक काफूर– या खुदा! अबे गढ़ जैसाण जीतणो तो नुवो जन्म लेवण बरोबर। आखिर आ उडीक अणूती।

(दोय सिपाहियां रौ दौड़तां हळफळावतां मंच पे प्रवेश)

दोन्यूं सैनिक (एकण सागे)– गजब हुय ग्यो हुजूर! महारावल मालव फतह कर पाछा जैसाण री सोय करली है, अबे तो भली विचारो।

मलिक काफूर– तो पछे सोनारगढ़ री फतह रौ मंसूबो माटी भेलो- बादशाह अल्लाउद्दीन नै समचौ करो अरं फौजां ने पाछी फेरो। ईंशा अल्लाह।

(सगळा रो मंच सूं प्रस्थान)

(ढाढी रो विरद उगेरतां आवणो)

ढाढी- त्रिकूट भाखरी ऊपरां, बुरज एक कम सौ।
महारावल जैसल चिण्यो हेमनगर गढ़ औ।
पोरां रेखां नहं मिलै, मिनख अलेखूं पाण,
धरनगरी नहं एकसी, ज्यूं सोनल जैसाण।।

(परदो पड़ै)

व्याख्याता
शारदा विद्या मन्दिर उ.मा.,
समदड़ी स्टेशन (बाड़मेर)
मो: 8696505525

झाड़ू की महिमा

❐ ओमप्रकाश सैनी

झाड़ू की महिमा न थे तो सबळा जाणो रे
घर-घर में पड़ी छै या तो सबळा जाणो रे।

गन्दगी न देखो या तो दूर भगावै रे,
घर आँगन न साफ सुथरो या ही राखै रे,
जाल माकड़ो देख या तो दौडी आवै रे,
लोग-लुगाया देखो इन लेर भागै रे-2
घर-घर में पड़ी छै .....

भन्दी भुआरी लाख की और भखर्‌या खाख होवै रे,
मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारा सबमें झाड़ू लागै रे,

270, ग्रीन पार्क,
पथ नं.-2 बैनाड़ा रोड, झोटवाड़ा,
जयपुर-302004,
मो: 9929474602

जात-पात को भेद नहीं या सबनै एक बतावै रे,
धूल-माटी की दुश्मन होवे सफाई की सहेली कहलावै रे
तिनका-तिनका एक रहकर एकता को पाठ पढ़ावै रे-2
घर-घर में पड़ी छै .....

झाड़ू आपानै कई रूपा में पावै रे
बाँस, खजूर पानी कूंचा की बण जावै रे,
बड़ा-बड़ा महला की या सुन्दरता बढ़ावै रे
झाड़ू भुहारी हाथ में, रोग-दोष मिट जावै रे
माखी-माच्छर दूर भागे बिमारी मिट जावै रे-2
घर-घर में पड़ी छै .....

स्वच्छ भारत को अभियान सारा ही फरमावै रे,
जगहा-जगहा देख गन्दगी सारा ही भरमावै रे,
आवे भुहारी हाथ में गन्दगी भग जावै रे,
बड़ा-बड़ा भी लोग देखो महिमा इंकी गावै रे,
साफ-सफाई देख सबका मन हरसावै रे-2
घर-घर में पड़ी छै .....

रंग-रंगीलौ राजस्थान

❐ ईसरा राम पंवार

रंग-रंगीलौ राजस्थान कण कण करै बखाण,
हेत-नेत मीठी मनुहार, इण रो है प्रमाण।
सात समंदर पार सू आवै है मेहमान,
ढोल बजावौ घणा वधावौ घणौ करो सनमान।

मरुधर धर रूपाली, कला छटा निराली।
देखत ही मन हरखे, लागै घणी प्यारी।
मनड़ौ हरखे देखकर, पाखाण पर कलाकृति,
सारे जग सू न्यारी, मरुधरा री संस्कृति।

आक बोरड़ी खेजड़ी मरुधर री पिछाण
हिरणी-ऊँटनी-रोजड़ी मरुधरा री है जान।
मरुधर री वनस्पति ओखद से भरपूर।
जो करे सेवण, होवै रोगां सूँ दूर।

परदेशी जद पांवणा, सुणै गोरबंद गीत,
सकल संसार छोड़े ने करै मरुधर से प्रीत।
हाथ में हथफूल, माथै सोने रो टीको,
देखत सैलाणी हरखी, गोरो रंग पड़ग्यो फीकौ।

5, संजाड़ा रोड देवनगर (मजल) तह. समदड़ी,
जिला-बाड़मेर (राज.)-344021
मो: 9983413969

स्वच्छता

❐ सुखविन्द्र सिंह रामगढ़िया

पहलो सुख निरोगी काया, दूजी होवै कन्नै माया
घर में शिक्षित नारी रे.....
आं तीन्या बातां स्यूँ चालै दुनिया सारी रै।
घर में कुई फ्लैश बनाओ, खुली जगहां ना बाहर जाओ,
माखी मच्छर दूर भगाओ, साफ सफाई रहसी रै....
गाँव आदर्श मेघाणां नै सारा कहसी रै।
घड़ै पर लोटो डंडीदार, कपड़ो ढकद्‌यो जालीदार,
पाणी उबालगै करो तैयार, ठण्डो करगै पीणो रे....
आं बातां ने सोचो जे थे लम्बो जीणो रे।।
गुटखा खागै भरै गिलाफ, बीड़ी सिगरेट है खराब
चीणी छोड़द्‌यो शराब, आदत सगली बुरी है...
नशो करणो जिन्दगी पर चालै छुरी है।
घर खेतां में पेड़ लगाओ, वातावरण नै शुद्ध बणाओ,
बिरखा राणी नै बुलाओ, इन्द्र रिमझिम बरसैगो....
मेह पाणी स्यूँ राजी रहवै, जीवन किरसै गो।
टाबरियां नै खूब पढ़ागै, विद्या पा गे जासी आगे,
देश में ऊँचों नाम करागै, आगै बढ़ता जावां जी,
भारत माता नै आपां सारा शीश झुकावां जी।।

प्र.अ., राउप्रावि. खोपड़ा
पं.सं. नोहर, जिला-हनुमानगढ़-335523
मो: 9783420499

चालो सरकारी स्कूल

❐ शम्भूदान बारहठ 'कजोई'

कन्नी सरकारी सूं काटी,
प्राइवेट बणी परिपाटी।
महंगी पोथी, महंगी पाटी,
झिली कांई है सबरे झाटी।
भायां प्राइवेट ने भूल।
चालो सरकारी स्कूल।।1।।

निःशुल्क किताबां मिळे नानका,
औरूं सुविधा मिळे अशेष।
पईसो अेक लगे नीं पारस,
पपीया ले ले झट परवेश।
प्राइवेट में कीं नी पड़ियो,
रेवण दे थूं इणरा रूल।
चालो सरकारी स्कूल।।2।।

सरकारी में सुविधा सारी,
चढ़ण साइकिल मिळे सवारी।
चावल दाळ मिळे इथ सारी,
तीसों दिन ताजी तरकारी।
प्राइवेट सूं मत पोमीजे,
भोळा मत ना करजे भूल।
चालो सरकारी स्कूल।।3।।

सोमवार री सब्जी रोटी,
मंगल दाळ पके है मेस।
गुरुवार ने बणे खीचड़ी,
बुध री रोटी-दाळ विशेष।
शुक्र दाळ, शनि री सब्जी,
रोटी रो दोनों में रूल।
चोखो भोजन बणे सदाही,
इणरा नामी देख उसूल।
चालो सरकारी स्कूल।।4।।

अणदो पढ़ इथ बणग्यो अफसर,
शंकर भी भणियो सरकारी।
रोजगार पढ़लागो राजो,
ताजो भी अब करे तैयारी।
साथी देख मिळे हर सुविधा,
बांरी मेहनत होय वसूल।
चालो सरकारी स्कूल।।5।।

लेपटॉप मिळे रै लखिया,
लिखवा ने इथ कॉपी पैन।
खेलकूद री सुविधा खासी,
चित्त में रैवे सब दिन चैन।
पढ़ण लिखण रे साथे पुरखा,
मनोरंजन भी करणो मूल।
चालो सरकारी स्कूल।।6।।

शंभूकवि क्है मानो म्हांरी,
भरजो फीस इती मत भारी।
प्राइवेट सूं पिण्ड छुडाओ,
स्कूलां भेजो सरकारी।
सोचो मत ना अब तो साथी,
कसम खाय ने करो कबूल।
चालो सरकारी स्कूल।।7।।

अध्यापक
रा.मा.वि. प्रभुपुरा (भुर्जगढ़)
कजोई, जैसलमेर (राज.)
मोः 9413089515

जमारौ खोयै रै

❐ रामजीवण सारस्वत

म्हैं राख असंतन में सरधा
घणमोल जमारौ खोयै रै
म्हारी आस अटूटी टूट गई
जीवण में अँधेरौ ढोयै रै
म्हैं राख असंतन।।
घणां बुज काढया घणीं सुड़ करी
मैंणत रौ पसीणौ- झौटो-रै
बीजण सूँ पैलाँ चीर करी
विस्वास रे बीज नैं बोयौ रै
म्हैं राख असंतन।।
खेचळ में पाछ नँईं राखी
आसा रौ सपनौ सँजोयौ रै
बीजोड़ो बीज नँईं निपज्याँ
भतवारी रौ हिवड़ौ रोयौ रै
म्हैं राख असंतन।।

शिवँकर विहार, F -93,मुरलीधर व्यास नगर,
बीकानेर-334004 (राजस्थान)
मो. 9460078624

बाळपणो

❐ डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत

टेर- राखाँ रे सार संभाळ, धरोहर बाळपणो

निरोगी काया ध्यान लगावाँ
जनम्याँ पहली सजग हो जावाँ
सही समय पर टीका लगावाँ
अस्पताल म प्रसव करावाँ
रहवै खुशियाँ की भरमार,
धरोहर बाळपणो।।1

बड़ा-बूढ़ा मिल खुशी मनावाँ
रोग गंदगी दूर भगावाँ
अंधविश्वासां सै मुक्ति पावाँ
आँगनबाड़ी केन्द्र दिखावाँ
आशा सहयोगीणी तैयार,
धरोहर बाळपणो।।2

आँगनबाड़ी सैं स्कूल पढ़ावाँ
ज्ञान ध्यान की बात बतावाँ
संस्कारां का पाठ पढ़ावाँ
गुरु लोगां नै गळै लगावाँ
माना घर को सो परिवार,
धरोहर बाळपणो।।3

खेल-खेल म बातां समझावाँ
गुणकारी पोषाहार खिलावाँ
बोलचाल म बात बतावाँ
पढ़बो-लिखबो साथ सिखावाँ
रहवै गीतां की भरमार,
धरोहर बाळपणो।।4

जीव दया की बात बतावाँ
जनम भूमि को फर्ज बतावाँ
जीवन का गुण धरम समझावाँ
सारा मिलकर फर्ज निभावाँ
करां शिक्षक को सत्कार,
धरोहर बाळपणो।।5

श्री सर्वेश्वर भवन, नाँगल जैसा बोहरा,
वाया-झोटवाड़ा, जयपुर-302040
मो. 8946838583

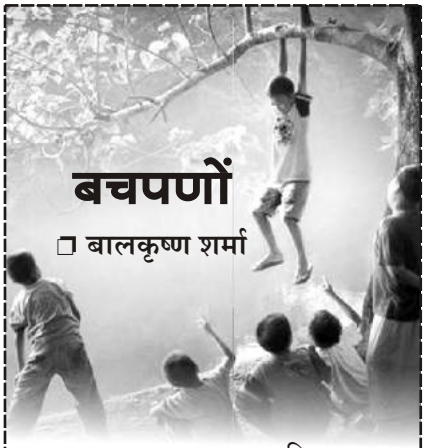

बचपणों

❒ बालकृष्ण शर्मा

अन्या मन्या का घर बणिया,
खूब ऊँचो अर नयो नयो,
बाँध बणाया खूब न्हाया,
धक्का मार्‌या धूला लगाया,
अस्यो बचपणों मन में भायो,
आज सोच कर मन हरषायो,
जाल कपट का मेल बणा कर
मन के मन में हठ कर चाल्या,
कदै बीत ग्यो बचपण सारो,
मोत्यां सूं मूंगो कठा सूं लाया?
थोड़ा दिना को बचपण,
मीठो मदरों फिर नी आयो
फेरूं पाछो क्यूं नी ल्यायो।
नान पणा की खारी-मीठी बाता,
पाणी में लकीर ज्यूं ही बिसराता,
घणी हो जाती पीड़ा मन में,
भायला ने खूब भड़काता,
कदै कदै मार खा' र आता,
म्हें ही खेल्या में ही बिगाड़या
बड़ा होग्या, पण जाण न पायो,
कूड़ कपट सूं हेत न राख्यौ
आच्छयो लाग्यो, खोटो लाग्यो,
मन में कोई भाव नी लाया
अब तो करड़ा ठूंठ होयग्या
मन की गांठा करड़ी होयगी,
कठे गयो भोळा पण सारो,
बात-बात में बंध लगाया,
हे विधाता, मोटो क्यूं बणायो?

जि.शि.अ. (से.नि.)
'प्रकाश दीप' शिक्षक कॉलोनी
कलिंजरी गेट, शाहपुरा,
भीलवाड़ा (राज.)-311404
मो: 9414615821

इतियास रो बास

❒ डॉ. मदन गोपाल लढ़ा

ओळूं रै किवाडां आडी
अटकायोड़ी है
उडीक री आगळ
जकां नैं ओढाळियां पछै
अजै लग नहीं खटखटाया कणीं
जुगां सूं
मानवी परस सारू तरसै
किवाड़ां रो काठ
घड़्यां पछै जकां नैं
खाती ई बिसरग्यो
आखी उमर छोल'र
सूत-सूत जोख'र
सिरज्योड़ी पंचमेळी जोड़ी
गवाड़ रै बिचाळै थरप्योड़ी
पूतळी रै उनमान
थिर ऊभी है
जिणरै ओळै-दोळै
कोनी दीसै कोई जीव-जिनावर
साव मून
फगत बायरै री सूं-सांट
भांगै सुनेड़।
फगत देख सको आं किवाड़ां नैं
जिणरै कड़्यां-कूंटां माथै
जम्योड़ी है बगत री खंख
चीकणास अर मैल सूं
काळूंठो पड़ग्यो आं रो रंग
खड़को कर्‌यां किसा
खुल सकैला
जंग लाग्योड़ा बोदा कबजा
चैतो-
आं किवाड़ां रै पाछळ
इतियास रो बास है।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
लूणकरणसर, बीकानेर
मो : 9982502969

जीवण री धारा बदळगी

❒ दीपचन्द सुथार

सोने ज्यूँ
ऊजली
गाँव री माटी नै
आँख्याँ रा डोळा
फाड़-फाड़ कर देखतौ
महानगर रौ रैवासी
म्हनै-
इण रौ कारण पूछ्यो
पडूतर देतो कैयो
कै-
परदूषण सूं अछूती
हेत रै-
गैरे रंग सूं
रंगिज्योड़ी
अर पसीणै सूं
नित धुलीजती रैवण सूं
इण रौ रंग
अेड़ौ व्हैग्यो
आ सुण-
उण रै पगां हेठै री
जमी खिसकगी
मौलिकता रै चकौचौंध सूं
सिकुड़तौ सोच
दुख रौ मूल कारण
आ बात-
हियै मायं बैठगी
जिण सूं
उण रै-
जीवण री धारा बदलगी।

द्वारा श्री हेमंत कुमार जांगिड़
दयाल भवन के पास, उम्मेद चौक,
ब्राह्मणों की गली, जोधपुर (राज.)-342001
मो. 9530051273

बचपण थारी बातां

❐ नाथूसिंह राजपुरोहित

मारदड़ी म्है रमी मोकळी, रमता गुल्ली डंडा।
बाळपणां में फूट जावता, चिड़कलियाँ रा अंडा।।

पल पल में कर देता कट्टी, पल-पल करता यारी।
छोटी-छोटी बातां खातिर लेता राड़ उधारी।।
यारां री यारी रै सामी, राय लागती खारी।
बात समझण री नहीं समझण, भल कह दुनियाँ सारी।।
बात मनावण बोत रोवता, खोल फैंकने बंडा।
बाळपणां में फूट जावता, चिड़कलियाँ रा अंडा।।

रूस इन्दर जद नहीं बरसतो, म्हैं मनवावण जाता।
खेजड़ नीचै पका घूघरी, रुच रुच भोग लगाता।।
फिर सगळा टाबरिया मिलनै, रांद घूघरी खाता।
बरसातां में बोत भीगता, इन्दर रा गुण गाता।।
गड़ा बीण कर गटक जावता, नहीं लागता ठंडा।
बाळपणां में फूट जावता, चिड़कलियाँ रा अंडा।।

बळदगाडी में बैठ परानै, खेतां में जद जाता।
उडणगाडी उणनै समझनै फूलां नहीं समाता।।
रोटी रात री माथै माखण, कर बीबड़ियो खाता।
काचर बोर मतीरा खातिर, खेत-खेत में जाता।।
मारसाब री मार खावता, थप्पड़ घूसा डंडा।
बाळपणां में फूट जावता, चिड़कलियाँ रा अंडा।।

पूरा बास रा टिंगर मिळनै, गळियों में तप करता।
चुंगी जो ले नहीं आवतो, चोटी उणरी जळाता।।
गाँव गळी री बातां करता, और चुटकला केहता।
जात पात म्हें नहीं समझता, सदा साथ सब रैहता।।
चोर पुलिस रा खेल खेलता, घेर लावता गुंडा।
बाळपणां में फूट जावता, चिड़कलियाँ रा अंडा।।

ढुला-ढुली रो ब्यांव रचाता, फूल मंगाता ताजा।
घर अर तोरण द्वार सजाता, खूब बजाता बाजा।।
पान सुपारी मनुवारां में, अर जीमण में खाजा।
सज-धज जद घोड़े चढ़ आता, ढुली रा बींद राजा।।
म्हैं ही आग आहुती दैता, म्हैं ही बणता पंडा।
बाळपणां में फूट जावता, चिड़कलियाँ रा अंडा।।

ऊनाळै में पीलू खातिर, जाळ जाळ पे चढ़ता।
बळती लू अर तिरस सेह ने, भर छाबड़ियाँ लाता।।
पीलू पा' अर म्हें इतराता, घणा चाव सूं खाता।
तीन लोक सूं न्यारी ही बा, बचपण थारी बातां।।
व्यौपारी ज्यूं व्यस्त रैवता, काम काज बिन धंधा।
बाळपणां में फूट जावता, चिड़कलियाँ रा अंडा।।

वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. नीम्बली उड़ा, तह./जिला- पाली-306401, **मो:9982609723**

हाइकू

❐ सुरेश कुमार

(1)
चाँदणी चेतै
बगै प्रीत री नाव
चुप सी रात।

(2)
कीं तो छुटगो
मनड़ो मुड़ झाँकै
कीं री हर मं।

(3)
नदी मं न्हावै
एक नदी....छळकै
रूपाँ गागर।

(4)
तपती जूंणी
झर मींझर ओळ्यूं
बाँथां भरल्यै।

(5)
मंडाण बाँचूं
थाँरी ओळ्यूं रै मिस
हियै हेत रा।

(6)
नितरां पून्यूँ
आप रै ओळै-दोळै
ओप उजासै।

(7)
अडीक ओखी
अनुरागण आज्या
आज अदीठा।

(8)
जुड़' र टूटूँ
टूट' र फेर जुड़ूँ
हेत भरम।

(9)
कूँपळ हाँसै
काँपै पड़तो पांन
मूळ ऊखळै।

(10)
क्यूँ ढूँढै बेली
बै रुळियोड़ा हेत
लुट्योड़ी हाटां।

(11)
आखी जिंनगी
घट घड़तो रैयो
एक सोवणी मूरत।

(12)
सोधैं क्यूँ चौरा
कांई मिलसीं पाछा
गयोड़ा थाँनैं

(13)
जीऊं तो थांरी
हर स्यूँ हारुँ, गयां
मेळा री आसा।

(14)
मन आँगणै
पग सुंणैं बाजता
स्यात बै आवैं।

(15)
जोत दीवै री
पूरै जग उजास
पण हियै अंधार।

(16)
समंद रीतै
आँसुआँ ओटाँ नेह
मेह सो झरै।

(17)
कद द्यै दीन्हां
थाँनैं नैंण निगौड़ा
नेह रा नूंता।

(18)
जिंया तूँ हाँसे
जगै धार मं दीप
मनड़ो दाझै।

(19)
निजरां हेरैं
बा कविता सी छोरी
छौळ छंद री।

(20)
थाँरो बागळ
मन घोड़ाँ चढ़र्यो
मिलो नीं मिटै।

(21)
पून री पाँखाँ
आवै सौरंम थाँरी
हेत कँवल।

अध्यापक
रा.बा.उ.प्रा.वि. तिहावली, फतेहपुर, जि. सीकर (राज.)-332307
मो: 9414541743

बाल साहित्य

पछतावा

❐ महेश कुमार चतुर्वेदी

बात कक्षा छः की है। अंतिम कालाँश समाप्ति की ओर था। तभी नगर के गणमान्य धन्नासेठ के लड़के विपुल ने चिल्ला-चिल्ला कर कहा। ''मेरा सौ का नोट चोरी हो गया। मेरा सौ का नोट चोरी हो गया।'' अंतिम कालाँश नैतिक शिक्षा का था; शर्माजी का। वे आज अवकाश पर थे। अतः कक्षा में कोई भी शिक्षक नहीं था। कालाँश नैतिक शिक्षा का और उसमें भी चोरी हो गयी। हद हो गयी।

छठी कक्षा में गरीब बस्ती का मोनू भी पढ़ता था। गरीबी की दीन-हीन दशा देखकर सभी ने चोरी का इल्जाम बेचारे मोनू पर लगाया। बात प्रधानाध्यापक तक पहुँची। सभी छात्र एक ही स्वर में बोल रहे थे। ''सर! मोनू ने ही सौ का नोट चुराया है।''

यह सुनते ही प्रधानाध्यापक का पारा सातवें आसमान पर जा पहुँचा। आँखे तरेरकर वे जोर से दहाड़े-''बोल तूने चोरी की या नहीं।''

''नहीं...सर...नहीं। मैंने चोरी नहीं की है।''

''बदमाश, झूठ बोलता है।'' बस क्या था? प्रधानाध्यापक जी ने आव देखा ना ताव। बेचारे उस गरीब निरीह छात्र को दनादन पीटने लगे। मार खाते-खाते वह बराबर अपनी सफाई दे रहा था। ''मुझे मत मारो सर! मुझे मत मारो। मैंने चोरी नहीं की। मुझे मत मारो।''

प्रधानाध्यापक जी पर मानो भूत सवार हो गया था। वे उसे पीटते-पीटते ही बड़बड़ाते जा रहे थे। ''इस को पुलिस के सुपुर्द कर दो। फिर देखता हूँ कैसे सच नहीं बोलता?'' आवेश में आ उन्होंने अपनी मोटर साइकिल स्टार्ट की और उसे बिठा कर सीधे थाने जा पहुँचे। मिर्च-मसाला लगाकर प्रधानाध्यापक जी ने चोरी का इल्जाम मोनू पर ही लगाया। जब प्रधानाध्यापक जी एवं कक्षा के सारे छात्र कह रहे हैं तो शक यकीन में बदलता नज़र आया। थानेदारजी को लगा रुपये जरूर मोनू ने चुराए होंगे। उन्होंने भी दहाड़ कर मोनू के दो-तीन धौल जमा दी। मोनू तब भी रोते हुए बराबर कहे जा रहा था। ''मुझे मत मारो। मैंने कोई चोरी नहीं की।''

कड़कती आवाज में थानेदार ने कहा-''चुप साले! जा आज तुझे छोड़ रहे हैं। कल तक चुराए सौ रुपये लाकर थाने में जमा करा देना। वरना जेल में बंद कर दूँगा।''

जैसे-तैसे मोनू घर पहुँचा। माता-पिता को खबर लगी। वे गरीब थे। इसलिए कुछ न बोल सके और कुछ न कर सके। उन्हें पक्का विश्वास था कि उनका बेटा मोनू गरीब जरूर है पर चोर कदापि नहीं।

रात भर मोनू डर और दहशत के मारे सो न सका। बड़बड़ाता रहा। मुझे मत मारो। मत मारो। मैंने चोरी नहीं की।

दूसरे दिन रोजाना की तरह स्कूल खुला। स्कूल में चहुँओर मोनू के चोर होने की घटना चर्चा में थी।

छठी कक्षा में चौथा कालाँश हिन्दी का प्रधानाध्यापक जी का था। उन्होंने पाठ पढ़ाने से पूर्व मोनू के बारे में पूछा तो पता चला उसे बुखार है। इसलिए वह आज स्कूल नहीं आया।

पाठ पढ़ने के लिए सभी छात्रों ने पुस्तक खोली। पुस्तक खोलते ही विपुल की आँखें फटी की फटी ही रह गयी। उसकी पुस्तक में सौ का नोट था। अनायास ही उसके मुँह से निकल पड़ा। मिल गया सर। मिल गया। सौ का नोट मिल गया। मैं इसे किताब में रख भूल गया था और सौ का नोट मिलने की खुशी में वह नोट को हाथ में ले उछल रहा था। मिल गया। सौ का नोट मिल गया। इतने में रेसेस (मध्यान्तर) की घंटी बज उठी। सभी छात्र कक्षा से बाहर। कक्षा में बुत बने खड़े थे तो सिर्फ प्रधानाध्यापक जी।

उन्हें लगा कि बिना जाँच पड़ताल किए, मोनू को मार कर, उसे थाने ले जाकर उन्होंने अच्छा नहीं किया। वे अपराधी हैं उस गरीब मोनू के, जो सच्चा और ईमानदार है। बोझिल कदमों से वे ऑफिस में आए। उनके सिर पर पसीने की बूँदे उभर आयी। मायूस होकर उन्होंने अपने साथियों से कहा-''मोनू चोर नहीं ईमानदार है। मैंने उसे बेवजह मार कर अच्छा नहीं किया। मैं अभी और इसी वक्त मोनू से मिलना चाहता हूँ।''

अपने स्टाफ के एक दो शिक्षक को साथ ले वे मोनू के घर पहुँचे। मोनू को लगा सर फिर उसे थाने ले जाएँगे। वह रोने लगा। सिसकने लगा। रोते-रोते ही बोला-''मुझे मत मारो। मैं चोर नहीं। मैंने रुपये नहीं चुराए।''

प्रधानाध्यापक जी ने मोनू के आँसू पोंछे। उसके सिर पर हाथ रख बोले-''बेटा! तुम चोर नहीं हो। तुमने कोई चोरी नहीं की। यही बात बताने मैं तुम्हारे पास आया हूँ।'' थोड़ा रुक कर वे फिर बोले-''बेटा! कल मैंने तुम्हारे साथ जो दुर्व्यवहार किया उसके लिए मैं शर्मिन्दा हूँ। बेटा मुझे माफ कर दो। मैं तुमसे माफी माँगने आया हूँ।'' यह कहते-कहते प्रधानाध्यापक जी की आँखें भर आयी।

मोनू का भय अब काफूर हो चला था। उसका चेहरा ईमानदारी की चमक से दमक रहा था।

थोड़ी देर रुककर उन्होंने मोनू के माता-पिता की ओर झुककर कहा-''मोनू नेक और ईमानदार लड़का है। सच में यह गुदड़ीका लाल है। मैंने इसके साथ नाइंसाफी की, जिसका मैं प्रायश्चित करना चाहता हूँ। मुझे बहुत पछतावा है। मेरा प्रायश्चित यही है कि जब तक मोनू पढ़ लिख कर अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो जाता, इसकी पढ़ाई का सारा खर्च मैं उठाउँगा और जब तक यह पढ़कर योग्य इंसान नहीं बन जाता। मैं चैन से नहीं बैठूँगा।'' पश्चाताप की दृढ़ प्रतिज्ञा ने मोनू को पढ़ाया लिखाया और उसे योग्य इंसान बनाया। आज मोनू सरकारी स्कूल में सैकण्ड ग्रेड का अध्यापक है।

प्रधानाध्यापक (से.नि.)
देवेन्द्र टॉकीज के पीछे, दूसरी गली,
छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़-312604
मो. 9460607990

गुरु की पुस्तक

❐ **कैलाश गिरि गोस्वामी**

एक शिष्य को गुरुजी ने एक पुस्तक दी जिसमें बारह अध्याय तथा तीन सौ पैंसठ पृष्ठ थे। गुरुजी ने पुस्तक देते समय कहा-''वत्स, एक-एक पृष्ठ रोज पढ़ना है। एक माह होते ही एक अध्याय पूरा हो जायेगा। इस तरह बारह महीनों में बारह अध्याय पूरे पढ़ लोगे। तब तुम्हारी परीक्षा ली जाएगी।''

बालक ने पढ़ाई शुरु कर दी। शुरु-शुरु में महीना भर तो नियमितता रही। फिर क्या था? बालक स्वच्छन्द हो गया। मन करे तो पढ़ता, नहीं तो खाने खेलने में ही पूरा दिन निकाल देता। कभी-कभी सप्ताह भर तक पुस्तक को हाथ नहीं लगाता और कभी एक दिन में ही सात-सात पृष्ठ पढ़ लेता। इस तरह तीन सौ पैंसठ दिन में तीन सौ पैंसठ पृष्ठ पूरे कर लिए।

आज परीक्षा की घड़ी आई। गुरुजी ने तीन घण्टे का पर्चा थमाया।

उत्तर पुस्तिका देखने पर गुरुजी को निराशा ही हाथ लगी। बालक इस परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहा। परन्तु गुरुजी को उसकी योग्यता पर पूरा भरोसा था। बालक को पास बुलाते हुए पूछा-''वत्स, क्या तुमने पूरी पुस्तक पढ़ी है?''

''हाँ गुरुदेव'' बालक बोला।

गुरुजी ने कुछ सोचते हुए गंभीर मुद्रा बनाते हुए फिर पूछा-''बेटे, क्या तुमने एक-एक पृष्ठ पढ़ डाला है?'' बालक ने कहा-''जी, हाँ। हर पृष्ठ पढ़ा है।''

गुरुजी विचार में पड़ गये। फिर बालक

अनुत्तीर्ण कैसे हो सकता है?

गुरुजी ने कुछ सोचकर फिर पूछा-''वत्स मैं आखिरी सवाल पूछ रहा हूँ, सही-सही ज़वाब देना। क्या तुमने प्रतिदिन एक पृष्ठ पढ़ा था?''

बालक ने कहा-''नहीं, गुरुदेव।''

....और सारा वृतान्त कह सुनाया।

गुरुजी ने कहा-''बेटे, तुम यहीं मार खा गए। वक्त पर चलना दौड़ने से कहीं ज्यादा बेहतर है।''

बालक गुरुजी की गूढ़ बात को पूरी तरह समझ पाया या नहीं वो तो बालक ही जाने, मगर अभी भी गुरुजी कुछ इस तरह बुदबुदा रहे थे-

जो शिष्य गुरुजी के आदेशों का अक्षरशः पालन नहीं करते, उनका हश्र यही होता है।

जीवन में अटकाव,
लक्ष्य से भटकाव।

व्याख्याता
ग्राम-बोदिया, पो. मादलदा, त. गढ़ी,
जिला-बाँसवाड़ा (राज.) 327034
मो. 9982505957

अपना वतन

❐ **गणपतसिंह 'मुग्धेश'**

अपना वतन है, अपना चमन
झूमें वसंत नित, करो जतन।

इसकी हिफ़ाज़त, अपना फ़रज़
ऋणी हम सभी, चुकाएँ क़रज़।
अमूल्य यही है, अपना रतन।।

यह है तो, हम सब ज़िन्दा हैं
आज और कल, आइन्दा हैं।
अपना यही सच, अपना सपन।।

हिन्दू मुस्लिम, सिख ईसाई
हिलमिल रहते, हम सब भाई।
हिन्द को बनाएँ, नम्बर वन।।

हो निज कैसा भी, धरम करम
सबसे है ऊपर, राष्ट्र-धरम।
इसपे ही अपना, सब अरपन।।

अपना वतन है, अपना चमन
झूमें वसंत नित, करो जतन।

सेदरिया-ब्यावर, जिला-अजमेर (राज.)
पिन-305901
मो. 9460708360

भारत प्यारा देश हमारा

बाल एकांकी

❐ कमला गोस्वामी

पात्र - शकुंतला
राजा - दुष्यन्त
ऋषि - दुर्वासा, कण्व
मछुआरा
बालक भरत
अन्य

दृश्य-एक

(जंगल में राजा दुष्यन्त शिकार करते हुए पर्दे पर आते हैं)-

दुष्यन्त - अरे-अरे इतना दौड़ाया इतना दौड़ाया फिर भी शिकार हाथ से निकल गया। चलो, पास में एक झोंपड़ी है- वहीं चलकर प्यास बुझा लूँ, थकान मिटा लूँ।

दृश्य-दो

(झोंपड़ी पर दस्तक देता हुआ) दुष्यन्त- कोई है? प्यासा हूँ, पानी पीना है।

शकुंतला - लो राजन, प्यास बुझालो।

दुष्यन्त - हे सुन्दरी, आप कौन हैं? क्या मैं आपसे विवाह कर सकता हूँ।

शकुंतला- राजन, मेरे पिता मुनिवर कण्व अभी यहाँ नहीं हैं- उन्हें आने दो।

दुष्यन्त - यह लो मेरी मुद्रिका और इसे दिखाते ही मुनि मुझे पहचान लेंगे।

शकुंतला-ठीक है-राजन्-हम गंधर्व विवाह कर लेते हैं।

दुष्यन्त - जब तुम मुझे मेरी अँगूठी दिखाओगी, मैं भी तुम्हें पहचान लूँगा।

(प्रस्थान)

(मुनि के द्वार पर एक अन्य ऋषि का आना- शकुंतला राजा के ध्यान में अनसुना कर देती हैं।)

दुर्वासा- भिक्षाम् देहि, भिक्षाम् देहि।

(कोई उत्तर न पाकर-ठहर कर) (क्रोध में)

दुर्वासा - हे युवती! तुमने मेरा अपमान किया हैं, जिसे तुम याद कर रही हो वह तुम्हें भूल जाएगा।

शकुंतला - ओह! मुनिवर , मुनिवर!!

(दुर्वासा क्रोध से प्रस्थान कर जाते हैं कण्व का प्रवेश)

शकुंतला-स्वागत पितृदेव। यह अँगूठी देखिए। राजा दुष्यन्त ने मुझसे गंधर्व विवाह कर लिया है।

कण्व - अच्छा रहा पुत्री-एक दिन तो तुम्हें विदा करना ही था। चलो तुम्हें राजा के घर पहुँचा देते हैं।

(रास्ते में नदी में स्नान करने का दृश्य- मुद्रिका गिर जाना दिखाते हुए)

शकुंतला-पितृदेव-नदी में स्नान कर लेवें? यात्रा की थकान मिट जाएगी!

कण्व- हाँ, उचित रहेगा।

दृश्य-तीन

(दोनों राजा दुष्यन्त के दरबार में पहुँच कर)

शकुंतला- राजन्, मैं आ गयी, तुम्हारी पत्नी शकुंतला। मुझे स्वीकार करो।

दुष्यन्त- कहाँ है हमारी पहचान मुद्रा! हमारी निशानी दिखाओ।

शकुंतला-(अँगूठी नहीं पाकर)- ओह! भगवान मेरी अँगूठी? अब क्या उत्तर दूँ?

राजा - फिर तुम तत्काल राजमहल छोड़ दो- यही राजा का आदेश है।

कण्व- पुत्री! यही भाग्य में लिखा था। अब तुम वन में ही जीवन व्यतीत करो।

दृश्य-चार

(एक मछुआरे का प्रवेश)

मछुआरा-बड़ी मोटी मछली मिली है, बड़ी मछली मिली है, आज पूरा परिवार भरपेट भोजन करेगा।

(मछली के पेट चीरने का अभिनय करते हुए) अरे यह क्या? मछली के पेट में तो अँगूठी हैं! किसकी होगी!!

(नाम पढ़ते हुए) राजा दुष्यन्त की! अरे, फिर तो इसे तुरन्त लौटाना होगा।(प्रस्थान)

राजा का राजमहल

दुष्यन्त- कहाँ मिली तुम्हें यह अँगूठी!

मछुआरा-जी, मछली के पेट से।

दुष्यन्त- ओह! मेरी शकुन्तला! मैंने तुम्हें क्यों नहीं पहचाना! कहाँ होगी तुम? मैं अभी तुम्हारा पता लगाने चल पड़ता हूँ। (प्रस्थान)

दृश्य-पाँच

(जंगल का दृश्य- दुष्यन्त की आँखें शकुंतला को खोजती हुई)

दुष्यन्त - हे शकुंतले! तुम कहाँ हो- कहाँ हो तुम?

(एक बालक को शेर के साथ खेलते देखकर) इसी बालक से पूछता हूँ।

बालक - (शेर से खेलते हुए)- अरे वनराज, अभी और पूरा मुँह खोलो- मैं तो आपके सारे दाँत गिनूँगा।

दुष्यन्त - हे वीर बालक-तुम कहाँ रहते हो?

भरत - वहाँ, उस झोंपड़ी में।

दुष्यन्त - बड़े निडर हो तुम-किसके पुत्र हो?

भरत - मेरी माँ का नाम शकुंतला है।

दुष्यन्त - शकुंतला! ओह, कहाँ मिलेगी मुझे तुम्हारी वीर माता?

भरत - जी, उस झोंपड़ी में।

(दुष्यन्त का झोंपड़ी की ओर प्रस्थान भरत का शेर शावक के साथ खेलना जारी)

दुष्यन्त - (झोंपड़ी पर पहुँचकर)- शकुंतले! शकुंतले! मुझे क्षमा कर दो शकुंतले! मैं मेरी मुद्रिका के बिना तुम्हें नहीं पहचान पाया था।

शकुंतला-राजन् यह मेरा भाग्य था- आपसे विछोह का, मेरी तपस्या पूरी हुई।

दुष्यन्त - क्या वह वीर बालक हमारा है?

शकुंतला-हाँ, राजन् उसका नाम भरत है।

दुष्यन्त - बहुत श्रेष्ठ नाम है वीर बालक का, मैं राजा दुष्यन्त, आज यह घोषणा करता हूँ कि आज से हमारे देश आर्यावर्त का नाम भरत के नाम पर 'भारत' रखा जाता है ''जय भारत, जय भारत जननी।''

नेपथ्य में(पर्दे के पीछे)-

हम भारत के भरत खेलते शेरों की संतान से।
कोई देश नहीं दुनिया में बढ़कर हिन्दुस्थान से।।

(पर्दा गिरता हैं)

अध्यापिका (से.नि.)
रा.उ.प्रा.वि.(बालिका), लंगेरा, बाड़मेर (राज.)
मो:9462488087

ज्ञान का सूरज

❒ मनमोहन गुप्ता

राघव, चुन्नू सब आ जाओ
मिलकर पढ़ने जाएँगे,
ले जाकर हम लँच बॉक्स को
आधी छुट्टी मनाएँगे।
पढ़-लिखकर होशियार बनेंगे
बस्ती के सब बच्चे,
सारे जग को दिखला देंगे
हम भी कितने अच्छे।
अब जल्दी से हमको मम्मी
ड्रेस फटाफट पहनाओ,
पापा ने जो दिलवाए थे
नये मोजे वो ले आओ।
सरकारी स्कूल में मम्मी
अच्छी पढ़ाई होती है,
फीस नहीं लगती है बिलकुल
फिर बस्ती क्यों सोती है।
हम सब बालक पिछड़ी बस्ती के
पढ़कर नाम कमाएँगे,
ज्ञान का सूरज उग आया है
सबको हम बतलाएँगे।

'गुप्ता सदन'
एच.बी.के. गर्ल्स हा.सै. स्कूल के पास,
मंडी अटलबन्द, भरतपुर-321001
मो. 9983409454

हम नन्हें से बाल

❒ विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'

हम नन्हें से बाल
रखतें अपना ख्याल
पढ़ लिखकर आगे बढ़ना है
हम भारत के भाल।
दुश्मन के हम काल
चलने न देंगे चाल
बुरी नज़र माँ पर डाली तो
खींच देंगे हम खाल।
हाथों में हाथ डाल
हर विपदा को टाल
अपने प्यारे भारतवर्ष को
कर देंगे खुशहाल।
हम भारत के लाल
समझो माँ के ढाल
विनय भाव से माँ की करेंगे
सेवा और संभाल।

प्राध्यापक
मु. बोदिया, पो. मादलदा,
त. गढी, जि. बांसवाड़ा-327034
मो. 9928699344

देना सीखें

❒ उषा रानी स्वामी

तितली मण्डराती है
इस फूल उस फूल,
बालक मण्डराते हैं
इस घर उस घर।
पर!
दोनों के मण्डराने में
फर्क बहुत है,
तितली कुछ लेने को
बालक कुछ देने को
मण्डराते हैं।
निश्च्छल हँसी खुशी और प्रेम
बाँट देते हैं,
बिना भान के इस घर उस घर।
बेहिचक बेझिझक
लाँघ जाते हैं।
आओ, हम भी देना सीखें
निःस्वार्थ करें निर्माण
स्वच्छ, स्वस्थ, साक्षर भारत का
ताकि धरा पर
स्वप्न करें मिलकर साकार।
मेरे हिन्द की
बने एक पहचान
इस घर उस घर।

व. पुस्तकालयाध्यक्ष
रा.बा.उ.मा.वि., निवाई,
जिला-टोंक-304021
मो. 9530004587

स्कूल चलो रे...

❒ राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफिर'

स्कूल चलो रे स्कूल चलो,
नयी भोर है स्कूल चलो।
चंदा-सूरज नहीं रुके
बहती नदियाँ नहीं रुके
ज्ञानी-ध्यानी नहीं रुके
समय-चक्र तो नहीं रुके
गलती-सलती भूल चलो
स्कूल चलो रे स्कूल चलो,
नयी भोर है स्कूल चलो।
पाटी-पोथी बस्ता देखो
कैसे सुस्त पड़े हैं परखो
मस्ती-मस्ती में तुम निरखो
रह गए वो फिर से सीखो
अगली-पिछली भूल चलो
स्कूल चलो रे स्कूल चलो,
नयी भोर है स्कूल चलो।

'सावित्री सदन', सी-122,
अग्रसेन नगर, चूरू-331001
मो. 9414350848

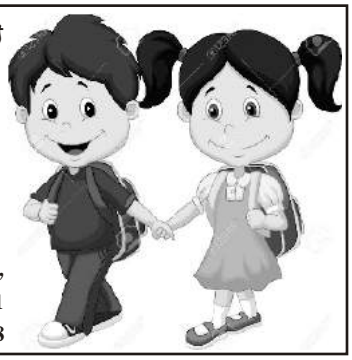

कोमल-पंख

❐ पुष्पा शर्मा

माँ की डाँट शूल की भाँति
पर बच्चों को राह दिखाती
नन्हो! अभी पंख है कच्चे
स्वप्न सभी होंगे सच्चे
कोमल पंखों से उड़ना चाहोगे
आसमान नहीं नाप पाओगे
धरा की कटु सच्चाई जानो
मात-पिता को हितैषी मानो
छोड़ो लड़कपन भ्रम को तोड़ो
जानो मर्यादा मन को जोड़ो
चरित्र बल ऊँचा रखना
मर्यादा का दर्पण बनना
माँ को सच्ची दोस्त समझना
सच्चे दोस्त से मत उलझना
पिता तुम्हारी जीवन ढाल
रखना सदा सबका ख्याल
खूब पढ़ो और करो निहाल
उज्ज्वल जीवन ऊँचा भाल।।

अध्यापिका
पत्नी श्री ब्रजकिशोर शर्मा
सापुन्दा रोड, ज्योति कॉलोनी,
केकड़ी-305004, जिला-अजमेर
मो: 9829377057

शिखर

❐ प्रेमांशुराम मेहता

शिखर पर
बैठा मैं
अपने भाग्य पर
बहुत प्रसन्न था
बहुत आह्लादित था
नीचे जहाँ तक
दृष्टि जाती
सभी बौने नजर आ रहे थे
मैं उन्हें हिकारत, उपेक्षा से
देख रहा था
मन में भारी अहं जाग रहा था
अचानक,
तेज आँधी-तूफान आए
मेरी बर्बादी का सामान लाए
मैं
शिखर से गिरा
अस्तित्व की लड़ाई लड़ते हुए
जीने की जद्दोजहद करते हुए
मैंने घाटी में पड़े-पड़े देखा
बौने नजर आने वाले लोग
मुझे सहानुभूति से देख रहे थे
तदनुभूति से मुझे बचाने के
उपाय ढूँढ़ रहे थे।।

व्याख्याता
128, आदर्श नगर, लिंकरोड,
डूंगरपुर (राज.) 314001
मो: 9460582245

स्कूल की घंटी

❐ डॉ. देवकीनन्दन नन्दवाना

स्कूल की घंटी बजती है।
घंटी बजने से बहुत पहले
माँ लग जाती है तैयारी में
बच्चे की अंगुली पकड़ कर
स्कूल तक छोड़ने जाती है।
बच्चे का भविष्य
सँवारना चाहती है।
स्कूल की घंटी बजती है
मजदूर तगारी और फावड़ा उठाकर
ठेकेदार के पीछे दौड़ता है
उसे बेटे की फीस भरनी है
वह और अधिक मेहनत करने लगता है।
स्कूल की घण्टी बजती है
शिक्षक आदमी से गुरु बन जाता है
वह जानता है
बच्चे अपने माता-पिता से ज्यादा
उसकी बात पर विश्वास करते हैं
स्कूल की घण्टी सभी को
कुछ न कुछ समझा रही है।
याद दिलाती है अपना कर्त्तव्य
स्कूल घंटी सिर्फ घंटी नहीं
यह है जागरूक रहने का संदेश।।

व्याख्याता
गणेश नगर, पोस्ट- धोइन्दा
जिला-राजसमंद

बेटी बनाम बेटा

❐ महेन्द्र कुमार शर्मा

चाहते हैं हम बेटा, हो जाती है बेटी
लगता है अच्छा बेटा, लगती है बुरी बेटी
पालते हैं बेटा, पल जाती है बेटी
पढ़ाते हैं बेटा, पढ़ जाती है बेटी
लगाते हैं नौकरी बेटा, लग जाती है बेटी
बुलाते हैं बेटा, आती है बेटी
झगड़ता है बेटा, दिलासा देती है बेटी
खाता है धन बेटा, सेवा करती है बेटी
करता है बदनाम बेटा, रोशन करती है बेटी
सोचना है अब, अच्छा बेटा है या बेटी

जिला शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
4167-68 खाटा ओली, नसीराबाद
जिला-अजमेर (राज.) 305601
मो. 9785267728

होली के रंग

❐ अलका शर्मा

नीरस और शुष्क जीवन में भर देते हैं नई उमंग,
जीवन का आनंद मनाना सिखलाते होली के रंग।

सात रंग ये इन्द्रधनुष के उतर धरा पर हैं आते,
सरगम के भी सात रंग हैं सबके मन को हरषाते
नाचे अपनी धुन में सारे और बजाते चंग।। जीवन .....

जीवन के हर इक पहलु में रंग छिपे हैं सद्भावों के,
मनमोहक है रंग फागुनी और जेठ की छावों के
हो संतुलन सब रंगों में ना हो इनमें कोई जंग।। जीवन.....

रंगीला है देश हमारा और तिरंगा इसकी शान,
यहाँ परायों को मिलता है अपनों जैसा ही सम्मान
महिमा देख यहाँ की सारे लोग हुए हैं दंग।। जीवन....

दहन होलिका का दर्शाए होना अंत बुराई का,
और भक्त प्रहलाद पढ़ाए पाठ हमें अच्छाई का
सदाचार का पालन करना है जीवन का उत्तम ढंग।। जीवन....

वरिष्ठ अध्यापिका
रा.उ.मा.वि. टोकसी
गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर (राज.)

स्वच्छता अभियान

❐ रमा माथुर

आओ मिलकर भारत स्वच्छ बनाएँ
कचरे का हम ढेर हटाएँ।
घर-घर में स्वच्छता का पाठ पढ़ाएँ,
गली, मोहल्ला गाँव, शहर स्वच्छ बनाएँ।
हर बालक में स्वच्छता की रुचि जगाएँ,
नुक्कड़-नुक्कड़ सन्देश यह पहुँचाएँ
सबसे साफ और सुन्दर भारत देश बनाएँ।
बातों से न काम चलेगा, उठाना होगा स्वच्छता का बीड़ा।
गाँव-शहर स्वच्छ बनाना होगा, कहीं दिखे ना कूड़ा
इतनी बात हमारी मानो, बन गए तुम स्वच्छता के ज्ञानी
कुछ लोग कर रहे हैं, अब भी नादानी,
भर के लोटे में पानी, गन्दा कर रहे हैं गाँव-ढाणी
'जहाँ सोच वहाँ शौचालय' विद्या बालन जी की मानो बात
स्वच्छता रखकर बीमारी को देना मात
स्वच्छता के प्रहरी कहलाओ,
इस नारे को सफल बनाओ।

व्याख्याता
रा. चौपड़ा उ.मा.वि., गंगाशहर, बीकानेर (राज.)
मो. 9460000351

माँ

❐ डॉ. प्रदीप कुमार 'दीप'

सबसे प्यारा
और अनोखा!
रिश्ता अपनी 'माँ' का है।
तीनों लोक!
समा जाएँगे...
ऐसा आँचल 'माँ' का है।
जननी बनकर
जन्मा है!
और सद्गुण से पाला है।
आए कोई आफत हम पर!
वो बनी हवन की ज्वाला है।।
भरी लबालब
ममता से!
कोई कोना ना रीता है।
वो बसी है....
कुरान-बाइबल में!
'माँ' ही कर्म-ए-गीता है।।

माँ के चरणों में
मंदिर है!
हाथों से बहता है आशीष।
सारे तीरथ!
फीके पड़ते।
देखो करके नीचा शीश।।
अपना व्रत....
कभी ना तोड़े!
चाहे टूटे सकल शरीर।
'माँ' की ममता।
और हिम्मत से!
बदली कितनों की तकदीर।।
छवि निराली
उज्ज्वल-उज्ज्वल
तन-मन से माँ सबला है।
माँ के पैरों में
जन्नत है!
माँ काशी! माँ कर्बला है।।
जिसकी
छाती से फूटी!
अजस्र अमृत की धारा।
मानव-बीज
पला है उसमें!
फलित हुआ ये जग सारा।।
अनमोल धरोहर
अपनी माँ!
दुर्लभ है बनना सदासहाय।
या तो ईश्वर!
या धरती है!
या सम है उसके अपनी माय।।

ग्राम-पोस्ट ढोसी, तहसील खेतड़ी
जिला-झुंझुनूँ (राज.)-333036

प्यारे तिरंगे तेरी खातिर

❐ मनोज कुमार दाधीच

देश प्रेम की आन ना तोड़ी, जीवन डोर को तोड़ दिया।
प्यारे तिरंगे तेरी खातिर, वीरों ने दम तोड़ दिया।
वीरों ने दम तोड़ दिया.... देश प्रेम की आन ना तोड़ी.....

लाठी खाई कोड़े खाए, खून सनी थी गोलियाँ।
जलियाँ वाले बाग को देखो, माँ सूरों की टोलियाँ।
फूट-फूट कर ममता रोई, बहनों ने दम तोड़ दिया।
प्यारे तिरंगे तेरी खातिर, वीरों ने दम तोड़ दिया।
वीरों ने दम तोड़ दिया..... देश प्रेम की आन ना तोड़ी.....

जेल गए और चक्की पीसी, हर पीड़ा को झेल गए।
टुकड़े-टुकड़े हो गए तन के, मौत से अपनी खेल गए।
याद करो उन वीरों को जो, जीवन का मोह छोड़ दिया।
प्यारे तिरंगे तेरी खातिर, वीरों ने दम तोड़ दिया।
वीरों ने दम तोड़ दिया..... देश प्रेम की आन ना तोड़ी.....

अध्यापक, शहीद मनोहर लाल पारीक रा.उ.मा.वि., क्यामसर-नागौर (राज.) **मो: 9413602912**

बेटी

❐ रामजीलाल घोड़ेला

घर की शान है बेटी
समाज की आन है बेटी।

बेटी बिन आँगन सूना
घर की लाज है बेटी।

दो परिवारों को शिक्षित करती
खुद शिक्षक बन कर बेटी।

माँ-बाप के सुख, दुःख में
सेवा की प्रतिमूर्ति बेटी।

रक्षा बन्धन का धर्म निभाती
बदले में कुछ न माँगे बेटी।

भाई-बहिन का पवित्र रिश्ता
सहृदय से निभाती बेटी।

ससुराल में सब का मन जीते
माँ-बाप को याद आती बेटी।

मेहनत कर आगे बढ़ती जाती
अव्वल स्थान पर आती बेटी।

माँ-बाप का नाम रोशन करती
दुःख में भी खुश रहती बेटी।

प्रधानाचार्य
C/o राज क्लॉथ स्टोर,
लूणकरणसर (बीकानेर) 334603
मो. 9414273575

नन्हें-फूल

❐ मिनाक्षी सोनी

बालक ये, नन्हें फूल हैं,
इन्हें महकने दो।
ये बच्चे नन्हीं कलियाँ हैं,
इन्हें खिलने दो।
बनें ये कलियाँ फूल,
इन्हें महकने दो।
हैं पंछी ये अपनी बगिया के,
खुल के परवाज इन्हें भरने दो।
गूँज उठे गुलिस्ताँ हमारा,
इस कदर इन्हें चहकने दो।
जैसे गढ़ता है कोई कुम्हार
मिट्टी से घड़ा,
गढ़ें हम भी इनको ऐसे,
जिससे नाम हमारा भी हो बड़ा।
हर एक बच्चा हो हमारे लिए
इतना खास,
कि उसे बँधे एक सुनहरे
कल की आस।
खिलें ये कलियाँ बनकर
गुल-गुलशन में,
महकें हमारा चमन,
हो सार्थक जीवन।
आसमाँ से ऊँची हो
इनकी परवाज,
रोशन हो इनका भी
कल और आज।
ये बालक नन्हीं कलियाँ हैं,
इन्हें खिलने दो।
बने ये कलियाँ फूल,
इन्हें महकने दो।

अध्यापिका
रा.उ.मा.वि. कालू, लूणकरणसर,
बीकानेर

अच्छे बालक

❐ शिवनारायण शर्मा

माता-पिता और गुरुओं के
जो बनते हैं आज्ञापालक,
नहीं दिखाते अहंकार किसी को
कहलाते वो अच्छे बालक।
सूर्योदय से पूर्व उठकर
जो करते ईश्वर का ध्यान,
ब्रह्म मुहूर्त में करके अध्ययन
अर्जित करते गहरा ज्ञान।
नित्य क्रियाओं से हो निवृत्त
जो समय पर जाते शाला,
गुरु चरणों में बैठ वहाँ
पीते ज्ञान का अमृत प्याला।
गृहकार्य को करके नियमित
सदा समय पर जँचवाते,
त्रुटियों का करके संशोधन
नहीं परीक्षा से घबराते।
शाला की गतिविधियों में
जो चाव से लेते भाग,
व्यक्तित्व नित्य निखरता उनका
बनते जग में वो बड़भाग।

जिला शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
पोस्ट-गिलूण्ड, जिला-राजसमंद-313207

जल ही जीवन है।

❐ श्याम सुन्दर तिवाड़ी 'मधुप'

बूँद-बूँद होती अनमोल,
व्यर्थ न इसको नष्ट करो।
हर जन के आ जाए काम,
सब मिल ऐसा जतन करो।
पानी की बर्बादी से,
जीवन कठिन हो जाता।
मोल न समझा ग़र पानी का,
बूँद-बूँद को वह तरसाता।
कद्र सदा होती मानव की,
जब होता उसमें है पानी।
चला गया ग़र जीवन से,
निरर्थक सम्पूर्ण जवानी।

व्याख्याता (से.नि.)
6-बी 26 आर.सी.व्यास कॉलोनी,
भीलवाड़ा (राज.)-311001, **मो: 9413730276**

पानी की बूँद बचाएँ

❐ विनोद कुमार शर्मा

आओ सबको यह समझाएँ,
कभी न पानी व्यर्थ बहाएँ।
कुदरत की अनमोल देन यह,
पानी की हर बूँद बचाएँ।
खूब उलीचा धरती तल को,
पीर धरा की क्या बतलाएँ?
बरखा जल को सभी सहेजें,
जल संकट को दूर भगाएँ।
जल है तो कल है हम सबका,
अपने कल को सुखद बनाएँ।
जल से ही जगती पर जीवन,
नीर संरक्षण भाव जगाएँ।
बहुत हुई नादानी हमसे,
इस भूल का कर्ज चुकाएँ,
रीत रहे धरणी के तल में,
फिर से जल की धार बहाएँ।

अध्यापक
राउमावि. डाबड़ा, वाया-मौलासर-341506
जिला-नागौर (राज.)
मो: 9982134165

फूलों से प्यार

❐ कैप्टन सत्यनारायण पंवार

बालक को फूलों से प्यार
उसका मन प्रफुल्लित होता
खिलते फूलों की छवि देखकर
वह आनन्दित होता
फूलों की खुशबू सूंघकर
वह सम्मान है देता
फूलों को पौधों के ऊपर
फूलों से प्रेम है करता
रंगबिरंगी तितली बनकर
फूलों को वह नहीं तोड़ता
क्यूँ कि मर जाएँगे मुर्झाकर
मानव को संदेश है देता-
फूलों को नहीं तोड़ना
पर्यावरण प्रदूषक बनकर

68, गोल्फ कोर्स स्कीम,
एयरफोर्स एरिया, जोधपुर-342001
फोनः 0291-2670659

झण्डा गायन

❐ सुशील कुमार शर्मा

यह झण्डा है कितना महान, मैं इसको नमन करूँ।
नमन करूँ मैं नमन करूँ, यह झण्डा है कितना महान,
मैं इसको नमन करूँ।।

इस झण्डे के ऊपर मैं तो वारी-वारी जाऊँ।
तन-मन देकर, इसकी लाज बचाऊँ।
सौ-सौ बार करूँ सलाम, मैं इसको नमन करूँ।।

केसरिया रंग सबसे ऊपर हमको कितना भाए।
हरे रंग को देख यह धरती, हरी-भरी हो जाए।
सफेद रंग से बढ़ रही शान, मैं इसको नमन करूँ।।

इस झण्डे की शान बढ़ाना, करना इसका मान।
स्थिर भाव से खड़े होय के, करना है सम्मान।
सुशील करे गुणगान, मैं इसको नमन करूँ।।

यह झण्डा है कितना महान, मैं इसको नमन करूँ।

अध्यापक
ग्राम-सुल्तानपुरा, पोस्ट-निवाई,
वाया-जाखल, तह.-नवलगढ़(झुंझुनूँ)
मो. 9413295041

शिविरा पत्रिका (मासिक) : सितम्बर 2016 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : मूलचंद मीणा, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

स्वाधीनता दिवस के अवसर पर संबोधित करते हु (बाएँ) निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री नथमल डिडेल I.A.S. (दाएँ) निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान श्री पी.सी. किशन I.A.S.

71 वें स्वाधीनता दिवस समारोह के अवसर पर, माध्यमिकशिक्षा राजस्थान बीकानेर परिसर में, ध्वजारोहणपश्चात् राष्ट्रध्वज को सलामी देते हु निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, श्री नथमल डिडेल I.A.S. साथ में हैं शपथ लेते हु समस्त शिक्षा अधिकारी औ रकर्मचारीगण।

71वें स्वाधीनता दिवस समारोह की पूर्व संध्या पर निदेशालय परिसर बीकानेर में आयोजित सांस्कृतिक संध्या के अवसर पर कलाकारों की प्रस्तुति। देर रात तक चली सांस्कृतिक संध्या में मंत्रमुग्ध निदेशक प्रारंभिक शिक्षा, निदेशक माध्यमिकशिक्षा, अतिरिक्त निदेशक प्रारंभिक शिक्षा, संयुक्त निदेशक माध्यमिकशिक्षा, शिक्षा अधिकारी एवं कर्मचारीगण। (एकदम दाएँ) संयुक्त निदेशक (कार्मिक) श्रीमती नूतनबाला कपिला गायन प्रस्तुत करते हु ए।

माँ त्रिपुरा सुन्दरी मंदिर, बाँसवाड़ा

राजस्थान में बाँसवाड़ा से लगभग 14 किलोमीटर दूर ग्राम तलवाड़ा के निकट गाँव माताबाढ़ी में प्रतिष्ठित है माँ त्रिपुरा सुंदरी का भव्य मंदिर। शक्तिपुरी, शिवपुरी तथा विष्णुपुरी नामक इन तीनों पुरियों में स्थित होने के कारण देवी का नाम त्रिपुरा सुंदरी पड़ा। गर्भगृह में देवी की विविध आयुद्ध से युक्त अट्ठारह भुजाओं वाली श्यामवर्णी भव्य तेजोमय आकर्षक श्रृंगारित मूर्ति है। इसके प्रभामण्डल में नौ-दस छोटी मूर्तियाँ हैं जिन्हें महाविद्या अथवा नव दुर्गा भी कहा जाता है। मंदिर के निचले भाग में संगमरमर के काले और चमकीले पत्थर पर यंत्र उत्कीर्ण हैं जिसका अपना विशेष तांत्रिक महत्त्व है। मंदिर के पृष्ठ भाग में त्रिदेव, दक्षिण में काली व उत्तर में अष्ठ भुजाधारिणी सरस्वती मंदिर था, जिनके आज भी खंडहर विद्यमान हैं। गुजरात, मालवा और मारवाड़ के शासक इसके मुख्य उपासक रहे हैं। गुजरात के सोलंकी राजा सिद्धराज जयसिंह की यह इष्ट देवी रही है।

पांचाल जाति के चांदा भाई लुहार ने तीसरी सदी में इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया। यहाँ लोहे की खदान थी। खदान के द्वार पर माता के पहुँचने पर भी पांचालों का ध्यान नहीं गया, क्रोधवश माता ने खदान ध्वस्त कर दी। पांचालों ने देवी माँ को प्रसन्न करने हेतु मंदिर बनवाया व तालाब खुदवाया। 16वीं सदी में पुनः जीर्णोद्धार हुआ। आज भी इस मंदिर की देखभाल पांचाल समाज करता है। इस शक्ति पीठ पर दूर-दूर से लोग आकर नवरात्रि पर्व पर शीश झुकाते हैं। घट स्थापना के साथ नौ दिन नवरात्रि में पूजन किया जाता है। जल कलश (घट) माही नदी में विसर्जित किया जाता है। जहाँ मेला भरता है। ख्याति लब्ध भूपतियों की इष्ट देवी परम्परा को स्व. हरिदेव जोशी प्रणीत उस उपासना परम्परा के संरक्षण का बीड़ा वर्तमान मुख्यमंत्री माननीया वसुन्धरा राजे बढ़ा रही हैं। कहा जाता है कि मालवा नरेश जगदीश परमार ने तो माँ के श्री चरणों में अपना शीष काट कर अर्पित कर दिया था, श्री राजा सिद्धराज की प्रार्थना पर माँ ने पुत्रवत् जगदीश को पुनर्जीवित कर दिया था। ''**निष्प्राण में फूँके प्राण, पीड़ितों का करे परित्राण**''

संकलन : मूलचन्द मीणा, वरिष्ठ संपादक (शिविरा), माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर, मो. 9413050288